

















प्राचीन हस्तलिखित

वृहद् यन्त्र महार्णवम्

यन्त्र-चित्र सहितम्















ॐ

अथ वृहद् यन्त्र महार्णवम्

(यन्त्र-चित्र सहितम्)

सम्पादक :

श्री विद्या-वारिधि आचार्य पं. राजेश दीक्षित







क्रियेटिव पब्लिकेशन

4422, नई सड़क, दिल्ली-110 006

फोन : 23261030, 23985175, 23279417

visit us at www.creativepublication.com, E-mail : hans@ndf.vsnl.net.in

यन्त्र
२

सम्पादक:
विद्या-वारिधि, आचार्य पं. राजेश दीक्षित
(सहस्राधिक ग्रंथों के सुप्रसिद्ध लेखक)

न्यौछावर
स्वदेश में: **सजिल्द मूल्य: 1100/-**

मुद्रक : रूबी प्रिन्टिगं प्रेस दिल्ली-६



महा०

VRIHAD YANTRA MAHARNAWA

Edited by Pt. RAJESH DIXIT
(Author of Over Thousend of Books)

तन्त्र शास्त्र और यन्त्र महार्णव

'तन्त्र' शब्द का अर्थ है— तन्तु अथवा सूत्र। ऐसा सूत्र, जिसमें भाव मोतियों की भाँति पिरोये गये हों; अतः 'तन्त्र शास्त्र' का अर्थ हुआ— 'ऐसा शास्त्र, जिसमें विभिन्न प्रकार की साधनाओं को सूत्रबद्ध अर्थात् एकीकृत किया गया हो। यन्त्र, मन्त्र और तन्त्र— ये तीनों एक ही सत्य के तीन प्रकार हैं। जो क्रिया मनुष्य की सामान्य-शक्ति को उद्दीप्त कर, उसमें गुरुतर-शक्ति का संचार करती हो, उसके गूढ़-रहस्य को 'मन्त्र' कहा जाता है। 'मन्त्र' का चित्रात्मक रूप 'यन्त्र' और क्रियात्मक रूप 'तन्त्र' है। इन तीनों का जिसमें वर्णन किया गया हो, उसे 'तन्त्र शास्त्र' कहते हैं अर्थात् 'तन्त्र शास्त्र' के अन्तर्गत तन्त्र मन्त्र और यन्त्र— ये तीनों ही समाहित हैं।

मन्त्र विद्या अथवा तन्त्र विद्या का आदि-प्रवर्तक भगवान् सदाशिव को माना गया है। शिव का अर्थ ही 'कल्याण' है, अतः शिव कल्याण, मङ्गल तथा क्षेम के देवता माने जाते हैं। दर्शन शास्त्र में "आत्मा को भी 'शिव' कहा गया है। सांसारिक-बन्धनों से युक्त को 'जीव' तथा भव-बन्धनों से मुक्त को 'शिव' कहते हैं। 'सदाशिव' का अर्थ हुआ— सदा काल से होते आये शिवयोगी अर्थात् सर्वकाल में कल्याण स्वरूप। इस प्रकार यह भी कहा जा सकता है कि महान् योगियों की सर्वोच्च अवस्था का ही अपर नाम 'सदाशिव' है। इसका तात्त्विक आशय यह हुआ कि जिन्होंने लोक कल्याण के लिए मन्त्रोपदेश किया, वे सभी महापुरुष 'सदाशिव' थे, अतः तन्त्र शास्त्र में ऐसे सदाशिवों को ही तन्त्र का जनक कह कर सम्मानित किया गया है।

यन्त्र ४

महा०

'वायु पुराण' में सदाशिव के २८ अवतारों का उल्लेख पाया जाता है[११], जो प्रत्येक कल्प में 'एक-एक करके हुए हैं। इससे सिद्ध हुआ कि पूर्वकाल में २८ 'सदाशिव' हो चुके हैं। बौद्ध-धर्म में इसी सदाशिव-अवस्था को 'सम्यक् बुद्धत्व' कहा गया है। जैन-धर्म के 'अर्हत' अथवा तीर्थंकरों का भी इनसे सामंजस्य बैठता है। बौद्धधर्म में २८ बुद्धों तथा जैनधर्म में २४ तीर्थंकरों का उल्लेख पाया जाना भी इन सबके समत्व का द्योतक है। इतना ही नहीं, सदाशिव, बुद्ध तथा तीर्थंकर - इन सबके स्वरूप की परिकल्पना भी एक जैसी ही की गई है - सभी गौरवर्ण, ध्यानमग्न, पद्मासन स्थित, त्यागी, तपोनिरत, अर्द्ध-निमीलित नेत्रों वाले, महायोगी तथा शान्त रूप हैं[१२]।

तन्त्रशास्त्र के आदि-प्रवर्तक सदाशिव हैं तथा ब्राह्मणधर्मानुयायी वायु पुराण के 'पाशुपत योग' के अनुसार उन्हीं को इसके जनक होने का श्रेय भी देते हैं, तथापि बौद्ध-धर्म के अनुयायी इस शास्त्र को बौद्ध धर्म की देन बताते हैं। इसमें सत्य क्या है, इसका निर्णय अभी तक नहीं हो पाया है[१३], तथापि यह निश्चित है कि इन दोनों धर्मों के मनीषियों - महात्माओं ने तन्त्रशास्त्र को व्यवस्थित रूप देने तथा लोक में उसे प्रचारित करने का प्रयत्न किया है। दोनों ही धर्मों में एतद्-विषयक प्रचुर साहित्य उपलब्ध होता है। यदि वर्तमान स्थिति को देखा जाय तो हिन्दू धर्म की अपेक्षा बौद्धधर्म में तन्त्र-साधक कहीं अधिक पाये जाते हैं।

हिन्दू तथा बौद्ध महात्माओं के अतिरिक्त जैन तथा इस्लामी मत में भी इस विद्या का अत्य-धिक प्रचलन है तथा इन धर्म-सम्प्रदायों के महापुरुषों ने भी इस शास्त्र को समृद्ध बनाने में

अपने ढंग का योगदान भी किया है। इनके अतिरिक्त लोकभाषाओं में भी ऐसे मन्त्र विपुल संख्या में उपलब्ध होते हैं, जो अपना चमत्कारी प्रभाव प्रत्यक्ष प्रदर्शित करने में किसी से पीछे नहीं रहते। अस्तु, वर्तमान समय में तन्त्रशास्त्र के जो प्रयोग उपलब्ध होते हैं, उनमें हिन्दू, बौद्ध, जैन, इस्लामी तथा लोकभाषाई - सभी रूपों का समन्वय पाया जाता है। यों, प्रत्येक धर्म - सम्प्रदाय के तन्त्रग्रंथ अलग - अलग भी देखने को मिलते हैं।

तान्त्रिक - साधना अत्यन्त जटिल विषय है। यह जहाँ मनोभिलाषाओं की पूरक है, वहीं यथाविधि प्रयोग में न लाई जाने पर हानिकर भी सिद्ध होती है। इसी कारण तान्त्रिक - साधना के लिए सर्वत्र गुरु - निर्देश की आवश्यकता का प्रतिपादन किया गया है। समुचित - ज्ञान के अभाव में किए गए तान्त्रिक - प्रयोग कभी - कभी प्रयोगकर्ता के लिए प्राणघातक भी सिद्ध होते हैं। यह विद्या ऐसी नहीं है, जिसे केवल पुस्तक पढ़कर ही भलीभाँति जाना जा सके। पुस्तकें तो उपलक्षण मात्र होती हैं। उनके अध्ययन द्वारा सैद्धान्तिक - ज्ञान तो प्राप्त किया जा सकता है। विषय - वस्तु के स्वरूप का अनुमान भी लगाया जा सकता है, तथापि क्रियात्मक ज्ञान, जिसके द्वारा सिद्धि मिलती है, प्रयोग सिद्ध होकर मनोभिलाषा की पूर्ति होती है; केवल गुरु द्वारा मिल पाना ही संभव है। अतः किसी भी तान्त्रिक - प्रयोग को आरंभ करने से पूर्व किसी सुयोग्य गुरु से दिशा - निर्देश अवश्य प्राप्त कर लेना चाहिए। इससे विपत्ति का निवारण तो होगा ही, समय, शक्ति और धन का अपव्यय भी रुकेगा तथा साधना की सिद्धि से चित्त को भी प्रसन्नता प्राप्त होगी।

मन्त्र
३

हमने सैकड़ों व्यक्ति ऐसे देखे हैं, जो किसी तन्त्र विषयक पुस्तक के हाथ लगते ही, उसमें उल्लिखित प्रयोगों को तुरन्त करने बैठ जाते हैं और जब असफलता एवं निराशा हाथ लगती है, तब उनके लेखकों को, सम्पूर्ण तन्त्रशास्त्र ही को तथा तान्त्रिकों को कोसने लगते हैं।

महा.

कोई भी प्रयोग किस मुहूर्त में आरंभ करना चाहिए, किस प्रकार करना चाहिए, वह अपने लिए सिद्धि प्रद होगा अथवा नहीं, उसके लिए किन-किन उपादानों को एकत्र करना आवश्यक है, आदि विषयों की जब तक सम्यक् जानकारी नहीं होगी और उनका समुचित उपयोग नहीं किया जाएगा, तब तक किसी सामान्य से दिखने वाले प्रयोग की सफलता भी संदिग्ध ही बनी रहेगी। गुरु अपने अनुभव के आधार पर शिष्य को यथोचित दिशा-निर्देश देने का कार्य करते हैं, जिनके कारण साधन में किया गया शिष्य का श्रम निष्फल नहीं जाता। सद्गुरु का मिलना कोई असंभव बात नहीं है। "जिन खोजा तिन पाइयाँ गहरे पानी पैठ"—वाली कहावत चरितार्थ होनी चाहिए। परन्तु सद्गुरु के स्थान पर किसी पाखण्डी से पाला न पड़ जाय, इस सम्बन्ध में भी सचेष्ट बने रहना आवश्यक है।

तन्त्र शास्त्र को सरल हिन्दी भाषा में प्रस्तुत कर उसे सर्वसाधारण को सुपरिचित कराने के उद्देश्य से हमने तन्त्र-विषयक जिन अनेक ग्रंथों का लेखन तथा सम्पादन किया है, प्रस्तुत ग्रंथ उसी माला की एक कड़ी है—इसे (१) मन्त्र महार्णव, (२) यन्त्र महार्णव तथा (३) तन्त्र महार्णव—इन तीन भागों में संकलित किया गया है। 'मन्त्र महार्णव' खण्ड इससे पहले प्रकाशित हो चुका है। उसमें विभिन्न देवी-देवताओं के अतिरिक्त उप-देवता, भैरव, यक्षिणी, भूत, प्रेत आदि के साधन सम्बन्धी मन्त्र तथा उनकी प्रयोग-विधियाँ

का विस्तृत वर्णन किया गया है। देवी देवताओं से सम्बन्धित विभिन्न कवच, स्तोत्र आदि भी इसमें संकलित हैं।

'तन्त्र महार्णव' नामक खण्ड में केवल उन तान्त्रिक प्रयोगों को संकलित किया गया है, जिनके लिए किसी मन्त्र अथवा यन्त्र के साधन की आवश्यकता प्रायः नहीं पड़ती। एक सामान्य से लगने वाले मन्त्र पर आधारित विभिन्न काम्य-प्रयोग भी उसमें संगृहीत हैं।

प्रस्तुत 'यन्त्र महार्णव' खण्ड में विभिन्न कामनाओं की पूर्ति करने वाले यन्त्र संकलित किए गए हैं। इनमें से कुछ यन्त्र ऐसे हैं, जिन्हें सम्बन्धित देवी अथवा देवता के मन्त्र-साधन में पूजन-यन्त्र के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। ऐसे यन्त्रों के साथ उनके मन्त्र तथा जप-संख्या आदि का संक्षिप्त उल्लेख कर दिया गया है। जो लोग ऐसे मन्त्र-यन्त्रों की प्रयोग-विधियों का विस्तृत ज्ञान प्राप्त करना चाहते हों, उन्हें तद्विषयक अन्य ग्रंथों का अध्ययन करना चाहिए।

मारण, मोहन, वशीकरण, उच्चाटन, स्तम्भन, विद्वेषण तथा शान्तिकरण सम्बन्धी यन्त्र-प्रयोगों का शास्त्रीय उल्लेख एक अलग खण्ड में किया गया है। ऐसे यन्त्रों के साथ यदि किसी मन्त्र का जप करना भी आवश्यक होता है, तो उसका वर्णन भी साथ ही कर दिया गया है। इसके अतिरिक्त लेखन सामग्री एवं विधि का भी यथास्थान उल्लेख हुआ है।

अन्य खण्डों में लोक-प्रचलित सामान्य श्रेणी के यन्त्र संकलित हैं। प्रत्येक यन्त्र के स्वरूप को उसके साथ ही दिये गए चित्र में प्रदर्शित किया गया है तथा सभी यन्त्रों के साथ उनकी संक्षिप्त लेखन एवं प्रयोग विधि भी दे दी गई है।

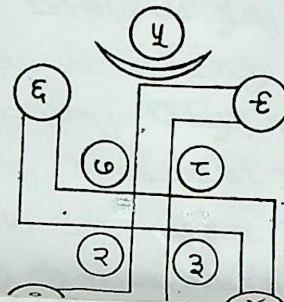
यन्त्र
त

इस ग्रंथ में संकलित सभी यन्त्र विभिन्न प्राचीन तथा अर्वाचीन ग्रंथों एवं सन्त-महात्माओं फकीरों तथा तान्त्रिकों के माध्यम से एकत्र किये गए हैं, अत: जिन-जिन सूत्रों से हमें सामग्री-संचय में सहायता प्राप्त हुई है, उनसभी के प्रति हम हृदय से कृतज्ञ हैं। प्रकारान्तर से, इस ग्रंथ में जो कुछ भी है, वह विद्वान-मनीषियों तथा प्राचीन ग्रंथों का कृपा-प्रसाद ही है। हम तो उसे एकत्र कर देने भर के माध्यम हैं।

महा०

ग्रंथ के सीमित-कलेवर के कारण इसमें उतने विस्तार पूर्वक नहीं लिखा जा सका, जितना हम लिखना चाहते थे, तथापि आशा है कि यन्त्र-प्रेमियों के लिए यह ग्रंथ उपयोगी सिद्ध होगा। यदि इसमें कहीं कोई त्रुटि परिलक्षित हो तो मनीषिजन उस ओर हमारा ध्यान आकर्षित करने की कृपा करें, ताकि आगामी-संस्करण में उसका निराकरण किया जा सके। इस ग्रंथ में उल्लिखित किसी विषय को स्पष्ट करने की आवश्यकता समझें तो हमसे जवाबी-पत्राचार किया जा सकता है।

महाविद्या कॉलोनी,
मथुरा (उ.प्र.)
(श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, सं. 2042 वि.)



विद्वज्जन किंकर
[signature]
(पं. राजेश दीक्षित)

यन्त्र

विषयानुक्रमणिका

(प्रथम खण्ड समाप्त)

महा०

द्वितीय खण्ड

क्रमाङ्क		पृष्ठाङ्क
१५	यावज्जीव स्वामि वश्यकर यन्त्रम्	१६९
१६	महामोहन यन्त्रम्	१७०
१७	जगद् वश्यकर यन्त्रम्	१७१
१८	बीज-सम्पुट यन्त्रम्	१७२
१९	क्रोध-शमन 'जामदग्न्य यन्त्रम्'	१७३
20	मायामय यन्त्रम्	१७४
२१	यावज्जीव वश्यकर 'गाणपत्य यन्त्रम्'	१७५
22	ललनाकृति 'श्री कामराजाख्य यन्त्रम्'	१७६
23	दुष्टवश्यकर 'कालानल यन्त्रम्'	१७६
२४	मानिन्याकर्षण 'देवमातृक यन्त्रम्'	१७७
२५	माणिभद्र यन्त्रम्	१७८
२६	मित्र-दर्शन यन्त्रम्	१७९
२७	आकर्षक त्रैपुराख्य यन्त्रम्	१७९
२८	दुष्ट मोहन यन्त्रम्	१८१
२९	व्यवहार-विवाद जयद यन्त्रम्	१८२
३०	विवाद विजय यन्त्रम्	१८३
३१	राजकोप नाशक दुष्टमुख स्तम्भन यन्त्रम्	१८४
३२	दिव्य स्तम्भन यन्त्रम्	१८५
३३	उच्छिष्ट-पिशाच यन्त्रम्	१८६
३४	क्रूर वश्यकर 'कालानल यन्त्रम्'	१८७
३५	शत्रु-मुख स्तम्भन यन्त्रम् (१)	१८८
३६	शत्रु-मुख स्तम्भन यन्त्रम् (२)	१८९
३७	शत्रु गति मति मुख स्तम्भक जिह्वाबेधन यन्त्रम्	१८९
३८	पिशुन-मुख स्तम्भन यन्त्रम्	१९१
३९	प्रतिवादि-मुख स्तम्भन यन्त्रम्	१९२
४०	यात्रा-स्तम्भन यन्त्रम् (१)	१९३
४१	यात्रा-स्तम्भन यन्त्रम् (२)	१९४
४२	अग्नि-स्तम्भन यन्त्रम्	१९५
४३	सर्प-स्तम्भन यन्त्रम्	१९६
४४	वह्नि-स्तम्भन यन्त्रम्	१९७

क्रमाङ्क	पृष्ठाङ्क
७५ स्त्रियाः उच्चाटन यन्त्रम्	२२४
७६ सर्वजनोच्चाटन यन्त्रम्	२२५
७७ सद्य उच्चाटनकर यन्त्रम्	२२६
७८ परमोच्चाटन यन्त्रम्	२२७
७९ त्रैलोक्योच्चाटन यन्त्रम्	२२८
८० शत्रोरुच्चाटन यन्त्रम्	२२९
८१ शत्रूच्चाटन यन्त्रम्	२३०
८२ नर - नारी मारण यन्त्रम्	२३१
८३ देशान्तरस्थ शत्रु मारण यन्त्रम्	२३२
८४ शत्रु प्रणाशक यन्त्रम्	२३३
८५ सर्वजन मारण यन्त्रम्	२३४
८६ शत्रु मारण यन्त्रम्	२३५

(तृतीय खण्ड समाप्त)

क्रमाङ्क	पृष्ठाङ्क
चतुर्थ खण्ड	
१ मूल वशीकरण पिशाचि यन्त्रम्	२३६
२ द्यूत-विजयकर प्रसन्न यन्त्रम्	२३७
३ डाकिनी-त्रासन-यन्त्र	२३८
४ प्रेत-बाधा-नाशन यन्त्र	२३८
५ बालाजी का यन्त्र	२३९
६ सेना भगाने का यन्त्र	२३९
७ सर्व सिद्धिदाता पन्द्रह का यन्त्र	२४०
८ शत्रु उच्चाटन यन्त्र	२४१
९ देशाटन कारक यन्त्र	२४१
१० प्रसिद्धिदाता यन्त्र	२४२
११ दुःस्वप्न नाशक यन्त्र	२४२
१२ लक्ष्मी-प्राप्ति यन्त्र	२४३
१३ दौलतदिली का यन्त्र	२४४
१४ [illegible]	[illegible]

यन्त्र २१

महा०

यन्त्र
२२

महा०



== समाप्त ==



अथ यन्त्रमहार्णव (प्रथम खण्ड)

तन्त्र- 'तन्त्र शास्त्र' के तीन विभाग हैं - (१) मन्त्र, (२) यन्त्र और (३) तन्त्र। ये तीनों एक ही शक्ति के तीन रूप अथवा एक ही सत्य के तीन प्रकार हैं। जपकर्ता की शक्ति को उद्दीप्त कर, उसमें गुरुतर शक्ति का संचार करने वाले वर्णात्मक रूप को 'मन्त्र' कहते हैं। 'यन्त्र' को मन्त्र का चित्रात्मक रूप माना जाता है तथा 'तन्त्र' उसका क्रियात्मक रूप होता है।

तान्त्रिक कर्म ६ प्रकार के बताये गए हैं - १ शान्तिकरण, २ वशीकरण, ३ स्तम्भन, ४. विद्वेषण, ५. उच्चाटन और वशीकरण। इन ६ कर्मों के ९ प्रयोग हैं - १. मारण, २ मोहन, ३ स्तम्भन, ४ विद्वेषण, ५ उच्चाटन, ६ वशीकरण, ७ आकर्षण, ८ यक्षिणी साधन और ९ रसायन-क्रिया। ये सभी प्रयोग मन्त्र, यन्त्र और तन्त्र के माध्यम से अलग-अलग अथवा दो या तीनों के संयुक्त उपाय द्वारा सिद्ध किए जाते हैं।

यन्त्रों द्वारा सिद्ध किए जाने वाले कार्यों को ८ भागों में बाँटा गया है - १. वशीकरण, २. आकर्षण, ३. स्तम्भन, ४. विद्वेषण, ५. मारण, ६. उच्चाटन, ७. शान्तिकर्म तथा ८ मोक्ष-कर्म। (१) किसी स्त्री-पुरुष अथवा अन्य प्राणी को वश में करने के लिए जो प्रयोग किए जाते हैं, उन्हें 'वशीकरण' की श्रेणी में रखा जाता है। (२) किसी स्त्री-पुरुष अथवा अन्य प्राणी को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए किए जाने वाले प्रयोग 'आकर्षण' की सीमा में आते हैं। (३) किसी प्राणी अथवा पदार्थ को स्तम्भित कर देने (जहाँ का तहाँ निश्चल कर देने अथवा रोक देने) के लिए किये गए साधनों को 'स्तम्भन' कहते हैं। (४) किन्हीं दो प्राणियों में

झगड़ा कराने के लिए प्रयोग में लाये जाने वाले साधनों को 'विद्वेषण' कहा जाता है। (५) 'मारण' प्रयोग उन्हें कहा जाता है, जिन्हें किसी प्राणी की मृत्यु के उद्देश्य से सम्पन्न किया जाता है। (६) किसी प्राणी अथवा वस्तु को अपने स्थान से हटाने अथवा भगाने के लिए जो प्रयोग किए जाते हैं, उन्हें 'उच्चाटन' कहते हैं। (७) उपद्रवों की शान्ति हेतु किए जाने वाले साधन 'शान्तिकरण' कहलाते हैं तथा (८) किसी की बन्धन-मुक्ति हेतु किए गए साधनों को 'मोक्ष-कर्म' कहा जाता है। इसके अन्तर्गत किसी व्यक्ति के बन्धन अथवा कारागार से छुटकारा पाने के अतिरिक्त संसार से छुटकारा पाने अर्थात् मोक्ष के उपाय भी सम्मिलित हैं। देवी-देवताओं की उपासना हेतु भी यन्त्र-साधन किया जाता है। देवी-देवताओं के यन्त्रों का साधन मोक्ष-प्राप्ति के अतिरिक्त विभिन्न कामनाओं की पूर्ति के लिए भी किया जाता है।

<u>यन्त्रों के मुख्य भेद</u> - यन्त्रों के मुख्य भेद दो प्रकार के होते हैं। एक वह, जिसमें केवल यन्त्र का ही साधन किया जाता है और दूसरा वह, जिसमें यन्त्र-साधन के साथ-साथ मन्त्र-जप करना भी आवश्यक होता है। देवी-देवता आदि से सम्बन्धित यन्त्रों के साथ मन्त्र-जप प्रायः संलग्न रहता ही है। षट्कर्मों से सम्बन्धित प्राचीन ग्रंथों में उल्लिखित यन्त्रों के साथ भी किसी-न-किसी छोटे बड़े मन्त्र का जप करना आवश्यक होता है, तथापि कुछ यन्त्र ऐसे भी होते हैं, जिनके साथ मन्त्र-जप नहीं करना पड़ता। उनका पूजन अथवा धारण मात्र ही फल-दायक सिद्ध होता है। ऐसे यन्त्रों की गणना प्रायः 'लोक-प्रचलित' यन्त्रों के अन्तर्गत की जाती है। प्राचीन ग्रंथों में ऐसे यन्त्रों का बहुत कम उल्लेख मिलता है। बिना मन्त्र वाले यन्त्रों का साधन भी सरल होता है।

<u>बीज, समय, वार, मास आदि का विचार</u>- मन्त्र-बीज तथा मन्त्र चार प्रकार के होते हैं- (१) सिद्ध, (२) साध्य, (३) अरि और (४) सुसिद्ध । इस सम्बन्ध में आगे विस्तार पूर्वक लिखा जाएगा।

<u>(१) समय</u> - 'वशीकरण' तथा 'आकर्षण' के लिए प्रातः १० बजे तक का, 'विद्वेषण' के लिए मध्याह्न का, 'उच्चाटन' और 'शान्तिकरण' के लिए दिन के तीसरे प्रहर का तथा 'स्तम्भन' और 'मारण' के लिए सन्ध्या और रात्रि का समय श्रेष्ठ रहता है। मोक्ष-कर्म के लिए समय का कोई बन्धन नहीं है।

<u>(२) ऋतु</u>- लौकिक रूप में ऋतुओं का परिवर्तन प्रति दो मास बाद होता है, परन्तु सूक्ष्म रूप से प्रत्येक दिन रात की ६० घड़ी (ढाई घड़ी का १ घण्टा होता है) में छहों ऋतुऐं १०-१० घड़ी के लिए भोग करती हैं। प्रातः ६ बजे से १० बजे तक वसन्त, १० से २ बजे तक ग्रीष्म, मध्याह्न २ से ६ बजे तक वर्षा, सायं ६ बजे से रात्रि १० बजे तक शिशिर, रात्रि १० से २ बजे तक शरद व रात्रि २ से प्रातः ६ बजे तक हेमन्त ऋतु रहती है। हेमन्त ऋतु में शान्ति-कर्म, वसन्त ऋतु में वशीकरण, ग्रीष्म ऋतु में विद्वेषण, वर्षा ऋतु में उच्चाटन, शिशिर ऋतु में स्तम्भन तथा शरद ऋतु में मारण-कर्म करना प्रशस्त माना गया है। ऋतु के रहते ही कर्म समाप्त करलें।

<u>(३) तिथि</u> - शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से कृष्णपक्ष की अमावास्या तक ३० दिन होते हैं। इनमे प्रारंभ के १० दिन उत्तम, मध्य के १० दिन मध्यम तथा अन्त के १० दिन निकृष्ट माने जाते हैं। षट्कर्मों के लिए - शुक्ल पक्ष की द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी एवं सप्तमी को बुध अथवा गुरुवार हो तो उस दिन 'शान्ति-कर्म' करने चाहिए। 'वशीकरण' के लिए शुक्ल-पक्ष की चतुर्थी, षष्ठी, नवमी एवं त्रयोदशी को सोमवार एवं वृहस्पतिवार होना शुभ माना गया है। 'विद्वेषण' के लिए अष्टमी, नवमी, दशमी तथा एकादशी को

शुक्र अथवा शनिवार हो तो वह शुभ रहता है । 'उच्चाटन' हेतु कृष्णपक्ष की अष्टमी एवं चतुर्दशी तिथि को शनिवार प्रशस्त माना गया है। कृष्णपक्ष की अष्टमी, चतुर्दशी एवं अमावास्या तथा शुक्लपक्ष की प्रतिपदा को रविवार, मङ्गलवार अथवा शनिवार हो तो इन्हें 'स्तम्भन' एवं 'मारण' कर्म के लिए श्रेष्ठ बताया गया है।

(४) वार- शुक्लपक्ष के प्रारंभ में पहला गुरुवार, सोमवार तथा रविवार - ये तीनों दिन अत्यन्त शुभ होते हैं। इनमें जिस कार्य को भी आरम्भ किया जाय, वह शीघ्र सिद्ध होता है। रविवार, सोमवार तथा गुरुवार को वशीकरण, आकर्षण, धन-लाभ, गर्भ-स्थिति, शारीरिक-बल तथा आरोग्य-प्राप्ति के लिए किए जाने वाले कर्म शीघ्र सिद्ध होते हैं। शुक्रवार तथा बुधवार को स्तम्भन, विद्वेषण, भूतादिक-दोष निवारण एवं वस्तु-विवेचना आदि के लिए किए जाने वाले कर्म शीघ्र सिद्ध होते हैं। शनिवार, मंगलवार के दिन उच्चाटन, मारण, धन-हानि, भय, बन्धन तथा गर्भ-खण्डन आदि से सम्बन्धित कर्म शीघ्र सिद्ध होते हैं।

(५) मास- फाल्गुन, ज्येष्ठ, भाद्रपद तथा मार्गशीर्ष - इन 'श्रेष्ठ' महीनों में वशीकरण, आकर्षण तथा शान्तिकर्म आदि करने चाहिए। पौष, चैत्र, आषाढ़ एवं आश्विन के महीने 'मध्यम' होते हैं, इनमें स्तम्भन, विद्वेषण आदि कर्म करने चाहिए। माघ, वैशाख, श्रावण तथा कार्तिक के महीने 'अधम' माने गए हैं, इनमें मारण, उच्चाटन आदि कर्म करने चाहिए। मोक्ष-कर्म के लिए सभी महीने प्रशस्त कहे गए हैं।

(६) सूर्य-चन्द्र प्राबल्य- कृष्णपक्ष की प्रारंभिक नौ तिथियों में सूर्य प्रबल रहता है तथा दशमी से अमावास्या तक चन्द्रमा प्रबल रहता है। इसी प्रकार शुक्ल पक्ष की प्रारंभिक नौ तिथियों में चन्द्रमा प्रबल

यन्त्र ३८

रहता है, तदुपरान्त सूर्य प्रबल रहता है। सूर्य की प्रबलता वाली तिथियों में 'चर-कार्य' तथा चन्द्रमा की प्रबलता वाली तिथियों में 'स्थिर-कार्य' करने चाहिए। थोड़ी देर के कार्यों, जैसे- घोड़े पर अथवा नाव पर चढ़ना आदि को 'चर' तथा अधिक समय के कार्यों, जैसे- रोग से छुटकारा पाने की चिकित्सा आदि को 'स्थिर' कार्य कहते हैं।

महा०

(७) अन्य विचारणीय विषय - मन्त्र-जप अथवा यन्त्र-साधन हेतु दिशाशूल, योगिनी, चन्द्रमा, नन्दा-भद्रा आदि तिथि तथा कुछ अन्य बातों पर भी विचार किया जाता है। इनके विषय में संक्षेप में इस प्रकार जान लें- (१)- यदि किसी संक्रान्ति में रविवार के दिन सप्तमी तिथि हो तो उस दिन किया हुआ कार्य अवश्य सिद्ध होता है। (२)- शनिवार तथा सोमवार को पूर्व दिशा में, शुक्रवार और रविवार को पश्चिम दिशा में, मङ्गलवार और बुधवार को उत्तर दिशा में तथा बृहस्पतिवार को दक्षिण दिशा में दिशाशूल रहता है। अतः इन दिनों में वर्जित दिशाओं की यात्रा नहीं करनी चाहिए। किसी कार्य की सिद्धि के लिए जाते समय दिशाशूल का विचार करना आवश्यक है। (३)- प्रतिपदा को पूर्व में, द्वितीया को उत्तर में, तृतीया को अग्निकोण में, चतुर्थी को नैर्ऋत्य कोण में, पंचमी को दक्षिण में, षष्ठी को पश्चिम में, सप्तमी को वायव्य कोण में, अष्टमी को ईशान कोण में, नवमी को पूर्व में, दशमी को उत्तर में, एकादशी को अग्नि कोण में, द्वादशी को नैर्ऋत्य कोण में, त्रयोदशी को दक्षिण में, चतुर्दशी को पश्चिम में, पूर्णिमा को वायव्य कोण में तथा अमावस्या को ईशान कोण में 'योगिनी' का वास रहता है। पीठ पीछे की तथा बाँई ओर की योगिनी शुभ फलदायक तथा सामने और दाँई ओर की अशुभ फलदायक होती है। यात्रा के समय योगिनी का विचार आवश्यक है।

पत्र 30

महा०

(४) मेष, सिंह तथा धनु राशि का चन्द्रमा पूर्व में; मिथुन, तुला तथा कुम्भ राशि का पश्चिम में; मकर, वृष तथा कन्या राशि का दक्षिण में एवं कर्क, मीन तथा वृश्चिक राशि का उत्तर में रहता है। किस दिन या तिथि को चन्द्रमा किस राशि का होगा- यह बात पञ्चाङ्ग (पत्रा) द्वारा ज्ञात की जा सकती है। अपनी राशि का चन्द्रमा कल्याणकारी होता है। अपनी से दूसरी राशि का सन्तोषदायक, तीसरी का धन-सम्पत्ति दायक, चौथा कलहप्रद, पाँचवाँ ज्ञान एवं बुद्धि वर्द्धक, छठा लाभप्रद, सातवाँ राज्य सम्मान प्रदाता, आठवाँ दुःख एवं मृत्यु (कष्ट) दायक, नवाँ धर्म-वर्द्धक, दसवाँ सुख-दायक, ग्यारहवाँ सर्वसिद्धि दाता तथा बारहवाँ हानिकारक होता है। पहली, दूसरी, तीसरी तथा पाँचवीं राशि का चन्द्रमा मस्तक पर रहने से सुख दायक होता है। छठी, नवीं राशि का पीठ पर रहने से हानिकर होता है। चौथी, आठवीं, बारहवीं राशि का पाँवों पर रहने से घर-घर घुमाता है तथा सातवीं, दसवीं एवं ग्यारहवीं राशि का हृदय पर रहने से सुखदायक होता है। (५) प्रतिपदा, षष्ठी और एकादशी को 'नन्दा'; द्वितीया, सप्तमी और द्वादशी को 'भद्रा'; तृतीया, अष्टमी और त्रयोदशी को 'जया'; चतुर्थी, नवमी और चतुर्दशी को 'रिक्ता' तथा पंचमी, दशमी और पूर्णिमा अथवा अमावास्या को 'पूर्णा' तिथि कहते हैं। शुक्र को नन्दा, बुध को भद्रा, मंगल को जया, शनि को रिक्ता एवं गुरु को पूर्णा तिथि हो तो उस दिन 'सिद्धियोग' होता है। रविवार अथवा गुरुवार को भद्रा, बुधवार को जया, शुक्रवार को रिक्ता एवं शनिवार को पूर्णा तिथि हो तो उस दिन 'मृत्युयोग' बनता है। 'सिद्धि योग' में कार्य-साधन करने से सिद्धि प्राप्त होती है तथा 'मृत्युयोग' में कार्य-साधन करने से हानि होती है।

कुलाकुल चक्र

वायु	अग्नि	पृथ्वी	जल	आकाश
अ आ	इ ई	उ ऊ	ऋ ॠ	लृ ॡ
ए	ऐ	ओ	औ	अं
क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	श
ष	क्ष	ळ	स	ह

कुलाकुल चक्र - मन्त्रशास्त्र में कुलाकुल का ज्ञान गुह्यातिगुह्य विषय है। तत्त्वज्ञान को अत्यन्त गुह्य विषय माना गया है। अनुकूल मन्त्रों का तत्त्वज्ञान से निर्णय होता है। अतः 'कुलाकुल चक्र' को सिद्धिदायी कहा गया है। 'कुलाकुल-चक्र' का स्वरूप बाँई ओर प्रदर्शित है।

साधक के नाम का पहला अक्षर तथा मन्त्र का पहला अक्षर एक कोष्ठक में आये तो 'स्व-कुल' जानना चाहिए। पृथ्वी का मित्र जल है, पृथ्वी के शत्रु वायु तथा अग्नि हैं। अग्नि का मित्र वायु है। जल का शत्रु अग्नि है। आकाश सब का मित्र है।

शत्रु-कुल का होने पर मन्त्र ग्रहण नहीं करना चाहिए। स्वकुल तथा मित्र होने पर मन्त्र ग्रहण करने योग्य होता है।

स्मरणीय है कि सृष्टि पञ्चभूतात्मक है। (१) पृथ्वी, (२) जल, (३) अग्नि (४) वायु तथा (५) आकाश — इन पाँच तत्त्वों द्वारा ही सृष्टि का निर्माण हुआ है। 'कुलाकुल-चक्र' इन्हीं पाँचों तत्त्वों के रहस्य को प्रकाशित करता है।

'कुलाकुल' चक्र द्वारा तत्त्वों का विचार करने के उपरान्त राशि-चक्र, नक्षत्र-चक्र, अकडम-चक्र, अकथह चक्र, ऋणी-धनी चक्र - इनके आधार पर आगे लिखे अनुसार विचार करना चाहिए।

पत्र ३२

राशि - चक्र

वृष: उ ऊ ऋ	मेष: अ आ	मीन: य र ल व
मिथुन: ॠ ऌ ॡ	इ ई	कुम्भ: प फ ब भ म
कर्क: ए ऐ		मकर: त थ द ध न
सिंह: ओ औ		धनु: ट ठ ड ढ ण
कन्या: अं अः श ष स ह ळ क्ष	तुला: क ख ग घ ङ	वृश्चिक: च छ ज झ ञ

<u>राशि-चक्र विचार</u> - अपनी राशि के अनुकूल मन्त्र ग्रहण करने से कल्याण का लाभ होता है, अतः विद्वजनों को उचित है कि वे नाम के आदि वर्ण तथा मन्त्र के आदि वर्ण को लेकर अपनी राशि से मन्त्र-राशि तक गणना द्वारा राशि की शुद्धता का विचार करें।

इस प्रकार की गणना द्वारा छठी, आठवीं तथा बारहवीं राशि स्थित मन्त्र त्याग करने योग्य होते हैं। एक, पाँच और नौ राशि के मन्त्र मित्र, दो, छै: और दस के हितकारी; तीन, सात और ग्यारह के सम और चार, आठ तथा बारह के घातक समझने चाहिए।

जल-राशि स्थित मन्त्र से मन्त्र-सिद्धि, धन-स्थान से धन-वृद्धि, भ्रातृ-स्थान से भ्रातृ-वृद्धि, बन्धु-स्थान से बन्धु-प्रियता एवं पुत्र-स्थान से पुत्र-लाभ होता है।

शत्रु स्थान से शत्रु-वृद्धि, कलत्र-स्थान से मध्यम-फल, मृत्यु-स्थान से मृत्यु, नवम-स्थान से धर्म-वृद्धि, कर्म-स्थान से कार्य-सिद्धि, आय-स्थान से धन-आय-वृद्धि तथा व्यय-स्थान से धन का नाश होता है। राशि-चक्र के बाद नक्षत्र-चक्र का विचार करना चाहिए। नक्षत्र-चक्र के विषय में आगे लिखा जा रहा है।

महा

नक्षत्र - चक्र विचार कोष्ठकम्

अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.
अ आ	इ	ई उ ऊ	ऋ ॠ ऌ ॡ	ए	ऐ	ओ औ	क	ख ग
देव	नर	राक्षस	नर	देव	नर	देव	देव	राक्षस
मघा	पू. फा.	उ. फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठ
घ ङ	च	छ ज	झ ञ	ट ठ	ड	ढ ण	त थ द	ध
राक्षस	नर	नर	देव	राक्षस	देव	राक्षस	देव	राक्षस
मूल	पू. षा.	उ. षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू. भा.	उ. भा.	रेवती
न प फ	ब	भ	म	य र	ल	व श	ष स ह	ळ क्ष अं अः
राक्षस	नर	नर	देव	राक्षस	राक्षस	नर	नर	देव

नक्षत्र-चक्र-विचार - नक्षत्र-चक्र के आधार पर अपना तथा मन्त्र का गण निश्चित करना चाहिए। यदि साधक मनुष्य-गण है तो उसके लिए मनुष्य-गण का मन्त्र ही श्रेष्ठ रहेगा। देव-गण का मन्त्र भी उत्तम रहता है, परन्तु राक्षस-गण के मन्त्र को घातक समझना चाहिए।

देव-गण के लिए मनुष्य-गण का मन्त्र मध्यम होता है तथा राक्षस-गण का शत्रु। देवगण के लिए देवगण शुभ माना गया है।

राक्षस-गण के लिए केवल राक्षस-गण का ही मन्त्र उपयोगी होता है, अन्य गण अनुपयोगी होते हैं।

'नक्षत्र-विचार चक्र' के अनुसार अपना और मन्त्र का नक्षत्र निश्चित करके अपने नक्षत्र से मन्त्र के नक्षत्र तक गिनना चाहिए और उन्हें क्रमशः १ जन्म, २ सम्पत, ३ विपत, ४ क्षेम, ५ प्रत्यरि, ६ साधक, ७ वध, ८ मित्र और ९ परम मित्र समझना चाहिए। यदि मन्त्र इतनी संख्या के भीतर न आये तो उन्हें दुबारा और तिबारा गिन लेना चाहिए।

(अकडम चक्र)

अ क ड म चक्र - इस चक्र का स्वरूप बाँईं ओर प्रदर्शित है। यह चक्र अ क ड म - इन अक्षरों से प्रारंभ होता है, अतः इसका यही नाम भी है।

महा०

इस चक्र में साधक के नाम का अक्षर जिस प्रकोष्ठ में हो, उससे गिनना प्रारम्भ करना चाहिए और मन्त्र का अक्षर जिस प्रकोष्ठ में हो, वहाँ तक गिनते जाना चाहिए।

यदि मन्त्र का अक्षर पहले ही प्रकोष्ठ में हो तो वह 'सिद्ध', दूसरे में हो तो 'साध्य', तीसरे में हो तो 'सुसिद्ध' और यदि चौथे में हो तो 'अरि' समझना चाहिए।

उदाहरण के लिए साधक का नाम 'श्याम' है और 'ऐं' मन्त्र का विचार करना है तो जिस प्रकोष्ठ में 'श्या' है, उससे ग्यारहवें प्रकोष्ठ में 'ऐ' पड़ता है। अतः 'श्याम' के लिए 'ऐं' मन्त्र 'सुसिद्ध' है।

'अरि' मन्त्र त्याज्य तथा 'साध्य' मन्त्र मध्यम होता है। 'सिद्ध' और 'सुसिद्ध' मन्त्र उत्तम होते हैं।

अकडम की भाँति ही एक चक्र 'अ क थ ह' भी है। इसके माध्यम से भी साध्यादि का विचार किया जाता है।

यन्त्र ३५

अ क थ ह चक्र विचार (१)

सिद्ध	साध्य	सुसिद्ध	शत्रु
१ अ क थ ह	२ उ ङ प	३ आ ख द	४ ऊ च फ
५ ओ ड ब	६ ऌ झ म	७ औ ढ श	८ ॡ ञ य
९ ई घ न	१० ऋ ज भ	११ इ ग ध	१२ ॠ छ व
१३ अः त स	१४ ऐ ठ ल	१५ अं ण ष	१६ ए ट र

<u>अ क थ ह चक्र (१)</u> — इस चक्र द्वारा १ सिद्ध, २ सुसिद्ध, ३ साध्य, तथा ४ अरि (शत्रु) मन्त्र का ज्ञान होता है।

सिद्ध-मन्त्र बान्धव, साध्य-मन्त्र सेवक, सुसिद्ध-मन्त्र पोषक तथा शत्रु-मन्त्र घातक होता है।

साधक के नाम का आदि-अक्षर जिस प्रकोष्ठ में हो, उससे मन्त्र के आदि अक्षर वाले प्रकोष्ठ तक गिनते चलें। पहले प्रकोष्ठ में मन्त्राक्षर हो तो 'सिद्ध', दूसरे में हो तो 'साध्य', तीसरे में हो तो 'सुसिद्ध' और चौथे में हो तो 'अरि' समझना चाहिए। इस प्रकार जबतक मन्त्राक्षर न मिलें, तबतक गिनते रहना चाहिए। इसकी गिनती क्रमशः दाँई ओर को चलती है।

<u>अ क थ ह चक्र (२)</u> — 'विश्वसार तन्त्र' में अ क थ ह चक्र का वर्णन निम्नानुसार किया गया है —

एक चतुष्कोण क्षेत्र खींच कर उसे चार कोठों में विभक्त करें। फिर उन चार कोठों को चार-चार भागों में विभक्त करने से सोलह कोठों का चक्र तय्यार हो जाएगा। इस सोलह कोठे वाले चक्र के कोठों में अकारादि सभी वर्णों को प्रदक्षिण क्रम से लिखना चाहिए। यथा—

महा०

पत्र
३३

अकथह चक्र का स्वरूप

अ क थ ह	उ ङ प	आ ख द	ऊ च फ
ओ ड ब	ऌ झ म	औ ढ श	ॡ ञ य
ई घ न	ॠ ज भ	इ ग ध	ऋ छ व
अः त स	ऐ ठ ल	अं ण ष	ए ट र

पहले कोठे में अ, तीसरे में आ, ग्यारहवें में इ, नवे में ई, दूसरे में उ, चौथे में ऊ, बारहवें में ऋ, दसवें में ॠ, छठे में ऌ, आठवें में ॡ, सोलहवें में ए, चौदहवें में ऐ, पाँचवें में ओ, सातवें में औ, पन्द्रहवें में अं तथा तेरहवें में अः लिखें। इस प्रकार सोलह कोठों में सोलह वर्ण लिखकर पुनर्वार उक्त नियम से ककारादि से 'ह' पर्यन्त सभी वर्णों को लिखना चाहिए। जब तक सभी वर्ण शेष न हों, तब तक उक्त रीति से सोलह कोठों में वर्ण लिखते जाँय।

उक्त विधि से चक्र लिखने के बाद मन्त्र-गृहीता के नाम के आदि अक्षर पर्यन्त १ सिद्ध, २ साध्य, ३ सुसिद्ध और ४ अरि- इस क्रम से गणना करनी चाहिए। चक्रमें वर्ण-विन्यास तथा गणना दक्षिणावर्त से करें - यह नियम है।

किस मन्त्र के ग्रहण करने से मन्त्र स्वयं सिद्ध होता है तथा मन्त्र के ग्रहण से कैसा फल होता है, इसे निम्नानुसार समझें— (१) साध्य-मन्त्र ग्रहण करने से जप-होम आदि के द्वारा मन्त्र सिद्ध होता है। (२) सुसिद्ध-मन्त्र ग्रहण करने से मन्त्र तत्काल सिद्ध होता है। (३) अरि-मन्त्र ग्रहण करने से मन्त्र-गृहीता का कुल सहित नाश होता है।

अन्य तन्त्र ग्रंथों में यह कहा गया है -- (१) सिद्ध-मन्त्र बान्धव, साध्य-मन्त्र सेवक, सुसिद्ध-मन्त्र पोषक तथा शत्रु-मन्त्र घातक होता है। (२) बन्धु-मन्त्र जप के द्वारा तथा सेवक-मन्त्र अधिक सेवा के द्वारा सिद्ध होता है। पोषक-मन्त्र पुष्टिकारक तथा घातक-मन्त्र अभीष्ट का नाश करने वाला होता है। (३) सिद्ध-गृह स्थित सिद्ध-मन्त्र जप द्वारा सिद्ध होता है। इसी प्रकार सिद्ध-साध्य मन्त्र दूने जप से तथा सिद्ध-सुसिद्ध मन्त्र आधे जप से सिद्ध होता है। सिद्धारि-मन्त्र का जप करने से बन्धु-विनाश होता है। (४) साध्य-गृह स्थित सिद्ध-मन्त्र दूने जप से सिद्ध होता है। साध्य-साध्य मन्त्र के जपने से कोई फल नहीं होता। साध्य-सुसिद्ध मन्त्र आधे जप से, सुसिद्ध-साध्य मन्त्र दूने जप से तथा सुसिद्ध-सुसिद्ध मन्त्र ग्रहणमात्र से ही सिद्ध होता है। (५) सुसिद्ध-अरि मन्त्र अपने गोत्र का नाश करता है। अरि-सिद्ध मन्त्र पुत्र का, अरि-साध्य मन्त्र कन्या का, अरि-सुसिद्ध मन्त्र पत्नी का तथा अरि-गृह स्थित मन्त्र साधक का नाश कर देता है।

'अ-क-थ-ह चक्र' को देखकर सिद्धादि की गणना से शुद्ध-मन्त्र ग्रहण करना चाहिए। अरि-मन्त्र को कभी ग्रहण नहीं करना चाहिए। यदि भ्रमवश अरि-मन्त्र ग्रहण करले तो उसे त्याग देना उचित है।

अरि-मन्त्र को त्यागने की दो रीतियाँ बताई गई हैं -- (१) एक द्रोण परिमाण गाय के दूध के ऊपर १०८ बार अरि-मन्त्र जप कर उस दूध को स्वयं पीले, फिर १०८ बार वही मन्त्र जप कर मन्त्रोच्चारण पूर्वक उसका परित्याग कर दे। अरि-मन्त्र को जान लेने पर फिर उसका जप नहीं करना चाहिए तथा उस मन्त्र को त्याग कर उसी देवता का दूसरा मन्त्र ग्रहण करना चाहिए। (२) बरगद के पत्ते पर अरि-मन्त्र लिख कर उसे नदी के जल में डाल दें। इस प्रकार अरि-मन्त्र का परित्याग करना चाहिए।

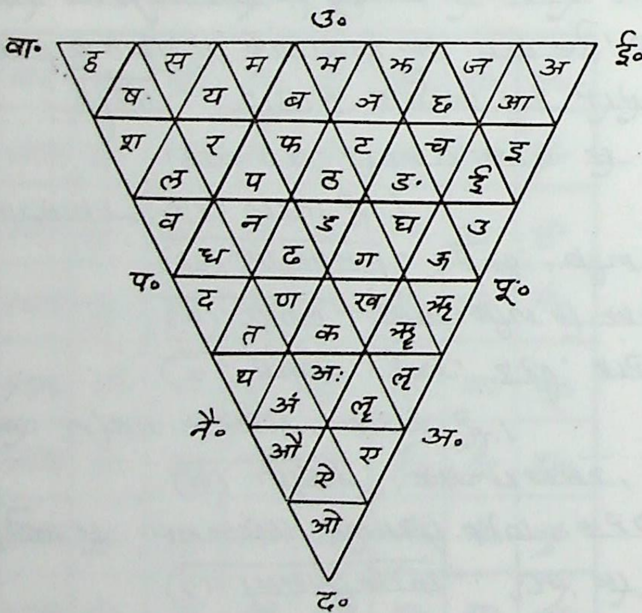
ऋणी-धनी चक्र

६	६	६	०	३	४	४	०	०	०	३
अ आ	इ ई	उ ऊ	ऋ ॠ	ऌ ॡ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः
क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट
ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न	प	फ
ब	भ	म	य	र	ल	व	श	ष	स	ह
२	२	५	०	०	२	१	०	४	४	१

<u>ऋणी-धनी चक्र विचार</u>- बाँई ओर प्रदर्शित ऋणी-धनी चक्र 'रुद्रयामल' की प्रक्रिया द्वारा अङ्कित है। इसमें ऊपर मन्त्र-वर्णों के अङ्क तथा नीचे साधक-वर्णों के अङ्क हैं। मन्त्र तथा साधक के स्वर तथा वर्ण अलग-अलग करके प्रत्येक के अङ्क अलग-अलग जोड़ लेने चाहिए। फिर दोनों में अलग-अलग ८ का भाग दें। शेष में मन्त्र का अङ्क अधिक हो तो वह ऋणी होता है और कम होने पर धनी होता है। ऋणी-मन्त्र से बहुत शीघ्र सिद्धि मिलती है, बराबर होने पर भी उत्तम रहता है, धनी होने पर विलम्ब से सिद्धि मिलती है तथा शून्य शेष बचे तो उसे मृत्युकारक समझना चाहिए।

कुछ मन्त्र इसके अपवाद भी होते हैं। ऐसे मन्त्र हैं-- १. जो स्वप्न में प्राप्त हुआ हो, २. जिसकी दीक्षा स्त्री-गुरु ने दी हो, ३. जिसमें तीन ही अक्षर हों। इनके अतिरिक्त वैदिक-मन्त्रों के लिए भी सिद्धादि-शोधन की आवश्यकता नहीं होती। हंस मन्त्र, पंचाक्षर मन्त्र, अष्टाक्षर मन्त्र तथा एक दो तीन आदि बीजरूप मन्त्र — इनमें भी सिद्धादि शोधन की आवश्यकता नहीं पड़ती। श्रीकृष्ण मन्त्र, गोपाल मन्त्र के अतिरिक्त दश महाविद्या तथा

जनन - यन्त्र



<u>मन्त्रों के दस संस्कार</u> - दोष-निवृत्ति हेतु मन्त्रों के दस संस्कार किये जाते हैं— १. जनन, २. दीपन, ३ बोधन, ४. ताडन, ५. अभिषेक, ६. विमलीकरण, ७. जीवन, ८. तर्पण, ९. गोपन तथा १०. आप्यायन। इनके विषय में क्रमशः निम्नानुसार समझें—

<u>(१) जनन</u>— भोजपत्र के ऊपर गोरोचन तथा कुंकुम-चंदन आदि से आत्माभिमुख त्रिकोण लिखें। फिर तीनों कोणों में ६-६ समान रेखाएं खींचें। ऐसा करने पर ४९ त्रिकोण कोष्ठ तय्यार होंगे। उनमें ईशान कोण से मातृका वर्ण लिखकर देवताओं का आवाहन पूजन करके मन्त्र के एक-एक वर्ण का उद्धार करके अलग पत्र पर लिखें। ऐसा करने से 'जनन' नामक पहला संस्कार होता है। (देखिए— बाँई ओर का चित्र)। मन्त्रोद्धार के बाद यन्त्र को धोकर जल में डालदें।

<u>(२) दीपन</u> - अपने मन्त्र को 'हंस' मन्त्र से सम्पुटित करके एक हजार की संख्या में जपने से 'दीपन-संस्कार' होता है।

<u>(३) बोधन</u>— 'हूं' बीज से सम्पुटित मन्त्र का पाँच हजार की संख्या में जप करने से 'बोधन' कहलाता है। <u>(४) ताडन</u> - 'फट्' से संपुटित मन्त्र का एक हजार की संख्या में जप करने से 'ताडन'-संस्कार सम्पन्न होता है।

(५) अभिषेक - भोजपत्र के ऊपर अपना मन्त्र लिख कर 'ऐं हंसः ओं' मन्त्र से एक हजार बार अभिमन्त्रित जल से इसी मन्त्र के द्वारा अपने मन्त्र का अभिषेक करना 'अभिषेक - संस्कार' कहलाता है।

(६) विमलीकरण - 'ओं त्रों वषट्' इस मन्त्र से सम्पुटित अपने मन्त्र का एक हजार की संख्या में जप करना 'विमली करण' कहलाता है।

(७) जीवन - 'स्वधा वषट्' से सम्पुटित अपने मन्त्र का एक हजार की संख्या में जप करने को 'जीवन संस्कार' कहते हैं।

(८) तर्पण - दूध, दही, शहद अथवा जल से, मूलमन्त्र से १०० बार तर्पण करना ही 'तर्पण' है।

(९) गोपन - माया-बीज से सम्पुटित अपने मन्त्र का एक हजार की संख्या में जप 'गोपन' कहलाता है।

(१०) आप्यायन - 'ह्सौः' बीज से सम्पुटित अपने मन्त्र का एक हजार की संख्या में जप करना 'आप्यायन' कहा जाता है।

उक्त दस - संस्कार करने से मन्त्र शीघ्र सिद्ध हो जाता है।

दीक्षा - दीक्षा के ३ मुख्य भेद होते हैं - (१) शाक्ती, (२) शाम्भवी एवं (३) मान्त्री। शाक्ती - दीक्षा में गुरु शिष्य के शरीर में कुण्डलिनी को जगा कर, अपनी शक्ति से उसे परम शिव में मिला देते हैं। शाम्भवी - दीक्षा में गुरु अपने स्पर्श मात्र से ही शिष्य को अपने स्वरूप में स्थित कर देते हैं। मान्त्री - दीक्षा मन्त्र, पूजा, आसन, न्यास एवं ध्यान द्वारा होती है। इसमें गुरु शिष्य को मन्त्रोपदेश करते हैं, इसमें पुरश्चरणादि से सिद्धि मिलती है।

अर्ध यामेश चक्र

वार	सू०	चं०	मं०	बु०	बृ०	शु०	श०
४दण्ड	सू०	चं०	मं०	बु०	बृ०	शु०	श०
४दण्ड	शु०	श०	सू०	चं०	मं०	बु०	बृ०
४दण्ड	बु०	बृ०	शु०	श०	सू०	चं०	मं०
४दण्ड	चं०	मं०	बु०	बृ०	शु०	श०	सू०
४दण्ड	श०	सू०	चं०	मं०	बु०	बृ०	शु०
४दण्ड	बृ०	शु०	श०	सू०	चं०	मं०	बु०
४दण्ड	मं०	बु०	बृ०	शु०	श०	सू०	चं०
४दण्ड	रा०	रा०	रा०	रा०	रा०	रा०	रा०

<u>अर्धयामेश विचार</u>- जिसतरह ४ प्रहर का एक दिन होता है, उसी प्रकार एक दिन में ८ अर्द्ध-प्रहर होते हैं। यदि दिनमान ३२ दण्ड का हो तो एक अर्द्ध-प्रहर ४ दण्ड का होगा। दिनमान-प्रमाण में ८ का भाग देने पर जो लब्धि होगी, वही एक अर्द्धप्रहर का मान होता है।

रवि आदि सात वारों में प्रत्येक अर्द्धप्रहर का स्वामी कौन-सा ग्रह होगा - इस पर विचार करते हुए केवल रविवार के दिन के प्रत्येक अर्द्धप्रहर के स्वामियों के विषय में यहाँ बताया जा रहा है।

रविवार में १ से लेकर ८ अर्द्धप्रहरों के स्वामी क्रमशः सूर्य, शुक्र, बुध, सोम, शनि, गुरु, मङ्गल तथा राहु ग्रह होते हैं। इनमें जिस विभाग का स्वामी शनि होता है, उसे 'वारवेला' कहते हैं और वह समस्त शुभकार्यों में त्याज्य है। शनि, सूर्य तथा राहु को पीठ पीछे रखना शुभ होता है।

रविवार के अर्द्ध-यामेशों को देखने से यह पता चलेगा कि रविवार के अतिरिक्त जिस दिन का अर्द्ध-यामेश जानना हो तो पहला अर्द्ध-यामेश तो दिन का स्वामी ही रहेगा और बाद के अर्द्ध यामों के स्वामी ६ संख्या वाले ग्रह होंगे। इसी आधार पर रविवार से लेकर शनिवार तक के अर्द्ध यामों के स्वामी बाँई ओर प्रदर्शित चक्र में दिए गए हैं।

यन्त्र ४८

प्रथम जय-चक्र

१०	६	७	१२	४	११	१५	२४	१८	४	२७	२४
अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	लृ	ए	ऐ	ओ
औ	अं	अः	क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ
ञ	ट	ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न	प
फ	ब	भ	म	य	र	ल	व	श	ष	स	ह

प्रथम जय-चक्र विचार- पूर्व से पश्चिम तक तेरह रेखाऐं सीधी खींचकर, फिर उत्तर से दक्षिण तक छः रेखाऐं तिरछी खींचें। इस प्रकार जिस जय-चक्र का निर्माण हो, उसमें 'अ' से 'ह' तक के अक्षरों को लिखें तथा १०।६।७।१२।४।११।१५।२४।१८।४।२७।२४ - इन अङ्कों का भी न्यास करें। अङ्कों को ऊपर लिखकर, अकारादि अक्षरों को उसके नीचे लिखना चाहिए। इस प्रकार जो चक्र तय्यार होगा, उसके स्वरूप को बाँईं ओर प्रदर्शित किया गया है।

शत्रु के नामाक्षर के स्वर तथा व्यञ्जन वर्ण के सामने जो अङ्क हों, उन सबको जोड़कर पिण्ड बनायें, उसमें ७ का भाग देने पर १ आदि शेष के अनुसार सूर्यादि ग्रहों का भाग जानना चाहिए। १ शेष में सूर्य, २ में चन्द्र, ३ में मंगल, ४ में बुध, ५ में गुरु, ६ में शुक्र तथा ७ में शनि का भाग होता है - यह समझना चाहिए।

जब सूर्य, शनि और मंगल का भाग आये तो विजय होती है तथा शुभ ग्रह के भाग में सन्धि होती है।

'अग्नि पुराण' के १३१ वें अध्याय में 'इस जय-चक्र' का उल्लेख है। इसी में एक अन्य 'जयचक्र' का भी वर्णन मिलता है, उसे अगले पृष्ठ पर देखें।

म०१०

पत्र ४३

द्वितीय जय-चक्र

१४	२७	२	१२	१५	६	४	३	१७	८	८
अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	ए
ऐ	ओ	औ	क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ
ट	ठ	ड	ढ	त	थ	द	ध	न	प	फ
ब	भ	म	य	र	ल	व	श	ष	स	ह

द्वितीय जय-चक्र विचार - पूर्व से पश्चिम तक बारह रेखाएँ लिखे तथा छः रेखाएँ याम्योत्तर करके लिखी जाँय। इस प्रकार से दूसरा 'जय चक्र' बनता है।

इस चक्र में सर्व प्रथम ऊपर वाले कोष्ठक में १४, २७, २, १२, १५, ६, ४, ३, १७, ८, ८ -- इन अङ्कों को लिखें तथा कोष्ठक में 'अ' आदि स्वरों से लेकर 'ह' तक के अक्षरों को लिखें। फिर नाम के अक्षरों द्वारा बने हुए पिण्ड में ८ से भाग दे, १ आदि शेष के अनुसार क्रमशः वायस, मण्डल, रासभ, वृषभ, कुञ्जर, सिंह, खर और धूम्र - ये आठ शेषों के नाम होते हैं। इनमें 'वायस' से प्रबल 'मण्डल' और 'मण्डल' से प्रबल 'रासभ' - इस प्रकार उत्तरोत्तर बली होते हैं। संग्राम में यायी तथा स्थायी नामाक्षर के अनुसार मण्डल बनाकर एक दूसरे से बली तथा दुर्बल का ज्ञान प्राप्त कर लेना चाहिए।

उक्त विधि से तय्यार होने वाले द्वितीय जय-चक्र का स्वरूप बाँई ओर प्रदर्शित है। कम शेष से अधिक शेष बली होता है।

युद्ध में विजय-प्राप्ति की कामना वालों को जय-चक्र के अनुसार जय-पराजय का ज्ञान प्राप्त कर लेना आवश्यक है।

महा०

यन्त्र
४४

सेवा-चक्र

अ	इ	उ	ए	ओ
क	ख	ग	घ	च
छ	ज	झ	ट	ठ
ड	ढ	त	थ	द
ध	न	प	फ	ब
भ	म	य	र	ल
व	श	ष	स	ह
सिद्ध 1	साध्य 2	सुसिद्ध 3	शत्रु 4	मृत्यु 5

सेवा-चक्र विचार- पूर्व से पश्चिम को ६ सीधी रेखाऐं तथा उत्तर से दक्षिण को ८ तिरछी रेखाऐं खींचें। इस प्रकार 35 कोष्ठकों वाला सेवा-चक्र तय्यार हो जाएगा। इस चक्र के ऊपरी कोष्ठकों में पाँच स्वरों को लिखकर, पुनः स्पर्श वर्णों को लिखना चाहिए अर्थात 'क' से लेकर 'ह' तक के वर्णों का न्यास करना चाहिए। उनमें तीन वर्ण- ङ, ञ तथा ण'— इन्हें छोड़कर लिखना चाहिए। नीचे वाले कोष्ठों में क्रमशः सिद्ध, साध्य, सुसिद्ध, शत्रु तथा मृत्यु- इन्हें लिखना चाहिए। इस विधि से जो चक्र बनेगा, उसका स्वरूप बाँई ओर प्रदर्शित किया गया है।

इस चक्र में शत्रु तथा मृत्यु नामक कोष्ठक में जो स्वर तथा व्यञ्जन हैं, उनका प्रत्येक कार्य में परित्याग कर देना चाहिए; परन्तु सिद्ध, साध्य, सुसिद्ध, शत्रु एवं मृत्यु - इन नामों वाले कोष्ठ में यदि सेवक तथा सेव्य के नाम का आदि अक्षर पड़े तो उसे सर्वथा शुभ समझना चाहिए। इसमें द्वितीय कोष्ठक पोषक, तृतीय धनदायक, चतुर्थ आत्मनाशक तथा पंचम मृत्युदायक बताया गया है।

इस चक्र द्वारा मित्र, नौकर एवं बान्धव से लाभ-हानि के सम्बन्ध में विचार करना चाहिए अर्थात किससे सम्बन्ध रखना लाभदायक हो सकता है- यह देखना चाहिए।

महा०



<u>नर-चक्र</u> - नर-चक्र द्वारा घाताङ्ग-निर्णय किया जाता है। इसकी विधि यह है कि एक मनुष्य के आकार का चक्र (चित्र) बनाए तथा उसमें नक्षत्रों का न्यास करे। सूर्य के नक्षत्र से नाम के नक्षत्र तक गिन कर संख्या जान लेनी चाहिए।

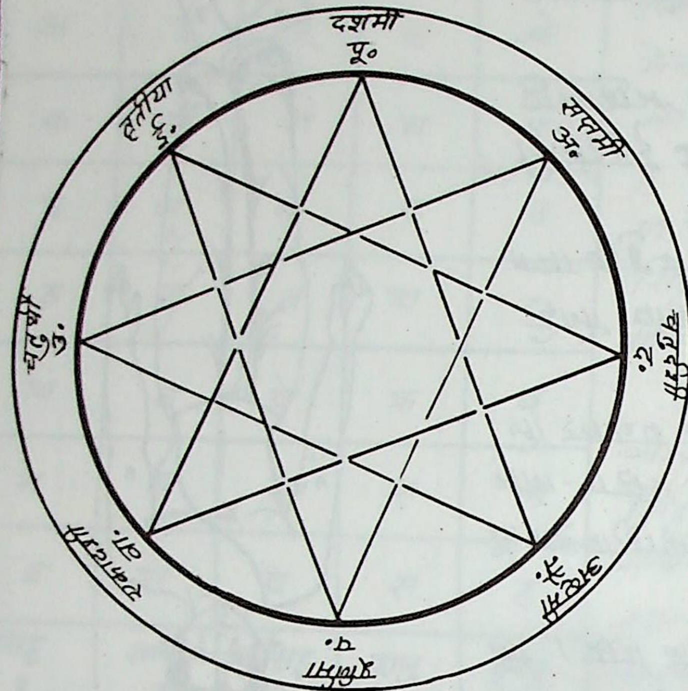
पहले तीन नक्षत्रों को नर के मस्तक पर, एक मुख पर, दो नेत्रों में, चार-चार हाथों में, दो कानों में, पाँच हृदय में तथा छः पाँवों पर लिखे। फिर नाम-नक्षत्र को स्पष्ट रूप से हृदय में न्यसित करे। इस प्रकार नर-चक्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई ओर प्रदर्शित किया गया है।

उक्त नर-चक्र में नर के नेत्र, सिर, दाँया कान, दाँया हाथ, दोनों पाँव, हृदय, ग्रीवा, बाँया हाथ तथा गुल्फाङ्ग में जहाँ शनि, मंगल, सूर्य तथा राहु नक्षत्र पड़ते हों, युद्ध में उसी अंग में घात (चोट) होता है।

'अग्नि पुराण' के १३१ वें अध्याय में इसका वर्णन किया गया है, किसी युद्ध आदि के लिए प्रस्थान अथवा प्रारम्भ करते समय इस चक्र के द्वारा शुभाशुभ का विचार करना चाहिए।

<u>अष्ट गन्ध</u> - यन्त्रादि के निर्माण में अष्टगन्ध का प्रयोग किया जाता है। अष्टगन्ध में यह वस्तुएँ होती हैं-- (१) सफेद चन्दन, (२) लाल चन्दन, (३) केसर, (४) कुंकुम, (५) कपूर, (६) कस्तूरी, (७) अगर और (८) तगर।

विष्टि - राहु चक्र



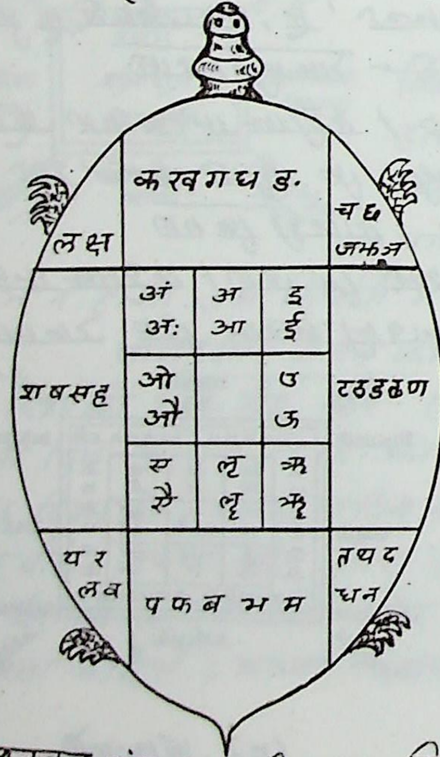
विष्टि-राहु चक्र विचार - बाँई ओर प्रदर्शित चित्र के अनुसार रेखाएँ खींच कर 'विष्टि राहु चक्र' तय्यार करें। इन ८ रेखाओं पर विष्टि (भद्रा) के साथ महाबली राहु विचरण करते हैं।

कृष्णपक्ष की तृतीया आदि तिथियों में विष्टि-राहु की स्थिति ईशान कोण में होती है तथा सप्तमी आदि तिथियों में दक्षिणदिशा में (इसीप्रकार शुक्लपक्ष की अष्टमी आदि में नैर्ऋत्य कोण में तथा चतुर्थी आदि में उत्तर दिशा में होती है) बाँई ओर का चित्र देखें।

कृष्ण एवं शुक्ल पक्ष में वायु के आश्रित रहने वाले समु-ख राहु शत्रुओं का नाश करते हैं।

विष्टि राहु-चक्र की पूर्वादि दिशाओं में इन्द्र आदि आठ दिक्पालों, महाभैरव आदि आठ महाभैरवों, ब्रह्माणी आदि आठ शक्तियों तथा सूर्य आदि आठ ग्रहों को स्थापित कर, पूर्व आदि प्रत्येक दिशा में ब्रह्माणी आदि आठ शक्तियों के अष्टकों की भी स्थापना करनी चाहिए। दक्षिण आदि दिशाओं में वातयोगिनी का उल्लेख करें। वायु जिस दिशा में बहती है, उसी दिशा में इन सब के साथ रह कर राहु शत्रुओं का संहार करता है। अग्निपुराण के १४२ वें अध्याय में इसका उल्लेख है।

कूर्म - चक्र



<u>कूर्म-चक्र निर्णय</u> - जिस स्थान, क्षेत्र, नगर अथवा गृह में पुरश्चरण करना हो, उसके ९ समान भागों की कल्पना करके, मध्य-भाग में स्वर लिखे तथा पूर्वादि क्रम से कवर्गादि लिख कर ईशान कोण में 'ल क्ष' लिखे। यथा-

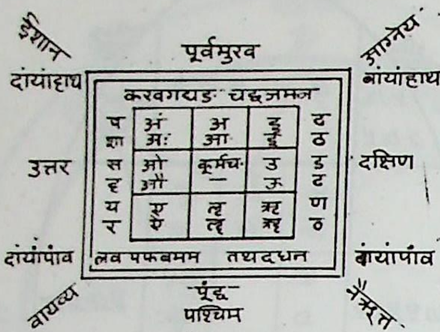
जिस कोष्ठक में पहला अक्षर हो, उसे मुख समझना चाहिए, उसके दोनों ओर के कोष्ठक दो भुजा, फिर दोनों ओर के दो कोष्ठक कुक्षि, फिर दोनों ओर के दो कोष्ठक पाँव तथा शेष कोष्ठक पुच्छ समझने चाहिए।

कूर्म-चक्र के मुख-स्थान में जप करने से सिद्धि प्राप्त होती है। भुजा में जप करने से स्वस्थ-जीवन, कुक्षि में जप करने से उदासीनता, पाँवों में जप करने से दुःख तथा पुच्छ में जप करने से बध-बन्धनादि की पीड़ा होती है।

<u>अन्य</u> - इनके अतिरिक्त १. मन्त्र-चैतन्य, २. मन्त्रार्थ, ३ मन्त्रों की कुल्लुका, ४ मन्त्र-सेतु, ५. महासेतु, ६. निर्वाण, ७. मुख-शोधन, ८ प्राणयोग, ९. मन्त्र-दोष तथा १०. मन्त्र-सिद्धि के उपायों की जानकारी प्राप्त करना भी आवश्यक है। ये सभी विषय मन्त्र-साधकों के लिए जानने योग्य हैं, अतः उन्हें इस हेतु 'मन्त्र महोदधि' आदि ग्रंथों का अध्ययन करना चाहिए।

प्रस्तुत ग्रंथ का प्रतिपाद्य-विषय मन्त्र-साधन होने के कारण इस विषय को संक्षेप में ही प्रस्तुत किया गया है।

कूर्म-चक्र (२)

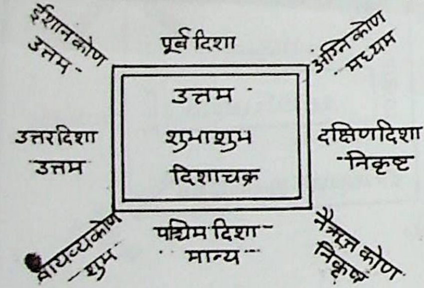


कूर्म-चक्र विचार (२) - कूर्म-चक्र का एक दूसरा चित्र (बाँई ओर) देकर विषय-वस्तु को और अधिक सरलता से समझाने का प्रयत्न किया गया है। जिस स्थान पर मन्त्र अथवा यन्त्र साधन अथवा पूजन के लिए बैठे, वहाँ के नौ भाग करके, स्थान के नाम से मस्तक के अक्षर को मिला कर, अक्षर को जिस भाग में देखे, उसके भी नौ भाग करले। फिर, पूर्व अक्षर में जो मात्रा हो उसी मात्रा के स्थान में आसन बिछाये। जैसे- कोठे का पहला अक्षर 'क' कूर्म के मस्तक पर है तो उस स्थान के नौ भाग करके देखे कि 'ओ' की मात्रा उत्तर दिशा वाले बीच के स्थान में है। बस, उसी स्थान को कूर्म का सिर जानकर वहाँ आसन बिछाना चाहिए। कूर्म-चक्र में जितने भी स्थान हैं, उन सब को कूर्म का सिर ही समझना चाहिए। जहाँ भी अक्षर ठीक बैठता हो, वहीं आसन बिछाना चाहिए।

जप की दिशायें - वशीकरण यन्त्र को पूर्व दिशा की ओर मुँह कर के, अभिचार-कर्म के लिए दक्षिण की ओर, धन-प्राप्ति की अभिलाषा से पश्चिम की ओर तथा शान्ति-कर्म के लिए उत्तर दिशा की ओर मुँह करके जप करना चाहिए। उत्तर दिशा की ओर मुँह करके जप करने से आयु की वृद्धि तथा पुष्टि होती है।

आसन-विचार - पुष्टिकर्म के लिए 'पद्मासन' से, शान्ति-कर्म के लिए 'स्वस्तिकासन' से, विद्वेषण-कर्म में 'कुक्कुटासन' से, उच्चाटन-कर्म में 'अर्द्ध-स्वस्तिकासन' से तथा मारण-कर्म के लिए 'विकटासन' से बैठना चाहिए। शान्ति-कर्म के लिए 'भद्रासन' भी प्रशस्त कहा गया है। ये आसन योग-क्रियाओं के हैं।

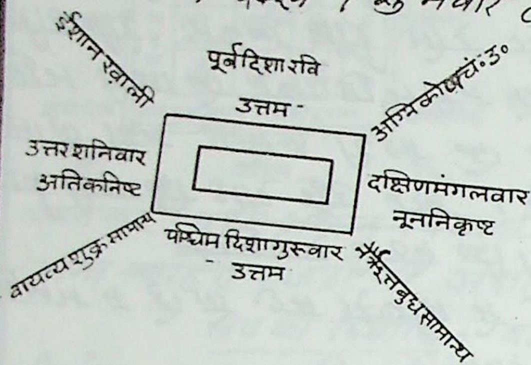
प्राप्त की जा सकती है। दूसरे प्रकार के आसन किसी वस्तु द्वारा निर्मित होते हैं, जिन्हें बिछाकर, ऊपर बैठा जाता है। ऐसे आसनों का प्रयोग निम्नानुसार करना चाहिए –



मारण-प्रयोग के लिए भैंसे के चमड़े के आसन पर बैठ कर प्रयोग करें। विद्वेषण प्रयोग के लिए घोड़े के चमड़े का आसन; बन्धन-मोक्ष प्रयोग के लिए हाथी के चमड़े का आसन; वशीकरण के लिए मेढ़े के चमड़े का आसन; आकर्षण प्रयोग के लिए बाघ के चमड़े का आसन तथा उच्चाटन-कर्म के लिए ऊँट के चमड़े का आसन प्रयोग में लाना चाहिए। यदि किसी समय उपयुक्त आसन सुलभ न हो तो उस स्थिति में कुश के आसन का प्रयोग किया जा सकता है।

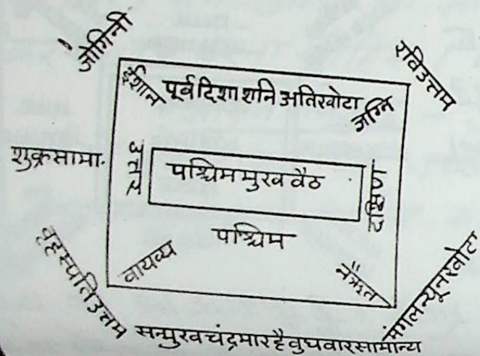
<u>वारानुसार बैठने की विधियाँ</u> – यन्त्र लिखने तथा मन्त्र जपने के लिए जिस दिन बैठे, उसदिन पूर्व दिशा की ओर मुँह रखे। दूसरे दिन अग्निकोण में, फिर दक्षिण दिशा की ओर रखे। इस प्रकार सातों दिन प्रत्येक दिशा को बदलता रहे। ईशानकोण को खाली रहने दे। शुभ-कार्य हो तो चन्द्रमा, शुभ दिशा को तथा शुभदिन को सामने रखना चाहिए। योगिनी, दिशाशूल तथा निकृष्ट वार को पीठ पीछे अथवा बाँई ओर रखना चाहिए। निकृष्ट-कार्य हो तो योगिनी, निकृष्टवार एवं दिशाशूल को सामने अथवा दाँई ओर रखना चाहिए। चन्द्रमा तथा मध्यमवार को पीछे अथवा बाँई ओर रखना चाहिए। मध्यम-कार्य हो तो चन्द्रमा और मध्यमवार को सामने अथवा दाँई ओर रखवें

तथा योगिनी को पीछे की ओर रखें। शुभ वार यदि कोण में हो तो सामने के कोण में और निकृष्ट वार हो तो दिशा में रखें। शुभ वार हो तो सामने की दिशा में निकृष्ट वार को रखें। पिछले पृष्ठ में प्रदर्शित 'शुभाशुभ दिशा-चक्र' द्वारा विषय को भलीभाँति समझ लें।



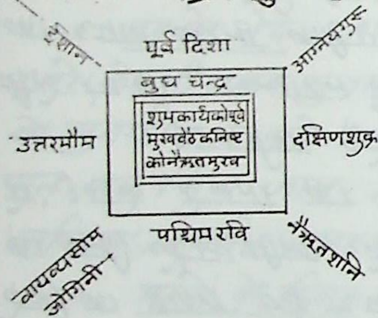
किसी कार्य के लिए रविवार को बैठना हो तो उस समय बाँई ओर प्रदर्शित चित्र के अनुसार बैठक रखनी चाहिए।

यदि किसी कार्य के लिए शनिवार को बैठना हो तो बाँई ओर को नीचे प्रदर्शित चित्र की स्थिति में बैठना चाहिए। पश्चिम की ओर मुँह करके बैठने से चन्द्रमा, सामान्य दिशा एवं सामान्य वार सामने, शुक्र सामान्य वार दाँये, योगिनी ईशान कोण में, पीठ पीछे के दिन सामान्य, अत्यन्त निकृष्ट दिन शनिवार पीठ पीछे, उत्तम वार चन्द्र बाँई ओर तथा शुक्र उत्तर की ओर सामान्य रहता है। योगिनी की दृष्टि बाँई ओर मङ्गल पर रहती है तथा बृहस्पतिवार रविवार को देखता है।



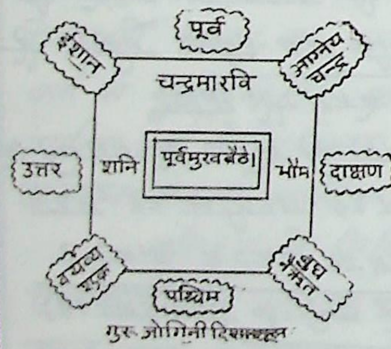
यदि किसी अधिकार वृद्धि के लिए बुधवार के दिन बैठना हो तो अगले पृष्ठ पर प्रदर्शित चित्र के अनुसार बैठना चाहिए, इससे कार्य-सिद्धि में शीघ्रता होती है। इस स्थिति में बैठने से चन्द्रमा का

शुक्र दाँये रहते हैं, मंगल बाँये रहता है एवं योगिनी तथा शनि पीठ पीछे रहते हैं। ईशान-मुख बैठने से चन्द्र, बुध तथा गुरु दाँये; योगिनी बाँये, शनि पीछे तथा मंगल भी बाँई ओर तुल्य रहते हैं।



मारण, उच्चाटन का आरंभ करना हो तो नैऋत्य-मुख बैठने से शनि सामने, योगिनी दाँये, बृहस्पति बाँये तथा चन्द्रमा बाँई ओर रहते हैं। (ऊपर का चित्र)

किसी अधिकार की प्राप्ति हेतु कहीं जाने का उपाय करना हो तो रविवार के दिन बैठना चाहिए। मुँह पूर्व की ओर, चन्द्रमा और रवि सामने, बृहस्पति, योगिनी और दिशाशूल पीठ पीछे, शनि बाँई ओर रहने से मनोरथ सिद्ध होता है (बाँई ओर नीचे वाला चित्र देखें)। इस स्थिति में योगिनी सामने, शनि दाँये, दिशाशूल बाँये, बुध तथा शुक्र पीछे; सूर्य-चन्द्र उत्तम तथा शुक्र पर मंगल की दृष्टि रहती है।



किसी मनोरथ, वैर और क्रोध के लिए शुक्ल पक्ष के पहले गुरुवार को बाँये स्वर में बैठना चाहिए। मुँह पूर्व दिशा की ओर तथा योगिनी शुभ कोण में और शुभ दिशा में हो तो बहुत शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है। इस स्थिति में चन्द्रमा, बृहस्पति सामने; चन्द्र पीछे; योगिनी ईशान में; शनि बाँये, दिशाशूल दाँये; शुक्र, मंगल सामने के कोण में; रवि तथा योगिनी आमने-सामने के कोणों में तथा बुध और शनि आमने-सामने की दिशाओं में रहते हैं।

अन्य ज्ञातव्य - यन्त्र-मन्त्र साधक को निम्नलिखित विषयों का ज्ञान होना भी आवश्यक है -

(१) षड्-कर्मों के लिए ज्ञेय पदार्थ - षड् कर्मों के लिए १९ पदार्थों की जानकारी अवश्य होनी चाहिए -

१ देवता, २ देवता का वर्ण, ३ ऋतु, ४ दिशा, ५ दिन, ६ आसन, ७ विन्यास, ८ मण्डल, ९ मुद्रा, १० अक्षर, ११ भूतोदय, १२ समिधा, १३ माला, १४ अग्नि, १५ लेखन-द्रव्य, १६ कुण्ड, १७ स्रुवा, १८ स्रुचि, १९ लेखनी। इन में से कुछ के विषय में पहले लिखा जा चुका है। अन्यों के विषय में यहाँ लिखा जा रहा है।

देवता और उनके वर्ण - रति, वाणी, रमा, ज्येष्ठा, दुर्गा, काली - ये सब यथाक्रम से षड् कर्मों के देवता हैं अर्थात् शान्ति-कर्म की अधिष्ठात्री देवी 'रति' है। स्तम्भन की 'लक्ष्मी', वशीकरण की सरस्वती, विद्वेषण की ज्येष्ठा, उच्चाटन की दुर्गा तथा मारण की भद्रकाली हैं। अतः जो भी कर्म करना हो उसकी अधिष्ठात्री देवी का पूजन एवं ध्यान सर्वप्रथम करना आवश्यक है। रति का वर्ण श्वेत, सरस्वती अरुण, लक्ष्मी का हल्दी जैसा पीला, ज्येष्ठा का मिश्रित, दुर्गा का काला तथा काली का धूसर है। प्रत्येक कार्य के आरंभ में उसके देवता का उसके अपने वर्ण जैसे ही रंगीन पुष्पों द्वारा पूजन करना चाहिए।

आकर्षण, क्षोभन तथा वशीकरण में लाल रंग का, शान्ति-कर्म में श्वेत रंग का, स्तम्भन में पीले रंग का, उच्चाटन में धूम्रवर्ण का, विद्वेषण में गहरे लाल रंग का तथा मारण-कर्म में काले वर्ण का ध्यान करना चाहिए।

षट् कर्मों की दिशाएं - शान्ति-कर्म की ईशान, वशीकरण की उत्तर, स्तम्भन की पूर्व, विद्वेषण की नैर्ऋत्य, उच्चाटन की वायव्य तथा मारण की स्वामिनी आग्नेय दिशा हैं। जैसा कर्म करना हो, उसी के अनुरूप

दिशा में मुँह करके बैठना चाहिए।

<u>जप के भेद</u> - जप तीन प्रकार के होते हैं--(१) वाचिक, (२) उपांशु तथा (३) मानसिक। जप करते समय दूसरे को भी शब्द सुनाई दे, उसे 'वाचिक' कहते हैं। जप करते समय स्वयं को तो शब्द सुनाई दे, परन्तु दूसरे को सुनाई न दे, उसे 'उपांशु' कहते हैं। जिस जप में केवल होंठ तथा जिह्वा हिलती हुई दिखाई दे और मन-ही-मन जप किया जाय, किसी को भी शब्द सुनाई न दे, उसे 'मानसिक' जप कहते हैं। मारण आदि कर्मों में 'वाचिक', शान्ति तथा पुष्टि कर्मों में 'उपांशु' तथा मोक्ष-कर्म में 'मानसिक' जप करना श्रेष्ठ माना गया है।

<u>मन्त्रों के लिङ्ग भेद</u> - 'स्वाहा' अन्त वाले मन्त्र 'स्त्री-लिङ्ग', 'नमः' अन्त वाले 'नपुंसक लिङ्ग' तथा 'हुं फट्' अन्त वाले 'पुल्लिङ्ग' संज्ञक होते हैं। विद्वेषण, उच्चाटन तथा बन्धन आदि में 'हुं' पद का जप, छेदन में 'फट्' का, अभीष्ट तथा ग्रह-निवारण में 'हुं फट्' का, आयन तथा बोधन में 'वौषट्' का, अग्नि-कर्म में 'स्वाहा' का तथा सब प्रकार के पूजन में 'नमः' पद का प्रयोग करना चाहिए। वशीकरण तथा शान्ति-कर्म में 'पुल्लिङ्ग' संज्ञक, क्षुद्र-कर्म में 'स्त्री-लिङ्ग' संज्ञक तथा अन्यत्र नपुंसक संज्ञक मन्त्रों का प्रयोग करना चाहिए।

<u>कलियुग में सिद्धिदायक मन्त्र</u> - नृसिंह का त्र्यक्षर, एकाक्षर एवं अनुष्टुप - ये तीन प्रकार के मन्त्र, एकाक्षर तथा अनुष्टुप - ये दो प्रकार के अर्जुन (कार्तवीर्यार्जुन) मन्त्र, द्विविध हयग्रीव मन्त्र, चिन्तामणि मन्त्र तथा क्षेत्रपाल, भैरव, यक्षराज, गोपाल, गणपति, चेटका यक्षिणी, मातङ्गी, सुन्दरी, श्यामा, तारा, कर्णपिशाचिनी, शबरी, एकजटा, वामाकाली, नील सरस्वती, त्रिपुरा एवं कालरात्रि के मन्त्र कलियुग में अभीष्ट फल देते हैं।

विभिन्नवर्णों को देय मन्त्र - अघोर, दक्षिणामूर्ति, उमामहेश्वर, हयग्रीव, वाराह व लक्ष्मीनारायण के मन्त्र, प्रणव आदि चार वर्ण वाले अग्नि के मन्त्र, सूर्य के मन्त्र, प्रणव सहित गणपति एवं हरिद्रा गणपति के मन्त्र, अष्टाक्षर सूर्य मन्त्र, षडक्षर राम मन्त्र, नृसिंह मन्त्र, प्रणव एवं वैदिक मन्त्र - ये सब शूद्रों के अतिरिक्त तीनों वर्णों के लोगों को देय हैं। सुदर्शन, पाशुपत, आग्नेयास्त्र तथा नृसिंह मन्त्र केवल ब्राह्मण तथा क्षत्रियों को ही देय हैं, अन्यों को नहीं। छिन्नमस्ता, मातङ्गी, त्रिपुरा, कालिका, शिव, लघुश्यामा, कालरात्रि, गोपाल, राम, उग्रतारा तथा भैरव के मन्त्र चारों वर्णों को देय हैं।

ब्राह्मणों को माया (ह्रीं), काम (क्लीं), श्री (श्रीं) तथा वाग् (ऐं) बीज देने चाहिए। माया बीज (ह्रीं) को छोड़कर शेष (क्लीं, श्रीं तथा ऐं) बीज क्षत्रियों को देय हैं। श्री (श्रीं) तथा वाक् (ऐं) बीज वैश्यों को; वाक् (ऐं) बीज शूद्रों को तथा वर्म (हुं) वषट् एवं नमः - ये अन्यों को देय हैं।

कलश - स्थापन - शान्ति-कर्म में नवरत्नों से अलंकृत स्वर्ण-कलश की स्थापना श्रेष्ठ होती है। स्वर्ण-कलश के अभाव में चाँदी अथवा ताँबे के कलश की स्थापना करनी चाहिए। अभिचार-कर्म में लोहे का कलश, विद्वेषण में काँच का कलश, मोहन में चाँदी का कलश तथा उच्चाटन में मिट्टी का कलश श्रेष्ठ माना गया है। यदि किसी अवसर पर विशेष धातु का कलश उपलब्ध न हो तो ताँबे के कलश की स्थापना करनी चाहिए, क्योंकि ताँबे का कलश सभी कार्यों के लिए उत्तम माना जाता है। यदि वह भी उपलब्ध न हो तो देवता से क्षमा-याचना पूर्वक मिट्टी के कलश का ही प्रयोग करना चाहिए, परन्तु मन में यह कल्पना अवश्य करनी चाहिए कि यह अमुक धातु का प्रतिरूप है।

मन्त्र
६८

हवन-सामग्री - शान्ति-कर्म में दूध, घी, तिल, गूलर तथा पीपल की लकड़ी अथवा अमर बेल और खीर का प्रयोग हवन में करना चाहिए। पुष्टि-कर्म में घृत, बेलपत्र अथवा चमेली के फूलों से हवन करें। कन्या-प्राप्ति की इच्छा रखने वाला खीर का हवन करे। लक्ष्मी-प्राप्ति के लिए कमलगट्टा, दही अथवा घृतप्लुत अन्न का हवन करें। समृद्धि के लिए घृत, बिल्वपत्र तथा तिल का हवन करना चाहिए। आकर्षण के लिए चिरौंजी तथा बिल्व-फल का हवन करें। उच्चाटन के लिए कौए के पंखों का हवन करें। वशीकरण के लिए राई तथा लवण का हवन करें। मोहन के लिए धतूरे के बीजों का हवन तथा मारण के लिए विष और रुधिर का हवन करना चाहिए।

फलों के होम से सुख-प्राप्ति, पलाश के होम से इष्ट-सिद्धि तथा कनेर के होम से स्त्रियाँ वश में होती हैं। गिलोय के होम से रोगों का नाश होता है। दूर्वा के होम से बुद्धि बढ़ती है तथा गुड़ के होम से लोग वश में होते हैं। बेलपत्र, घृत, कमल, गुलाब एवं चम्पा के फूलों से हवन करने पर लक्ष्मी का लाभ होता है। सफेद सरसों तथा चमेली के होम से कीर्ति बढ़ती है। जाति पुष्पों के होम से वाक्सिद्धि होती है। धान, यव, प्लक्ष, उदुम्बर एवं पीपल की समिधा तथा त्रिमधुर सहित तिलों के होम से इष्ट-सम्पत्ति का लाभ होता है। आक, लिसौड़ा, राजवृक्ष तथा गुलाब के होम से ब्राह्मण आदि वर्ण वशीभूत होते हैं। कपूर आदि सुगन्धित वस्तुओं के होम से सौभाग्य-वृद्धि होती है। बहेड़ों के होम से शत्रुओं को रोग तथा पागलपन होता है। मोर पंखों के होम से शत्रु को भय, उड़द के होम से मूकता तथा शाल्मली के होम से शत्रुओं का नाश होता है। विधिवत उपासना तथा होम करने से मनोवांछित फल प्राप्त होता है।

महा०

हवन की मुद्रा - हवन करने की मुद्रायें तीन प्रकार की होती हैं -- (१) शूकरी, (२) हंसी और (३) मृगी। हाथ को सिकोड़ कर दी जाने वाली आहुति को 'शूकरी मुद्रा'; कनिष्ठा अँगुली को छोड़ कर जो आहुति दी जाती है उसे 'हंसीमुद्रा' तथा कनिष्ठा और तर्जनी अँगुली के योग से जो आहुति दी जाती है, उसे 'मृगी मुद्रा' कहते हैं।

समिधा - शान्ति-कर्म में गाय का घी मिश्रित दूर्वा की समिधा, वशीकरण में बकरी का घृत मिश्रित अनार की समिधा, स्तम्भन में भेड़ का घी मिश्रित अमलतास की समिधा, विद्वेषण में अलसी का तेल मिश्रित धतूरे की समिधा, उच्चाटन में सरसों का तेल मिश्रित आम की समिधा तथा मारण में कटु-तेल मिश्रित खैर की समिधा से होम करना प्रशस्त होता है।

शुभ-कर्मों में बेल, आक, ढाक एवं दूध वाले वृक्षों की लकड़ियों से तथा अशुभ-कर्म में कुचिला, बहेड़ा; नींबू, धतूरा एवं लिसोड़े की लकड़ियों से अग्नि प्रज्वलित करनी चाहिए।

अग्नि की जिह्वाओं का पूजन - शान्ति-कर्म में अग्नि की 'सुप्रभा' नामक जिह्वा का पूजन करना चाहिए। वशीकरण में 'रक्ता' संज्ञक, स्तम्भन-कर्म में 'हिरण्या' संज्ञक, विद्वेषण में 'गगना' संज्ञक, उच्चाटन में 'अतिरक्तिका' संज्ञक तथा मारण-कर्म में 'कृष्णा' संज्ञक जिह्वा का पूजन करना चाहिए।

कुण्ड-निर्माण - शान्ति आदि षट्कर्मों में क्रमशः वृत्ताकार, पद्माकार, चतुरस्र, त्रिकोण, षट्कोण एवं अर्द्धचन्द्राकार कुण्ड पश्चिम, उत्तर, पूर्व, नैऋत्य, वायव्य एवं दक्षिण दिशा में बनाने चाहिए।

स्रुवा एवं स्रुचि -- शान्ति में स्वर्ण के, वशीकरण में मदार वृक्ष के तथा स्तम्भन में लोहे के बनाने चाहिए।

माला-निर्णय- 'पुष्टि' तथा 'वशीकरण' के लिए मोती अथवा हीरे की माला से जप करना चाहिए। आकर्षण' के लिए मत वाले हाथी के दाँत की माला; 'विद्वेषण' के लिए तथा 'उच्चाटन' के लिए बहेड़े की माला से जप करना चाहिए। मारण-कर्म के लिए जिस मनुष्य की मृत्यु बुधवार को न हुई हो, उसके दाँत अथवा अपने आप मरे हुए गदहे के दाँत की माला से जप करना चाहिए। धार्मिक-आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए मणि अथवा शंख की माला से जप करें। सब कार्यों की सिद्धि के लिए कमलगट्टा की माला से जप करना चाहिए। रुद्राक्ष की माला पर किया हुआ जप भी सब फलों को देता है। स्फटिक मणि, मोती, रुद्राक्ष एवं पुत्रजीवी (जियापोता) की माला पर जप करने से विद्या का लाभ होता है।

'मन्त्र महोदधि' कार ने षट्कर्मों के लिए क्रमशः शङ्ख, कमल गट्टा, नींबू, नीम, घोड़े के दाँत तथा गदहे के दाँत की माला को प्रशस्त बताया है।

शान्ति तथा पुष्टि-कर्म में कमलनाल का सूत्र (डोरा), आकर्षण तथा उच्चाटन-कर्म में घोड़े की पूँछ के बालों का सूत्र, मारण-कर्म में मनुष्य की नसों का सूत्र तथा अन्य कार्यों के लिए तैयार की जाने वाली माला के मनकों को कपास के सूत्र (डोरे) में पिरोना प्रशस्त कहा गया है।

सत्ताईस दानों की माला सिद्धि देने वाली होती है। अभिचार-कर्म में पन्द्रह दानों की माला फलदायक होती है। एक सौ आठ दानों की माला सभी शुभ कार्यों के लिए शुभ बताई गई है।

मोती की माला में सत्ताईस मोती, बहेड़े की माला में पन्द्रह बहेड़े तथा रुद्राक्ष की माला में एक सौ आठ दाने होने चाहिए।

शान्ति, आकर्षण, वशीकरण, पुष्टि, भोग एवं मोक्ष के लिए जप करते समय मध्यमा अँगुली में स्थित माला को अँगूठे से घुमाना चाहिए। स्तम्भन आदि में साधक को अनामिका अँगुली एवं अँगूठे द्वारा माला को घुमाना चाहिए। विद्वेषण तथा उच्चाटन में अँगूठा एवं तर्जनी अँगुली द्वारा माला घुमानी चाहिए। मारण कर्म में कनिष्ठिका एवं अँगूठे से माला के दानों को घुमाना चाहिए।

होमाग्नि- शान्ति एवं वशीकरण कर्म में लौकिक-अग्नि (सामान्य घरेलू अग्नि) में; स्तम्भन के लिए बरगद की लकड़ी के संघर्षण से उत्पन्न अग्नि में; विद्वेषण में बहेड़े की लकड़ी से उत्पन्न अग्नि में तथा उच्चाटन एवं मारण कर्म में श्मशान की अग्नि में होम करना चाहिए।

ब्राह्मण-भोजन- शान्ति एवं वशीकरण में होम के दशांश तुल्य ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए। यह 'उत्तम' माना गया है। होम की संख्या के पच्चीसवें भाग तुल्य ब्राह्मण-भोजन 'मध्यम' तथा शतांश तुल्य ब्राह्मणों को भोजन कराना अधम माना गया है।

अत्यन्त कुलीन वंश में उत्पन्न, षडङ्ग, वेदों के ज्ञाता, पवित्र एवं सदाचार परायण ब्राह्मणों को विविध प्रकार के भोजन कराने चाहिए। उनका सुन्दर वस्तुओं से पूजन कर, उन्हें देवता मान कर बारम्बार प्रणाम करना चाहिए तथा मधुरवाणी से स्वर्ण आदि देकर उन्हें सन्तुष्ट करना चाहिए।

लेखन-द्रव्य- शान्ति आदि षड् कर्मों में चन्दन, गोरोचन, हल्दी, गृहधूम, चिता का अङ्गार तथा विशाष्टक (आठ प्रकार के विष)- इन द्रव्यों द्वारा क्रमशः विभिन्न कर्मों के यन्त्र लिखने चाहिए (पीपल, कालीमिर्च, सोंठ, बाज की बीट, अर्थी, गृहधूम, धतूरे का रस तथा लवण - इन आठ वस्तुओं को 'विशाष्टक' कहते हैं)।

लेखनाधार - शान्ति एवं वशीकरण में भोजपत्र पर, स्तम्भन में बाघम्बर पर, विद्वेषण में गदहे की खाल पर, उच्चाटन में ध्वजा के वस्त्र पर तथा मारण में मनुष्य की हड्डी पर यन्त्र लिखना चाहिए। यदि किसी यन्त्र के साथ किसी विशिष्ट वस्तु पर यन्त्र-लेखन का निर्देश किया गया है तो उसी पर यन्त्र लिखना आवश्यक होगा।

लेखनी - शान्ति-कर्म में सोने की, चाँदी की अथवा चमेली की लेखनी का प्रयोग करना चाहिए। वशीकरण में दूर्वा की, स्तम्भन में अगस्त्य-वृक्ष अथवा अमलतास की लकड़ी की; विद्वेषण में करञ्ज की; उच्चाटन में बहेड़े की तथा मारण-कर्म में मनुष्य की हड्डी की लेखनी बनानी चाहिए।

शुभ कर्मों के लिए शुभ-मुहूर्त में तथा अशुभ-कर्मों के लिए रिक्ता-तिथि (चतुर्थी, नवमी एवं चतुर्दशी), मंगलवार तथा 'विष्टि' करण में लेखनी का निर्माण करना चाहिए।

भक्ष्य-वस्तुएँ - शान्ति एवं वश्य कर्म करते समय हविष्यान्न, स्तम्भन-कर्म के समय खीर, विद्वे-षण के समय उड़द एवं मूँग, उच्चाटन के समय गेहूँ तथा मारण-कर्म करते समय मसूर तथा काली बकरी के दूध की खीर खानी चाहिए।

तर्पण की वस्तुएँ - शान्ति एवं वशीकरण में हल्दी-मिश्रित जल; स्तम्भन एवं मारण-कर्म में मिर्च-मिश्रित गुनगुना जल तथा विद्वेषण एवं उच्चाटन-कर्म में भेड़ का रक्त मिश्रित जल 'तर्पण' के लिए प्रशस्त कहा है।

शान्ति एवं वशीकरण में सोने के पात्र में, स्तम्भन में मिट्टी के पात्र में, विद्वेषण में खैर के पात्र में, उच्चाटन में लोहे के पात्र में तथा मारण-कर्म में मुर्गी के अण्डे में तर्पण करना चाहिए।

शान्ति एवं वशीकरण में मृदु आसन पर बैठ कर तर्पण करना चाहिए। स्तम्भन में घुटनों से उठ कर तथा विद्वेषण आदि में एक पाँव से खड़े होकर तर्पण करना चाहिए।

पञ्चभूतों का उदय- जब दोनों नासापुटों के नीचे श्वास चलता हो, तब जल-तत्त्व का उदय जानना चाहिए - यह शान्ति-कर्म में सिद्धि दायक होता है। नाक के मध्य से दण्ड की भाँति सीधी श्वास की गति होने पर 'पृथ्वी तत्त्व' का उदय होता है - यह स्तम्भन में सिद्धि दायक माना गया है। नासा-छिद्रों के बीच में ही श्वास की गति होने पर 'आकाश-तत्त्व' का उदय होता है - यह विद्वेषण में श्रेष्ठ फलदायक होता है। नासापुटों से ऊपर श्वास की गति होने पर 'अग्नि-तत्त्व' का उदय होता है - यह मारण तथा वशीकरण - दोनों में सफलतादायक होता है। श्वास की तिर्यक् गति होने पर 'वायु-तत्त्व' का उदय जानना चाहिए - यह उच्चाटन के लिए प्रशस्त माना गया है।

त्रिलोह - यन्त्रों को भोजपत्र पर लिखकर प्रायः ताँबा, चाँदी, स्वर्ण अथवा त्रिलोह के ताबीज में भर कर कण्ठ अथवा भुजा में धारण किया जाता है। 'त्रिलोह' में (१) सोना, (२) चाँदी और (३) ताँबा - ये तीनों धातुएं मिश्रित रहती हैं। कुछ आचार्य 'त्रिलोह' के अन्तर्गत सोना, चाँदी तथा लोहा की गणना करते हैं।

अष्टधातु- (१) सोना, (२) चाँदी, (३) ताँबा, (४) लोहा, (५) जस्ता, (६) राँगा, (७) काँसा और (८) पारा - इन आठ धातुओं को सम्मिलित रूप में 'अष्टधातु' कहा जाता है। जिस प्रकार 'त्रिलोह' के ताबीज तथा यन्त्र आदि बनते हैं, उसी प्रकार अष्टधातु के भी बनाये जाते हैं। पूजा-यन्त्रों के निर्माण तथा तान्त्रिक-अँगूठी बनाने में भी अष्टधातु का प्रयोग किया जाता है।

<u>यन्त्र-लेखन विधि</u>- स्नानादि से निवृत्त हो, धौत (धुले हुए) [illegible] शुद्ध मन से कुल-देवता का ध्यान एवं पूजन करने के उपरान्त एकान्त-स्थान में यन्त्र-लेखन का कार्य आरम्भ करे। जिस यन्त्र को जिस वस्तु पर तथा जिन पदार्थों द्वारा जिस प्रकार से लिखने का निर्देश दिया गया हो, तदनुसार ही लेखन-कार्य करना चाहिए।

अभीष्ट यन्त्र को लिखने के बाद तीन दिनों तक विधि-विधान सहित उसका पूजन करे। इस अवधि में ब्रह्मचर्य धारण कर पृथ्वी पर शयन करना चाहिए तथा सात्विक-पदार्थों का भोजन करना चाहिए। इस अवधि में अधिष्ठातृ-देवता साधक को स्वप्न में यह बता देगा कि उसका साधन सिद्ध, साध्य, सुसिद्ध अथवा अरि - किस भाव का है? यदि स्वप्न न हो तो प्रयोग को असिद्ध समझना चाहिए। स्वप्न में देवता के मुख से जैसा सुने, उसी के अनुसार विधि-विधान पूर्वक कार्य करने से सिद्धि अवश्य प्राप्त होती है।

यन्त्र-लेखन के समय साधक नाम के अन्त में षष्ठी-विभक्ति लगाकर लिखे। बीच में बीजों को लिखे, नीचे साध्य के नाम के अन्त में द्वितीया विभक्ति लगाकर लिखे। दोनों ओर नीचे 'कुरु-कुरु' उसके नीचे वियदयुक्त सर्गबीज (अः) को लिखे। फिर ईशानादि चारों कोनों में 'हंसः' 'सोऽहं' तथा 'प्रणव-बीज' (ॐ) के चारों ओर दिग्बीजों को तथा प्रत्येक दिशा में 'यन्त्र-गायत्री' के तीन वर्णों को लिखना चाहिए। यन्त्र-गायत्री यह है - "यन्त्रराजाय विद्महे महामन्त्राय धीमहि। तन्नो यन्त्रः प्रचोदयात्।" - इस यन्त्र-गायत्री के द्वारा प्राण-प्रतिष्ठा के मन्त्रों के वर्णों से यन्त्र को चारों ओर से

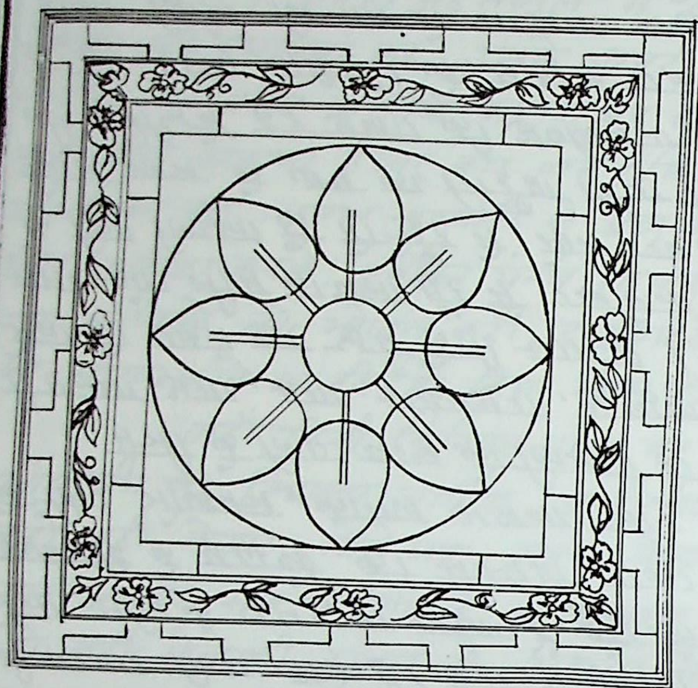
वेष्टित करें। इस प्रकार सावधानी से यन्त्र को लिखकर, स्वर्णादि से यन्त्र को वेष्टित कर, यन्त्र की प्रतिष्ठा
करनी चाहिए। 'सर्वतोभद्र मण्डल' में (जिसके स्वरूप को आगे प्रदर्शित किया गया है), अष्टदलों में
कलशों की स्थापना कर, उसके ऊपर यन्त्र को रखना चाहिए। मण्डल के चारों कोनों में चार कलश
स्थापित करें तथा प्रत्येक कलश पर हाथ रख कर "ॐ ह्रीं क्रौं" — इन तीन अक्षरों वाली विद्या में
कूर्च-बीज लगा कर, हजार बार जपें। फिर उस यन्त्र को चारों कलशों के जल द्वारा अभिषेक के मन्त्रों से
अभिषिक्त कर, गन्ध-पुष्पादि से पूज कर, यन्त्र में 'प्राण-प्रतिष्ठा' के मन्त्रों द्वारा यन्त्र-देवता की
प्राण-प्रतिष्ठा करके, पूर्वोक्त 'यन्त्र गायत्री' के द्वारा षोडशोपचार पूजन करें। फिर ब्राह्मणों, सुवासिनी
तथा कन्याओं को भोजन करा, दक्षिणा देकर, उनका आशीर्वाद ग्रहण करें। फिर जिस अङ्ग में यन्त्र
को धारण करने का निर्देश दिया गया हो, उस अङ्ग में यन्त्र को धारण करें।

जहाँ किसी विशिष्ट वस्तु पर यन्त्र लिखने का विधान न दिया गया हो, वहाँ यन्त्र को
भोजपत्र पर लिखना चाहिए। जहाँ यन्त्र को लिखने के लिए किसी विशिष्ट लेखन-द्रव्य का निर्देश
न हो, वहाँ केशर, गोरोचन, कपूर, केसर, गज-मद, कस्तूरी, चन्दन और अगर — इनमें से किसी
एक अथवा सब वस्तुओं के सम्मिश्रण से उसे लिखना चाहिए। जहाँ किसी लेखनी का विधान न
हो, वहाँ सोने की सलाई से अथवा चन्दन की सलाई से यन्त्र को लिखना चाहिए। जहाँ किसी में
भर कर यन्त्र को धारण करने का उल्लेख न हो, वहाँ सोने के ताबीज में अथवा उसके अभाव में
चाँदी के ताबीज में यन्त्र को भर कर धारण करना चाहिए। जहाँ किसी अङ्ग-विशेष में धारण करने

का निर्देश न हो वहाँ पुरुष को अपनी दाँई भुजा अथवा कण्ठ में रखें स्त्री को बाँई भुजा अथवा कण्ठ में धारण करना चाहिए। कुछ यन्त्र धारण करने के लिए नहीं, अपितु केवल पूजन करने के लिए ही तय्यार किए जाते हैं। ऐसे यन्त्रों को स्वर्ण, चाँदी, ताम्र अथवा अष्टधातु के पात्र पर अङ्कित करा लेना अधिक उपयुक्त रहता है, क्योंकि धातु-पत्र पर निर्मित यन्त्र स्थायी होते हैं और वे पूजनादि के पदार्थों का संस्पर्श पाकर विकृत भी नहीं होते। मकान अथवा दूकान आदि में टाँगने के लिए भोजपत्र, कागज अथवा धातु पर अंकित यन्त्रों को भी उपयोग में लाया जा सकता है।

मैत्री के लिए यन्त्र को लिखना हो तो मिश्री अथवा गाय के घृत को मुँह में रख कर लिखना चाहिए तथा अगर, तगर, चन्दनचूरा, गुग्गुल, मिश्री, गाय का घृत, शहद, कपूर, दालचीनी, जायफल तथा मेवा को एकत्र कर धूप देनी चाहिए। यदि मारण अथवा उच्चाटन के लिए यन्त्र लिखना हो तो सेंधा नमक और नीम का पत्ता मुँह में रख लेना चाहिए और इन्हीं की धूप देनी चाहिए। यदि जिह्वा-स्तम्भन के लिए लिखना हो तो मुँह में मोम रख लेना चाहिए तथा उसी की धूनी देनी चाहिए। जिस यन्त्र के साथ जिस मन्त्र के जप का निर्देश दिया गया हो, उसका विधिपूर्वक जप करना चाहिए। यन्त्र-साधना की अवधि में हर प्रकार की अपवित्रता, हर प्रकार के मैथुन तथा हर प्रकार के अविश्वास एवं सन्देह से दूर रहना चाहिए। जो साधक एकाग्रचित्त से, पूर्ण विश्वास एवं श्रद्धा के साथ तथा सन्देह-रहित होकर विधि-विधान से साधना करते हैं, उन्हें इच्छित-फल की प्राप्ति होती है। कलश-स्थापन के लिए 'सर्वतोभद्र मण्डल' आदि की निर्माण-विधियों का उल्लेख आगे किया जा रहा है।

सर्वतोभद्र मण्डल

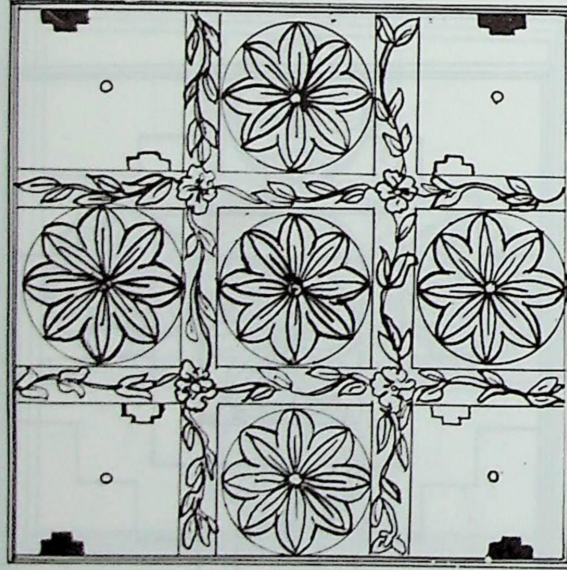


मण्डल - रचना - विधान - साधक को अपनी साधन क्रिया प्रारंभ करने से पूर्व 'सर्वतोभद्र' आदि मण्डल की रचना करनी चाहिए। यहाँ तथा अगले पृष्ठों पर सर्वतोभद्र मण्डल, स्वल्प सर्वतोभद्र मण्डल, नवनाभ मण्डल, पञ्चाब्ज मण्डल, चतुर्लिङ्गतोभद्र चक्र, सामान्य मण्डल तथा सर्वतोभद्र चक्र इनके स्वरूप को अलग - अलग चित्रों के माध्यम से प्रदर्शित किया जा रहा है। इनमें से किसी भी एक मण्डल की रचना करके कार्य को सम्पन्न किया जा सकता है।

मण्डल की रचना करके उसे पञ्चवर्णों द्वारा चित्रित करना चाहिए। पञ्चवर्णों के सम्बन्ध में निम्नानुसार समझें--

(१) पीतवर्ण - हल्दी का चूर्ण।
(२) श्वेतवर्ण - चावलों का चूर्ण।
(३) रक्तवर्ण - कुसुम के फूलों का चूर्ण।
(४) कृष्णवर्ण - शस्य हीन धान्य (समा के चावल आदि) को जलाकर उसका बनाया हुआ चूर्ण।
(५) हरितवर्ण - बिल्व पत्र का चूर्ण।

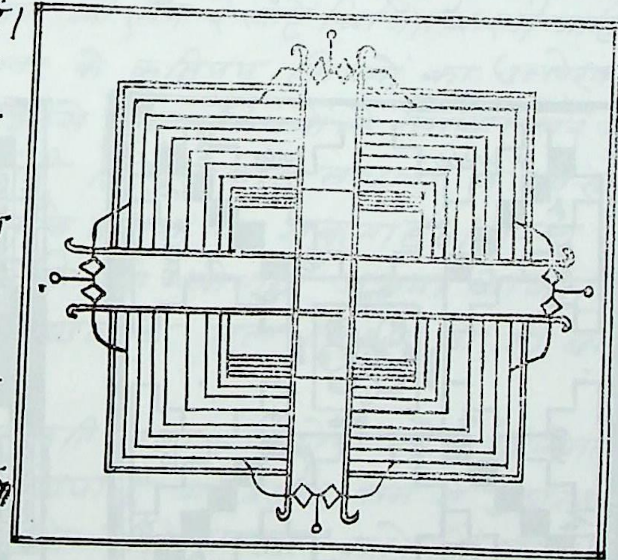
नव नाभ मण्डल



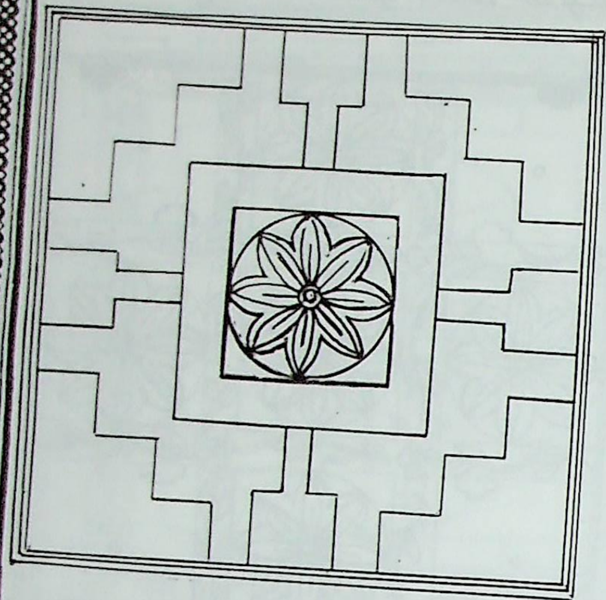
रंग-योजन – श्वेतवर्ण द्वारा सभी सीमा-रेखायें एक अंगुल ऊँची चित्रित करें। पीतवर्ण द्वारा कर्णिका, रक्त वर्ण द्वारा केशर तथा शुक्ल वर्ण द्वारा सभी पत्र रंजित करके श्यामवर्ण द्वारा समस्त सन्धि-स्थानों को चित्रित करना चाहिए।

प्रकारान्तर से कर्णिका को पीतवर्ण, केशर को पीत-रक्तवर्ण, सन्धि-स्थलों को कृष्णवर्ण, पीठ-गर्भ को शुक्ल अथवा हरित वर्ण पीठ पद को रक्तवर्ण रंगना चाहिए तथा पीठ गात्र को शुक्लवर्ण से चित्रित करके वीथियों में पत्र-पुष्पों सहित कल्पलता को सभी वर्णों द्वारा रंजित करना प्रशस्त माना गया है।

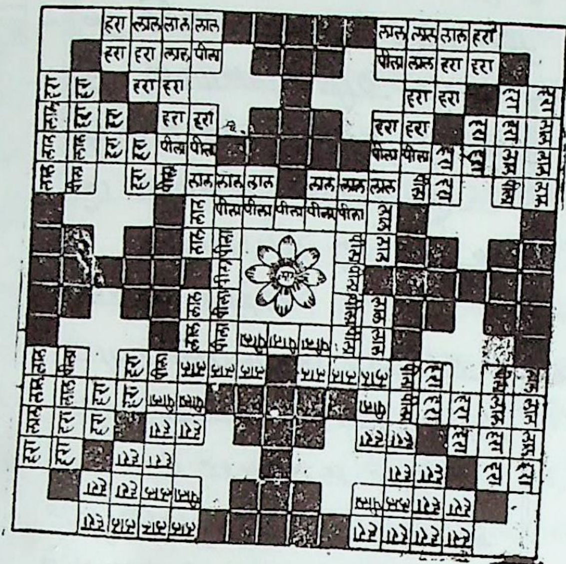
सामान्य मण्डल



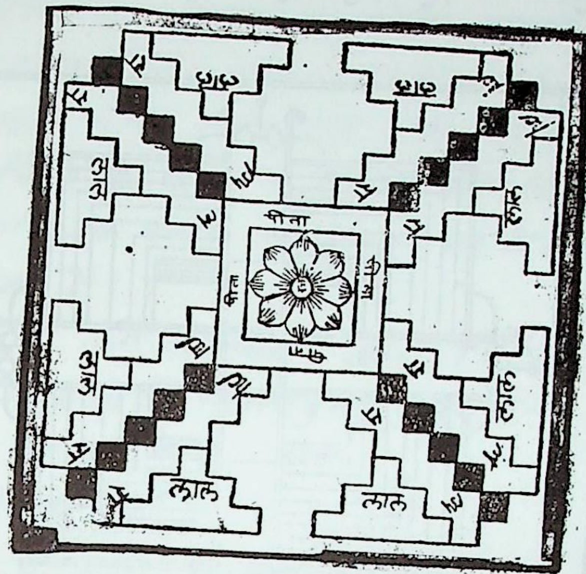
स्वल्प सर्वतोभद्र मण्डल



चतुर्लिङ्गतोभद्र चक्र

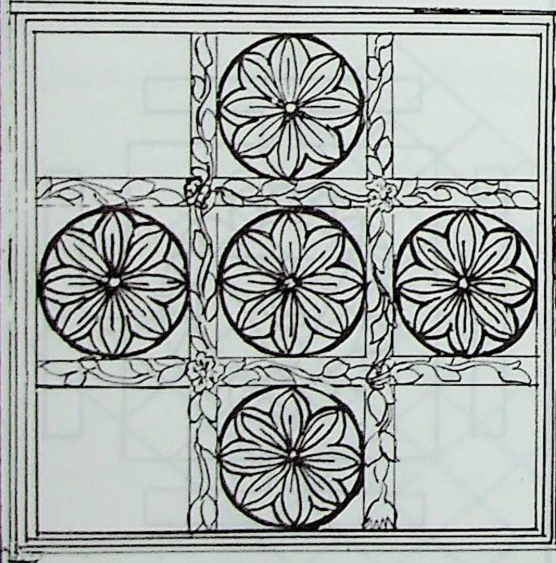


सर्वतोभद्र चक्र



उक्त मण्डलों की रूपरेखा चित्रों में प्रदर्शित है। इनमें रंग-योजना का संकेत भी चतुर्लिङ्गतोभद्र चक्र तथा सर्वतोभद्र चक्र के प्रदर्शित रूपों में दे दिया गया है। रंग-योजना के सम्बन्ध में अगला पृष्ठ भी देखें।

पञ्चाब्ज मण्डल



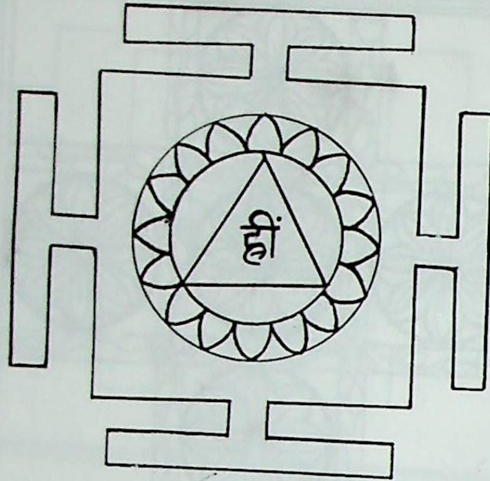
सभी द्वारों को शुक्लवर्ण, शोभा को रक्त वर्ण, उपशोभा को पीत वर्ण तथा चारों कोणों को कृष्णवर्ण चित्रित करके मण्डल के बाहर श्वेत वर्ण तथा रक्तवर्ण की तीन रेखाएं चित्रित करनी चाहिए।

मण्डलों में रंग-योजना के कतिपय नियमों का उल्लेख ऊपर किया गया है, तथापि इनसे भिन्न नियमों के आधार पर भी रंग-योजना की जा सकती है। इसी प्रकार मण्डलों के स्वरूप को भी भिन्न रूप में आकर्षक बनाया जा सकता है। परन्तु यह ध्यान रखना आवश्यक है कि रंग-योजना अथवा आकार-भिन्नता ऐसी न हो, जो मण्डल के मूल-स्वरूप को ही बदल कर रख दे।

विशेष - अर्द्धचन्द्र की आकृति वाला तथा दोनों ओर दो कमल-चिह्न वाला जल का मण्डल' कहा गया है, यह शान्ति-कर्म में प्रशस्त होता है। स्वस्तिक गर्भित त्रिकोण को वह्नि-मण्डल' कहते हैं, यह वशीकरण में प्रशस्त माना गया है। वज्र सहित चतुरस्र भूमि का मण्डल कहा गया है, यह स्तम्भन-कर्म में प्रशस्त होता है। आकाश मण्डल वृत्ताकार होता है, जो विद्वेषण में प्रशस्त माना गया है तथा बिन्दुओं से अंकित वृत्त वायुमण्डल होता है, जो उच्चाटन में प्रशस्त कहा गया है। वह्नि मण्डल मारण में भी प्रयोज्य है।

यन्त्र
23

यन्त्र - राज



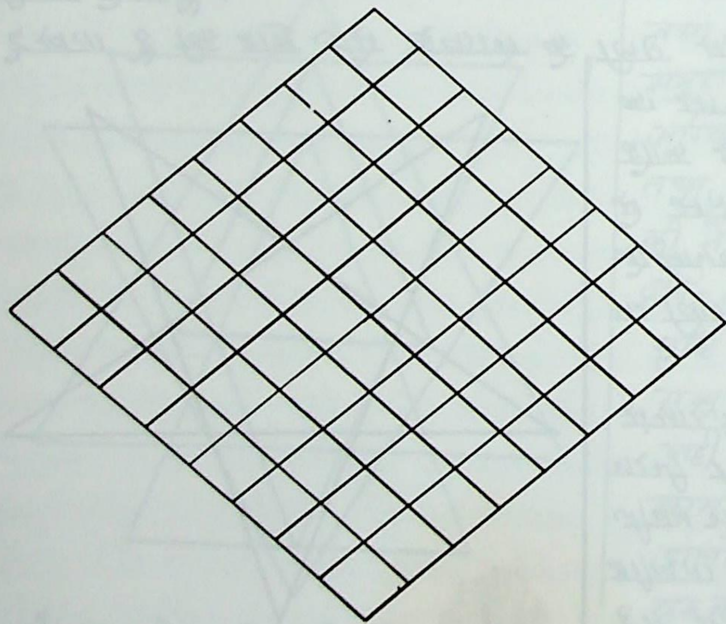
महा10

<u>यन्त्र और मन्त्र</u> - यन्त्र तथा मन्त्र अनेक प्रकार के होते हैं। कुछ यन्त्रों के साथ मन्त्रों का भी जप किया जाता है और कुछ यन्त्र बिना मन्त्र जप के ही फलदायी होते हैं। यन्त्रों के विषय में सहज-जानकारी प्राप्त करने हेतु सर्वप्रथम यन्त्रराज, सर्वतोभद्र, स्मरहरयन्त्र तथा कालीयन्त्र की आकृतियों को ध्यान में रखना आवश्यक है (यन्त्रराज का चित्र इसी पृष्ठ पर बाँई ओर प्रदर्शित है तथा अन्य यन्त्रों के चित्र अगले पृष्ठों पर दिए जा रहे हैं)।

यन्त्रों में भिन्न-भिन्न प्रकार के चरित्रों के संकेत होते हैं। अनेक यन्त्र प्रकृति के चरित्र का रहस्य बताते हैं तो कुछ यन्त्र मनुष्य तथा जानवरों के चरित्र का निरूपण करते हैं।

उन्नति अथवा ऊर्ध्वगति का ऊपर की ओर नोंक वाले बाण के द्वारा बोध कराया जाता है, (देखें- स्मरहर यन्त्र) इस भाव की अभिव्यक्ति अग्नि-शिखाओं के चिन्ह द्वारा भी की जाती है। बाण का नोंकदार फल त्रिभुजाकार होता है। जब किसी त्रिभुज का शीर्षकोण ऊपर की ओर हो तो उससे अग्नि का बोध होता है। नीचे हो, तब उस त्रिभुज से जल का बोध होता है। अर्धवृत्त अथवा वृत्त में किसी भाग की गणना कुंचित त्रिभुज के भीतर हो सकती है, क्योंकि दो छोरों के बीच का अधिक-से-अधिक

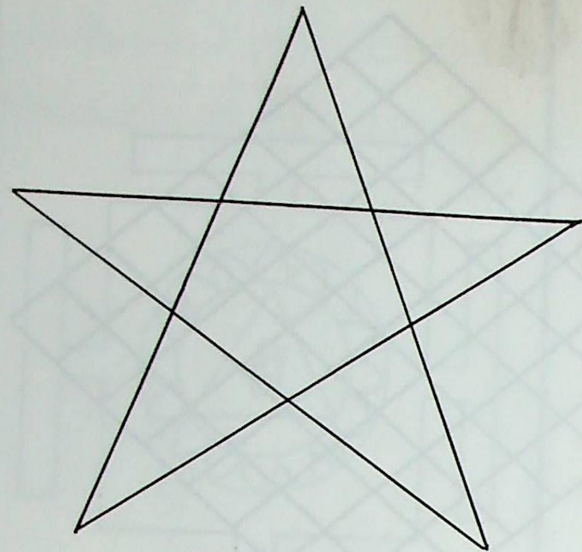
सर्वतोभद्र यन्त्र



अतः क्रमशः न्यून होकर शून्य पर पहुँच जाता है। इसीलिए वृत्त का कोई भी अंश जल का द्योतक माना जाता है।

हमारे मन में वृत्त की कल्पना का उदय चक्राकार गति से होता है। जब एक बिन्दु दूसरे बिन्दु के चारों ओर घूमता है तो उसकी गति चक्राकार होती है। चक्राकार गति से वृत्त बन जाता है। इस चक्राकार गति को प्राकृतिक जगत् में हम वायु की घूर्णन क्रिया के अन्दर देखते हैं। जब चक्रवात का अग्नि के साथ संयोग होता है, तब अग्नि भी घूमने लगती है। वही जब जल के साथ सम्पर्क में आता है, तब जल भी घूमने लगता है। यह घूमने की क्रिया ही चक्राकार गति है और इसका बोध वृत्त के द्वारा होता है, अतः वृत्त वायु का चिह्न है।

यहाँ प्रदर्शित चार यन्त्रों में से पहला 'यन्त्र राज' का अर्थ यह है कि विश्व का उपादान-कारण अग्नितत्त्व के आकार का है जो वायु तत्त्व से आवृत्त होकर घूमता है और इस प्रकार अपने चारों ओर सृष्टि की रचना करता है। दूसरा 'सर्वतोभद्र यन्त्र' (ऊपर प्रदर्शित) महायन्त्र है। सर्वतोभद्र का अर्थ है — 'सब ओर से सम चौरस'।

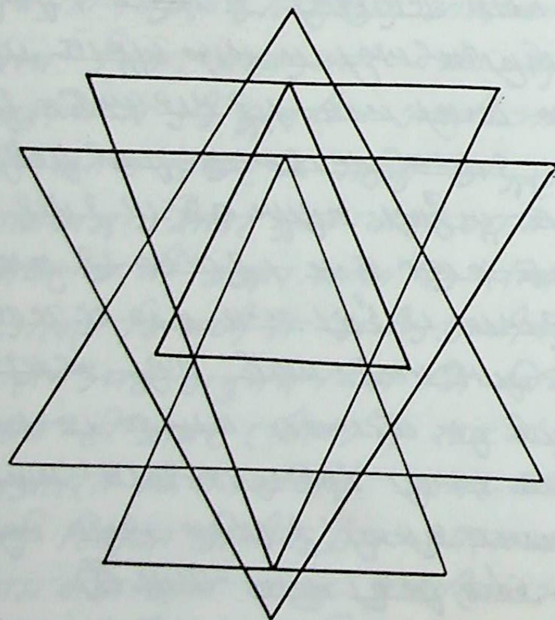


देने वाला है। भगवान् विष्णु के रथ का नाम भी सर्वतोभद्र है। इससे हमें यह विचार करने का अवसर मिलता है कि अर्जन एवं व्यय, क्रिया-शीलता एवं विश्राम तथा संग्रह एवं त्याग - इन सब बातों के सम्बन्धमें जीवन भलीभाँति तुला हुआ होना चाहिए। सब ओर से परीक्षा किये जाने परभी जिसका आन्तरिक एवं वाह्य-जीवन एक-सा होता है, वही संसार में फलता-फूलता है।

तीसरा 'स्मरहर यन्त्र' है। इसके अर्थ के प्रभाव से मनुष्य काम पर विजय प्राप्त कर सकता है। यह यन्त्र पाँच त्रिकोणों से बनता है। जो साधक इस यन्त्र द्वारा शिक्षा प्राप्त करता है, वह दृढ़ता पूर्वक सबओर से सतर्क रहता है कि कहीं कोई शत्रु उसे काम, क्रोध, लोभ, मोह, शोक एवं भय आदि के शस्त्रों द्वारा विचलित न करदे। इस यन्त्र का साधक दृढ़ता पूर्वक सब ओर चाहे जिधर जा सकता है। जब वह यह देखता है कि शत्रु उसे छकाने के लिए सामने आरहा है तो वह उसे अपना दिव्य त्रिकोण रूपी बरछा दिखा देता है।

चौथा यन्त्र एक दूसरे प्रकार का 'स्मरहर यन्त्र' है। इसमें भिन्न प्रकार के पाँच त्रिकोण होते हैं। एक

स्मर-हर यन्त्र (२)



त्रिकोण के भीतर दूसरा त्रिकोण तथा उसके भी भीतर क्रमशः तीसरा तथा चौथा तथा पाँचवाँ त्रिकोण सन्निहित है। इनमें दो त्रिकोण जल के तथा तीन अग्नि के द्योतक हैं। जल के गर्भ में अग्नि रहती है। एक समुदाय जल का है और दूसरा अग्नि से व्याप्त है। ये दोनों समुदाय भी अग्नि के मध्य में सन्निविष्ट हैं। यह सम्पूर्ण समुदाय भी घूमता है तथा सब ओर चिन्गारियाँ फेंकता है। यह समुदाय भी चल है। अग्नि की नैसर्गिक-शक्ति के द्वारा जल में से सृष्टि उत्पन्न होती है। क्रमशः ज्यों-ज्यों युग बीतते हैं, अग्नि भूमण्डल से विलीन होती जाती है तथा सृष्टि का क्रम बन्द हो जाता है। इस यन्त्र से यह सूचित होता है कि सम्पूर्ण सृष्टि भ्रमण के सिद्धान्त पर अवलम्बित है। ऐसी कोई वस्तु नहीं है, जो घूमती न हो। चूँकि सत्ता भ्रमण पर अवलम्बित है तथा काम आदि विकार एक प्रकार के बन्धन हैं, जो भ्रमण में रुकावट डालते हैं, अतः हमें अपने विकारों का दमन करना चाहिए तथा अपने गुरु की प्रदक्षिणा करनी चाहिए, क्योंकि जिस प्रकार सूर्य अपने चारों ओर घूमने वाले ग्रहों को आलोक प्रदान करता है, उसी प्रकार गुरु भी हमें प्रकाश देते हैं। इस यन्त्र का यथार्थ भाव यही है। इसी प्रकार अन्य यन्त्रों के विषय में भी समझना चाहिए। प्रत्येक यन्त्र एक इतिहास को समेटे है।

मन्त्र 62

परिभाषाएँ - यन्त्र-मन्त्र साधकों को तन्त्र शास्त्र सम्बन्धी कुछ आवश्यक परिभाषाओं तथा तकनीकी-शब्दों का ज्ञान होना भी आवश्यक है, अस्तु जिन विषयों का उल्लेख अब तक नहीं हो सका है, उनके संबंध मे यहाँ लिखा जा रहा है -

महा०

(१) **मन्त्र** - मन्त्र किसी शब्द अथवा शब्द-समूह की वह ध्वनि है, जो अपने उच्चारणकर्त्ता में ऐसी शक्ति उत्पन्न करती है, जिसके प्रभाव से वह इच्छित कामना को पूर्ण करने मे समर्थ हो जाता है। मन्त्रों का प्रयोग प्राण-शक्ति पर विजय प्राप्त करता है, जिसके प्रभाव से मन्त्र-साधक शक्ति-पुंज बन जाता है। मन्त्र का प्रभाव उच्चारण की जाने वाली विशिष्ट-ध्वनि से होता है। मन्त्रों द्वारा वांछित-फल प्राप्त करने के लिए पूजन, हवन आदि कुछ क्रियाएँ करने की आवश्यकता भी पड़ती है। समुचित क्रियाओं के संयोग से जब मन्त्र सिद्ध हो जाता है, तब साधक उसके प्रयोग द्वारा मनोनुकूल-फल प्राप्त करने में समर्थ हो जाता है। मन्त्र अनेक प्रकार के होते हैं। उनकी संख्या करोड़ों मे है। कुछ मन्त्र परलोक-साधक होते हैं तो कुछ भौतिक-सिद्धियाँ प्रदान करते हैं। कुछ देवी-देवताओं की कृपा देते हैं तो कुछ भूत, प्रेत, यक्षिणी आदि को वशवर्ती बनाते हैं। कुछ मन्त्र वशीकरण, मोहन, उच्चाटन, मारण, शान्ति-कर्म आदि में भी प्रयुक्त होते हैं। मन्त्र-विद्या का जनक भूत-भावन भगवान् शंकर को माना जाता है। उनकी कृपा द्वारा प्राचीन काल मे जिन ऋषियों को मन्त्रों का ज्ञान प्राप्त हुआ, उन्हें मन्त्र-द्रष्टा के रूप मे मान्यता मिली। मन्त्रों के विनियोग-वाक्य मे प्रत्येक मन्त्र के उपदेष्टा अथवा द्रष्टा ऋषि के नाम का उल्लेख भी किया जाता है। वैदिक कालीन संस्कृत भाषा के मन्त्रों के उद्भव के बाद कालान्तर में जब अन्य-

सम्प्रदायों तथा भाषाओं का उद्भव हुआ, तब उन सम्प्रदायों के मन्त्रज्ञ-मनीषियों ने भी विभिन्न शब्दों की सामर्थ्य का अपने-अपने ढँग से अन्वेषण कर, स्व-सम्प्रदायानुकूल अपनी ही भाषा में अनेक प्रकार की कामनाओं को पूर्ण करने वाले विभिन्न मन्त्रों की रचना की। बौद्ध, जैन आदि सम्प्रदायों के प्राकृत, अपभ्रंश, पालि, तिब्बती आदि भाषाओं में रचित मन्त्र उसी के परिणाम हैं। आर्यावर्त से भिन्न अन्य ईरान, अरब आदि देशों में जब अरबी, फारसी आदि भाषाओं का विकास हुआ तो वहाँ के विद्वानों ने भी अपनी-अपनी भाषाओं में मन्त्र-रचना की। इतना ही नहीं; भारतीय लोक भाषाओं में भी अनेक प्रकार के मन्त्रों का सृजन किया। गोरख-सम्प्रदाय ने ऐसे लोकभाषायी मन्त्रों को, जिन्हें सामान्यतः 'शाबर मन्त्र' कहा जाता है, प्रचारित-प्रसारित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान किया है। लोकभाषायी शाबर-मन्त्रों के सम्बन्ध में एक अनुश्रुति यह भी है कि कलियुग के दुष्प्रभाव से बचाने के लिए शिवजी ने सभी प्राचीन मन्त्रों को 'कील' दिया अर्थात् अप्रभावी बना दिया, तदुपरान्त जब उन्होंने यह अनुभव किया कि लोक-कल्याण हेतु मन्त्र-विद्या का प्रचलन आवश्यक है, तब उन्होंने स्वयं ही शाबर (भील) के रूप में विभिन्न कामनाओं की पूर्ति करने वाले लोकभाषायी मन्त्रों को प्रचारित किया, जिन्हें शाबर-मन्त्रों के नाम से जाना जाता है। ऐसे लोकभाषायी शाबर-मन्त्रों का कोई लिखित प्राचीन ग्रंथ उपलब्ध नहीं होता। वे या तो गाँवों के ओझा, सयाने तथा झाड़-फूँक का काम करने वाले साधु-पुजारियों आदि को कण्ठस्थ होते हैं अथवा गाँव के बड़े-बूढ़ों से सुनने को मिल जाते हैं। यथार्थ में ये वंश-परम्परा अथवा गुरु-शिष्य परम्परा से एक दूसरे को प्राप्त होते रहते हैं।

पत्र 63

महा०

मन्त्र
80

(2) शुद्धि - मन्त्र-साधना में चार प्रकार की शुद्धियों की आवश्यकता होती है - (1) काय शुद्धि - यह शुद्धि स्नान द्वारा होती है। इसे 'शरीर शुद्धि' भी कहा जाता है; (2) चित्त शुद्धि - यह शुद्धि मन से सभी दुर्वासनाओं को निकालने तथा दया, शान्ति, क्षमा, उदारता आदि सद्वृत्तियों को ग्रहण करने से होती है; (3) दिक्-शुद्धि - यह जप करने की विधि से अर्थात् दिन के समय पूर्वाभिमुख एवं रात्रि के समय उत्तराभिमुख होकर विधिवत् जप एवं पूजनादि कृत्य करने से होती है। परन्तु काम्य-प्रयोगों में जिस समय जिस दिशा की ओर मुँह करके बैठने का निर्देश किया गया हो, तदनुसार बैठने से ही 'दिक्-शुद्धि' होती है; (4) स्थान-शुद्धि - साधना-स्थल को भलीभाँति झाड़-बुहार कर तथा धो-पोंछकर शुद्ध कर देने को 'स्थान-शुद्धि' कहते हैं।

महा०

(3) आसन - काम्य-कर्मों के लिए आसन-प्रयोग के सम्बन्ध में पहले लिखा जा चुका है। मन्त्र-जप अथवा पूजनादि के लिए कम्बल, रेशम तथा कुश के आसनों का प्रयोग किया जाता है। ~~सामान्यतः ज्ञान संबंधी~~ प्रयोगों में काले मृग-चर्म (कृष्णमृगछाला), मोक्ष हेतु बाघम्बर (बाघ की खाल का आसन), दीर्घायु के लिए कुशासन तथा व्याधि-नाश हेतु रेशमी आसन का प्रयोग उचित माना गया है। लाल कम्बल का आसन काम्य-प्रयोगों में प्रशस्त माना जाता है।

(4) पञ्चाङ्ग - (1) विष्णु, (2) शिव, (3) गणेश, (4) दुर्गा और (5) सूर्य - ये पाँच मुख्य देवता हैं तथा इनके अलग-अलग 1 गीता, 2 सहस्रनाम, 3 स्तोत्र, 4 कवच तथा 5 हृदय होते हैं। साधक के सम्प्रदाय में जिस स्तोत्र, कवच आदि के पाठ का प्रचलन हो, उसी का गुरु-निर्देशानुसार पाठ करना चाहिए। इन पाँचों के पाठ को ही 'पञ्चाङ्ग-सेवन' कहते हैं। विभिन्न उपासना-ग्रन्थों में इनका उल्लेख पाया जाता है।

(५) मुद्राएं - हाथ की विभिन्न अँगुलियों को विभिन्न आकार देकर सुरभिमुद्रा, योनिमुद्रा, लिङ्गमुद्रा, मत्स्य मुद्रा, शंखमुद्रा आदि मुद्राओं को बताया जाता है। इन मुद्राओं का प्रदर्शन विभिन्न साधनों में विभिन्न प्रकारों से किया जाता है। किस स्थान पर किस मुद्रा का प्रदर्शन करना चाहिए, यह संबंधित प्रयोग के साथ निर्दिष्ट रहता है। मुद्राओं के स्वरूप का ज्ञान तन्त्र ग्रंथों द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।

(६) बलि - देवता के लिए द्रव्य का समर्पण 'बलि' कहलाता है। बलि देने से विघ्न शान्त होते हैं तथा साधक निरापद होकर सिद्धि प्राप्त करता है। बलि-द्रव्य पृथक्-पृथक् होते हैं। बलि-द्रव्य का निर्णय देवता के स्वभाव तथा कामना-भेद के अनुसार किया जाता है। प्रयोगों में 'बलि-द्रव्य' का उल्लेख रहता है, तदनुसार ही देवता को बलि देनी चाहिए। 'वामाचार' में 'पशु-बलि' की प्रथा है, परन्तु 'दक्षिणाचार' में उसे निषिद्ध माना गया है

(७) ध्यान - निराकार अथवा साकार उपासनाओं में ध्यान का विशेष महत्व है। प्रत्येक देवता के ध्यान का स्वरूप भी प्रयोग के साथ ही निर्देशित रहता है। मन के द्वारा इष्टदेव के स्वरूप को जानना ही ध्यान है, अतः वांछित-फल की प्राप्ति के लिए मन को एकाग्र कर, श्रद्धा एवं भक्ति पूर्वक ध्यान करना चाहिए।

(८) समाधि - मन को मन्त्र में तथा मन्त्र को देवता में लय करके जो स्थिति प्राप्त होती है, उसे 'समाधि' कहते हैं।

(९) मन्त्र-दीक्षा - गुरु की कृपा तथा शिष्य की श्रद्धा - इन दो भावनाओं के संगम को 'दीक्षा' कहते हैं। दीक्षा द्वारा गुरु शिष्य में ज्ञान का संचार अथवा शक्तिपात करता है, तभी 'सिद्धि' मिल पाती है।

मन्त्र ३०

महा०

(१०) <u>पुरश्चरण</u> - गुरु द्वारा निर्देशित मार्ग से शिष्य जिस साधना विधि से 'मन्त्र-सिद्धि' प्राप्त करता है, उसे 'पुरश्चरण' कहते हैं। पुरश्चरण के स्थानों में - नदी-तट, पर्वत-शिखर, सिद्धपीठ, पुण्य-क्षेत्र, सरोवर-तट, देवालय, गोशाला, तुलसीवन, पीपल का वृक्ष, आँवले का वृक्ष, एकान्त-उद्यान, पर्वत की तलहटी, गुफा, तीर्थ, नदी-संगम तथा अपना घर - ये स्थान उपयुक्त कहे गए हैं। काली, तारा, छिन्नमस्ता आदि मन्त्रों के पुरश्चरण हेतु श्मशान, निर्जन-गृह, रणभूमि, विजन-कानन, शिवालय तथा आकण्ठ जलवाला स्थान प्रशस्त माना गया है। 'रुद्रयामल' के अनुसार घर की तुलना में गोशाला में पुरश्चरण करने से दस गुना, वन में करने से सौगुना, सरोवर में करने से सहस्रगुना, नदी-तट पर करने से लाखगुना, पर्वत पर करने से करोड़गुना, शिवालय में करने से अरबगुना तथा गुरु-सान्निध्य में करने से अनन्तगुना फल प्राप्त होता है।

(११) <u>कर्तव्याकर्तव्य</u> - पुरश्चरण काल में क्षौर, उबटन, स्त्री-संसर्ग, हिंसा, ईर्ष्या-द्वेष, दम्भ, कुटिलता, क्रोध, दुर्वचन, बिना संकल्प किये कर्म तथा बिना भोग लगाये भोजन - ये सब वर्जित हैं। ऋतुकाल के अतिरिक्त अपनी विवाहिता-पत्नी से भी संसर्ग नहीं करना चाहिए। स्त्री-साधकों के लिए भी यही नियम है। परन्तु जिस स्त्री-साधिका ने अपने सिद्ध-पति से दीक्षा प्राप्त की हो, उसे अपने पति के साथ यौन-सम्पर्क के अतिरिक्त अन्य किसी प्रकार का सम्पर्क वर्जित नहीं है। मौन, त्रिकाल-स्नान, भूमि-शयन, नित्य-पूजा, देव-स्तुति, नित्यदान, नैमित्तिक-पूजा, इष्टदेव एवं गुरु में विश्वास तथा जप-निष्ठा - इन नियमों का पालन करना भी आवश्यक है। सूर्य अथवा चन्द्रग्रहण के दिन उपवास रख कर तथा समुद्रगामिनी नदी के जल की नाभि-पर्यन्त गहराई में खड़े रहकर एकाग्रचित्त से स्पर्शकाल से मोक्षकाल तक मन्त्र-जप करने से तत्काल सिद्धि होती है।

(१२) पञ्चोपचार – (१) गन्ध, (२) पुष्प, (३) धूप, (४) दीप तथा (५) नैवेद्य द्वारा पूजन करने को 'पञ्चोपचार' कहते हैं।

(१३) दशोपचार – (१) पाद्य, (२) अर्घ्य, (३) आचमनीय, (४) मधुपर्क, (५) गन्ध, (६) पुष्प, (७) धूप, (८) दीप, (९) नैवेद्य तथा (१०) अक्षत – इनके द्वारा पूजन करने को 'दशोपचार' कहते हैं।

(१४) षोडशोपचार – (१) आवाहन, (२) आसन, (३) पाद्य, (४) अर्घ्य, (५) आचमन, (६) स्नान, (७) वस्त्र, (८) अलंकार, (९) सुगंध, (१०) पुष्प, (११) धूप, (१२) दीप, (१३) नैवेद्य, (१४) ताम्बूल, (१५) अक्षत और (१६) दक्षिणा – इन्हें 'षोडशोपचार' कहते हैं।

(१५) पञ्चामृत – दूध, दही, घृत, मधु तथा शक्कर इनके मिश्रण को 'पञ्चामृत' कहा जाता है।

(१६) पञ्चगव्य – गाय का दूध, मूत्र, गोबर, घृत तथा दही – इन्हें सम्मिलित रूप में 'पंचगव्य' कहते हैं।

(१७) पञ्चधातु – सोना, चाँदी, लोहा, ताँबा और जस्ता इन्हें 'पंचधातु' कहा जाता है।

(१८) नव रत्न – माणिक्य, मूँगा, मोती, हीरा, नीलम, पुखराज, पन्ना, गोमेद और वैदूर्य (लहसुनियाँ)।

(१९) नव ग्रह – सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु – ये नौ ग्रह हैं।

(२०) अष्टगन्ध – अगर, तगर, गोरोचन, केसर, कस्तूरी, सफेद चंदन, लालचंदन, सिन्दूर (देव-पूजन के लिए)।
अगर, लालचंदन, हल्दी, कुंकुम, गोरोचन, जटामांसी, शिलाजीत और कपूर (देवी-पूजन के लिए)

(२१) पञ्चाङ्ग – किसी वनस्पति के (१) पत्र, (२) पुष्प, (३) फल, (४) छाल और (५) जड़।

(२२) तर्पण – नदी, सरोवर आदि के जल में घुटनों तक पानी में खड़े होकर, हाथ की अंजलि द्वारा जल गिराने की क्रिया को 'तर्पण' कहते हैं। जहाँ नदी-सरोवर आदि न हों, वहाँ किसी पात्र में पानी भर कर भी 'तर्पण' की क्रिया सम्पन्न करली जाती है।

(२३) आचमन - हाथ में जल लेकर उसे अपने मुँह में डालने को 'आचमन' करना कहते हैं।
(२४) करन्यास - अँगूठा, अँगुली, करतल तथा करपृष्ठ पर मन्त्र जपने को 'करन्यास' कहा जाता है।
(२५) हृदयादिन्यास - हृदय आदि अंगो का स्पर्श करते हुए मन्त्रोच्चारण करने को 'हृदयादिन्यास' कहा जाता है।
(२६) षडङ्गन्यास - १ हृदय, २ शिर, ३ शिखा, ४ कवच, ५ नेत्र एवं ६ करतल - इन ६ अङ्गों का स्पर्श करते हुए मन्त्रो-
-च्चारण को 'षडङ्गन्यास' कहा जाता है।
(२७) अर्घ्य - शंख, अंजलि आदि द्वारा जल छोड़ने की क्रिया को 'अर्घ्य देना' कहते हैं। घड़ा अथवा कलश में
पानी भर कर रखने को 'अर्घ्य-स्थापन' कहते हैं। अर्घ्यपात्र में दूर्वा, तिल, कुश के टुकड़े, सरसों, यव, पुष्प,
चावल तथा कुंकुम - इन सबको डाला जाता है।
(२८) अभिषेक - मन्त्रोच्चारण करते हुए शंख से सुगन्धित जल छोड़ने को 'अभिषेक' कहते हैं।
(२९) समिधा - जिन लकड़ियों में अग्नि प्रज्वलित करके होम किया जाता है, उन्हें 'समिधा' कहते हैं। समिधा
के लिए आक, पलाश, खैर, अपामार्ग, पीपल, उदुम्बर, शमी, कुश तथा आम की लकड़ियाँ ग्राह्य मानी गई हैं।
(३०) मन्त्र-ऋषि - जिस व्यक्ति ने मन्त्र को सर्वप्रथम विधिवत् सिद्ध किया, वह उसका ऋषि कहा जाता है।
(३१) छन्द - मन्त्र को सर्वतोभावेन आच्छादित करने की विधि को 'छन्द' कहा जाता है। यह अक्षरों अथवा
पदों से बनता है। छन्द का उच्चारण चूँकि मुख से होता है, अतः इसका मुख में न्यास किया जाता है।
(३२) देवता - जीवों के क्रिया-कलापों को प्रेरित, संचालित एवं नियन्त्रित करने वाली प्राणशक्ति को 'देवता'
कहते हैं। यह शक्ति चूँकि हृदय में स्थित रहती है, अतः इसका न्यास भी हृदय में किया जाता है।

पन्ना 30

(33) बीज - मन्त्रशक्ति को उद्भावित करने वाले तत्त्व को 'बीज' कहते हैं। इसका न्यास 'गुह्याङ्ग' में किया जाता है।

(34) शक्ति - जिसकी सहायता से बीज मन्त्र बन जाता है, उस तत्त्व को 'शक्ति' कहते हैं। इसका न्यास 'पादस्थान' में करते हैं। महा०

(35) विनियोग - मन्त्र को फल की दिशा का निर्देश देना 'विनियोग' कहलाता है।

[टिप्पणी - ऋषि तथा छन्दादि का ज्ञान न होने पर मन्त्र का फल प्राप्त नहीं होता]

(36) जप-भेद - जिह्वा तथा होंठ को हिलाते हुए केवल स्वयं सुनाई देने वाले मन्त्रोच्चारण को 'उपांशु जप' तथा मन्त्र, मन्त्रार्थ एवं देवता में मन लगा कर, मन-ही-मन मन्त्रोच्चारण करने को 'मानस जप' कहते हैं।

(37) वर्जित पुष्पादि - पीले रंग की कट सरैया, नागचम्पा तथा दोनों प्रकार की बृहती के फूल पूजा में नहीं चढ़ाये जाते। सूखे, बासी, मलिन, दूषित तथा उग्रगन्ध वाले पुष्प भी पूजा में वर्जित हैं। चम्पा तथा कमल की कलियों के अतिरिक्त अन्य फूलों की कलियाँ नहीं चढ़ाई जातीं। विष्णु पर अक्षत, आक तथा धतूरा नहीं चढ़ाये जाते। शिव पर केतकी, दुपहरिया (बन्धूक), कुन्द, मौलश्री, जयपर्णी, कौरैया, मालती तथा जूही के फूल नहीं चढ़ाये जाते। गणेश तथा सूर्य पर तुलसी नहीं चढ़ाई जाती एवं दुर्गा पर दूर्वा, आक, बेल, हरसिंगार तथा तगर नहीं चढ़ाये जाते।

(38) ग्राह्य पुष्पादि - विष्णु पर श्वेत तथा पीले रंग के पुष्प एवं तुलसी; सूर्य तथा गणेश पर लाल रंग के पुष्प, लक्ष्मी पर कमल एवं शिव के ऊपर आक, धतूरा, बिल्वपत्र तथा कनेर-पुष्प विशेष रूप से चढ़ाये जाते हैं। अमलतास के पुष्प तथा तुलसी को निर्माल्य नहीं माना जाता। पुष्प, पत्र एवं फल - इन तीनों को अधोमुख करके देवता पर नहीं चढ़ाना चाहिए। (पुष्पांजलि में यह दोष नहीं माना जाता। उसमें बासी पुष्प भी ग्राह्य हैं।

(३९) ग्राह्य पत्र तथा फल - तुलसी, मौलश्री, अशोक, विष्णुकान्ता, अपामार्ग, चम्पा, कमलिनी, बिल्वपत्र, श्वेत कमल, दूर्वा, कुशा, मैनफल, नागवल्ली, आँवला तथा अगस्त्य - इनके पत्ते देव-पूजन में ग्राह्य हैं। इसी प्रकार जामुन, अनार, केला, बिजौरा, नींबू, आँवला, इमली, बेर, कटहल तथा आम - ये फल भी ग्राह्य कहे गए हैं।

(४०) धूप और दीपक - धूप में अगर तथा गुग्गुल विशेष रूप से ग्राह्य हैं। चन्दन-चूरा, बालछड़ आदि का प्रयोग भी धूप के रूप में किया जाता है। दीपक में यदि अनेक बत्तियाँ हों तो उनकी संख्या विषम रखनी चाहिए। दाँई ओर के दीपक में सफेद रंग की बत्ती तथा बाँई ओर के दीपक में लाल रंग की बत्ती डालनी चाहिए।

विशेष सावधानी - काम्य-कर्मों को करने से पूर्व समस्त 'न्यास' तथा आत्मरक्षा के अन्य उपायों को करलेना आवश्यक है। जो व्यक्ति शुभ अथवा अशुभ किसी भी प्रकार का काम्य-कर्म करता है, मन्त्र उसका शत्रु बन जाता है, अतः काम्य-कर्मों में प्रवृत्त न होना ही शुभ है। काम्य-कर्मों को यदि त्रुटि-रहित ढंग से किया जाय तो उनसे उतना ही फल प्राप्त होता है, जितने के लिए वे किये जाते हैं, परन्तु विधि-विधान में तनिक सी भी असावधानी साधक को अनिष्टकर फल देती है, जबकि निष्काम-कर्मों में भ्रम-वश हुई असावधानी से भी कोई हानि नहीं पहुँचती। काम्य-कर्म मनुष्यों को सांसारिक-बन्धनों से जकड़े रखते हैं तथा कभी भी जीवन्मुक्त नहीं होने देते, जबकि निष्काम-भाव से की गई देवोपासना इहलोक के साथ-साथ परलोक को भी सुधारती एवं मुक्ति प्रदान करती है।

॥ इति श्री यन्त्र महार्णवे आवश्यक-ज्ञातव्य विषयाः नाम्नि प्रथम खण्डः ॥

अथ यन्त्रमहार्णव (द्वितीय खण्ड)

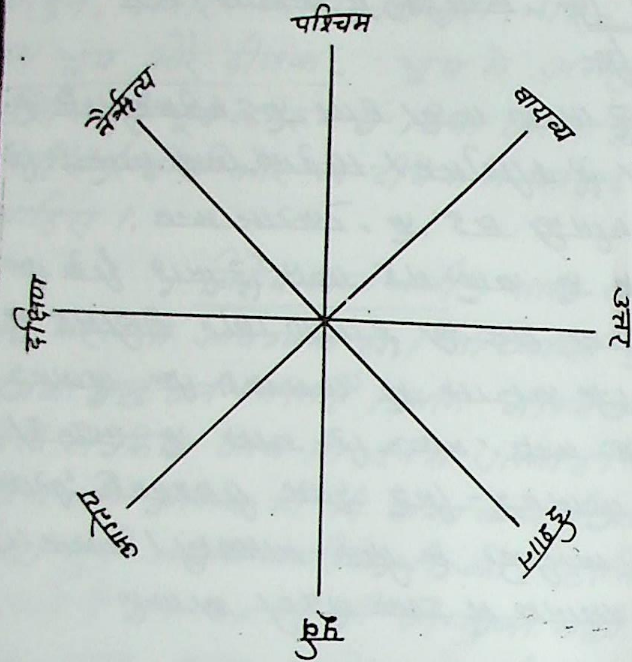
जैसा कि पिछले खण्ड में बताया जा चुका है, मन्त्र-यन्त्र साधना दो प्रकार की होती है – (१) निष्काम तथा (२) सकाम। निष्काम-कर्मों में विभिन्न देवी-देवताओं यथा राम, विष्णु, शिव, गोपाल, गणेश, सूर्य, दुर्गा, काली, भुवनेश्वरी आदि देवी-देवताओं की उपासना मानी जाती है। इन उपासनाओं में 'न्यास' आदि की क्रियाओं के साथ ही ध्यान, यन्त्र-पूजन तथा मन्त्र-जप आदि कृत्य किये जाते हैं। यद्यपि इन देवी-देवताओं की उपासना से साधक की मनोकामनाओं की पूर्ति भी होती है, तथापि इन्हें 'निष्काम' की कोटि में इसलिए रखा जाता है कि यदि साधक इन उपासनाओं को करता रहे तो उसके पाप नष्ट होते हैं, पुण्य की वृद्धि होती है तथा इस लोक के साथ-साथ परलोक का भी सुधार होता है।

'यन्त्र भास्कर' के इस द्वितीय खण्ड में विभिन्न देवी देवताओं से सम्बन्धित शास्त्रीय प्रयोगों का ही उल्लेख किया जाएगा। स्मरणीय है कि इन प्रयोगों में यन्त्र का प्रयोग 'पूजा के प्रतीक' अथवा 'देवता के मूर्तिस्वरूप' के नाते किया जाता है तथा इनमें मन्त्र-जप की ही प्रधानता रहती है।

श्रीयन्त्र-विधान

यन्त्र-साधना में 'श्रीयन्त्र' की साधना को अन्यतम स्थान प्राप्त है। दशमहाविद्या में 'षोडशी' नामक तृतीय महाविद्या ही 'श्रीविद्या' का स्वरूप है। सुन्दरी, ललिता, त्रिपुर सुन्दरी आदि इसी के अन्य नाम हैं। भारत में प्राचीनकाल से ही श्रीविद्या की उपासना प्रचलित है। इस उपासना के तत्त्व को समझने के लिए

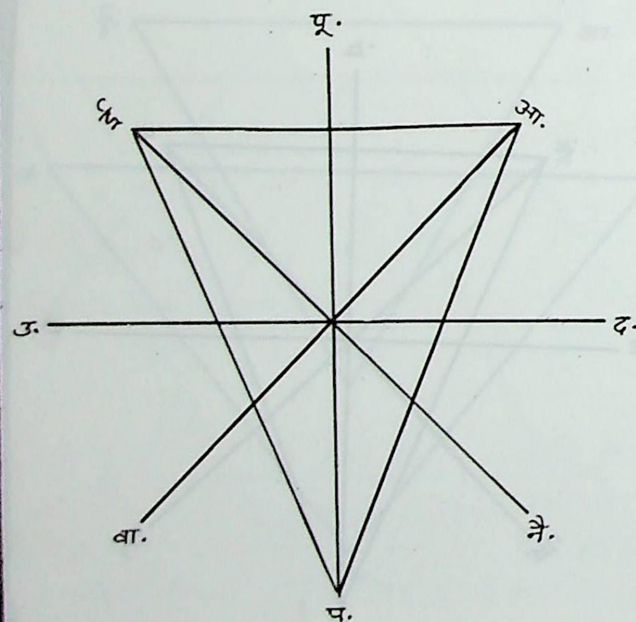
सर्वप्रथम देवी के स्वरूप भूत चक्र अथवा यन्त्र को भलीभाँति समझ लेना आवश्यक है। इस चक्र के तत्त्व तथा लेखन-प्रकार को सामान्यतः लोग जानते ही नहीं हैं, जबकि इसे अच्छी तरह समझे बिना शक्ति-साधना की दिशा में आगे



बढ़ पाना नितान्त ही असंभव है। अस्तु, हम सर्वप्रथम 'श्रीयन्त्र' के निर्माण की शास्त्रीय-प्रणाली का उल्लेख कर रहे हैं।

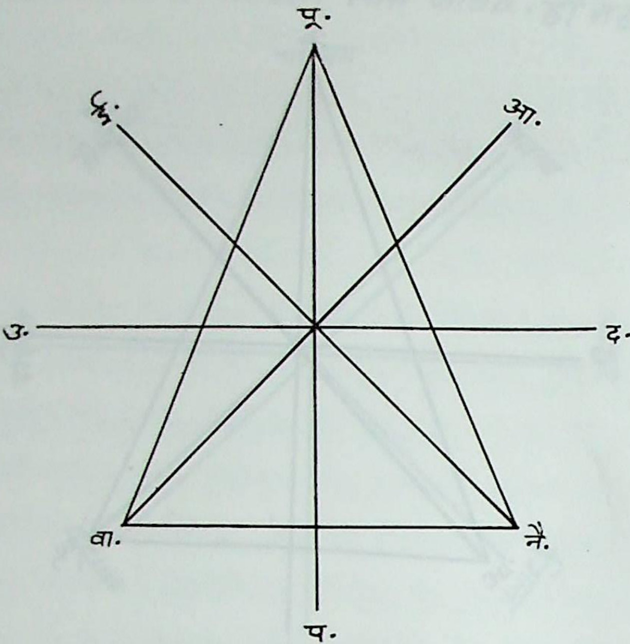
कुलाचार, समयाचार, सम्प्रदाय अथवा आचार्य-भेद से आगम शास्त्रों तथा साधकों में श्रीयन्त्र लेखन के अनेक प्रकार पाये जाते हैं। यह यन्त्र विन्दु, त्रिकोण, अष्टार, अन्तर्दशार, बहिर्दशार, चतुर्दशार, अष्टदल पद्म, षोडशदल पद्म तथा चतुरस्र - इन नव चक्रों से बनता है। कोई-कोई आचार्य षोडशदल पद्म के अनन्तर वृत्तत्रय को भी अतिरिक्त चक्र मानते हैं। उनके मत से विन्दु सर्वव्यापक चक्र है, अतः वे उसकी गणना नव-चक्रों में नहीं करते। बहुत से आचार्य तथा आधुनिक साधक चतुर्दशार के अनन्तर एक मर्यादावृत्त तथा अष्टदल के बाद भी षोडशदल कर्णिका, तदनन्तर मर्यादावृत्त - इस प्रकार वृत्तत्रय बनाते हैं। कुछ उपासक वृत्त देते ही नहीं हैं। इसी प्रकार के मतभेद चतुरस्र के विषय में भी पाये जाते हैं। कोई एक रेखात्मक चारद्वार युक्त चतुरस्र मानते हैं तो कोई तत्तद् दिशाओं में विभिन्न संख्याओं से दोद्वार

युक्त चतुरस्र लिखते हैं। कोई-कोई चार रेखाओं का चतुर्द्वार तथा द्वादशद्वार भी लिखते हैं। अधिकांशत: त्रिरेखात्मक चतुर्द्वार युक्त चतुरस्र ही पाया जाता है। अस्तु, बिन्दु से चतुर्दशार तक ही प्रधान यन्त्र माना जाता है, क्योंकि यथार्थ श्रीयन्त्र शिव-शक्ति का सम्पुटस्वरूप है। चतुर्दशार तक ही नवचक्रों का अन्तर्भाव है। इनमें त्रिकोण, अष्टकोण, अन्तर्दशार, बहिर्दशार और चतुरस्र - ये पाँच शक्ति-चक्र हैं और बिन्दु, अष्टदल, षोडशदल तथा चतुरस्र - ये चार शिव-चक्र उन पाँचों के अन्तर्भूत हैं अर्थात् त्रिकोण में बिन्दु, अष्टार में अष्टदल, दोनों दशार में षोडशार तथा चतुर्दशार में चतुरस्र अन्तर्भूत हैं। इस प्रकार इसमें शिव-शक्ति का पारस्परिक अभिन्नभाव रूप का सम्मिश्रण है। इस अभिन्न-भाव को जानने वाला ही 'चक्रज्ञ' कहलाता है।



'भैरव यामल' के अनुसार - 'न शिवेन विना शक्ति शिवोऽपि न तया: विना" - अर्थात् शिव के बिना शक्ति नहीं है और शक्ति के बिना शिव भी नहीं है - इससे स्पष्ट है कि शिव-शक्ति का एक दूसरे से पृथक् रहना संभव नहीं है, अत: शिव-चक्रों को चतुर्दशार के बाहर लिखना केवल शिष्य-बुद्धि-विलास के लिए है, अत: चतुर्दशार तक ही प्रधान यन्त्र

की सीमा है – यही सर्व सम्मत सिद्धान्त है। 'वामकेश्वर तन्त्र' के आधार पर, जो प्रायः सर्वत्र प्रचलित है, यन्त्र-लेखन प्रकार का दिग्दर्शन कराने के लिए सर्वप्रथम तदुपयोगिनी परिभाषाओं का उल्लेख किया जाता है।



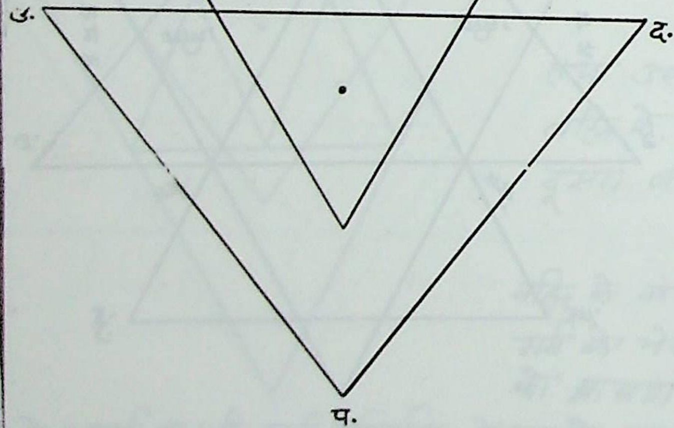
<u>दिशा</u> – 'यदाशाभिमुखो मन्त्री' के अनुसार जिस दिशा की ओर मुँह करके साधक यन्त्र को लिखे, उसी को पूर्व समझना चाहिए तथा अन्य दिशाओं की कल्पना उसी के आधार पर कर लेनी चाहिए। (देखिए – पृष्ठ ८२ का चित्र)

<u>शक्ति</u> – ईशान से अग्नि कोण तक एक सीधी रेखा खींच कर, दोनों कोणों से दो आड़ी रेखाएँ खींचकर पश्चिम में जोड़ दें, इससे जो अधोमुख त्रिकोण बनेगा, वह 'शक्ति त्रिकोण' कहलाता है। इसी को शक्ति, पार्वती तथा योनि आदि शब्दों से व्यक्त किया जाता है (देखें – पृष्ठ ८३ का चित्र)

<u>शिव</u> – वायव्य से नैर्ऋत्य कोण तक एक सीधी रेखा खींचकर इन दोनों कोणों से दो रेखाएँ ऊपर की ओर ले जाकर पूर्व दिशा में मिला देने से जो ऊर्ध्वमुखी त्रिकोण बनता है, उसे शिव, वह्नि अथवा इसके पर्याय-महेश्वर, अग्नि आदि शब्दों से व्यक्त किया जाता है (देखें इसी पृष्ठ पर बाँई ओर का चित्र)।

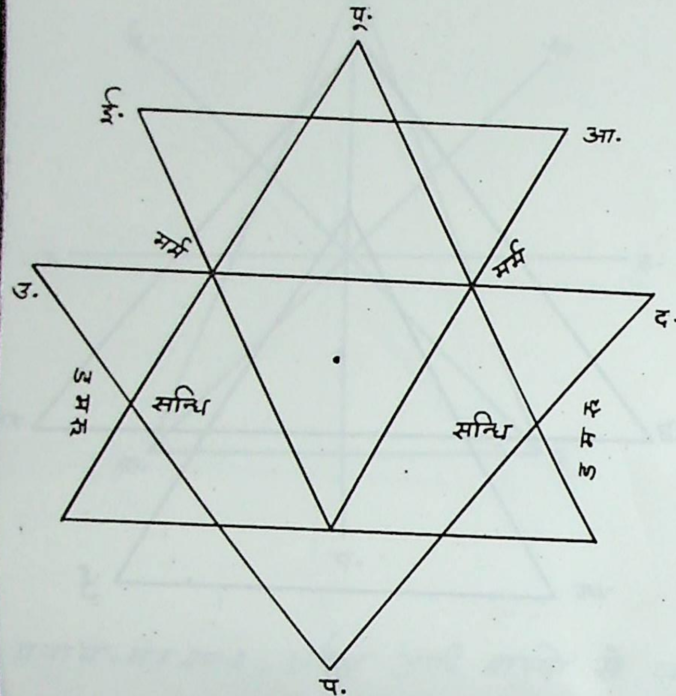
महा०

<u>पार्श्व-रेखा</u>— वाम तथा दक्षिण आड़ी रेखाओं को 'पार्श्व-रेखा' कहा जाता है। कहीं-कहीं इन्हें ऊर्ध्व तथा अधो रेखा भी कहते हैं। <u>तिर्यक् रेखा</u>- ईशान से आग्नेय तक एवं वायव्य से नैर्ऋत्य तक खींची हुई रेखायें 'तिर्यक्' रेखाएँ कहलाती हैं। इन्हें पूर्व-रेखा तथा पश्चिम-रेखा भी कहते हैं। <u>भेदन</u> - एक रेखा के ऊपर दूसरी रेखा का आ जाना 'भेदन' कहलाता है। <u>सन्धि</u>- भेदन करने वाली दोनों रेखाओं के संयोग को 'सन्धि' कहते हैं। <u>मर्म</u>- भेदन करने वाली तीन रेखाओं के संयोग को 'मर्म' कहते हैं। <u>ग्रंथि</u>- मर्म तथा सन्धि को 'ग्रंथि' कहते हैं। <u>डमरु</u>- शक्ति के पश्चिम-कोण तथा वह्नि के पूर्व कोण के मिलने से यह बनता है। <u>वृत्त</u>- चन्द्राकार रेखा को 'वृत्त' कहते हैं। <u>परिवेष</u>- चतुरस्र रेखा को 'परिवेष' कहते हैं। <u>भूपुर</u>- त्रिरेखात्मक-वृत्त को 'भूपुर' कहते हैं।



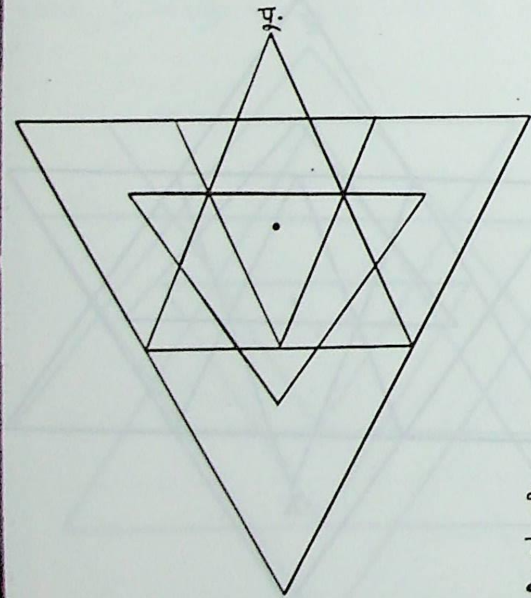
<u>यन्त्र-लेखन प्रकार</u>— अब यन्त्र-लेखन का प्रकार बताते हैं— सर्वप्रथम शक्ति-त्रिकोण बनाकर, उसको मध्यभाग में उत्तर से दक्षिण की ओर एक तिर्यक्-रेखा से भेदन करें। इस तिर्यक्-रेखा के दोनों सिरों से दो पार्श्व-रेखायें खींच कर, प्रथम शक्ति के पश्चिम कोण के पश्चिम की ओर मिला दें। यह दूसरी शक्ति बन गई। यद्यपि इस क्रम में बिन्दु-लेखन नहीं आया,

तथापि पूजा-क्रम के अनुसार प्रथम शक्ति के भेदन से बने हुए त्रिकोण के मध्य में विन्दु रख देना चाहिए। (देखें - पृष्ठ ८५ का चित्र)।



इसके बाद प्रथम शक्ति की तिर्यक्-रेखा के मध्यभाग से कुछ ऊपर पूर्व की ओर से दोनों भागों में 'सन्धि' तथा 'मर्म' बनाती हुई दो पार्श्व-रेखाएं खींचे। इसी प्रकार प्रथम शक्ति के पश्चिम कोण को पश्चिम की ओर से स्पर्श करती हुई, वायव्य से नैर्ऋत्य की ओर एक तिर्यक् रेखा खींचे और उन पार्श्व रेखाओं को इसके दोनों सिरे से जोड़ दें। यह प्रथम वह्नि बन गया। इस प्रकार आठ दिशाओं में आठ त्रिकोण में से अष्टार और मध्य में एक त्रिकोण तथा उसके मध्य में विन्दु होने से विन्दु कोण तथा अष्टार - ये तीन यन्त्र बन गये। इन तीन यन्त्रों से बना हुआ यह चक्र 'नवयोनि चक्र' नाम से भी प्रसिद्ध है (देखें - इसी पृष्ठ पर बाँई ओर का चित्र)। इसमें नौ त्रिकोण, छः सन्धि, दो मर्म तथा दो डमरू हैं। (प्रथम शक्ति की वाम तथा दक्षिण रेखाओं से वह्नि की पार्श्व-रेखाओं का दोनों दिशाओं में संयोग होने से और पुनः द्वितीय शक्ति की तिर्यक् रेखा के द्वारा भेदन होने से उत्तर-दक्षिण मर्म बन गए। इसी प्रकार सन्धि

और डमरू की प्रक्रिया भी समझनी चाहिए। अब अन्तर्दशार की विधि का वर्णन किया जाता है-

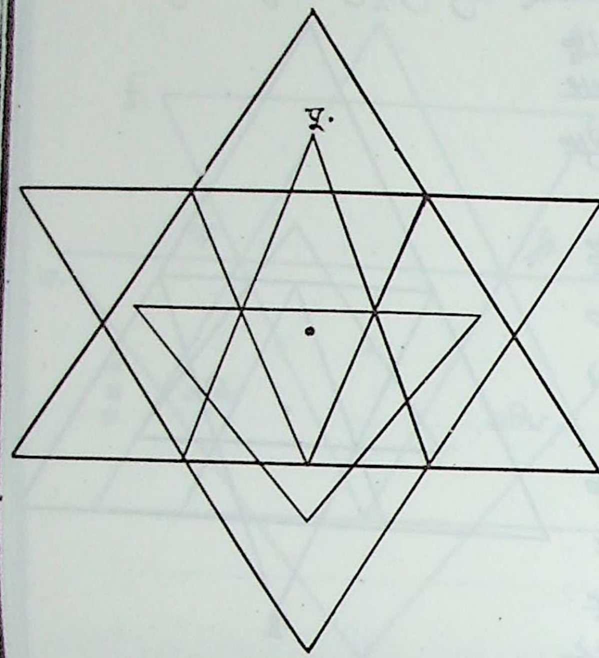


पिछले पृष्ठ पर अंकित 'नवयोन्यात्मक-चक्र' में पहली शक्ति की तिर्यक्-रेखा को दोनों सिरों की ओर कुछ बढ़ायें तथा उस बढ़ी हुई रेखा के दोनों सिरों से दो पार्श्व-रेखा दूसरी शक्ति के पश्चिम कोण से कुछ पश्चिम में जोड़ दें। यह तीसरी शक्ति बन गई। इस तीसरी शक्ति के भीतर पूर्व-त्रिकोण को छोड़ कर सारा यन्त्र आ जाता है (देखें- इसी पृष्ठ पर प्रदर्शित बाँई ओर का चित्र)।

अब प्रथम वह्नि की तिर्यक्-रेखा को उसी प्रकार दोनों ओर बढ़ायें तथा उस बढ़ी हुई रेखा के दोनों सिरों से दो पार्श्व-रेखाएं खींच कर प्रथम वह्नि के पूर्व कोण के कुछ पूर्व की ओर लेजाकर मिलादे। इस प्रकार दूसरा वह्नि त्रिकोण बन गया (देखें-आगे पृष्ठ ८८ का चित्र)।

इस चक्र में छः कोण और बढ़ गए। तीसरी शक्ति और दूसरे वह्नि के संयोग से दोनों पार्श्वों में दो डमरू बन गए। इसी प्रकार सन्धि और मर्म के भेद भी समझ लेने चाहिए। पुनः प्रथम शक्ति की पार्श्व-रेखाओं को क्रमशः ईशान और आग्नेय कोण में ऊपर प्रथम वह्नि के पूर्व कोण को स्पर्श करती हुई तिर्यक्-रेखा से उक्त पार्श्व-रेखाओं के सिरों को जोड़ दे। इसी प्रकार प्रथम वह्नि की दोनों पार्श्व-रेखाओं को वायव्य तथा नैर्ऋत्य-कोण में द्वितीय शक्ति के पश्चिम कोण तक बढ़ाकर इसी

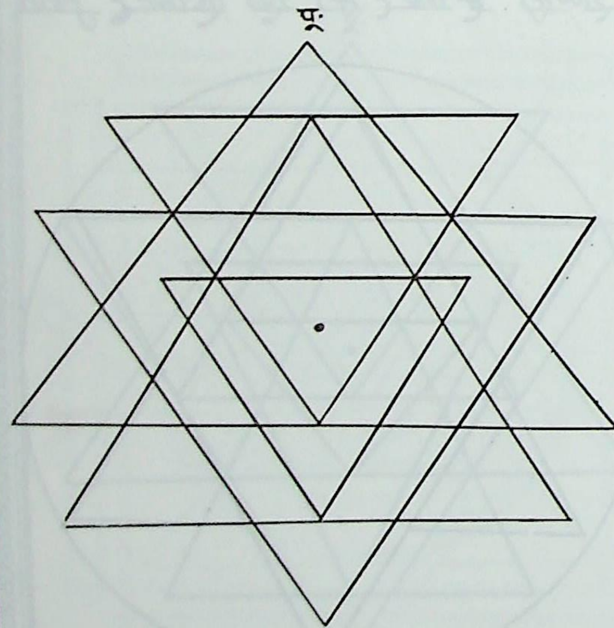
कोण को स्पर्श करती हुई तिर्यक्-रेखा से बढ़ी हुई पार्श्व-रेखाओं के सिरे को जोड़ दे। इस प्रकार चार कोण और बढ़ जाने से अन्तर्दशार बन जाता है (देखें – अगले पृष्ठ संख्या ८८ का चित्र)।



अब बहिर्दशार की विधि लिखते हैं –

प्रथम वह्नि तथा द्वितीय वह्नि की मध्यवर्त्तिनी आद्य-शक्ति की पूर्व-दिशा में स्थित तिर्यक्-रेखा के दोनों कोणों को (अन्तर्दशार के द्वितीय और दशम कोण को) क्रमशः ईशान और आग्नेय की ओर बढ़ाकर, ईशान-आग्नेय कोण बनाती हुई दो पार्श्व-रेखाएं नीचे की ओर खींच कर, तृतीय शक्ति के पश्चिम कोण से कुछ पश्चिम की ओर ले जाकर मिला दे। यह बहिर्दशार बनाने वाली चतुर्थ शक्ति बन गई। तत्पश्चात् प्रथम वह्नि की पश्चिम रेखा के दोनों कोणों को अर्थात् अन्तर्दशार के पाँचवें और सातवें कोणों को, उत्तर-दक्षिण की ओर बढ़ा कर, उत्तर-दक्षिण कोण बनाती हुई, उसके दोनों सिरों से दो पार्श्व-रेखाएं चतुर्थ शक्ति की दोनों पार्श्व-रेखाओं को भेदन करती हुई, द्वितीय वह्नि के पूर्व कोण से पूर्व की ओर ले जाकर मिला दे। यह बहिर्दशार का घटक तृतीय वह्नि बन जाता है। इस प्रकार अन्तर्दशार के ऊपर (आगे पृष्ठ संख्या ९० में प्रदर्शित चित्र के अनुसार) षट्कोण बन जाएगा।

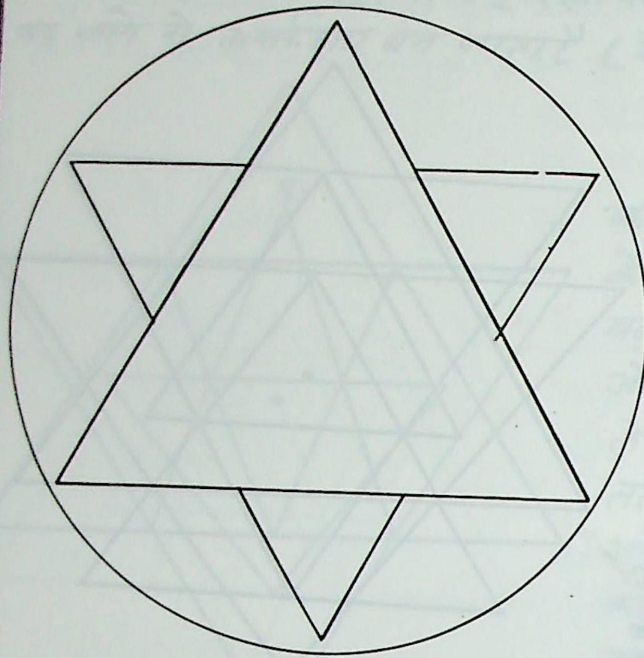
अब आद्य-शक्ति की वाम और दक्षिण रेखाओं को ईशान तथा अग्निकोण की ओर द्वितीय वह्नि के पूर्व कोण तक, बराबर तक, बढ़ाकर, उनके सिरों को द्वितीय वह्नि के पूर्व कोण को स्पर्श करती हुई तिर्यक्-रेखा से जोड़ दे तथा आद्य-वह्नि की दोनों पार्श्व-रेखाओं को क्रमशः नीचे वायव्य-नैर्ऋत्य कोण की ओर तृतीय शक्ति के पश्चिम-कोण के बराबर तक बढ़ाकर, उक्त कोण को स्पर्श करती हुई एक तिर्यक्-रेखा खींचकर, उसके द्वारा उक्त पार्श्व-रेखाओं के सिरों को जोड़ दे। इस प्रकार बहिर्दशार बन जाएगा (आगे पृष्ठ संख्या ९१ का चित्र देखें)।



अब चतुर्दशार लिखने की विधि का वर्णन किया जाता है—

चतुर्थ शक्ति की पूर्व दिशा में स्थित तिर्यक्-रेखा को अर्थात् बहिर्दशार के तीसरे और नवें कोण को, क्रमशः उत्तर-दक्षिण की ओर बढ़ाकर, उस बढ़ी हुई रेखा के दोनों सिरों से दो पार्श्व-रेखाएं नीचे की ओर खींचकर, चतुर्थ शक्ति के पश्चिम कोण से पश्चिम मे लेजाकर मिलादें। यह चतुर्दशार बनाने वाली पञ्चम शक्ति बन गई। इसी प्रकार तृतीय वह्नि की पश्चिम दिशा में स्थित तिर्यक्-रेखा के दोनों अग्र-कोणों से पूर्व की ओर दो पार्श्व रेखाएं पञ्चम शक्ति की पार्श्व रेखाओं को भेदन करती हुई

यन्त्र
03

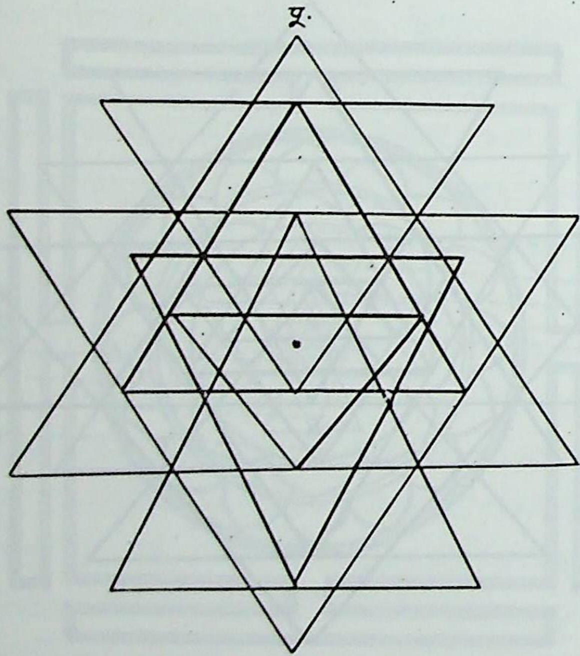


खींचकर, तृतीय वह्नि के पूर्व कोण के पूर्व में ले जाकर मिलादे। यह चतुर्थ वह्नि बन गया। इस पञ्चम शक्ति और चतुर्थ वह्नि के योग से चतुर्दशार का सम्पादक षट्कोण बन गया। तदनन्तर चतुर्थ शक्ति की पार्श्व-रेखाओं को क्रमशः ईशान-आग्नेय की ओर बढ़ायें और इसी प्रकार आद्य-शक्ति की पूर्व रेखा के दोनों सिरों को क्रमशः ईशान-आग्नेय की ओर बढ़ाकर, चतुर्थ शक्ति की पार्श्व-रेखाओं के सिरों से जोड़ दें। पुनः आद्यशक्ति की दोनों पार्श्व-रेखाओं को यहाँ तक बढ़ायें कि वे चतुर्थ वह्नि की पार्श्व-रेखाओं को भेदन करती हुई, तृतीय वह्नि के पूर्व कोण के बराबर पहुँच जाँय। फिर उक्त कोण को स्पर्श करती हुई एक पूर्व रेखा खींच कर, उससे इन पार्श्व-रेखाओं के सिरे को जोड़ दे। इस प्रकार चक्र के पूर्व भाग में चार कोण और बढ़ जाते हैं। तत्पश्चात् तृतीय वह्नि की पार्श्व-रेखाओं को क्रमशः वायव्य-नैर्ऋत्य की ओर बढ़ावे और आद्य वह्नि की पश्चिम रेखा के दोनों कोणों को क्रमशः वायव्य-नैर्ऋत्य की ओर बढ़ाकर, उक्त पार्श्व रेखाओं को इस रेखा से मिलादे। इसी प्रकार आद्य वह्नि की पार्श्व-रेखाओं को क्रमशः वायव्य-नैर्ऋ-त्य की ओर चतुर्थ शक्ति के पश्चिम कोण के बराबर तक बढ़ाये और इस कोण को स्पर्श करती हुई एक

महा०

पश्चिम-रेखा खींच कर, उससे उक्त रेखाओं के सिरों को मिलादे। इस प्रकार चतुर्दशार बन जाता है।

(देखें- अगले पृष्ठ संख्या ९२ पर प्रदर्शित बाँईं ओर का पहला चित्र)

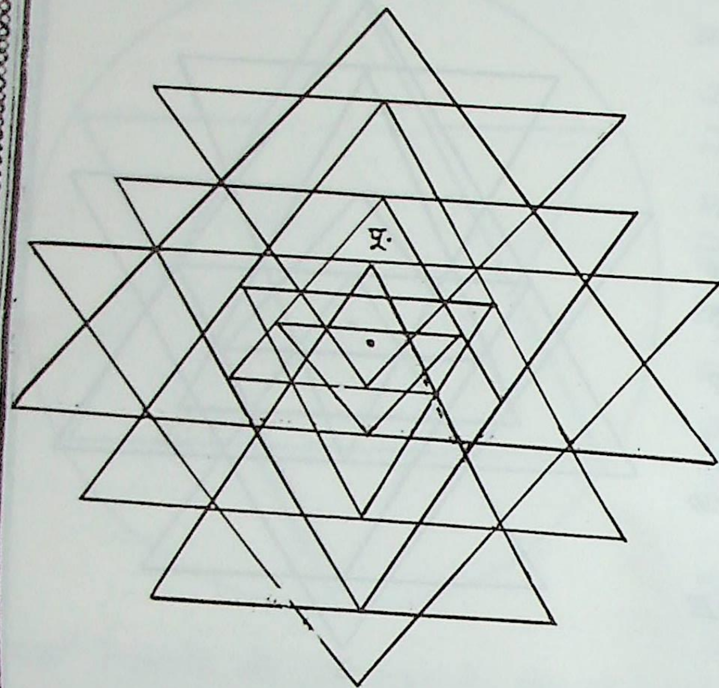


अब इसके वाह्य-भाग में शिव-चक्र लेखन की विधि का वर्णन किया जाता है—

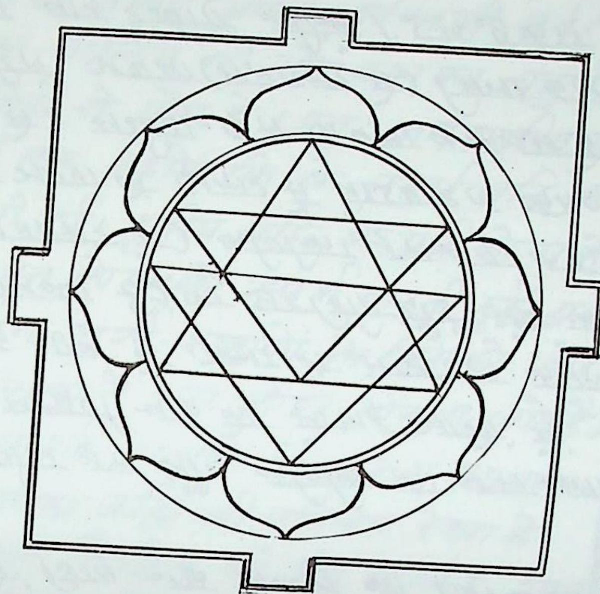
पूर्व लिखे अनुसार मर्यादा वृत्त और कर्णिका का वृत्त बना कर अथवा न बना कर, इस सम्पूर्ण चक्र को सोलह भागों में विभाजित करे और फिर एक-एक के अन्तर से अष्टदल कमल बनाये (देखें- आगे पृष्ठ संख्या ९२ पर प्रदर्शित बाँईं ओर का दूसरा चित्र), तत्पश्चात् (मतान्तर से) कर्णिका वृत्त बना कर इसके बत्तीस भाग करके एक-एक भाग के अन्तर से षोडशदल कमल बनाये इसके बाद (मतान्तर से) मर्यादा-वृत्त अथवा वृत्तत्रय देकर भूपुर के लिए चार द्वार सहित अथवा (मतान्तर से) बिना द्वार के एक रेखा, तीन रेखा अथवा चार रेखाएँ खींचे। इस प्रकार सम्पूर्ण 'श्रीयन्त्र' बन जाता है।

सृष्टि-क्रम' तथा संहार-क्रम के भेद से 'श्रीयन्त्र' दो प्रकार के होते हैं। आगे पृष्ठ संख्या ९३ पर प्रदर्शित श्रीयन्त्र का स्वरूप 'सृष्टि-क्रम' का है।

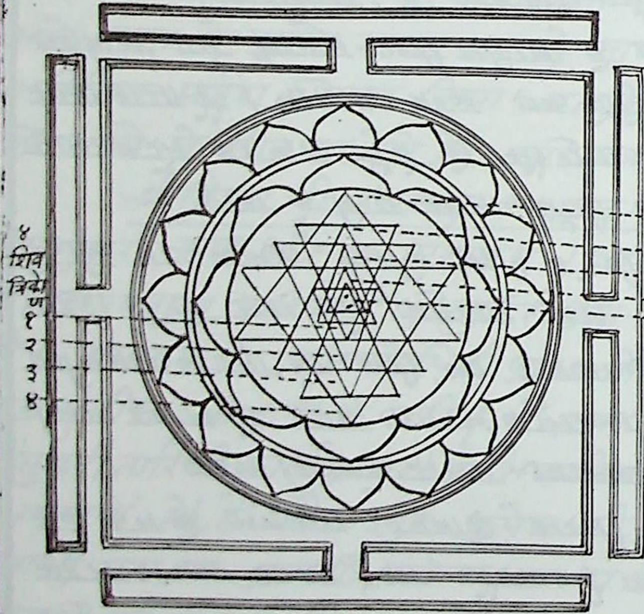
'सृष्टि-क्रम' वाले श्री यन्त्र के सबसे भीतरी वृत्त में, वृत्त के केन्द्र रूप विन्दु के चारों ओर नौ त्रिकोण हैं। इनमें से पाँच त्रिकोण तो ऊर्ध्व मुखी हैं और चार अधोमुखी हैं।



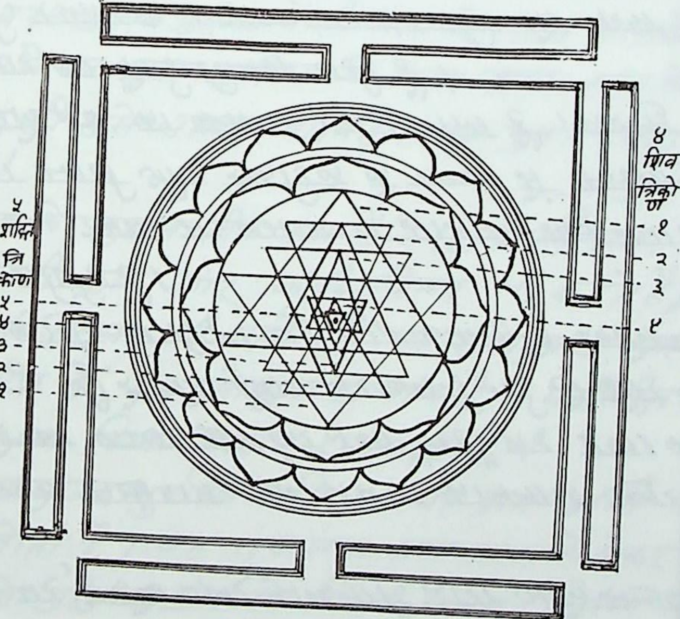
ऊर्ध्वमुखी पाँच त्रिकोण शक्ति के द्योतक हैं और वे 'शिवयुवती' कहे जाते हैं। अधोमुखी चार त्रिकोण शिव के द्योतक हैं। इन्हें 'श्रीकण्ठ' कहा जाता है। पाँचों शक्ति त्रिकोण ब्रह्माण्ड के विषय में पञ्च महाभूत, पंच तन्मात्रा, पञ्च ज्ञानेन्द्रिय, पञ्च कर्मेन्द्रिय तथा पञ्च प्राण के द्योतक हैं। मनुष्य शरीर में यही पाँच त्रिकोण (त्वक्, असृक्, माँस, मेद तथा अस्थि रूप में स्थित हैं तथा चारों शिव, पुरुष वाची त्रिकोण ब्रह्माण्ड में चित्त, बुद्धि, अहंकार तथा



तथा मन रूप में स्थित हैं और पिण्डाण्ड में ये मज्जा, शुक्र, प्राण तथा जीव रूप से विद्यमान हैं। (देखें - बाँई ओर का चित्र)। समय-मत के अनुयायी इसी सृष्टि-क्रम वाले यन्त्र की पूजा करते हैं। जगद् गुरु आद्य शंकराचार्य इसी समय-मत को मानने वाले थे, अतः उनके प्रत्येक मठ में यह यन्त्र इसी प्रकार से अङ्कित मिलता है। 'संहार-क्रम' के श्री यन्त्र की पूजा (देखें - दाँई ओर चित्र) कौल-मत के अनुयायी करते हैं। ये लोग काश्मीरी-सम्प्रदाय के होते हैं।



श्री यन्त्र (सृष्टि-क्रम)



श्री यन्त्र (संहार-क्रम)

श्रीयन्त्र की रचना - श्रीयन्त्र को स्फटिक शिला, मरकतमणि आदि पर, अथवा स्वर्ण, रौप्य, ताम्र - इन धातु के पत्रों पर महीन काट, खोद कर, समतल अथवा उभरा हुआ - दोनों प्रकार का बनाया जा सकता है। इसे इन वस्तुओं अथवा भोजपत्र के ऊपर चन्दन, कुंकुम, गोरोचन आदि से लिख कर भी तय्यार किया जा सकता है। गहरा अथवा उभरा हुआ, जैसा भी यन्त्र हो, पूजा के अवसर पर, उसके ऊपर चन्दनादि द्वारा अपने सम्प्रदाय एवं क्रम के अनुसार रेखाऐं भरनी चाहिए।

यन्त्र लिखते समय उपासक को उचित है कि वह अपने सम्प्रदाय-क्रम अथवा कामना के अनुसार जिस स्थल से पूजा आरम्भ करना चाहे, ठीक उसी स्थल से रेखा का उपक्रम करे तथा जहाँ पर पूजा का पर्यवसान करना हो, वहीं पर उसका उपसंहार भी करे। यदि चक्र की रेखाऐं खोद कर बनाई गई हों और वे गहरी हों तो ऊपर कहे अनुसार उनमें चन्दनादि भर कर ही पूजा करनी चाहिए। यह बात ध्यान में रखने योग्य है कि पट, फलक, भित्ति आदि में श्रीचक्र लिख कर पूजा करना वर्जित है।

पूजा के लिए सोना, चाँदी और ताँबे का श्रीयन्त्र क्रमशः उत्तम, मध्यम तथा सामान्य माना गया है। पूजा करने का फल ताँबे में सौ गुना, चाँदी में करोड़ गुना तथा स्वर्ण और स्फटिक के यन्त्र में अनन्तगुना माना गया है। धातु का यन्त्र एक तोले से लेकर सात-आठ तोले तक का बनाया जा सकता है, परन्तु स्फटिक एवं मरकत आदि मणियों के बने हुए यन्त्र के लिए भार का कोई नियम नहीं है।

'रुद्रयामल' के अनुसार - मूँगा, पद्मराग, नीलम, वैदूर्य, स्फटिक अथवा मरकतमणि के यन्त्र में पूजा का फल अकल्पनीय गुणा होता है।

यन्त्र ८३

यन्त्र का आवाहन और प्राण-प्रतिष्ठा अचर, चर तथा धारण योग्य भेद से तीन प्रकार की होती है— 'अचर' प्राण प्रतिष्ठा में यन्त्र स्थापित रहता है, उठाया नहीं जाता। 'चर' प्राण-प्रतिष्ठा में पवित्रता के साथ यन्त्र को अपने स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जा सकता है। 'धारण योग्य' प्राण-प्रतिष्ठा में यन्त्र- पूजा-काल के अतिरिक्त सर्वदा धारण किया जाता है। केवल पूजा के समय ही उसे उतारा जाता है। जब पुनः देवता को अपने में लीन कर देते हैं, तब यन्त्र को धारण कर लेते हैं।

महत्व

श्रीविद्या की उपासना का क्रम— श्रीविद्या की उपासना के मुख्य तीन क्रम हैं— (१) काली क्रम, (२) सुन्दरी क्रम और (३) तारा क्रम। इनमें काली क्रम को 'कुण्डलिनी-क्रम' और 'कादि-विद्या' भी कहते हैं, यह सत्त्वगुण प्रधान है। सुन्दरी क्रम को 'हंस-क्रम' और 'हादि-विद्या' भी कहते हैं, यह रजोगुण प्रधान है। तारा क्रम को 'समवरोधिनी क्रम' और 'सादि-विद्या' भी कहते हैं, यह तमोगुण प्रधान है। यही तीन 'क्रम दीक्षा' के नाम से प्रसिद्ध हैं तथा इनके पूर्ण होने पर साधक शिव-स्वरूप हो जाता है।

"सुन्दरी तारिणी काली क्रमदीक्षाभिगामिनी। क्रम पूर्णो महेशानि क्रमाच्छम्भुर्भविष्यति"— यह क्रम सभी आम्नायों में है और इनमें प्रत्येक की पञ्चक्रम से उपासना होती है। यह उपासना प्रातःकाल से लेकर आधी रात तक क्रमशः पञ्च-सन्ध्या के रूप में होती है। इनमें प्रत्येक क्रम से विद्या भिन्न-भिन्न समय पर भिन्न-भिन्न रूपों में उपास्य होती है।

कादि-विद्या रूपा जो काली है, उनके क्रम से प्रातः 'कामकला' काली, मध्याह्न में 'भुवनेश्वरी', सायंकाल में 'चामुण्डा', रात्रि में 'समयकुब्जिका' तथा मध्यरात्रि में 'कादि पञ्चदशी' की उपासना होती है।

हादि-विद्या रूपा जो महात्रिपुर सुन्दरी हैं, उनके क्रम में प्रातः 'आद्या काली', मध्याह्न में 'तारा', सायंकाल में "छिन्नमस्ता", रात्रि में 'बाला' तथा अर्द्धरात्रि में 'हादि पञ्चदशी' की उपासना होती है।

सादि-विद्या रूपा जो 'तारा' हैं, उनके क्रम में प्रातः 'अनिरुद्ध-सरस्वती' के रूप में, मध्याह्न में 'तारा', सायंकाल में 'बाला', रात्रि में 'ज्ञान सरस्वती' तथा अर्द्धरात्रि में 'सादि पञ्चदशी' की उपासना होती है।

इनके अतिरिक्त भी श्रीविद्या के बहुत से क्रम-भेद हैं, जिनमें लघु-क्रम से लेकर 'महाक्रम' एवं 'पूर्णक्रम' पर्यन्त उपासना होती है।

जो लोग तारा-क्रम से पृथक पूजा नहीं करते, वे कहादि (कादि + हादि) विद्या से ही काम लेते हैं।

<u>आम्नाय-भेद</u> – श्रीविद्या के प्रधान आम्नाय ६ हैं, जो पूर्व आदि चार दिशा और 'ऊर्ध्व तथा 'अधः' – इस प्रकार ६ दिशाओं के नाम से प्रसिद्ध हैं। इनके अतिरिक्त ईशान आदि चार उप-दिशाओं के नाम से प्रसिद्ध और भी आम्नाय हैं, जिन्हें 'चार उपाम्नाय' कहते हैं तथा ये चारों चार दिशाओं के अपने मुख्य आम्नायों के साथ यथायोग्य मिले रहते हैं। अतः आम्नाय मुख्यतः ६ ही गिने जाते हैं — (१) पूर्वाम्नाय, (२) दक्षिणाम्नाय, (३) पश्चिमाम्नाय, (४) उत्तराम्नाय, (५) ऊर्ध्वाम्नाय तथा (६) अधराम्नाय। यद्यपि गणना-क्रम में 'अधराम्नाय' सबके अन्त में आता है, तथापि उपासना-क्रम में इसे सबसे पहले रखा जाता है। इन ६ आम्नायों में प्रत्येक के (१) सृष्टि, (२) स्थिति, (३) सख्या, (४) अनाख्या तथा (५) भासा – ये पाँच क्रम होते हैं, जिनका 'मूलाधार' से लेकर 'आज्ञा-चक्र' तक में (मतान्तर से – ब्रह्मरन्ध्र तक में) समन्वय हो जाता है। इनमें से प्रत्येक की 'आम्नायिका' होती है, यथा – अधराम्नाय की

'तारा', पूर्वाम्नाय की 'भुवनेश्वरी', दक्षिणाम्नाय की 'दक्षिण काली', पश्चिमाम्नाय की 'कुब्जिका', उत्तराम्नाय की 'गुह्यकाली' तथा ऊर्ध्वाम्नाय की 'बाला त्रिपुरमहासुन्दरी' — ये आम्नायिका प्रत्येक उपाम्नाय की भी होती हैं। इनमें 'सप्तशती' में वर्णित महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती और चामुण्डा — ये क्रमशः ईशान, आग्नेय, वायव्य और नैऋत्य की नायिकाएँ हैं।

इन छः आम्नायों में से पूर्वाम्नाय, दक्षिणाम्नाय तथा पश्चिमाम्नाय के पञ्चकर्म के अन्तर्गत जो सृष्टि, स्थिति और संहार क्रम हैं, उनमें प्रत्येक के भिन्न-भिन्न चक्र, मुद्रा-दर्शन, योगिनी, सिद्ध तथा चक्र नायिका होते हैं, जिन्हें आगे संक्षिप्त रूप में दिग्दर्शित किया गया है। इनमें अनाख्या तथा भासा की अपने-अपने आम्नाय-क्रम के समष्टि-चक्र में पूजा होने के कारण इनके पृथक् चक्र, मुद्रा आदि नहीं होते। इसी प्रकार अधराम्नाय, उत्तराम्नाय और ऊर्ध्वाम्नाय के भी समष्टि में (बिन्दु से भूपुर पर्यन्त) पूजा होने के कारण उनके अपने पृथक् मुद्रा, दर्शन आदि नहीं होते, परन्तु निर्वाण विद्या, शाम्भव, पाशुपत आदि छहों आम्नायों के पृथक्-पृथक् होते हैं। सबके अन्त में बिन्दु से ब्रह्मरन्ध्र तक पञ्चदशी, षोडशी, महाषोडशी, सप्तदशी, अष्टादशी आदि तथा निर्वाण सुन्दरी, सर्वाधिकार शाम्भवी, महापादुका, अनुत्तर वादिनी, सर्वाम्नाय सर्वाधिकारा एवं परमया विद्या, षोडश चक्रेश्वरी, समया नित्या, दश महाविद्या, पञ्च सिंहासन, पञ्च पञ्चिका, षडाम्नाय समया, नवरत्न कुब्जिका, नवरत्न सुन्दरी तथा अनाख्या आदि सब आ जाती हैं।

इसी प्रकार सभी आम्नायों में प्रत्येक देवता का मूल (मन्त्र), न्यास, ध्यान तथा पञ्चाङ्ग (स्तोत्र)

आदि होते हैं। इनमें जो 'अलेखनी विद्या' है, वह सुन्दरी और काली- दोनों की एक ही है। आचार्यों ने केवल समझाने के उद्देश्य से ही एक को 'अनुलोम' तथा दूसरे को 'विलोम' मान कर पृथक् दर्शाया है अर्थात् श्रीक्रम की अलेखनी को विलोम कर कालीक्रम में जपा जाता है। इसी प्रकार पञ्चदशी आदि विद्या में जब पञ्चदशी (लघु षोडशी) मूल देवता होगी, तब 'बाला त्रिपुर सुन्दरी' चक्र-नायिका होगी। जब षोडशी (महा त्रिपुर सुन्दरी) मूल विद्या होती है, तब 'पञ्चदशी' चक्र-नायिका होगी और जब अष्टादशी मूलविद्या होगी, तब 'सप्तदशी' चक्र नायिका होगी।

आम्नाय क्रम को समष्टि में समन्वय कर, अपनी-अपनी दीक्षा के अनुसार पूर्णाभिषेक से लेकर दिव्य साम्राज्य-मेधा तक क्रमशः पुष्पांजलि देकर पञ्चदशी, षोडशी आदि सभी विद्याओं की पूजा बिन्दु में ही की जाती है। 'समया विद्या', 'समयातिता' आदि जो विद्याएँ हैं, वे सब निर्वाणोपा-सना में जाकर निर्वाण-विद्या के रूप में परिणत हो जाती हैं और यथाक्रम एक-दूसरे में लीन हो कर, अन्ततः एक निर्वाण-विद्या बन जाती है। यह सब क्रमोपासना से ही होता है।

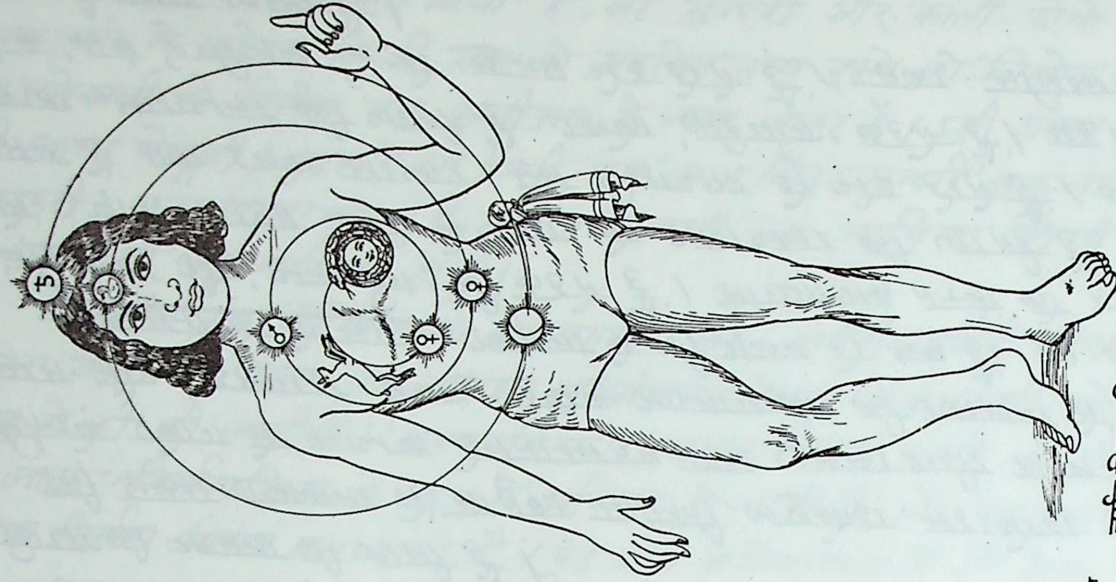
उपासना-क्रम में ब्राह्म मुहूर्त से लेकर मध्यरात्रि तक अनेक क्रिया-कलाप होते हैं। इनमें सबसे पहले की जाने वाली क्रिया प्रातः कृत्य है। यह प्रातः कृत्य आम्नाय-भेद से भिन्न-भिन्न प्रकार का होता है, परन्तु सर्वाम्नायात्मक प्रातः कृत्य एक और भी होता है, जिसकी तालिका देखने से ठीक-ठीक पता चलेगा। प्रातः कृत्य में सबसे पहला चिन्तन है। चिन्तन में श्री गुरु-पादुका का चिन्तन सबसे पहले होता है। उसके बाद यथाक्रम चक्र देवता आदि का चिन्तन किया जाता है। सर्वोत्तम क्रम में प्रातः कृत्य में चक्रों

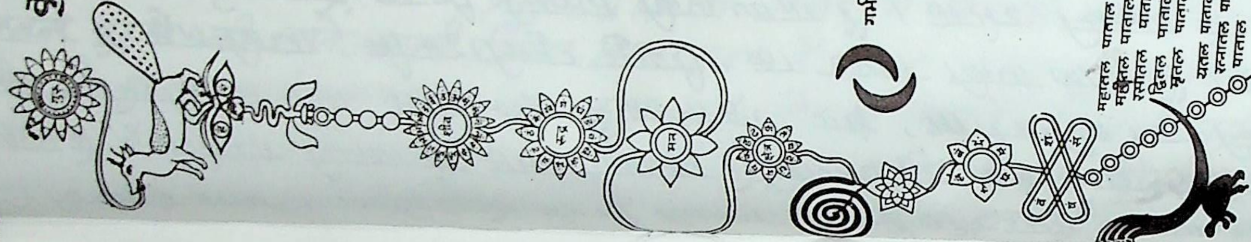
के चिन्तन के साथ आम्नायिकाओं का भी चिन्तन होता है और इसमें आश्रम-भेद से भी भेद होता है। इस क्रम में मूलविद्या चिन्तन के समय मूलाधार में 'वाग्भवकूट' एवं 'वागधीश्वरी' का; हृदय में 'कामराजकूट' एवं 'कामेशी' का तथा आज्ञा-चक्र में 'शक्तिकूट' एवं 'आदिशक्ति' का चिन्तन होता है। तत्पश्चात् ब्रह्मरन्ध्र में मूलविद्या 'श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी' का ध्यान किया जाता है। साथ ही शरीर के षट्चक्रों में छहों आम्नायिकाओं का भी चिन्तन किया जाता है। अभेद-चिन्तन में मूलाधार से लेकर ब्रह्मरन्ध्रपर्यन्त ही ब्रह्मविद्या की भावना की जाती है।

इसी प्रकार उपासना में मातृका, मालिनी, लघुषोढा, महाषोढा आदि कई प्रकार के न्यास बताये गए हैं, जिनके प्रयोग से साधक देवतास्वरूप तथा उसका शरीर मन्त्रमय बन जाता है। परन्तु इनमें से मूलन्यास और षोढान्यास पृथक्-पृथक् आम्नायक्रम की उपासना में पृथक्-पृथक् ही होते हैं।

<u>उपासना के दो रूप</u> - उपासना के भी मुख्य दो रूप हैं - (1) बाह्य तथा (2) आभ्यन्तर, जिन्हें क्रमशः 'बहिर्याग' और 'अन्तर्याग' भी कहते हैं। आध्यात्मिक तत्त्वों को ही उपकरण मानकर मानस-पूजा के रूप में ध्यान, धारणा आदि के द्वारा जो आराधना की जाती है, उसे 'अन्तर्याग' कहते हैं। यह भावनात्मक है और इसके साधार एवं निराधार दो भेद होते हैं। बाहर के भौतिक उपकरण आदि से जो पूजा-आराधना की जाती है, उसको 'बहिर्याग' कहते हैं। यह क्रियात्मक होता है और इसके भी 'वैदिक' एवं 'तान्त्रिक' - दो मुख्य भेद होते हैं। इसका सविस्तर वर्णन 'सूत संहिता' आदि ग्रंथों में भी पाया जाता है।

कुण्डलिती और चक्र

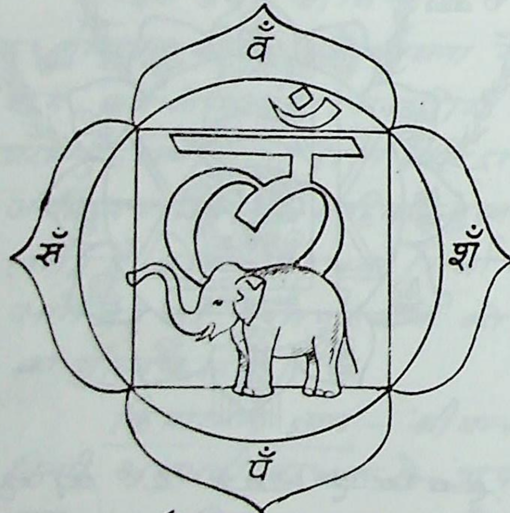




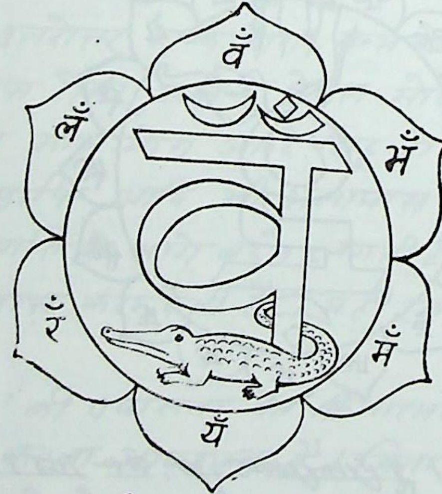
जर्मन विद्वान् गिखतेल रचित चक्रों का चित्र

इस प्रकार 'श्रीचक्र' में नित्य, नैमित्तिक, काम्य एवं बहिर्याग, अन्तर्याग आदि के रूप में नाना प्रकार से 'श्रीविद्या' की उपासना होती है, परन्तु इनमें से जब ध्यान योगात्मक आभ्यन्तर-उपासना करनी होती है, तब वह शरीर में ही श्रीचक्र की भावना कर, श्रीचक्र के सम्पूर्ण क्रम को शरीरगत चक्रों में समन्वय कर, ऐक्यात्मभाव से की जाती है। इसमें मूलाधार से लेकर ब्रह्मरन्ध्र पर्यन्त अधरादि आम्नायों की तारा, भुवनेश्वरी आदि

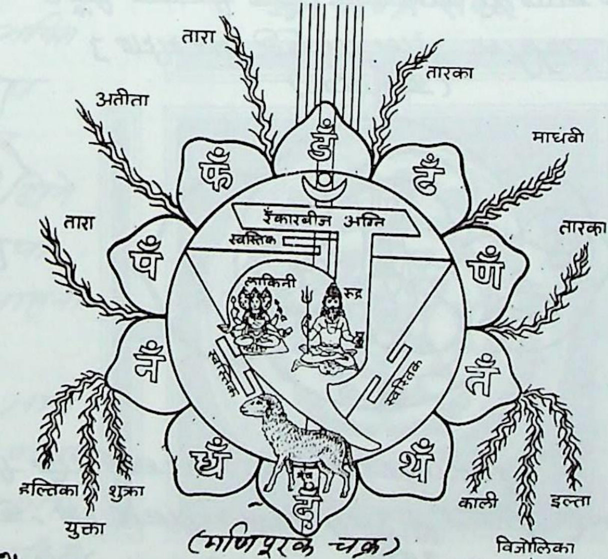
एक को दूसरे में उत्तरोत्तर लीन करके बाला रूप में जाकर, बाला को भी सर्वाम्नायेश्वरी महात्रिपुर सुन्दरी में लीन करके एक रूप हो जाता है। यहीं पर आकर दीक्षा का चौंसठवाँ क्रम पूरा हो जाता है।



(मूलाधार चक्र)



(स्वाधिष्ठान चक्र)



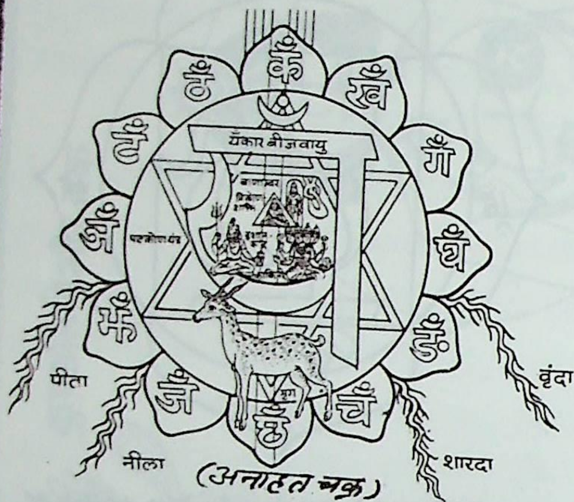
(मणिपूरक चक्र)

[हमारे शरीर के विभिन्न स्थानों में सात चक्रों की कल्पना की गई है – (१) मूलाधार चक्र, (२) स्वाधिष्ठान चक्र (३) मणिपूरक चक्र, (४) अनाहत चक्र, (५) विशुद्धाख्य चक्र, (६) आज्ञा चक्र तथा (७) सहस्रार अथवा ब्रह्मरन्ध्र। आधार चक्र अथवा मूलाधार चक्र की स्थिति गुदा से ऊपर मानी गई है। यह पृथ्वी तत्त्व प्रधान चक्र है। मूलाधार से

यन्त्र १०८

लगभग चार अंगुल ऊपर मूत्राशय अथवा गर्भाशय के मध्य मे "स्वाधिष्ठान चक्र की अवस्थिति है। स्वाधिष्ठान
से ऊपर मेरुदण्ड के सम्मुख नाभि-प्रदेश में 'मणिपूरक चक्र' की अवस्थिति है। मणिपूरक चक्र से ऊपर दोनों फेफड़ों
के समीप 'अनाहत चक्र' की अवस्थिति मानी गई है। अनाहत चक्र के ऊपर कण्ठ प्रदेश में "विशुद्धाख्य चक्र' अव-
स्थित है। विशुद्धाख्य चक्र के ऊपर ललाट के भ्रूमध्यभाग मे 'आज्ञा चक्र' की अवस्थिति मानी गई है। भ्रुकुटि से लगभग
तीन इंच ऊपर कपाल के मध्य में 'सहस्रार चक्र' की अवस्थिति है। [इसी को 'ब्रह्मरन्ध्र' भी कहा जाता है]

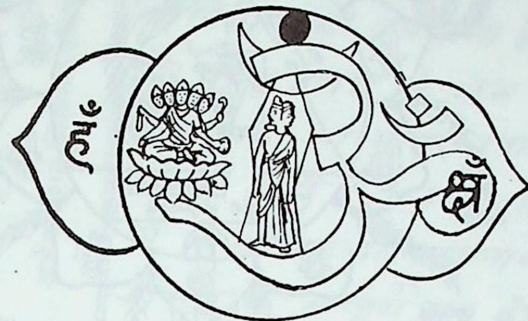
महा०



(अनाहत चक्र)



(विशुद्धाख्य चक्र)



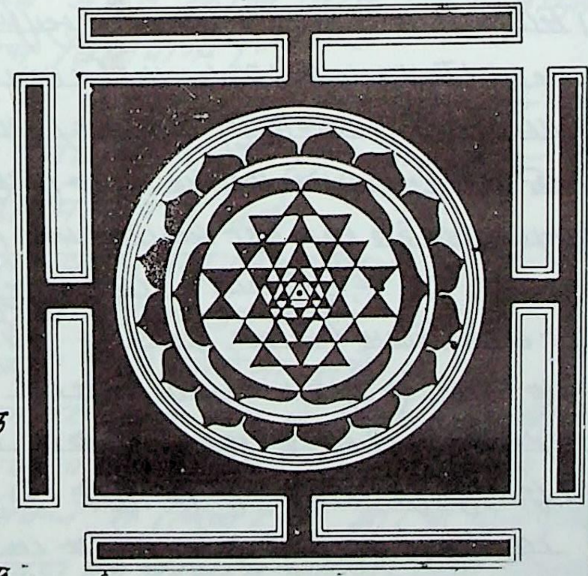
(आज्ञा चक्र)

[शरीरस्थ सुषुम्ना नाड़ी सर्पिणी की भाँति कुण्डली मारे मूलाधार में शयन करती है। योगाभ्यास के द्वारा जब उसे जगाया जाता है, तो वह क्रमशः विभिन्न चक्रों का भेदन करती हुई 'सहस्रार' तक जा पहुँचती है। सहस्रार को ही ब्रह्मरन्ध्र,

सहस्रदल कमल अथवा शून्य चक्र भी कहते हैं। कुण्डलिनी को जगाने का अभ्यास किसी योग्य गुरु के निर्देशन में ही करना चाहिए. तभी उसमें सफलता प्राप्त होती है, अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि पहुँचने की सम्भावना अधिक होगी।

इस प्रकार श्री विद्या के उपासना-क्रम में अधराम्नाय से लेकर ऊर्ध्वाम्नाय तक की क्रमोपासना से उत्तरोत्तर शब्द योग, मन्त्रयोग, भक्ति योग, कर्मयोग एवं ज्ञान योग प्राप्त होकर, अन्त में केवल मोक्षरूप परम पुरुषार्थ प्राप्त होता है। इनमें मन्त्र-योग आदि सिद्ध होने पर अन्तराय-निवृत्ति, ऐहिक-सुख-प्राप्ति आदि भी अनायास ही होने लगते हैं तथा साधना निर्बाध गति से आगे बढ़ने लगती है तथा आगे बढ़ कर परमपुरुषार्थ को प्राप्त करा देती है। यही इस उपासना का मुख्य फल है।

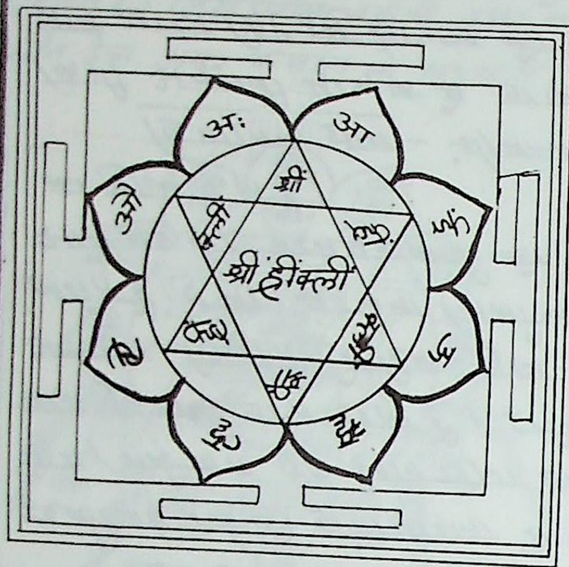
श्री यन्त्र सं० ३



<u>क्रियात्मक ज्ञान</u> - 'श्रीयन्त्र' की उपासना का क्रियात्मक-ज्ञान किसी अनुभवी साधक से प्राप्त करना आवश्यक है। बिना क्रियात्मक ज्ञान प्राप्त किए इस साधन को करने से लाभ के स्थान पर हानि भी हो सकती है। सामान्यतः यन्त्र-लेखनोपरान्त प्रतिदिन शौच-स्नानादि से निवृत्त हो, यन्त्र को अपने सम्मुख किसी चौकी आदि पर स्थापित कर, धूप दीप, गंध, पुष्प आदि से पूजन कर, 'श्रीसूक्त' का पाठ करने से धन-धान्य सुख आदि ऐश्वर्यों का लाभ होता है।

अथ त्रिपुरा मन्त्र प्रयोग - भगवती त्रिपुरा का त्र्यक्षर मन्त्र है- "श्रीं ह्रीं क्लीं।"

(त्रिपुरा यन्त्र)



यह त्रिपुरा मन्त्र वरादि, कामादि तथा श्री बीजादि क्रम से तीन प्रकार का होता है। यथा- (१) ह्रीं श्रीं ह्रीं, (२) क्लीं श्रीं ह्रीं एवं (३) श्रीं ह्रीं क्लीं।

<u>विधि</u> - सर्वप्रथम बाँईं ओर प्रदर्शित चित्र के अनुसार भगवती त्रिपुरा का यन्त्र तय्यार करें। फिर सामान्य पूजा-पद्धति से यन्त्र के मध्य भगवती का आवाहन करते हुए ऋष्यादि न्यास, कराङ्गन्यास एवं षडङ्ग न्यास करने के बाद देवी का निम्नानुसार ध्यान करें-

"पारिजात वने रम्ये मण्डपे मणि कुट्टिमे। रत्न सिंहासने रम्ये पद्मे षट्कोण शोभिते। अधस्तात् कल्प वृक्षस्य निषण्णां देवतां स्मरेत्। चापं पाशाङ्कुशं सरसिजान्यंकुशं पुष्प बाणान्॥ सविभ्राणां करसरसिजैः रत्नमौलिं त्रिनेत्राम्। हेमाब्जाभां कुचभर नतां रत्नकञ्जीर काञ्चीम्॥ ग्रैवेयाद्यैर्विलसित तनुं भावयेच्छक्ति माद्याम्। चामरा-दर्श ताम्बूल करण्डक समुद्‌कान्॥ बहन्तीभिः कुचार्त्तीभिर्दूतीभिः परिवारिताम्। करुणामृत वर्षिण्या पश्यन्तीं साधकं दृशा॥"

उक्त प्रकार से ध्यान कर- मानसोपचार पूजा कर शंख- स्थापन करे तथा सामान्य पूजा-पद्धति क्रम से सब क्रियाओं को सम्पन्न करे। <u>पुरश्चरण</u> - इस मन्त्र के पुरश्चरण में १२ लाख जप कर के त्रिमधुयुक्त बिल्व, अरगवध अथवा जपापुष्प से दशांश होम करे। यह प्रयोग समस्त कामनाओं की पूर्ति करनेवाला है।

(त्वरिता यन्त्र)

अथ त्वरिता मन्त्र प्रयोग-

भगवती त्वरिता का द्वादशाक्षर मन्त्र इस प्रकार है- "ॐ ह्रीं हुं खे छे क्ष स्त्री हूं क्ष र ह्रीं फट्।" यह सर्वसिद्धिप्रद है।

विनियोग- "अस्य मन्त्रस्य अर्जुन ऋषि विराट् छन्दः त्वरिता देवता पुरुषार्थ चतुष्टय सिद्ध्यर्थे विनियोगः।"

उक्त विनियोग के आधार पर ऋष्यादिन्यास तथा मन्त्रवर्णों के आधार पर मन्त्र न्यास करके निम्नानुसार देवी का 'ध्यान' करें-

"श्यामां बर्हिकलाप शेखर युतामाबद्धपर्णा शुकां
गुञ्जाहार लसत्पयोधरनतामष्टाहिपान् बिभ्रतीम्।
ताटंकांगद मेखलागुणरणन्मञ्जीरतां प्राथितान्
कैराती वरदाभयोद्यतकरां देवीं त्रिनेत्रां भजे॥"

उक्त विधि से ध्यान कर, बाँई ओर के चित्र में प्रदर्शित यन्त्र का निर्माण कर सामान्य पूजा पद्धति से पीठ-पूजा, तदुपरान्त आवरण-पूजा सम्पन्न करें। 'निबन्ध' में लिखा है कि द्वार के दोनों पार्श्वों में हाथ में पद्म तथा स्वर्णध्वजा एवं पट्टवस्त्र धारिणी जया-विजया को पूजा करें। अरुण वर्ण के सुगन्धित पुष्प, धूप-दीप आदि से पूजन कर, नृत्यगीतादि का उत्सव करना चाहिए।

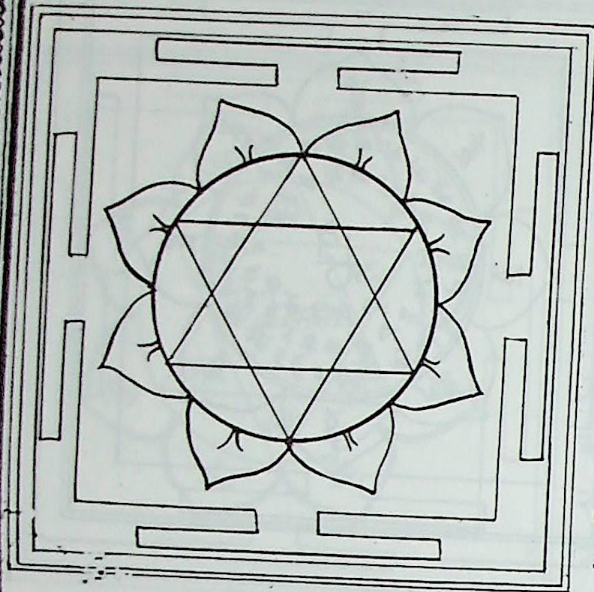
पुरश्चरण- इस मन्त्र के पुरश्चरण में 1 लाख जप करके त्रिमधुयुक्त बिल्व-समिधा का 10 हजार होम करना चाहिए।

(नित्या यन्त्र)

अथ नित्या मन्त्र प्रयोग-

भगवती नित्या देवी का द्वादशाक्षर मन्त्र इस प्रकार है -

" ऐं क्लीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा।"



विनियोग: - " अस्य श्री नित्या द्वादशाक्षर मन्त्रस्य सम्मोहन ऋषिः निवृच्छन्दः नित्या देवता पुरुषार्थ चतुष्टय सिद्ध्यर्थे विनियोगः।"

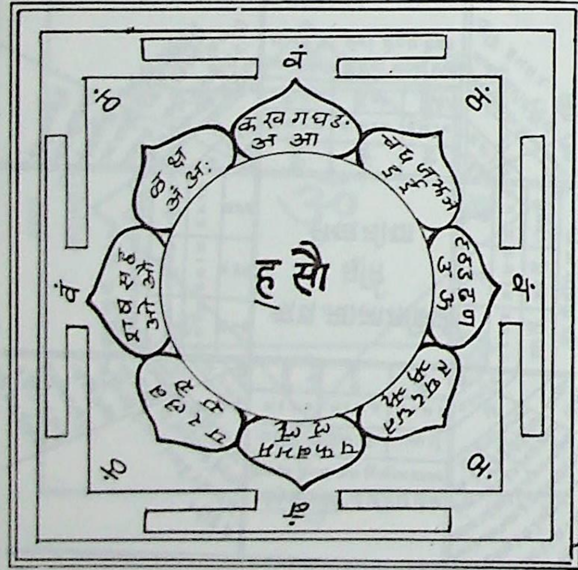
उक्त विनियोग के आधार पर 'ऋष्यादि न्यास' तथा 'कर न्यास' हृदयादि न्यास करके निम्नानुसार ध्यान करें -

"अर्द्धेन्दु मौलिमरुणामभराभिवन्द्यामम्भोजपाशसृणि पूर्ण कपाल हस्ताम्।
रक्ताङ्ग राग वसनाभरणं त्रिनेत्रां ध्यायेच्छिवस्यवनितां मद विह्वलाङ्गीम्॥"

उक्त प्रकार से ध्यान करके मानस-पूजा पूर्वक शंख-स्थापन करें। बाँई ओर प्रदर्शित चित्र के अनुसार 'त्वरिता यन्त्र' को बनाकर, पीठ पूजा के बाद आवरण-पूजा करे तथा अष्टदलों के बाहर इन्द्रादि लोकपालों तथा वज्रादि अस्त्रों की पूजा कर, धूपादि विसर्जनान्त कर्म करके, पूजा सम्पूर्ण करे।

पुरश्चरण - इस मन्त्र के पुरश्चरण में ४ लाख की संख्या में जप करना चाहिए तथा शर्करा, मधु एवं घृत युक्त मधूक पुष्पों द्वारा जप का दशांश होम करके गुरुदेव को संतुष्ट करे। त्वरिता देवी साधक की समस्त मनोभिलाषाओं की पूर्ति करती है।

(वागीश्वरी यन्त्र)



अथ वागीश्वरी मन्त्र प्रयोग – भगवती वागीश्वरी का दशाक्षर मन्त्र इस प्रकार है– "वद वद वाग्वादिनि स्वाहा।"

इस मन्त्र को भुवनेश्वरी अर्थात् 'ह्रीं' बीज से पुटित कर देने से अर्थात् आदि और अन्त में 'ह्रीं' लगादेने से यह 'महा सारस्वत मन्त्र' बनजाता है। यह मन्त्र विद्या, बुद्धि तथा वाक्शक्ति प्रदायक है।

विनियोग – अस्य श्रीवागीश्वरी दशाक्षर मन्त्रस्य कण्व ऋषिः विराट् छन्दः वागीश्वरी देवता पुरुषार्थ-चतुष्टये जपे विनियोग।"

उक्त विनियोग के आधारपर ऋष्यादि न्यास तथा मन्त्र के आधार पर मन्त्र-न्यास, कराङ्गन्यास एवं षडङ्गन्यास करके निम्नानुसार ध्यान करे–

तरुणशकलमिन्दोर्बिभ्रती शुभ्रकान्तिः, कुचभरनमिताङ्गी सन्निषण्णासिताब्जे।
निजकरकमलोद्यल्लेखनी पुस्तकश्रीः सकलविभवसिद्ध्यै पातु वाग्देवता नः॥

उक्त विधि से ध्यान करे तथा बाँई ओर प्रदर्शित चित्र के अनुसार 'वागीश्वरी यन्त्र' का निर्माण कर, सामान्य विधि से पीठ-पूजन तथा आवरण-पूजा करे। **पुरश्चरण** – इस मन्त्र के पुरश्चरण में 10 लाख की संख्या में मन्त्र-जप करना चाहिए तथा जप के अन्त में दुग्ध-मिश्रित श्वेत पद्म अथवा त्रिमधु युक्त तिलों द्वारा जप का दशांश होम करना चाहिए।

(ज्वालामालिनी यन्त्रम्)

अथ ज्वालामालिनी
मूर्ति
लेखनीया

ॐ ह्रीं ज्वालामालिनी मंत्रशरण

अथ ज्वालामालिनी मन्त्र प्रयोग –

भगवती ज्वालामालिनी भी शिव-पत्नी की ही एक प्रतिरूपा हैं। इनका मन्त्र इस प्रकार है– "ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनि देवि सर्वभूत संहारकारिके जातवेदसि ज्वलंतिप्रज्वलंति ज्वल ज्वल प्रज्वल हुं रं रं हुं फट्।" महा०

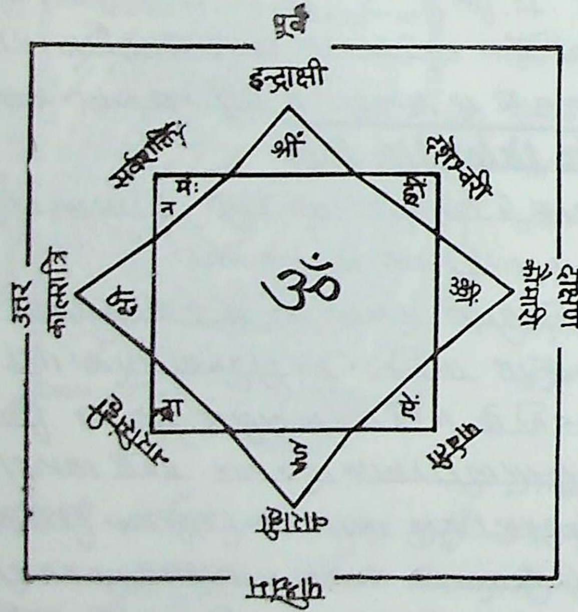
ज्वालामालिनी के पूजन-यन्त्र का स्वरूप इसी पृष्ठ पर बाँई ओर प्रदर्शित है। इसे ताम्रपत्र पर अंकित करा लेना चाहिए, अथवा भोजपत्र के ऊपर लालचंदन या अष्टगंध से लिखकर तय्यार कर लेना चाहिए।

देवी के पूजन का मन्त्र इस प्रकार है–

"ॐ नमो भगवती ज्वालामालिनि देवि सर्वभूत संहारकारिके जातवेदसि ज्वलंति प्रज्वलंति ज्वल ज्वल प्रज्वल हुं रं रं हुं फट् ज्वालामालिनी नित्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।"

पुरश्चरण – यह मन्त्र एक लाख जपने से सिद्ध होता है। जप का दशांश होम करना चाहिए। इससे मन्त्र सिद्ध होता है। मन्त्र सिद्ध हो जाने पर साधक की समस्त मनोभिलाषाओं की पूर्ति होती है तथा समस्त संकट दूर होते हैं।

(इन्द्राक्षी यन्त्र)



इन्द्राक्षी यन्त्र प्रयोग - भगवती इन्द्राक्षी का यन्त्र बाँई ओर प्रदर्शित है। ये देवी भी महामाया दुर्गा की प्रतिरूपा हैं। इस यन्त्र को अष्टगंध अथवा लालचन्दन से भोजपत्र के ऊपर लिखकर पूजा करनी चाहिए। यन्त्र को स्थायी रूप देने के लिए ताम्रपत्र पर भी खुदवाया जा सकता है। इस यन्त्र का सामान्य पूजा-विधि से पूजन करके निम्नानुसार ध्यान करना चाहिए। ध्यान का मन्त्र इस प्रकार है -

"इन्द्राक्षीं द्विभुजां देवीं पीतवस्त्र समन्विताम्। वामहस्ते वज्रधरां दक्षिणे च वरप्रदाम् ॥१॥ इन्द्राक्षी नाम सज्ज्योतिर्नानारत्न विभूषिताम्। प्रसन्न वदनाम्भोजामप्सरोगण सेविताम् ॥२॥"

इस प्रकार से ध्यान करने के पश्चात् 'इन्द्राक्षी स्तोत्र का पाठ करना चाहिए। स्तोत्र इस प्रकार है -

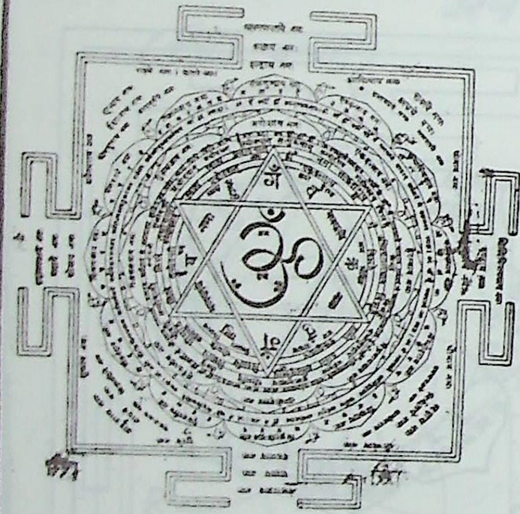
"इन्द्र उवाच ॥ इन्द्राक्षी नाम सा देवी देवतैः समुदाहृता। गौरी शाकम्भरी देवी दुर्गानाम्नाऽतिविश्रुता ॥३॥ कात्यायनी महादेवी चण्डघण्टा महातपा। गायत्री सा च सावित्री ब्रह्माणी ब्रह्मवादिनी ॥४॥ नारायणी भद्रकाली रुद्राणी कृष्ण पिङ्गला। अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्रिस्तपस्विनी ॥५॥ मेघ श्यामा सहस्राक्षी विष्णुमाया जलोदरी। महोदरी मुक्तकेशी घोररूपा

महाबला ॥६॥ अच्युता भद्रदा नन्दा रोगहन्त्री शिवप्रिया । शिवदूती कराली च प्रत्यक्ष परमेश्वरी ॥७॥ महिषासुरहन्त्री च चामुण्डा सप्तमातरः । इन्द्राणी इन्द्ररूपा च रुद्रशक्तिः परायणा ॥८॥ शिवा च शिवरूपा च शिवशक्ति परायणा । सदा सम्मोहिनी देवी सुन्दरी भुवनेश्वरी॥९॥आर्या दाक्षायणी चैव गिरिजा मेनकात्मजा ॥ वाराही नारसिंही च भीमा भैरवनादिनी ॥१०॥ श्रुतिः स्मृतिर्धृतिर्मेधा विद्या लक्ष्मीः सरस्वती । अनन्ता विजया पूर्णा मानस्तोकापराजिता ॥११॥ भवानी पार्वती दुर्गा हैमवत्यम्बिका शिवा । शिवा भवानी रुद्राणी शङ्करार्द्ध शरीरिणी ॥१२॥ मृत्युञ्जया महामाया सर्वरोग प्रणाशिनी । ऐरावत गजारूढ भूषिता कङ्कणकुण्डला ॥१३॥ स्तौनैमिपदैर्दिव्यैः स्तुता शक्रेण धीमता । शतमावर्तते यस्तु मुच्यते व्याधिबन्धनात् ॥१४॥ आवर्तयेत्सहस्रं यो लभते वांछितं फलं । इन्द्रेण कथितं स्तोत्रं सत्यमेव न संशयः ॥१५॥

उक्त स्तोत्र का नित्य १०० बार पाठ करने से मनुष्य सब प्रकार की व्याधि तथा बन्धनों से मुक्त हो जाता है और जो एक सहस्र बार पाठ करता है, वह मनोवांछित फल प्राप्त करता है।

अथ श्रीगणेश यन्त्र प्रयोग – श्रीगणेश सब देवताओं में आदि-पूज्य हैं। इनके अनेक मन्त्र उपलब्ध होते हैं, जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं — (१) वक्रतुण्डाय हुम्। (२) रायस्पोषस्य ददिता निधिदो रत्नधातुमान् रक्षोण बलगहनो वक्रतुण्डाय हुम्। (३) मेघोल्काय स्वाहा — इन सब मन्त्रों की जप-संख्या एक लाख है। (४) ॐ ह्रीं ग्रीं ह्रीं, (५) ॐ श्रीं गं सौम्याय गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा, (६) वक्रतुण्डैक-दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपते वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा — इन मन्त्रों की जप संख्या ४ लाख है। (७) ॐ हस्ति पिशाचि लिखे स्वाहा, (८) गं हस्ति पिशाचि लिखे स्वाहा, (९) ॐ नमो भगवते एकदंष्ट्राय हस्ति-

(श्री गणेशयंत्र)



-मुखाय लम्बोदराय उच्छिष्ट महात्मने आं क्रों ह्रीं गं घे घे स्वाहा - इन सब मन्त्रों की जप संख्या 1-1 लाख है। ये सभी मन्त्र मनोभिलाषाओं की पूर्ति करनेवाले हैं।

बाँई ओर प्रदर्शित गणेश यन्त्र को अष्टगंध अथवा लालचंदन द्वारा भोजपत्र पर लिखे अथवा ताम्रपत्र पर खुदवाले। प्रदर्शित यन्त्र में जो पीठ-देवी-देवता आदि के नाम लिखे हैं, उन्हें बिना लिखे भी यन्त्र का स्वरूप तय्यार किया जा सकता है। यन्त्र लेखनोपरान्त गन्ध-पुष्पादि से श्रीगणेशजी का तथा यन्त्र का पूजन करना चाहिए। पूजन सामान्य-विधि से भी किया जा सकता है। विस्तृत एवं विशिष्ट विधियों की जानकारी के लिए अन्य गणेश विषयक तन्त्र ग्रंथों का अध्ययन करना चाहिए। ध्यान का मन्त्र इस प्रकार है—

"एक दन्तं शूर्पकर्णं गजवक्त्रं चतुर्भुजम्। पाशांकुशधरं देवं मोदकान्बि-भ्रतकरैः॥ रक्तपुष्पमयीम्माला कण्ठे हस्ते परांशुभाम्। भक्तानांवरदं सिद्धि-बुद्धिभ्यां सेवितं सदा। सिद्धबुद्धि प्रदन्नृणान्धर्मार्थकाम मोक्षदम्। ब्रह्म रुद्रहरीन्द्राद्यैः संस्तुतम्परमर्षिभिः॥

पुरश्चरण - पूर्वोक्त संख्या में मन्त्र-जप करके, जप का दशांश होम करना चाहिए। होम तिलों से करना उचित है। जप का दशांश होम, होम का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन तथा उसका दशांश ब्राह्मण-भोजन का नियम है। ब्राह्मणों को मोदक-खीर आदि का भोजन कराना चाहिए। इससे सब प्रकार के विघ्न दूर होते हैं।

(हरिद्रागणेश यन्त्र)

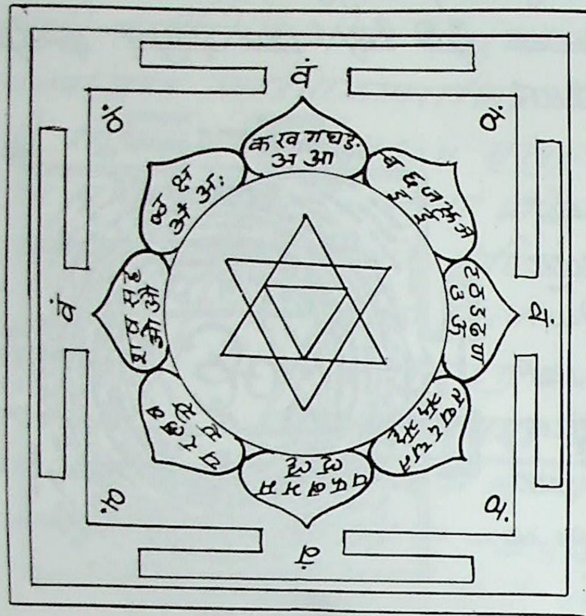
अथ हरिद्रागणेश मन्त्र प्रयोग-

हरिद्रा गणेश का एकाक्षरी मन्त्र है- "ग्लं।" यह सर्वार्थ सिद्धि दायक तथा विघ्न-विनाशक है।

विनियोग- "ॐ अस्य श्रीहरिद्रागणपति मन्त्रस्य वसिष्ठ ऋषिः गायत्री छन्दः हरिद्रागणपतिर्देवता गं बीजं लं शक्तिः ममाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।"

षडङ्गन्यास- "ॐ गां हृदयाय नमः। ॐ गीं शिरसे स्वाहा। ॐ गूं शिखायै वषट्। ॐ गैं कवचाय हुम्। ॐ गौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ गः अस्त्राय फट्।" इस प्रकार षडङ्गन्यास करके निम्नानुसार ध्यान करें-

"हरिद्राभं चतुर्बाहुं हारिद्र वसनं विभुम्।
पाशांकुशधरं देवं मोदकं दन्तमेव च॥"



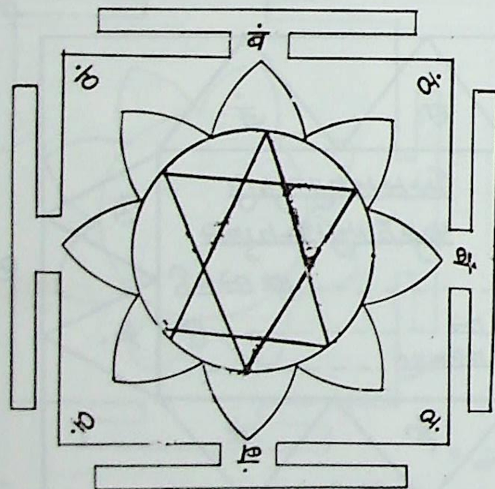
उक्त प्रकार से ध्यान कर, मानसोपचारों से पूजन कर, विधिवत् शंख-स्थापन, पीठ-पूजा, अंग-पूजा, आवरण-पूजा आदि कृत्य सामान्य-विधिसे करे। बाँई ओर प्रदर्शित चित्र के अनुसार यन्त्र निर्माण करना चाहिए।

पुरश्चरण -इस मन्त्र का पुरश्चरण ४ लाख जप है। जप का दशांश घृत, मधु, शर्करा, हरिद्रा मिश्रित तण्डुलों से होम करके तर्पण, मार्जन एवं ब्राह्मण-भोजन करें।

अथ शिव मन्त्र-यन्त्र प्रयोग—

भगवान सदाशिव का महामन्त्र है—"ॐ नमः शिवाय।" चूँकि शिवजी के अनेक रूप हैं, अतः मन्त्र भी अनेक पाये जाते हैं। परन्तु साधकों के लिए यही मन्त्र सर्वोपरि है। दूसरा मन्त्र— 'नमो भगवते रुद्राय' भी अभीष्ट-साधक है। महामृत्युञ्जय आदि अन्य मन्त्रों की जानकारी के लिए विभिन्न तन्त्र-ग्रंथों का अध्ययन करना चाहिए। बाँई ओर प्रदर्शित शिव के पूजन-यन्त्र को ताम्रपत्र पर खुदवा लें अथवा अष्टगंध, गोरोचन या केसर से भोजपत्र पर लिखकर तय्यार कर लें। यन्त्र लेखनोपरान्त सामान्य-पूजा-विधि से पूजन करें तथा निम्नानुसार शिवजी का ध्यान करें—

(शिव यन्त्र)

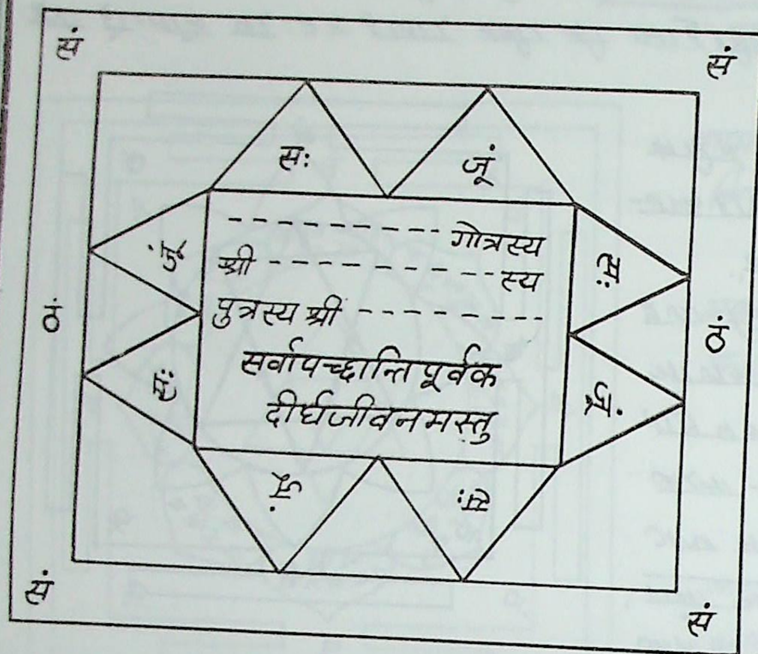


"बन्धूक सन्निभं देव त्रिनेत्रं चन्द्रशेखरम्। त्रिशूलधारिणं वन्दे चारुहास सुनिर्मलम् ॥१॥ कपालधारिणं देवं वरदाभयहस्तकम्। उमया सहितं शम्भुं ध्यायेत्सोमेश्वरं सदा ॥२॥"

पुरश्चरण - इस मन्त्र का पुरश्चरण २४ लाख मन्त्र जप है। जप पूरा हो जाने पर २४ हजार खीर की आहुतियों से होम करे। इससे मन्त्र सिद्ध होकर साधक को अभीष्ट-सिद्धि देने वाला हो जाता है। नित्य दो हजार मन्त्र-जप करने से रोगों से मुक्ति मिलती है। तीन हजार जपने से दीर्घायु का लाभ होता है। एक हजार जपने से लौकिक-कामनाओं की पूर्ति होती है—इसमें सन्देह नहीं है।

(लघु मृत्युञ्जय यन्त्र)

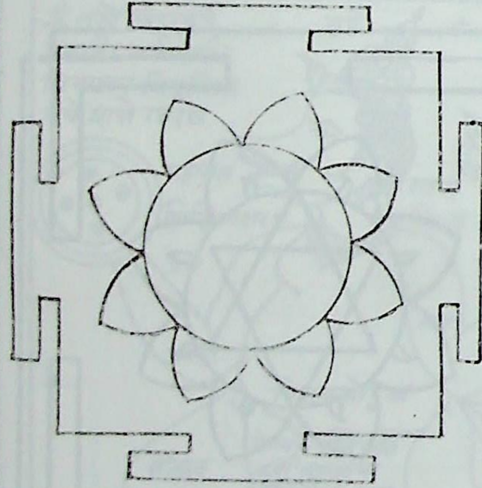
अथ लघुमृत्युञ्जय प्रयोग-



महामृत्युञ्जय मन्त्र इस प्रकार है- "ॐ ह्रौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् भूर्भुवः स्वः रों जूं सः ह्रौं ॐ।" - इस मन्त्र की विस्तृत प्रयोग विधि की जानकारी के लिए 'मन्त्र महोदधि' का अध्ययन करें। यहाँ 'लघुमृत्युञ्जय मन्त्र' प्रयोग के विषय में लिखा जा रहा है। मन्त्र इस प्रकार है- "ॐ जूं सः पालय पालय सः जूं ॐ"। इस मन्त्र का जप जिस व्यक्ति के लिए किया जाय उसके नाम का उच्चारण "ॐ जूं सः" के बाद करना चाहिए। जैसे- 'राम प्रसाद' के लिए मन्त्र-जप करना हो तो मन्त्रोच्चारण इस प्रकार करेंगे- "ॐ जूं सः राम प्रसादः पालय पालय सः जूं ॐ"। इस मन्त्र के जप के समय बाँई ओर प्रदर्शित चित्र के अनुसार यन्त्र का निर्माण करना चाहिए। यन्त्र के खाली स्थानों में ऊपर वाली पंक्ति में साधक का गोत्र, दूसरी पंक्ति में पिता का नाम तथा तीसरी पंक्ति में साधक का नाम लिखना चाहिए।

यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध से लिखकर गूगल की धूप दें तथा पुरुष दाँई तथा स्त्री बाँई भुजा में बाँधे। पुरश्चरण- यह मन्त्र 11 लाख की संख्या में जप तथा दशांश होम करने से सिद्ध होता है। इसके जपने या मन्त्र धारण से सब रोगों का नाश होता है।

(हनुमत यन्त्र)



अथ हनुमत मन्त्र-यन्त्र प्रयोग— हनुमान जी की उपासना के अनेक मन्त्र हैं। उनमें से कुछ निम्न लिखित हैं—

(१) ह्रौं हस्फ्रें ख्फ्रें हस्रौं हस्ख्फ्रें हसौं हनुमते नमः। (२) ह स्फ्रें ह ख्फ्रें ह स्रौं हस्ख्फ्रें ह सौं। — इन दोनों मंत्रों की जप संख्या १२-१२ हजार है।

(३) ॐ ऐं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं स्फ्रें ख्फ्रें ह स्रौं हस्ख्फ्रें ह सौं। — इस मन्त्र की जप संख्या १० हजार है।

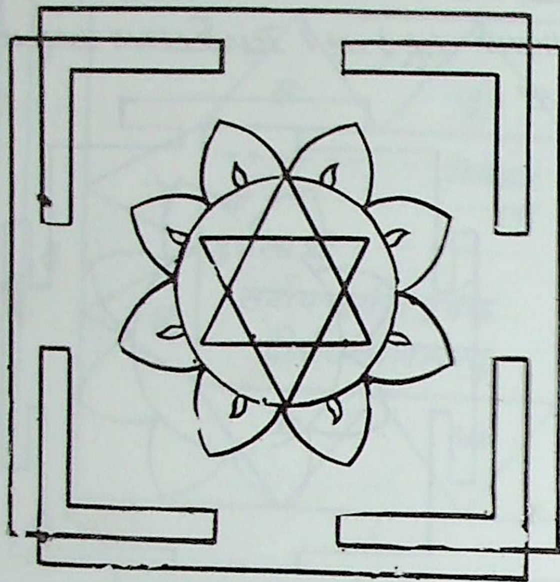
(४) हं हनुमते रुद्रात्मकाय हुं फट्। — इस मन्त्र की जप संख्या १ लाख है।

यन्त्र- हनुमत-पूजन का यन्त्र इसी पृष्ठ पर बाँई ओर प्रदर्शित है। इसे गोरोचन, कस्तूरी एवं कुंकुम से भोजपत्र पर यन्त्र लिखकर उसका यथाविधि पूजन करना चाहिए। इस यन्त्र को ताम्रपत्र पर भी खुदवा सकते हैं।

ध्यान- निम्न लिखित मन्त्र द्वारा ध्यान करना चाहिए—

"बालार्कायुत तेजसं त्रिभुवन प्रक्षोभकं सुन्दरं सुग्रीवादि समस्त वानरगणैः संसेव्य पादाम्बुजम्। नादेनैव समस्त राक्षसगणान् सन्त्रासयन्तं प्रभुं श्रीमद्रामपदाम्बुज स्मृतिरतं ध्यायामि वातात्मजम्॥१॥" इस प्रकार ध्यान करके आवाहन-पूजादि कृत्य कर, उल्लिखित संख्या में मन्त्र-जप करें। जप का दशांश हवन करना चाहिए। हवन दूध, दही एवं घी मिलाकर धान से करें। इस प्रकार जब मंत्रसिद्ध हो जाय, तब अपने अभीष्ट की सिद्धि हेतु प्रयोग करना चाहिए। यह मन्त्र हर प्रकार के भय को दूर कर, समस्त कामनाएँ पूर्ण करता है।

(कार्तवीर्य अर्जुन मन्त्र)



अथ कार्तवीर्य अर्जुन मन्त्र-यन्त्र प्रयोग – कार्त्तवीर्य अर्जुन को सुदर्शन चक्र का अवतार माना जाता है। इनके मन्त्र निम्नलिखित हैं–

(१) फ्रों ब्रीं क्लीं भ्रूं आं ह्रीं क्रों श्रीं हुं फट् कार्तवीर्यार्जुनाय नमः।

(२) ॐ फ्रों ब्रीं क्लीं भ्रूं आं ह्रीं क्रों श्रीं हुं फट् कार्तवीर्यार्जुनाय नमः।

इस मन्त्र के दत्तात्रेय ऋषि हैं, अनुष्टुप छन्द है, कार्तवीर्यार्जुन देवता हैं, ध्रुव बीज है तथा हृद शक्ति है।

कार्तवीर्य अर्जुन के यन्त्र का स्वरूप बाँई ओर प्रदर्शित है। इस यन्त्र को या तो ताम्रपत्र पर खुदवा लेना चाहिए अथवा अष्टगन्ध द्वारा भोजपत्र पर लिखना चाहिए।

मन्त्राक्षरों के आधार पर ऋष्यादि न्यास, कर-न्यास, हृदयादि न्यास आदि करके पीठ-पूजा तथा आवरण-पूजा सम्पन्न करे।

ध्यान का मन्त्र इस प्रकार है–

"उद्यत्सूर्यसहस्र कान्तिरखिल क्षोणीधवैर्वन्दितो। हस्तानां शतपञ्चकेन च दधच्चापानिषूंस्तावता॥ कण्ठे हाटकमालया परिवृत श्चक्रावतारो हरेः। पायात्स्यंदनगोऽरुणाभवसनः श्रीकार्तवीर्यो नृपः।" **पुरश्चरण** – इस मन्त्र का एक लाख की संख्या में जप करना चाहिए तथा चावल एवं खीर मिलाकर तिलों से दशांश होम करना चाहिए। कार्त्तवीर्यार्जुन को दीप अत्यन्त प्रिय है।

(घण्टाकर्ण मूर्त्ति-यन्त्र)



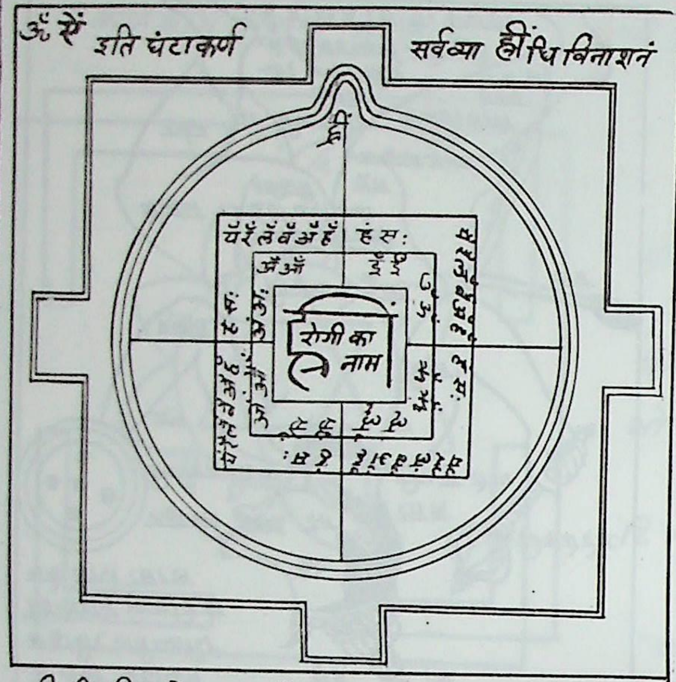
अथ घण्टाकर्ण यन्त्र प्रयोग – 'हरिवंशपुराण' में घण्टाकर्ण पिशाच की कथा का वर्णन पाया जाता है। यह शिव का परम भक्त था तथा किसी अन्य देवता का नाम कानों में न पड़े, इसलिए उसने अपने दोनों कानों में दो घंटे लटका लिए थे। यदि उसके समक्ष कोई किसी अन्य देवता का नाम लेता तो वह अपने कानों के घण्टों को जोर से बजाने लगता था।

घण्टाकर्ण का 'बीजयन्त्र' तथा 'मूर्त्ति यन्त्र' में माला-मन्त्र लिखने का विधान है। 'मूर्त्ति यन्त्र' में घण्टाकर्ण पिशाच की मूर्त्ति को रेखांकित करके, उसी के घण्टाकर्ण स्तोत्र-मन्त्र को उसके प्रत्येक अवयव में धारण करने की व्यवस्था की गई है।

घण्टाकर्ण के 'मूर्त्ति यन्त्र' स्वरूप को इसी पृष्ठ पर बाँई ओर प्रदर्शित किया गया है। इसी के अनुरूप यन्त्र का निर्माण करलें।

विमर्श प्रकाशिनी तन्त्र के अनुसार– स्तोत्र-मन्त्र का १००० बार जप करके, १००० मन्त्रों से ही हवन करना चाहिए। जप तथा हवन का स्तोत्र मन्त्र अगले पृष्ठ पर लिखे अनुसार है। घण्टाकर्ण 'बीजयन्त्र' के स्वरूप को भी अगले पृष्ठ पर ही प्रदर्शित किया गया है।

(घण्टाकर्ण- बीज यन्त्र)



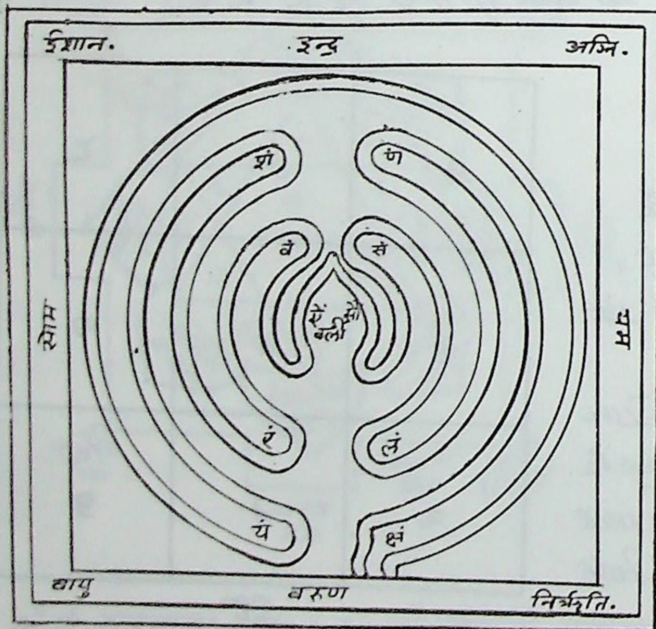
जप तथा हवन का मन्त्र-स्तोत्र निम्नानुसार है—

ॐ नमो घण्टाकर्ण महावीर सर्वव्याधि विनाशन:
विसूचिका भये प्राप्ते रक्ष-रक्ष महाबल: ॥१॥
यत्र त्वं तिष्ठसे देव लिखिताक्षर पंक्तिभु ।
रोगा स्तत्र प्रणश्यंते वात पित्त कफोद्भवा ॥२॥
तत्र रोगभयं नास्ति याति कर्णो जपाहया ।
शाकिनी भूत वैताल राक्षसा: प्रभवंति नो ॥३॥
नाकाले मरणं तस्य न च सर्पेण दंश्यते ।
अग्नि चौर भयं नास्ति ॐ ह्रीं घण्टाकर्ण नमोस्तुते ॥४॥
ॐ ठ: ठ: ठ: ठ: ठ: स्वाहा ॥"

होम द्रव्य — हवन के लिए निम्न लिखित द्रव्यों को लेना चाहिए—

मिर्च (काली) 1000 दाने, चन्दन के टुकड़े 1000, घृत 2 सेर, मधु अर्थात् शहद 2 सेर, गुग्गुल 1 सेर, इलायची 1000, नारियल की गिरी के टुकड़े 1000, सुपारी 1000, कपूर 1 सेर, तिल का तैल 1 सेर तथा कौए के पंख 1000 — इन सब द्रव्यों को एक साथ मिलाकर हवन करने से सभी देशों की महामारी - हैजा - विसूचिका आदि - उपद्रव

(श्री नृसिंह यन्त्र)



नष्ट होते हैं। घण्टाकर्ण के बीज यन्त्र को कागज पर लिखकर रोगी की भुजा पर बाँधने से महामारी का उपद्रव दूर होता है। यह यन्त्र किसी भी महामारी के फैलने पर प्रयोजनीय होता है। उसके समाप्त हो जाने पर यन्त्र को खोलकर किसी नदी अथवा सरोवर के स्वच्छ जल में प्रवाहित कर देना चाहिए।

अथ श्री नृसिंह यन्त्र प्रयोग- बाँई ओर प्रदर्शित किए 'श्री नृसिंह यन्त्र' को अष्ट गंध द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिख कर तथा धूप-दीप देकर, ताँबे के ताबीज में भरकर, रोगी के गले में अथवा पुरुष की दाँई भुजा एवं स्त्री की बाँई भुजा में बाँध देना चाहिए।

यन्त्र को ताबीज में भरने के बाद गंध-पुष्पादि द्वारा उसका सामान्य पूजन करें तथा गुग्गुल की धूप दें।

यह यन्त्र विशेषतः 'प्लेग' महामारी के फैलने पर धारण करना चाहिए, क्योंकि यह उसी के लिए प्रयोजनीय है। इसे धारण करने से महामारी के प्रकोप से सुरक्षा होती है। जब प्लेग का प्रकोप समाप्त हो जाय, तो इस यन्त्र को उतार कर किसी नदी-सरोवर के स्वच्छ जल में प्रवाहित कर दें।

(सूर्य-यन्त्र)

ॐ

६	१	८
७	५	३
२	९	४

अथ सूर्य यन्त्रोपासना-

'सूर्य' उपासना की अनेक विधियाँ तथा अनेक मन्त्र-यन्त्र हैं। यहाँ एक सरलतम विधि का उल्लेख किया जा रहा है।

बाँई ओर प्रदर्शित सूर्य-यन्त्र को रविवार के दिन, भोजपत्र के ऊपर, लालचन्दन से लिखकर, ताँबे के ताबीज में भरदे। फिर सामान्य पूजा-विधि से भगवान सूर्य का पूजन कर, यन्त्र (ताबीज) को धूप देकर पुरुष अपनी दाँई भुजा में तथा स्त्री अपनी बाँई भुजा में धारण करले। स्त्री-पुरुष दोनों ही कण्ठ में भी धारण कर सकते हैं।

इस यन्त्र को धारण करने के साथ ही निम्नलिखित गायत्री-मंत्र का जप निरन्तर करते रहना चाहिए-

"ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्"

इस यन्त्र को धारण करने से मनोकामना पूर्ण होती है।

सूर्य के अन्य मन्त्र - सूर्य के अन्य मन्त्र इस प्रकार हैं-

(१) "ॐ ह्रीं घृणिः सूर्य आदित्यः श्रीं।"

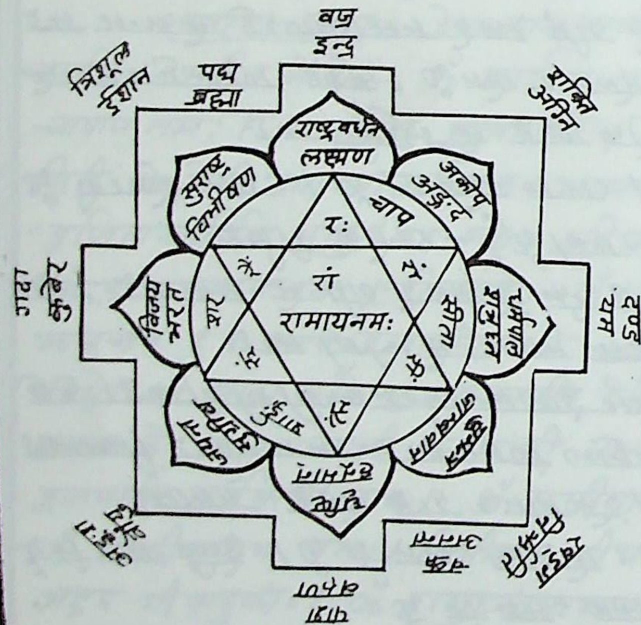
(२) "ॐ घृणि सूर्य आदित्यः।"

इन दोनों में से किसी भी मन्त्र का जप किया जा सकता है। जप संख्या १० लाख है। जप संख्या का दशांश होम कमल अथवा तिलों से करना चाहिए। होम का दशांश तर्पण आदि करना चाहिए। यह प्रयोग सभी कामना पूरक है।

पन्ना ०२४

महा०

(षडक्षर श्रीराम मन्त्र यन्त्रम्)



अथ राम मन्त्र प्रयोग-

श्रीरामचन्द्रजी का षड्क्षर मन्त्र इस प्रकार है— "रां रामाय नमः।" इस मन्त्र की प्रयोग (अनुष्ठान) विधि निम्नानुसार है—

<u>विनियोग</u> - "अस्य श्री षडक्षर श्रीराम मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छन्दः श्रीरामो देवता रां बीजम् नमः शक्तिः चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्धये जपे विनियोगः।" इस वाक्य को पढ़ कर पृथ्वी पर जल छोड़े।

<u>ऋष्यादि न्यास</u> — इसके बाद निम्नानुसार 'ऋष्यादि न्यास करे—

ॐ ब्रह्मणे ऋषये नमः - शिरसि १। गायत्री छन्दसे नमः - मुखे २। श्रीराम देवतायै नमः - हृदि ३। रां बीजाय नमः — गुह्ये ४। नमः शक्तये नमः - पादयोः ५। विनियोगाय नमः - सर्वाङ्गे ६॥ इति ऋष्यादि न्यासः॥

<u>कर न्यास</u> — इसके बाद निम्नानुसार 'करन्यास' करे—

ॐ रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ रूं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ रैं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ रः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः॥ इति करन्यासः।

<u>हृदयादि षडङ्ग न्यास</u> - इसके बाद निम्नानुसार षडङ्ग न्यास करे—

ॐ रां हृदयाय नमः। ॐ रीं शिरसे स्वाहा। ॐ रूं शिखायै वषट्। ॐ रैं कवचाय हुम्। ॐ रौं नेत्रत्रयाय वौषट्।

महा०

ॐ रः अस्त्राय फट् ॥ इति षडङ्गादि षडङ्ग न्यासः ॥

मन्त्रवर्णन्यासः – इसके बाद निम्नानुसार 'मन्त्रवर्ण न्यास' करे –

ॐ रां नमः ब्रह्मरन्ध्रे । ॐ राम नमः भ्रुवोर्मध्ये । ॐ मां नमः हृदि । ॐ यं नमः नाभौ, ॐ नं नमः लिङ्गे । ॐ मं नमः पादयोः ॥ इति मन्त्र वर्ण न्यासः ॥

ध्यानम् – इसके बाद ध्यान करें । यथा – " कालाम्भोधरकान्ति कान्तमनिशं वीरासनाध्यासिनं, मुद्रां ज्ञानमयीं दधानमपरं हस्ताम्बुजं जानुनि । सीतां पार्श्वगतां सरोरुहकरां विद्युन्निभां राघवं, पश्यन्ती मुकुटाङ्गदादिविविधाकल्पोज्ज्वलाङ्गं भजे । "

उक्त विधि से ध्यान करके 'सर्वतोभद्रमण्डल में " ॐ मं मण्डूकादि परतत्त्वान्त पीठ देवताभ्यो नमः " इस मन्त्र से पीठ-देवताओं की पूजा करके नवपीठशक्तियों की इस प्रकार पूजा करे –

पूर्वादि क्रमेण – " ॐ विमलायै नमः । ॐ उत्कर्षिण्यै नमः । ॐ ज्ञानायै नमः । ॐ क्रियायै नमः । ॐ योगायै नमः । ॐ प्रह्व्यै नमः । ॐ सत्यायै नमः । ॐ ईशानायै नमः । मध्ये – ॐ अनुग्रहायै नमः ।

उक्त विधि से पूजा करने के बाद स्वर्णादि से निर्मित श्रीरामयन्त्र (देखें – पृष्ठ १०४ पर) को अग्न्युत्तारण पूर्वक " ॐ नमो भगवते रामाय सर्वभूतात्मने वासुदेवाय सर्वात्म संयोग पद्मपीठात्मने नमः । " इस मन्त्र से पुष्पाद्यासन देकर, पीठ के बीच में स्थापित करके तथा प्राण प्रतिष्ठा करके पुनः ध्यान करके आवाहनादि से लेकर पुष्पान्त उपचारों से पूजा करके देव की आज्ञा लेकर आवरण-पूजा करे ।

सर्वप्रथम हाथ में पुष्पांजलि लेकर यह मन्त्र पढ़े –" ॐ संविन्मयः परो देव परामृतरसप्रिय

अनु ह्रां देहि मे राम परिवारार्चनाय मे।" यह पढ़कर पुष्पांजलि दें। इस प्रकार आज्ञा लेकर आवरण-पूजा आरम्भ करें।

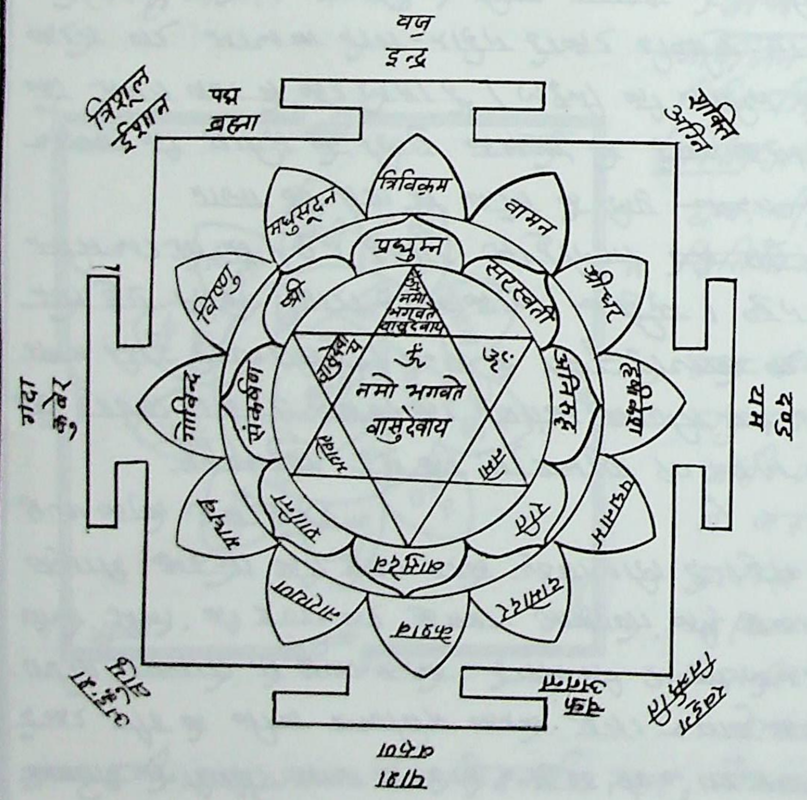
आवरण-पूजा - देव वाम पार्श्वे — "श्री सीतायै नमः। सीता श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति सर्वत्रः। अग्नि कोणे — ऊँ शार्ङ्गाय नमः शार्ङ्ग श्रीपाद०। दक्षिण पार्श्वे - ऊँ शराय नमः। वामपार्श्वे — ऊँ चापाय नमः।" — इससे पूजा करे। फिर पुष्पाञ्जलि देकर मूलमन्त्र का उच्चारण करके — "ऊँ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥" — यह पढ़कर, पुष्पांजलि दे - "पूजितास्तर्पिताः सन्तु" यह कहे। इति प्रथमावरण॥१॥ इसके बाद षट्कोण के सरो में; अग्नि कोणे — "ऊँ रां हृदयाय नमः। निर्ऋते — ऊँ ह्रीं शिरसे स्वाहा। वायव्ये - ऊँ रूं शिखायै वषट्। ऐशान्ये - ऊँ रैं कवचाय हुं। पूज्य-पूजकयोर्मध्ये - ऊँ रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। देव पश्चिमे - ऊँ रः अस्त्राय फट्।" इससे षडङ्गों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति द्वितीयावरण॥२॥ उसके बाहर अष्टदलों में पूज्य और पूजक के मध्य प्राची दिशा की कल्पना करके, प्राची क्रम से — "ऊँ हनुमते नमः। हनुमत् श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ऊँ सुग्रीवाय नमः। सुग्रीव श्रीपादुकां०। ऊँ भरताय नमः। भरत श्रीपादुकां०। ऊँ विभीषणाय नमः। विभीषण श्रीपादुकां०। ऊँ लक्ष्मणाय नमः। लक्ष्मण श्रीपादुकां०। ऊँ अंगदाय नमः; अङ्गद श्रीपादुकां०। ऊँ शत्रुघ्नाय नमः। शत्रुघ्न श्रीपादुकां०। ऊँ जाम्बवते नमः। जाम्बवच्छ्रीपादुकां०। इससे पूजा करके पुष्पांजलि दे॥ इति तृतीयावरण॥ फिर अष्टदलाग्रों में — "ऊँ सृष्टाय नमः। सृष्ट श्रीपा०। ऊँ जयन्ताय नमः। जयन्त श्रीपा०। ऊँ विजयाय नमः। विजय श्रीपा०। ऊँ सुराष्ट्राय नमः। सुराष्ट्र श्री०। ऊँ राष्ट्र-

वर्द्धनाय नमः । राष्ट्रवर्द्धन श्रीपा०। ॐ अकोपाय नमः । अकोप श्रीपा०। ॐ धर्मपालाय नमः । धर्मपाल श्रीपा०।
ॐ सुमन्त्राय नमः । सुमन्त्र श्रीपा०।" इससे आठों की पूजा करके पुष्पाञ्जलि देवे। इति चतुर्थावरण ॥४॥

इसके बाद भूपुर में इन्द्रादि दश दिक्पालों की और उसके बाहर वज्रादि अस्त्रों की पूजा करके पुष्पांजलि दे। इस प्रकार आवरण-पूजा करके धूपादि से लेकर नमस्कारान्त पूजा करके जप करे। इसका पुरश्चरण ६ लाख जप है। ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर प्रयोगों को सिद्ध करना चाहिए।

'शारदा तिलक' के अनुसार — मन्त्र में जितने वर्ण हैं, उतने लाख की संख्या में मन्त्र का जप करना चाहिए। फिर अर्चित अग्नि में उसका दशांश कमलों से होम करना चाहिए। तदुपरान्त ब्राह्मण-भोजनादि कराना चाहिए। इस प्रकार पूजा आदि करने से सिद्ध हुए मन्त्र से प्रयोगों को सिद्ध करना चाहिए।

<u>काम्य-प्रयोग</u> - राजा को वश में करने के लिए चन्दन के जल से सिक्त चमेली के फूलों से होम करना चाहिए। धन-धान्यादि की प्राप्ति के लिए कमलों से होम करना चाहिए। नील कमलों से होम करने से साधक सम्पूर्ण संसार को वश में कर लेता है। लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए बेल के फूलों से होम करना चाहिए। दूर्वा से होम करने पर साधक रोग-रहित होकर दीर्घायु प्राप्त करता है। लाल कमलों के होम से वांछित-धन का लाभ होता है। मेधा-प्राप्ति के लिए पलाश के नवीन पुष्पों से होम करना चाहिए। मन्त्र के जप से अभिमन्त्रित जल पीने से मनुष्य एक वर्ष में कवि हो जाता है तथा मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित भोजन करने से महान् आरोग्य प्राप्त करता है।



अथ विष्णु मन्त्र प्रयोग- भगवान् विष्णु का द्वादशाक्षर मन्त्र इस प्रकार है — "ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।" इस मन्त्र की प्रयोग-विधि निम्नानुसार है--

विनियोग — "अस्य श्री द्वादशाक्षर मन्त्रस्य प्रजापति ऋषिः गायत्री छन्दः वासुदेव परमात्मा देवता सर्वेष्टसिद्धये जपे विनियोगः।

इसके बाद विनियोग-वाक्य के आधार पर 'ऋष्यादि न्यास' तथा मन्त्र-वर्णों के आधार पर 'कर न्यास' एवं 'हृदयादि न्यास' करें। फिर 'मन्त्रवर्ण न्यास' करके निम्नानुसार ध्यान करें---

"विष्णुं शारद चन्द्र कोटि सदृशं शङ्खं रथाङ्गं गदा-म्भोजं दधतं सिताब्जनिलयं कान्त्या जगन्मोहनम्। आबद्धाङ्गद हार कुण्डल महामौलिं स्फुरत्कङ्कणं श्रीवत्साङ्कमुदारकौस्तुभधरं वन्दे मुनीन्द्रैः स्तुतम्॥"

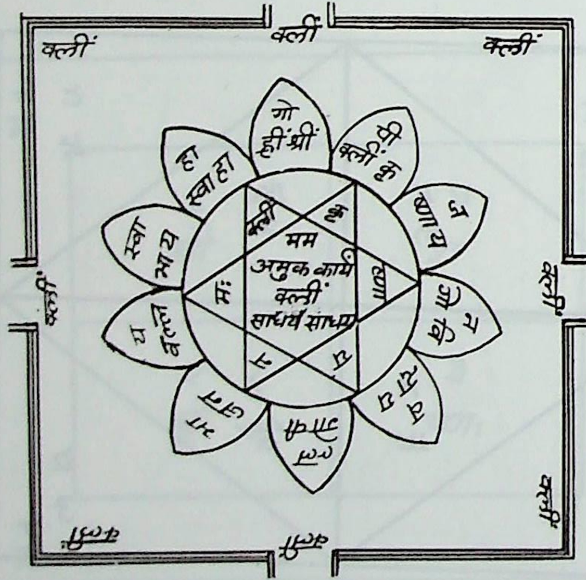
इसके बाद सर्वतोभद्र मण्डल में पीठदेवताओं की पूजा करके, नव पीठ शक्तियों की पूजा करे. फिर

स्वर्णादि से निर्मित यन्त्र (देखें - पृष्ठ १०८ पर प्रदर्शित यन्त्र का स्वरूप) को अग्न्युत्तारण पूर्वक पुष्पाद्यासन देकर पीठ के बीच स्थापित करके पुनः ध्यान करके, मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना कर, पाद्यादि से पुष्पदान पर्यन्त उपचारों से पूजा करके, देवता की आज्ञा लेकर 'आवरण-पूजा' आरंभ करे। प्रारंभ में पुष्पांजलि दे, फिर पाँचों अंगों की पूजा कर क्रमशः आवरणों की पूजा करे, फिर भूपुर में इन्द्रादि दश दिक्पालों तथा उसके बाहर वज्रादि अस्त्रों की पूजा करके पुष्पांजलि दे। इस प्रकार आवरण-पूजा करके धूपादि से लेकर नमस्कारान्त पूजा करके जप करे।

पुरश्चरण - इस का पुरश्चरण १२ लाख जप है। जप का दशांश अर्थात् १२ हजार होम करके, होम का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन एवं मार्जन का दशांश ब्राह्मण-भोजन कराये। इस प्रकार से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर साधक को प्रयोग सिद्ध करने चाहिए। घी से परिप्लुत सने हुए तिलों द्वारा होम करना चाहिए। घृत से सिक्त खीर से तथा दूध से सिक्त क्षीरी वृक्ष की समिधाओं से १२ हजार आहुतियाँ देने पर पापों से छुटकारा मिलता है।

राजा को वश में करने के लिए चन्दन से सिक्त चमेली के फूलों से होम करना चाहिए। धन-धान्य की प्राप्ति के लिए कमलों से होम करना चाहिए। नील कमलों से होम करने वाला सम्पूर्ण संसार को अपने वश में कर लेता है। लक्ष्मी की प्राप्ति के लिए बेल के फूलों से होम करना चाहिए। दूर्वा से होम करने पर साधक रोग-रहित होकर दीर्घायु प्राप्त करता है। लाल कमलों के होम से वांछित धन का लाभ होता है। मेधा-प्राप्ति के लिए पलाश के नवीन फूलों से होम करना चाहिए।

(सिद्ध गोपाल यन्त्र)



अथ सिद्ध गोपाल मन्त्र प्रयोग-

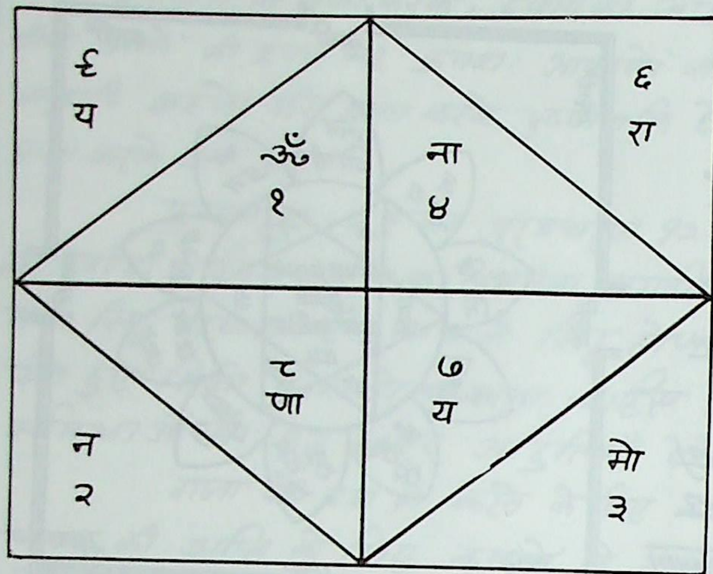
सिद्धगोपाल मन्त्र इस प्रकार है- "गोपीजन वल्लभाय स्वाहा"— इस दशाक्षर कृष्णमन्त्र की प्रयोग विधि निम्नानुसार है--

महा०

विनियोग: "अस्य श्री दशाक्षर सिद्ध गोपाल मन्त्रस्य नारद ऋषिः विराट् छन्दः श्रीकृष्ण देवता क्लीं बीजं स्वाहा शक्तिः सर्वार्थसिद्धये जपे विनियोगः।"

इसके बाद विनियोग-वाक्य के आधार पर ऋष्यादिन्यास तथा मन्त्र वर्णों के आधार पर 'करन्यास एवं हृदयादि-न्यास करें। तदुपरान्त सोने के पत्र पर सोने की कलम द्वारा गोरोचन से बाँई ओर के चित्र में प्रदर्शित यन्त्र को लिखे। यन्त्र के बीच में जहाँ 'अमुक कार्य' लिखा है, वहाँ इच्छित-कार्य का उल्लेख करना चाहिए। लेखनोपरान्त, शुभ मुहूर्त में प्रातःकाल के समय धूप-दीप, गंध, पुष्पादि से यन्त्र का पूजन कर, इसे ताबीज आदि में भर कर अपनी दाँई भुजा अथवा कण्ठ में धारण कर लेना चाहिए। यह यन्त्र सभी मनोरथों को देने वाला है। पुत्र, स्त्री, यश, मान, धन, ऐश्वर्य, रक्षा, सौभाग्य आदि की वृद्धि के लिए इसे निरन्तर धारण किए रहना चाहिए।

(श्री विष्णु बीसा यन्त्र)



अथ श्री विष्णु बीसा यन्त्र-मन्त्र प्रयोग- भगवान् श्री विष्णु की प्रसन्नता हेतु 'विष्णु बीसा यन्त्र' का प्रयोग प्रशस्त माना गया है। इस यन्त्र का स्वरूप इसी पृष्ठ पर बाँईं ओर के चित्र में प्रदर्शित है। इसे या तो ताँबे के पत्र पर खुदवा लेना चाहिए, ताकि वह स्थायी स्वरूप ग्रहण करले, अन्यथा सफेद चन्दन द्वारा, तुलसी की डण्डी से चन्दन की चौकी पर लिखना चाहिए। इसे श्वेत चन्दन अथवा अष्टगंध द्वारा भोजपत्र के ऊपर भी लिखा जा सकता है।

इस बीसा यन्त्र में-"ॐ नमो नारायणाय"- यह मन्त्र संख्या क्रम से लिखा है, अतः यही जप का मन्त्र भी है।

सर्वप्रथम शौच, स्नानादि से निवृत्त हो, धौत वस्त्र धारण कर; किसी एकान्त, शान्त तथा पवित्र स्थान में बैठ कर पाद्य, अर्घ्य, स्नान, गंध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप आदि द्वारा सामान्य पूजा-पद्धति से यन्त्र-स्वरूप श्री विष्णु नारायण की पूजा करे, तदुपरान्त प्रत्येक श्लोक के आदि-अन्त में इसी मन्त्र का सम्पुट लगाकर "विष्णुसहस्रनाम" का पाठ करना चाहिए। इस मन्त्र-यन्त्र के साधन से भगवान् विष्णु प्रसन्न होकर साधक की सभी मनोकामनाओं की पूर्ति करते हैं।

मन्त्र ३२८

(श्रीकृष्ण बीसा यन्त्र)

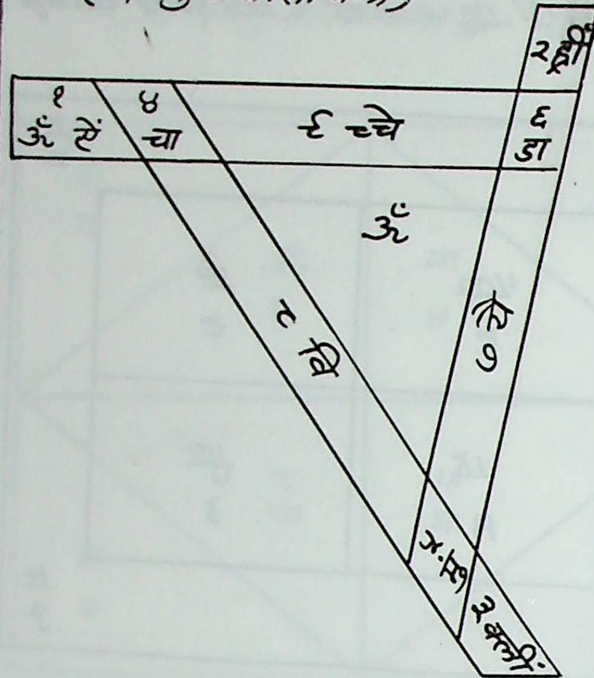
७ म			५ र
	१ श्री	४ श	
	२ कृ	३ ष्ण:	
८ म			६ णं

अथ श्रीकृष्ण बीसा यन्त्र-मन्त्र प्रयोग- भगवान् श्रीकृष्ण की प्रसन्नता हेतु 'श्रीकृष्ण बीसा' यन्त्र का प्रयोग शुभ माना गया है। इस यन्त्र का स्वरूप इसी पृष्ठ पर बाँई ओर के चित्र में प्रदर्शित है। इसे या तो ताँबे के पत्र पर खुदवा लेना चाहिए, ताकि वह स्थायी स्वरूप ग्रहण करले, अन्यथा सफेद चन्दन द्वारा, तुलसी की डण्डी से चन्दन की चौकी पर लिखना चाहिए। इसे श्वेत चन्दन के द्वारा अथवा अष्टगन्ध से भोजपत्र के ऊपर भी लिखा जा सकता है। इसे यदि ताँबे पर खुदवाया जाय तो यमुनाजल अथवा गंगाजल से धोकर तथा धूप देकर पूजा में रखना चाहिए।

महा०

इस यन्त्र में "श्रीकृष्ण शरणं मम" - यह मन्त्र संख्याक्रम से लिखा है, अतः यही मन्त्र जप का भी है।

सर्वप्रथम शौच- स्नानादि से निवृत्त हो, धौत वस्त्र धारण कर; किसी एकान्त, शान्त तथा पवित्र स्थान में बैठकर सामान्य पञ्चोपचारों से यन्त्र का पूजन करके धूप दें। फिर 'श्रीकृष्ण शरणं मम' इस मन्त्र को तुलसी की माला पर, नित्य ५ माला जपना चाहिए। इस मन्त्र तथा यन्त्र के साधन से प्रसन्न होकर भगवान् श्रीकृष्ण साधक की सभी मनोभिलाषाओं को पूर्ण करते हैं।



अथ श्री चामुण्डा बीसा यन्त्र-मन्त्र प्रयोग — भगवती श्री चामुण्डा की प्रसन्नता हेतु 'श्री चामुण्डा बीसा यन्त्र' का प्रयोग कल्याणकारी माना गया है। इस यन्त्र को ताँबे के पत्र पर खुदवा लेना चाहिए, ताकि वह स्थायी स्वरूप ग्रहण कर ले, अन्यथा लाल चन्दन द्वारा भोजपत्र के ऊपर अथवा लकड़ी की चौकी पर लिखना चाहिए। यन्त्र का स्वरूप बाँई ओर प्रदर्शित है।

इस बीसा यन्त्र में — "ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे" — देवी का यह नवार्ण-मन्त्र संख्या-क्रम से लिखा है, अतः यही जप का मन्त्र भी है।

सर्व प्रथम शौच-स्नानादि से निवृत्त हो, धौत वस्त्र धारण कर; किसी एकान्त, शान्त तथा पवित्र स्थान में बैठ कर पाद्य, अर्घ्य, स्नान, गंध, धूप-दीप आदि से सामान्य पूजा-पद्धति क्रम से यन्त्ररूपा भगवती चामुण्डा देवी की पूजा करे, तदुपरान्त प्रतिदिन कम-से-कम एक माला अर्थात् १०८ की संख्या में पूर्वोक्त मन्त्र का जप करे। जप की माला रुद्राक्ष के १०८ दानों वाली होनी चाहिए। मन्त्र-जप के बाद 'श्री दुर्गा सप्तशती' के चतुर्थ अध्याय एवं सिद्ध कुंजिका स्तोत्र का पाठ करना चाहिए। इस मन्त्र का यदि १ लाख की संख्या में जप किया जाय तो मन्त्र सिद्ध हो जाता है। बाद में प्रतिदिन पूर्वोक्त क्रियाएँ करने से समस्त कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

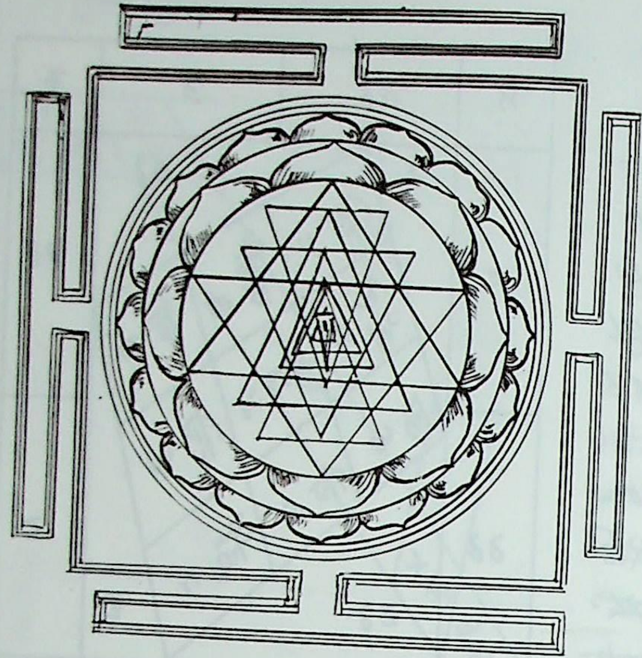
(देवी यन्त्र)

७	१२	१	१४
२	३	१३	११
१६	१०	८	५
९	६	१५	४

अथ देवी यन्त्र प्रयोग– भगवती देवी (दुर्गा अथवा चामुण्डा) की प्रसन्नता एवं रोग-विनाश हेतु बाँई ओर प्रदर्शित चित्र के अनुसार यन्त्र का निर्माण करना चाहिए। इस यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोज-पत्र के ऊपर लिखकर ताँबे के ताबीज में भरना चाहिए, तदुपरान्त उस यन्त्र का सामान्य-पूजा विधि से पूजन कर, गुग्गुल की धूप देकर पुरुष को अपने दाँये हाथ में तथा स्त्री को अपने बाँये हाथ में धारण करना चाहिए।

इस यन्त्र में ३४ तथा १५ के दो अन्य यन्त्र भी समाहित हैं। १५ के यन्त्र में भगवती का नवार्ण-मन्त्र– " ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे "– उल्लिखित है। अस्तु, इस मन्त्रयुक्त को १०८ बार लिखने का विधान है। इस विधि से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर अंतिम यन्त्र को लिखकर ताबीज में भरना चाहिए तथा उसे धूप देकर रोगी की भुजा में बाँध देना चाहिए।

देवी को प्रसन्न करने वाला यह यन्त्र हर प्रकार के रोगों से शीघ्र छुटकारा दिलाता है तथा समस्त मनोभिलाषाओं की पूर्ति करता है। यदि नवार्ण-मन्त्र को नित्य एक माला जपा भी जाय तो सर्वोत्तम।



(लक्ष्मी यन्त्र)

लक्ष्मी यन्त्र प्रयोग – भगवती लक्ष्मी के यन्त्र को बाँई ओर प्रदर्शित किया गया है। इसे या तो ताम्रपत्र, स्वर्णपत्र, रजतपत्र पर खुदवा लें अन्यथा अष्टगंध द्वारा भोजपत्र पर लिख कर तैयार कर लें। भगवती के प्रमुख मन्त्र निम्न लिखित हैं–

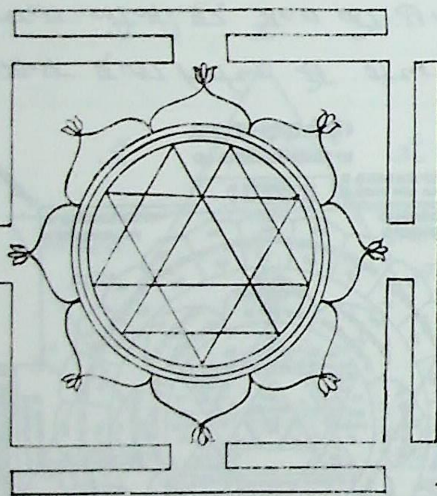
(१) श्रीं। (२) ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं। (३) ॐ नमः कमलवासिन्यै स्वाहा। (४) ॐ श्रीं ह्रीं महालक्ष्म्यै नमः। (५) ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं सौं जगत्प्रसूत्यै नमः। (६) ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध लक्ष्म्यै नमः।

उक्त मन्त्रों में से किसी भी मन्त्र का जप किया जा सकता है। प्रत्येक मन्त्र की जप-संख्या ३ लाख है। जप का दशांश होम करना चाहिए। होम में यदि लाल कमलों की आहुतियाँ दी जा सकें तो सर्वोत्तम अन्यथा सामान्य हवन-सामग्री से ही आम की लकड़ी की अथवा ढाक की लकड़ी की समिधाओं से हवन करना चाहिए।

देवी के ध्यान का मन्त्र निम्नानुसार है–

"आसीना सरसीरुहे स्मितमुखी हस्ताम्बुजैर्बिभ्रती, दानं पद्मयुगाभये च वपुषां सौदामिनी सन्निभा। मुक्ताहार विराजमान पृथुलोत्तुङ्गस्तनोद्भासिनी, पायाद्वः कमला कटाक्ष विभवैरानंदयंती हरिम्॥" इस यन्त्र की उपासना तथा मन्त्र-जप से धन-धान्य की वृद्धि होती रहती है।

(दुर्गा यन्त्र)



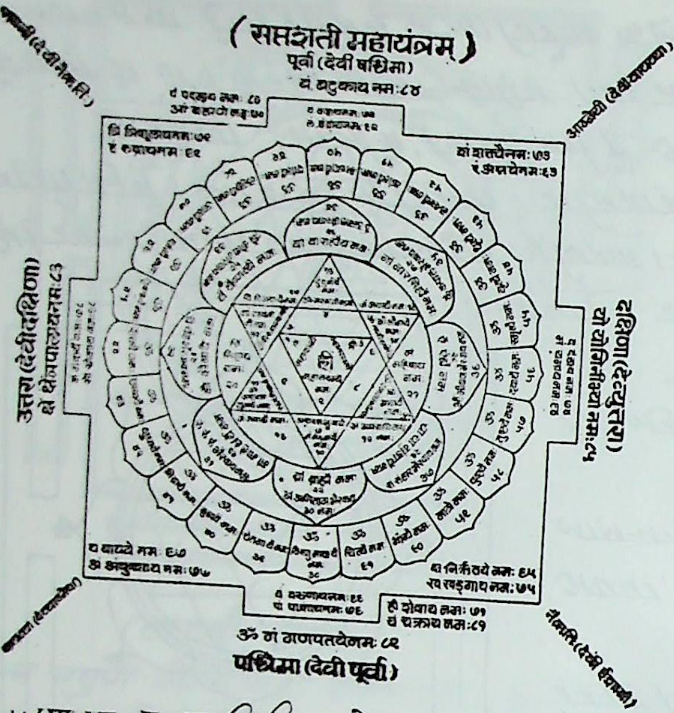
श्री दुर्गा मन्त्र-यन्त्र प्रयोग – भगवती दुर्गा के अनेक स्वरूप हैं, अतः उनके मन्त्र भी अनेक हैं एवं साधन-विधियाँ भी पृथक्-पृथक् हैं। यहाँ श्री दुर्गा के अष्टाक्षर मन्त्र एवं उसकी सरल प्रयोग विधि का उल्लेख किया जा रहा है। दुर्गा का अष्टाक्षर मन्त्र यह है– "ॐ ह्रीं दुं दुर्गायै नमः।"

श्री दुर्गा-यन्त्र का स्वरूप बाँई ओर प्रदर्शित है। इसे या तो स्वर्ण अथवा ताम्रपत्र पर खुदवा लें अन्यथा भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध से या लालचन्दन से लिखकर तय्यार कर लें।

सामान्य-पूजा विधि से यन्त्र स्वरूपा देवी का पूजन करने के उपरान्त निम्नानुसार ध्यान करें --

"दूर्वानिभां त्रिनयनां विलसत्किरीटां शङ्खाब्जखड्ग शरखेटक शूल चापान्। सन्तर्जनीं च दधतीं महिषासनस्थां दुर्गां नवारकुल पीठगतां भजेहम्॥ सिंह स्कन्ध समारूढान्नानालङ्कार भूषिताम्। चतुर्भुजाम्महादेवीन्नागयज्ञोपवीतिनीम्॥ रक्तवस्त्र परीधानाम्बालार्क सदृशीतनुम्। नारदाद्यैर्मुनिगणैः सेविताम्भव गेहिनीम्॥

<u>पुरश्चरण</u> - मन्त्र में जितने वर्ण हैं, उतने लाख या उससे आधा पुरश्चरण करें। कम-से-कम एक लाख की संख्या में जप अवश्य करना चाहिए। यह मन्त्र रुद्राक्ष की माला पर जपना विशेष शुभ होता है। जप का दशांश होम करें मन्त्रजप तथा होम रात्रि में करना विशेष फलप्रद रहता है। यह मन्त्र समस्त मनोभिलाषाओं की पूर्ति करता है।

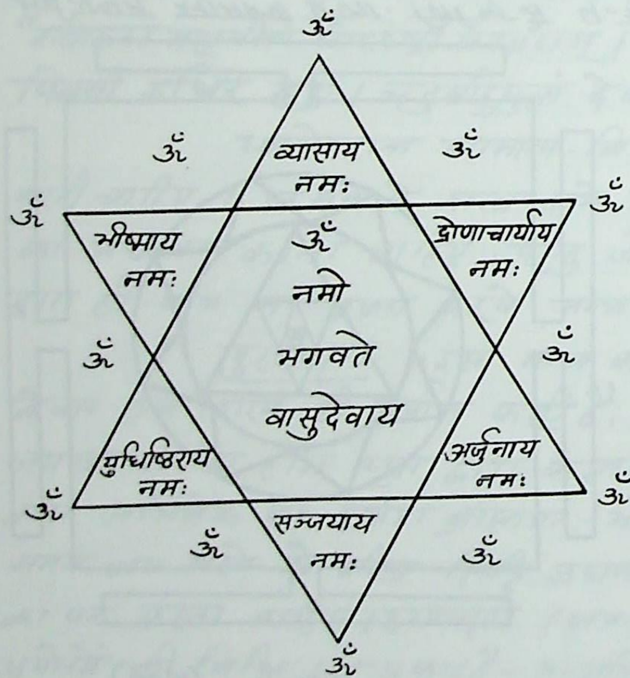


सप्तशती महायन्त्र प्रयोग- श्री दुर्गाशप्ती का पाठ भुक्ति-मुक्ति-दायक है। यह साधक की समस्त मनोभिलाषाओं की पूर्ति करता है तथा समस्त कष्टों को दूर करता है।

सामान्यत: दुर्गासप्तशती का पाठ चैत्र तथा आश्विन मास की नवरात्रियों में किया जाता है, परन्तु इसका नित्य पाठ करने से अक्षय पुण्य की प्राप्ति होती है तथा साधक को सब प्रकार के सुख उपलब्ध होते हैं एवं दुःख पास तक नहीं फटकते।

श्री दुर्गासप्तशती का पाठ करने वाले साधकों को चाहिए कि वे इस पृष्ठ पर बाँई ओर प्रदर्शित चित्र के अनुसार यन्त्र का निर्माण करा लें। 'सप्तशती महायन्त्र' नामक इस यन्त्र को स्वर्णपत्र, रजतपत्र अथवा ताम्रपत्र पर भी उत्कीर्ण कराया जा सकता है, अन्यथा अष्टगंध अथवा लाल चन्दन द्वारा भोजपत्र पर लिख कर भी तैयार किया जा सकता है। यन्त्र लेखनोपरान्त उसका सामान्य पूजा विधि से गंध, पुष्प, धूप, दीप आदि द्वारा पूजन करना चाहिए, तदुपरान्त एक लकड़ी के पट्टे अथवा चौकी पर यन्त्र को प्रतिष्ठित कर, उसे अपने सामने रखते हुए 'दुर्गासप्तशती' का पाठ आरम्भ करना चाहिए। यन्त्र-पूजन सहित सप्तशती का पाठ करने से अक्षय फल की प्राप्ति होती है।

(श्री गीता यन्त्र)



अथ सर्व सिद्धिदाता श्री गीता यन्त्र – श्रीमद्भगवद्गीता का पाठ करने से भुक्ति-मुक्ति का लाभ होता है। जो लोग प्रतिदिन सम्पूर्ण गीता का पाठ न कर सकें, उन्हें केवल अठारहवें अथवा एकादश अध्याय का ही पाठ करना चाहिए।

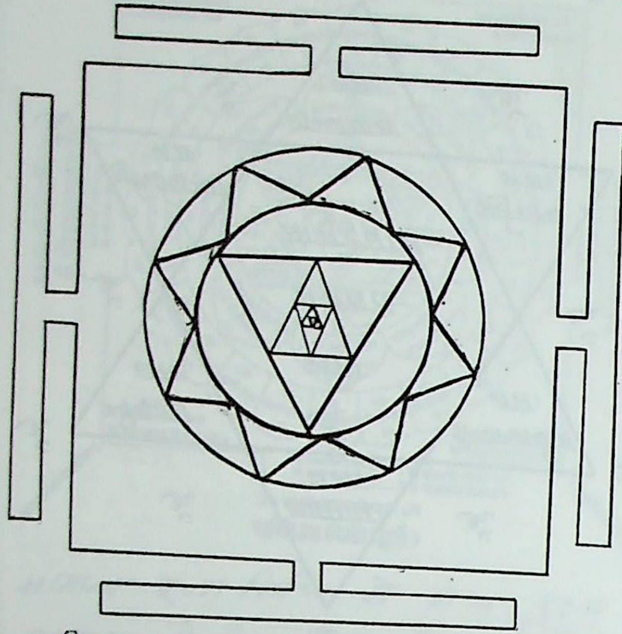
गीता का पाठ करने वालों को 'श्रीगीता यन्त्र' का निर्माण कर, पाठ आरंभ करने से पूर्व यन्त्र-पूजन करने से विशेष लाभ होता है। 'गीता-यन्त्र' के स्वरूप को इसी पृष्ठ पर बाँई ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। इस यन्त्र को या तो ताँबे के पत्र पर खुदवा लेना चाहिए। यह स्थायी होगा। अथवा प्रतिदिन चन्दन द्वारा लकड़ी की चौकी पर लिखना चाहिए।

यन्त्र को लिखने अथवा ताम्रपत्र पर खुदवा लेने के बाद पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, चन्दन, तुलसी, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, शुद्धोदक, फल, मिष्ठान्न, ताम्बूल आदि समर्पित कर, सामान्य-पूजा विधि से पूजन करना चाहिए तथा "ॐ नमो भगवते वासुदेवाय" – इस मन्त्र का नित्य प्रति कम-से-कम एक माला जप नित्य करना चाहिए। यन्त्र पूजन तथा मन्त्र-जप के बाद गीता-पाठ करने से समस्त मनोभिलाषाओं की पूर्ति होती है।

यन्त्र
१३६

अथ कालीयन्त्र प्रयोग-

(काली यन्त्र)



भगवती काली के अनेक स्वरूप, अनेक मन्त्र, अनेक यन्त्र तथा अनेक उपासना-विधियों का उल्लेख पाया जाता है। यथा- दक्षिणा काली, गुह्य काली, भद्रकाली, महाकाली आदि इनके अनेक रूप हैं। यहाँ भगवती काली के सरल मन्त्र एवं यन्त्र प्रयोग का उल्लेख किया जा रहा है। भगवती कालिका के कतिपय प्रमुख मंत्र ये हैं--

(१) क्रीं, (२) क्रीं, (३) ॐ ह्रीं ह्रीं हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं दक्षिण कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं, (४) ह्रीं ह्रीं हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं दक्षिणकालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा, (५) क्रीं क्रीं क्रीं स्वाहा, (६) क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके स्वाहा, (७) क्रीं हूं ह्रीं दक्षिण कालिके फट्, (८) नमः ऐं क्रीं क्रीं कालिकायै स्वाहा, (९) क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा, (१०) क्रीं हूं ह्रीं स्वाहा, (११) नमः आं क्रां आं क्रों फट् स्वाहा। कालिकालिके हूं।

उक्त मन्त्रों में से किसी भी मन्त्र को जप के लिए चुना जा सकता है। दक्षिणा काली के अन्य मन्त्र भी प्रयोग में लाये जा सकते हैं। <u>विधि</u>- दैनिक कृत्य स्नान प्राणायाम आदि से निवृत्त होकर सर्वप्रथम सामान्य पूजा-विधि से यन्त्र का पूजन करें। यन्त्र का निर्माण ताम्रपत्र, स्वर्णपत्र आदि पर खुदवाकर किया जा सकता है अथवा इसे अष्टगंध अथवा केवल लालचन्दन द्वारा भोजपत्र के ऊपर भी

महा०

लिखा जा सकता है। यन्त्र का पूजन करने के बाद ऋष्यादि न्यास-करन्यास-अङ्गन्यास आदि करके निम्नानुसार ध्यान करे—
"शवारूढां महाभीमां घोरदंष्ट्रां वरप्रदाम्। हास्ययुक्तां त्रिनेत्रां च कपालं कर्तृकाकराम्। मुक्तकेशीं ललज्जिह्वां पिबन्तीं रुधिरं मुहुः। चतुर्बाहुयुतां देवीं वराभयकरां स्मरेत्।"

ध्यानोपरान्त सामान्य-विधि से पीठ-पूजा, आवरण-पूजा, भैरव-पूजा तथा अस्त्र-पूजा करनी चाहिए। इन सब के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी प्राप्त करने हेतु 'काली-उपासना' विषयक तन्त्रग्रंथों का अध्ययन करना चाहिए, परन्तु जो साधक इतना सब न कर सकें, उन्हें सामान्य उपचारों द्वारा ही यन्त्र का पूजन करके मन्त्र-जप करना चाहिए।

<u>पुरश्चरण</u> - इस मन्त्र का पुरश्चरण दो लाख जप है। कुछ आचार्यों ने जप-संख्या केवल एक लाख ही पर्याप्त कही है, तथापि जितना जप अधिक किया जा सके, उतना ही उत्तम है। जप का दशांश होम घृत द्वारा करना चाहिए। होम का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश अभिषेक, तथा अभिषेक का दशांश ब्राह्मण-भोजन कहा गया है। भगवती दक्षिण कालिका के मन्त्र रात्रि के समय जप करने से शीघ्र सिद्धि प्रदान करते हैं। जप के अन्त में विभिन्न स्तोत्र, कवच, हृदय आदि का पाठ करना चाहिए। पुरश्चरण (जप-होमादि) पूरा हो जाने पर काम्य-प्रयोग करने चाहिए। काम्य-प्रयोगों की विधि इस प्रकार है- (1) रात्रि के समय श्मशान में निर्वस्त्र तथा केश खोलकर जो व्यक्ति इस मन्त्र का 10 हजार की संख्या में जप करता है, उसकी समस्त कामनाएं पूर्ण होती हैं। (2) युवती स्त्री के गुप्ताङ्ग को देखते हुए 10 हजार मन्त्र-जप करने वाला साधक बृहस्पति के समान वाग्मी होता है। सामान्य जप भी कामनाएं पूर्ण करता है।

यन्त्र

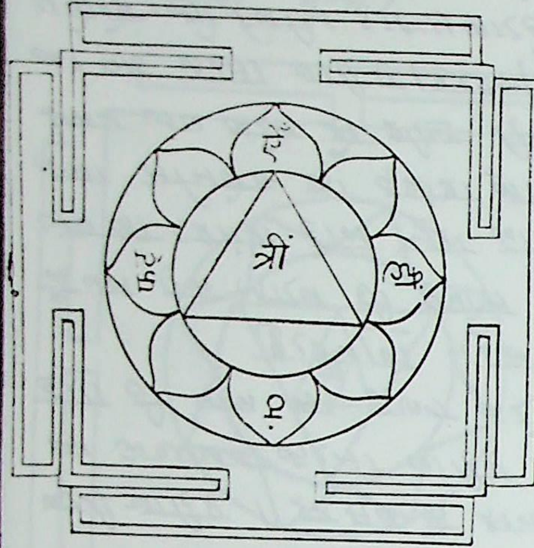
अथ तारा मन्त्र प्रयोग-

तारा देवी के मन्त्र निम्नलिखित हैं:-

(१) ॐ ह्रीं त्रीं हुं फट्। (२) ह्रीं स्त्रीं हूं फट्। (३) ॐ हुं ह्रीं क्लीं सौः हुं फट्। (४) ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं फट्। (५) ह्रीं त्रीं हुं फट्। (६) श्रीं ह्रीं स्त्रीं हूं फट्। (७) ह्रीं त्रीं हुं फट्। (८) ऐं ओं ह्रीं क्रीं हुं फट्। (९) ॐ ऐं ह्रीं क्रीं हुं फट्। इनमें से किसी भी मन्त्र द्वारा जप किया जा सकता है।

महा०

(तारा यन्त्र)



तारा देवी का यन्त्र बाँई ओर प्रदर्शित है। इसे ताम्रपत्र पर अंकित करवा लेना चाहिए अथवा अष्टगंध या लाल चंदन द्वारा भोजपत्र पर लिख कर तय्यार कर लेना चाहिए।

तारा देवी का ध्यान- मन्त्र इस प्रकार है—

"प्रत्यालीढ पदां घोरां मुण्डमाला विभूषिताम्। खर्व्वां लम्बोदरीं भीमां व्याघ्र चर्म्मावृतांक टि॥ नवयौवन सम्पन्नां पञ्च मुद्रा विभूषिताम्। चतुर्भुजां लोलजिह्वां महाभीमां वरप्रदाम्॥ खड्ग कर्त्तृ समायुक्त सव्येतर भुजद्वयाम्। कपालोत्पल संयुक्त सव्यपाणि युगान्विताम्। पिङ्गाग्रैकजटां ध्यायेन्मौला वक्षोभ्यभूषिताम्। बालार्क मण्डलाकार लोचन त्रय भूषिताम्।"

पुरश्चरण- इस मन्त्र का पुरश्चरण २ लाख जप है। जप का दशांश होमादि करना चाहिए। जप के बाद देवी के स्तव, कवच आदि का पाठ करना चाहिए। भगवती तारा की उपासना से शत्रु तथा कष्टों का नाश होता है।

(षोडशी यन्त्र)

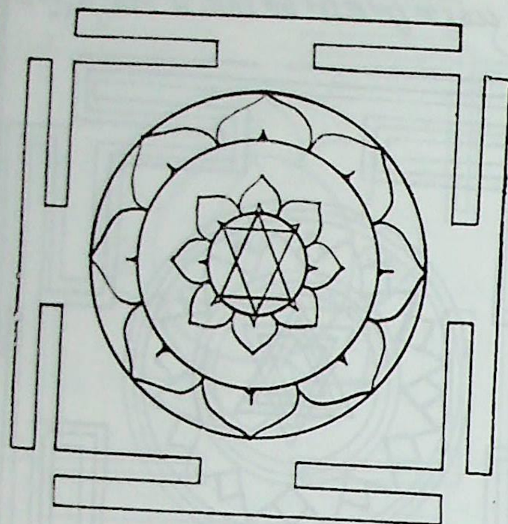
अथ षोडशी यन्त्र प्रयोग- भगवती षोडशी को महाविद्या, श्रीविद्या तथा त्रिपुर सुन्दरी भी कहा जाता है। 'श्रीचक्र' का परिचय इस खण्ड के प्रारम्भ में दिया जा चुका है। वह भी इन्हीं महामाया का प्रतीक (स्वरूप) है। यहाँ इनके मन्त्र, पूजा यन्त्र तथा पुरश्चरण विधि आदि का दिग्दर्शन मात्र कराया जा रहा है। षोडशी के साधन मन्त्र निम्न लिखित हैं:-

(१) ह्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं। (२) श्रीं ह्रीं हुं ऐं वज्र वैरोचनीये हुं हुं फट् स्वाहा। (३) ह्रीं श्रीं हुं ऐं वज्रवैरोचनीये हुं हुं फट् स्वाहा। (४) ह स क ल ह ह्रीं स ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं। (५) श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं।" - इनके अतिरिक्त और भी अनेक मन्त्र हैं। इनमें से किसी भी मन्त्र का जप किया जा सकता है।

षोडशी पूजन का यन्त्र बाँईं ओर प्रदर्शित है, इसे ताम्रपत्र पर खुदवा लें अथवा अष्टगन्ध द्वारा भोजपत्र पर लिखकर तैयार कर लें। ध्यान मन्त्र इस प्रकार है--

"चतुर्भुजां महादेवीं नागयज्ञोपवीतिनीम्। महाभीमां करालास्यां सिद्धविद्याधरैर्युताम्॥ मुण्डमालावलीकीर्णां मुक्तकेशीं स्मिताननाम्। एवं ध्यायेन्महादेवीं सर्वकामार्थ सिद्धये।"

पुरश्चरण- इस मन्त्र का ३ लाख की संख्या में जप करना चाहिए तथा उसका दशांश होमादि करना चाहिए। यह मन्त्र सिद्ध हो जाने पर साधक की समस्त कामनाओं की पूर्ति करता है तथा धन-धान्य ऐश्वर्यादि की वृद्धि करता है।



(भुवनेश्वरी यन्त्र)

अथ भुवनेश्वरी यन्त्र प्रयोग-

भुवनेश्वरी देवी के साधन-मन्त्र निम्न लिखित हैं-

(१) ह्रीं; (२) ऐंह्रीं, (३) ऐं ह्रीं ऐं। इनमें से किसी भी मन्त्र का जप किया जा सकता है। यह मन्त्र साधक की समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाले हैं।

भुवनेश्वरी देवी का मन्त्र बाँई ओर प्रदर्शित है। इसे या तो ताम्रपत्र पर अंकित करवा लेना चाहिए अथवा अष्टगंध या लाल-चंदन द्वारा भोजपत्र पर लिख कर धारण करना चाहिए।

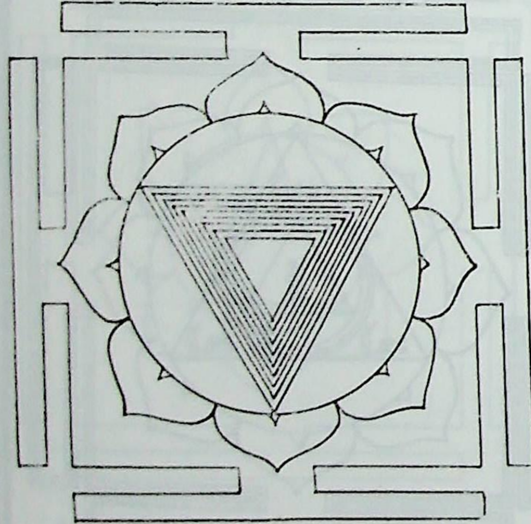
भुवनेश्वरी देवी का ध्यान-मन्त्र इस प्रकार है-

"उद्यदह द्युति मिन्दु किरीटां तुङ्ग कुचां नयनत्रय युक्ताम्।
स्मेर मुखीं वरदांकुशपाशा भीतिकरां प्रभजेद् भुवनेशीम्॥"

पुरश्चरण- भुवनेश्वरी मन्त्र का ३२ लाख की संख्या में जप तथा जप का दशांश होम करना चाहिए। घृत, मधु तथा शर्करा के साथ अष्ट द्रव्यों से होम करना चाहिए। इस प्रकार मन्त्र सिद्ध हो जाता है। मन्त्र सिद्ध हो जाने पर काम्य-प्रयोग करने चाहिए। पीपल, गूलर, पलाश, बरगद की समिधाएं, पीली सरसों, खीर तथा घृत - इन्हें 'अष्ट द्रव्य' कहा जाता है। इनसे होम करने वाला समस्त देवताओं से पूजित होता है। कमलों से होम करने पर राजा वशीभूत होता है। इस सिद्ध मंत्र द्वारा २७ बार अभिमंत्रित जल को प्रातः काल पीने वाला मनुष्य श्रेष्ठ बुद्धि प्राप्त कर कवियों में अग्रणी होता है।

अथ त्रिपुर भैरवी यन्त्र प्रयोग –

(त्रिपुर भैरवी यन्त्र)



भगवती त्रिपुर भैरवी को संक्षेप में 'भैरवी' भी कहा जाता है। इनके साधन-मन्त्र निम्नलिखित हैं–

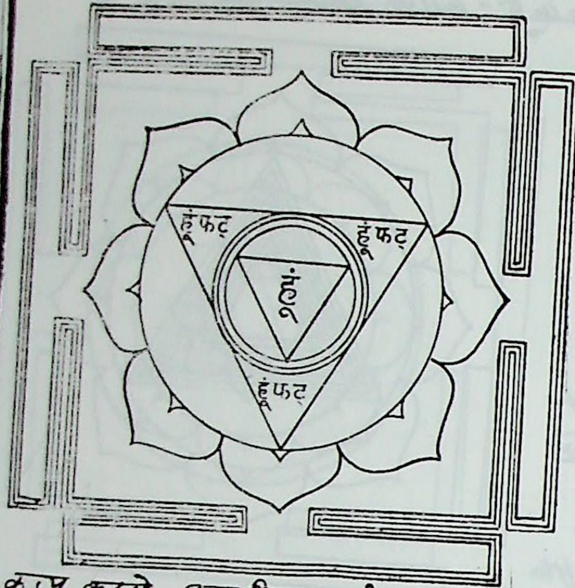
(१) हसरैं हसकलरीं हसरौः। (२) हसैं हसकरीं हसैं। इनमें से किसी भी मन्त्र का जप किया जा सकता है। ये दोनों ही मन्त्र अभीष्ट दायक हैं।

देवी के यन्त्र का स्वरूप बाँईं ओर प्रदर्शित है। इसे या तो ताम्रपत्र पर खुदवा लेना चाहिए, अथवा अष्टगंध या लालचंदन द्वारा भोजपत्र पर लिख लेना चाहिए। देवी का ध्यान मन्त्र निम्नानुसार है–

"उद्यद् भानु सहस्रकान्तिमरुण क्षौमां शिरो मालिकां। रक्तालिप्त पयोधरां जपवटी विद्यामभीतिं वरम्॥ हस्ताब्जैर्दधती त्रिनेत्र विलसद्वक्त्रारविन्द श्रियं। देवीं बद्ध हिमांशु रक्तमुकुटां वन्दे समन्दस्मिताम्।"

पुरश्चरण – इस मन्त्र की जप संख्या २४ लाख है। बारह हजार फूलों से होम करना चाहिए। उसका दशांश तर्पण, उसका दशांश मार्जन तथा उसका दशांश ब्राह्मण-भोजन कराना चाहिए। ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर काम्य-प्रयोग करने चाहिए। मतान्तर से – १० लाख की संख्या में मन्त्र जप ही पर्याप्त रहता है तथा बारह हजार कनेर के फूलों से होम करना चाहिए। मन्त्र-सिद्ध साधक निश्चल-लक्ष्मी प्राप्त करता है। बेल के फूलों से होम करने पर धन-लाभ होता है तथा मालती के फूलों से हवन करने पर वाक्‌सिद्धि होती है।

(छिन्नमस्ता - यन्त्र)



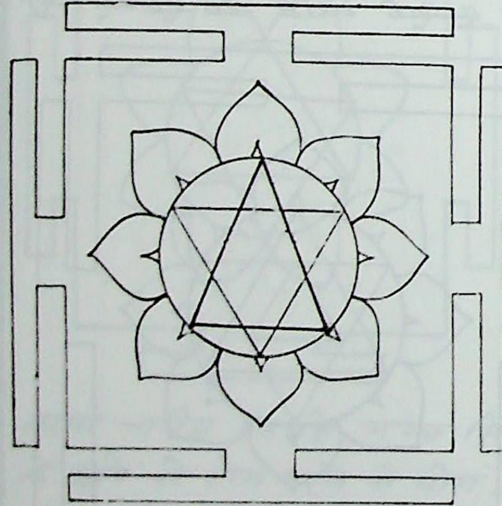
अथ छिन्नमस्ता यन्त्र प्रयोग – भगवती छिन्नमस्ता के मन्त्र इस प्रकार हैं– (१) ह्रीं क्लीं हुं ऐं वज्रवैरोचनीये हुं फट् स्वाहा। (२) ह्रीं क्लीं श्रीं ऐं हुं फट्। (३) हूं। (४) ॐ ह्रीं ह्रीं वज्रवैरोचनीये हुं फट् स्वाहा। (५) हूं स्वाहा। (६) ॐ हूं स्वाहा। (७) ॐ वज्र वैरोचनीये हुं हुं फट् स्वाहा। (८) श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं वज्रवैरोचनीये हुं हुं फट् स्वाहा। (९) ॐ श्रीं ह्रीं ह्रीं वज्रवैरोचनीये ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा।"– इनमें से किसी भी मन्त्र का जप किया जा सकता है।

'छिन्न मस्ता' का पूजा-यन्त्र बाँई ओर प्रदर्शित है। इसे या तो ताम्रपत्र पर खुदवा लेना चाहिए अथवा अष्टगंध द्वारा भोजपत्र पर लिख लेना चाहिए। छिन्नमस्ता देवी का ध्यान निम्नानुसार है–

"प्रत्यालीढ पदां सदैव दधती छिन्नं शिरः कर्त्रिकां। दिग्वस्त्रां स्वकबन्ध शोणित सुधाधारां पिबन्ती मुदा॥ नागाबद्ध शिरोमणिं त्रिनयनां हृद्युत्पलालंकृता। रत्यांसक्त मनोभवोपरि दृढां ध्यायेज्जपा सन्निभाम्॥"

पुरश्चरण- इस मन्त्र का पुरश्चरण चार लाख जप है। आवरण-पूजा आदि करके आधी रात के समय मांस तथा मछली की बलि देकर मन्त्र-जप करना चाहिए। जप का दशांश होम पलाश के अथवा बेल के फूलों अथवा फलों से करना चाहिए। होम का दशांश तर्पण, उसका दशांश मार्जन तथा उसका दशांश ब्राह्मण भोजन कराना चाहिए। इससे मन्त्र सिद्ध हो जाता है। इसके प्रभाव से धन-लाभ, वशीकरण प्राप्त होते हैं।

(धूमावती यन्त्र)



अथ धूमावती यन्त्र प्रयोग-

भगवती धूमावती के साधन-मन्त्र निम्नलिखित हैं:-

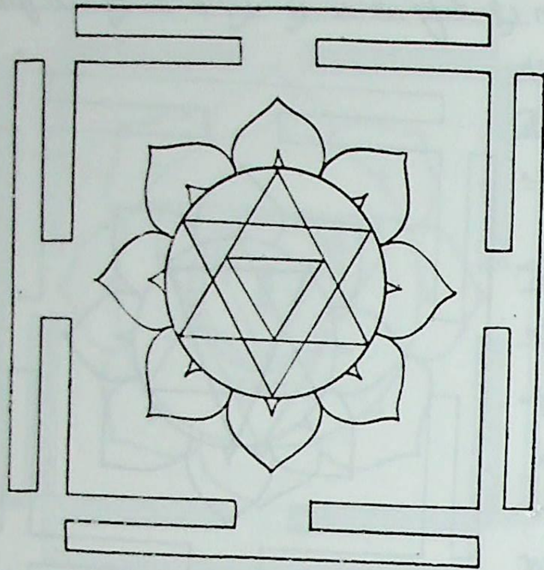
(१) धूं धूं धूमावती ठः ठः । (२) धूं धूं धूमावती स्वाहा ।

आद्याशक्ति भगवती धूमावती का पूजा-यन्त्र बाँई ओर को प्रदर्शित है। इसे या तो ताम्रपत्र पर खुदवा लेना चाहिए, अन्यथा अष्टगंध अथवा लालचन्दन द्वारा भोजपत्र पर लिखकर तय्यार करना चाहिए। धूमावती का ध्यान-मन्त्र निम्नानुसार है--

"विवर्णा चञ्चला दुष्टा दीर्घा च मलिनाम्बरा। विमुक्त कुन्तला रूक्षा विधवा विरलद्विजा॥
काकध्वजरथारूढा विलम्बित पयोधरा। शूर्पहस्तातिरूक्ताक्षी धृतहस्ता वरान्विता॥
प्रवृद्ध घोणा तु भृशं कुटिला कुटिलेक्षणा। क्षुत्पिपासार्दिता नित्यं भयदा कलहास्पदा॥"

पुरश्चरण- आवरण-पूजा आदि कृत्य सम्पन्न करके, धूपदान एवं नमस्कार करे, फिर श्मशान में जाकर सर्वथा नग्न होकर जप करना चाहिए। इसका पुरश्चरण एक लाख जप है। जप का दशांश तिलमिश्रित घृत से होम, होम का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन और उसका दशांश ब्राह्मण-भोजन करना चाहिए। ऐसा करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर प्रयोग सिद्ध करने चाहिए। कृष्णपक्ष की चतुर्दशी के दिन उपवास करके, सिर के बाल खुले रखकर, निर्वस्त्र हो, शून्य-गृह, श्मशान, वन अथवा पर्वत पर, शव पर बैठ कर देवी का ध्यान करते हुए एक लाख जप करने एवं रात्रि में नमक मिश्रित राई का होम करने से शत्रु नष्ट हो जाते हैं।

(बगलामुखी यन्त्र)

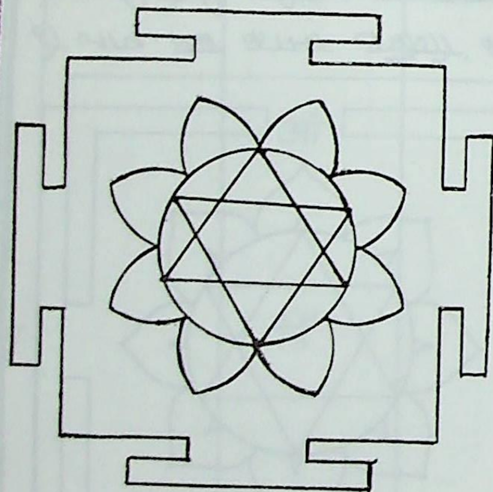


अथ बगलामुखी यन्त्र प्रयोग- भगवती बगलामुखी का साधन मन्त्र यह है "ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्व्व दुष्टानां वाचम्मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।"

बगलामुखी का पूजा-यन्त्र बाँई ओर को प्रदर्शित है। इसे या तो ताम्रपत्र पर खुदवा लेना चाहिए, अन्यथा अष्टगंध अथवा लालचन्दन द्वारा भोजपत्र पर लिखकर तैयार कर लेना चाहिए। बगलामुखी का ध्यान-मन्त्र निम्नानुसार है- " मध्ये सुधाब्धि मणिमण्डप रत्नवेदी सिंहासनोपरिगतां परिपीत वर्णाम्। पीताम्बराभरणमाल्य विभूषितांगी देवीं स्मरामि धृत मुद्गर वैरिजिह्वाम्॥ जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं वामेन शत्रून् परिपीडयन्तीम्। गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि॥"

पुरश्चरण- इस मन्त्र का पुरश्चरण 1 लाख जप है। जप का दशांश होम करना चाहिए। होम में चम्पा के फूल की आहुतियाँ देने का विधान है। जप के पश्चात् देवी के स्तोत्र, कवच आदि का पाठ करना चाहिए। मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर काम्य-प्रयोगों को करना चाहिए। सोमवार अथवा शनिवार की रात्रि में श्मशान से कोयला लेकर पादोदक से उसका घोल तैयार करे, फिर उसके द्वारा लोहे की शलाका से भूमि पर शत्रु का स्वरूप अंकित कर, हृदय पर उसका नाम लिखे। तत्पश्चात् उसके हृदय पर तिथि-वार का ध्यान करके नौ रात तक मंत्र जप करे तो शत्रु की मृत्यु हो।

(मातङ्गी यन्त्र)



अथ मातङ्गी यन्त्र प्रयोग- भगवती मातङ्गी देवी के साधन मन्त्र यह हैं-

(१) ॐ ह्रीं क्लीं हूं मातंग्यै फट् स्वाहा।

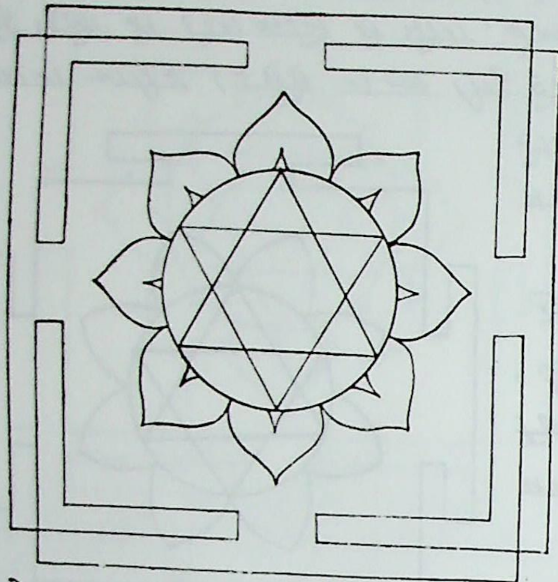
(२) ॐ ह्रीं ऐं श्रीं नमो भगवति उच्छिष्ट चाण्डालि श्री मातङ्गेश्वरी सर्वजन वशंकरि स्वाहा।" - इनमें से किसी भी मन्त्र का जप किया जा सकता है।

'मातङ्गी' का पूजा-यन्त्र बाँईं ओर प्रदर्शित है। इस यन्त्र को या तो ताम्र पत्र पर खुदवा लेना चाहिए अथवा अष्टगंध या लालचन्दन द्वारा भोजपत्र पर लिखकर तैयार कर लेना चाहिए। मातङ्गी का ध्यान-मन्त्र निम्नानुसार है-

"ॐ घनश्यामलाङ्गीं स्थितां रत्नपीठे शुकस्योदितं शृण्वतीं रक्तवस्त्राम्।
सुरापानमत्तां सरोजस्थितां श्रीं भजे वल्लकीं वादयन्तीं मातङ्गीम्॥

पुरश्चरण - भगवती मातङ्गी के पुरश्चरण के लिए दस हजार की संख्या में मन्त्र-जप करना चाहिए तथा मधु-पुष्प महुए से दशांश होम करना चाहिए। होम का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन, मार्जन का दशांश ब्राह्मण-भोजन करना चाहिए। इससे मन्त्र सिद्ध हो जाता है। मन्त्र सिद्ध हो जाने पर काम्य-प्रयोगों को सिद्ध करना चाहिए। मालती के फूलों से होम करने से योग, बेल के फूलों से राज्य, पलाश के पत्तों अथवा फूलों से वशीकरण, गिलोय के टुकड़ों से रोग-नाश तथा नीम के टुकड़ों एवं चावलों से होम करने से लक्ष्मी का लाभ होता है। नीम के तेल से सिक्त नमक से होम करने से शत्रु-नाश होता है। गंधाष्टक से होम करने पर संसार वशीभूत हो जाता है।

(कमलात्मिका-यन्त्र)



अथ कमलात्मिका यन्त्र प्रयोग-

भगवती 'कमलात्मिका' को 'कमला' भी कहा जाता है। ये 'लक्ष्मी' की प्रतिरूपा हैं। इनके साधन मन्त्र निम्नलिखित हैं-
(1) श्रीं; (2) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौः जगत्प्रसूत्यै नमः। इनमें से किसी भी मन्त्र का साधन किया जा सकता है।

भगवती कमलात्मिका के यन्त्र का स्वरूप बाँईं ओर प्रदर्शित है। इसे या तो ताम्रपत्र पर अंकित करा लेना चाहिए अथवा अष्टगंध या केसर-कुंकुम से भोजपत्र के ऊपर लिखकर तैयार करना चाहिए। देवी का ध्यान मन्त्र इस प्रकार है-
"कान्त्या काञ्चनसन्निभां हिमगिरि प्रख्यैश्चतुर्भिर्गजैर्हस्तोत्क्षिप्त हिरण्मयामृतघटै-रासिच्यमानां श्रियम्। बिभ्राणां वरमब्जयुग्ममभयं हस्तैः किरीटोज्ज्वलां क्षौमाबद्धनितम्बबिम्बललितां वंदेऽरविन्दस्थिताम्॥"

पुरश्चरण- इस मन्त्र का पुरश्चरण 12 लाख जप है। बारह हजार कमलपुष्पों से होम, उसका दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन तथा उसका दशांश ब्राह्मण-भोजन कराना चाहिए। इस प्रकार जब मन्त्र सिद्ध हो जाय, तब काम्य-प्रयोगों को सिद्ध करना चाहिए। जप के बाद मधु, घृत एवं शक्कर युक्त कमलपुष्पों से आहुति देनी चाहिए। वक्ष प्रमाण जल में खड़े होकर इस मन्त्र का तीन लाख जप करने से वांछित-धन प्राप्त होता है। अशोक की समिधाओं से प्रदीप्त अग्नि में चावल से दस लाख होम करने से राज्य श्री का लाभ होता है।

सं		जी
	आं	
फल्	ड्रिं	वि
	क्रों	
हुं		नी

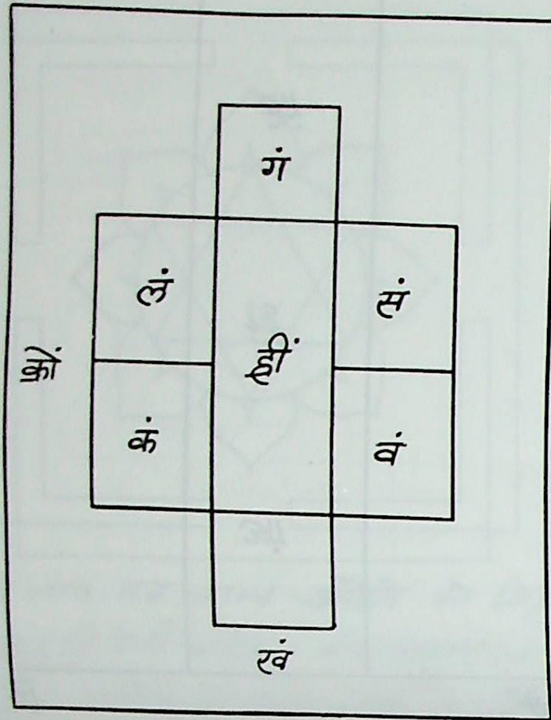
(परकाय-प्रवेश यन्त्र)

परकाय-प्रवेश यन्त्र-मन्त्र - श्रीमद् आद्य शङ्कराचार्य का कथन है कि श्रीपातञ्जलि महामुनि के 'यथाभिमतध्यानाद्वा' सूत्र के अनुसार ध्यान करने से परकाय-प्रवेश सिद्ध होता है। पाश्चात्य क्रियायोग में भी भ्रूमध्य में — "मैं इस शरीर के बाहर जा रहा हूँ" यह ध्यान करने के लिए कहा गया है।

श्री शङ्कराचार्य जी ने इस विद्या के साधन हेतु एक यन्त्र का उल्लेख किया है, जिसके साथ ही 'सौन्दर्य लहरी' के एक श्लोक का पाठ भी करना पड़ता है। वह यन्त्र इसी पृष्ठ के बाँई ओर प्रदर्शित है। 'सौन्दर्य लहरी' का श्लोक संख्या ८७ निम्नानुसार है-

"हिमानी हन्तव्यं हिमगिरि निवासैक चतुरौ
निशायां निद्राणं निशिचरमभागे च विशदौ।
वरं लक्ष्मी पात्रं श्रियमति सृजन्तौ समयिनां
सरोजं त्वत्पादौ जननि जयतश्चित्रमिह किम्॥"

बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को स्वर्णपत्र पर लिखकर २१ दिनों तक उसे मधु, चित्रान्न तथा पायस का भोग लगाना चाहिए। इसके बाद अगले पृष्ठ पर प्रदर्शित यन्त्र को लिखें।



पिछले पृष्ठ पर प्रदर्शित यन्त्र को सहस्रबार हल्दी बिछे हुए किसी पीढ़े पर लिखें तथा 'सौन्दर्यलहरी' के पूर्वोक्त श्लोक का प्रतिदिन एकसहस्र बार जप करें। इससे परकाय-प्रवेश विद्या सिद्ध होती है।

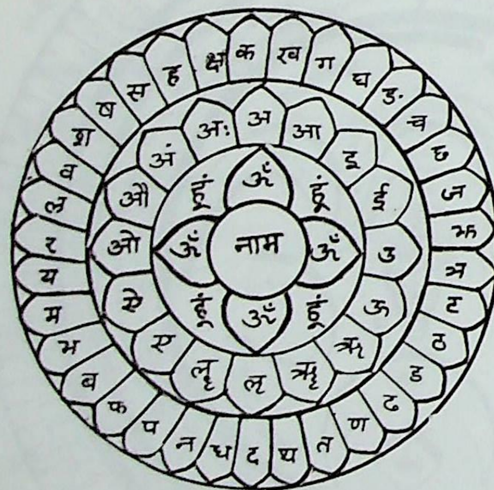
हठयोग के ग्रंथों में 'हठयोग' की खेचरी मुद्रा से भी परकाय-प्रवेश का सिद्ध होना लिखा है। 'योगकुण्डल्युपनिषद' में शारीरिक उपायों द्वारा खेचरी सिद्ध करने से पूर्व खेचरी-सिद्धि के लिए निम्नलिखित मन्त्र का वर्णन किया गया है—

"ॐ ह्रीं गं सं मं फं लं अं स ख क्रें ग सम् लों।"

इस मन्त्र के साथ ही खेचरी-सिद्धि के लिए एक यन्त्र भी बताया गया है, जिसका स्वरूप इसी पृष्ठ पर बाँई ओर प्रदर्शित है।

प्राच्य-साधन क्रम में तत्त्वसाधन आवश्यक होता है। सर्वप्रथम प्रातःकाल आकाश तत्त्व के उदय होने पर अभ्यास के द्वारा आकाशतत्त्व को बारह घंटे तक साधे रहना पड़ता है। इसका जब स्थायी भाव होता है, तब खेचरी मुद्रा सिद्ध कर के बैठ सकते हैं। इस मुद्रा का साधन करते समय पूर्वोक्त मन्त्र एवं यन्त्र का साधन करना पड़ता है। खेचरी-साधन का क्रियात्मक ज्ञान किसी अनुभवी योगी-महात्मा से प्राप्त करना चाहिए।

(रक्षा - यन्त्र)

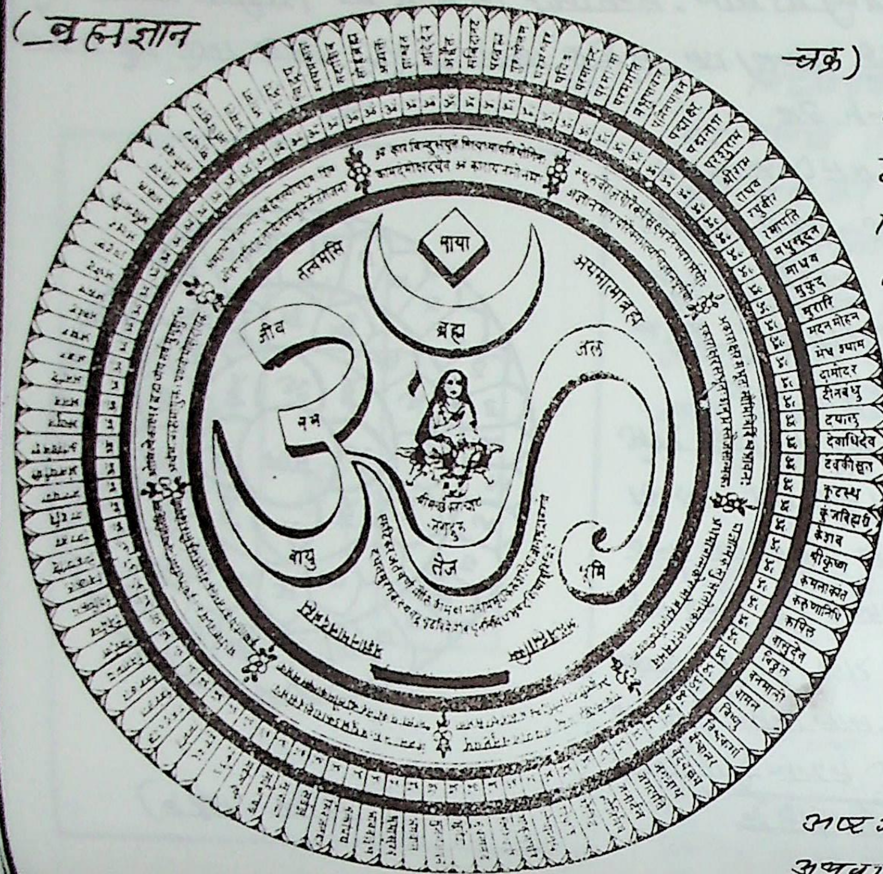


रक्षा-यन्त्र- भोजपत्र के ऊपर गोरोचन और कुंकुम अथवा मलयागिरि चन्दन और कपूर द्वारा एक चातुर्दल कमल बनाकर, उसकी कर्णिका में अपना नाम लिखकर चारों दलों मे ॐकार लिखे तथा आग्नेय आदि कोणों में 'हूं' कार लिखे। उसके ऊपर षोडश दलों का कमल बनाये और उन दलों में अकारादि षोडश स्वरों को लिखे। फिर उसके ऊपर चौंतीस दलों का कमल बनाये। उसके दलों में 'क' से लेकर 'क्ष' अक्षरों तक को लिखे। इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप निर्मित होगा, उसे इसी पृष्ठ पर बाँई ओर प्रदर्शित किया गया है।

यन्त्र के लिख जाने पर उसे श्वेत रंग के सूत्र (सफेद धागे) से वेष्टित करके रेशमी वस्त्र से आच्छादित कर, कलश पर स्थापित करके पूजन करे। पूजन सामान्य पूजा-विधि से गन्ध, पुष्प आदि के द्वारा करना चाहिए तथा अन्त में धूप-दीप प्रदर्शित करे। गुग्गुल की धूप देना अधिक उत्तम रहता है।

यह यन्त्र अत्यधिक प्रभावशाली है। इसे धारण करने से सब प्रकार के रोग शान्त होते हैं तथा शत्रुओं का विनाश होता है। इस यन्त्र का लेखन तथा धारण किसी शुभ मुहूर्त में करना चाहिए। इस यन्त्र को 'रक्षायन्त्र' नाम इसलिए दिया गया है कि यह शरीर की रक्षा करता है।

(ब्रह्मज्ञान चक्र)



अथ ब्रह्मज्ञान चक्रम् - इस पृष्ठ पर बाँई ओर प्रदर्शित 'ब्रह्मज्ञान चक्र' की परिकल्पना एक सिद्ध महात्मा द्वारा की गई है। यद्यपि यह चक्र ब्रह्मज्ञानियों के लिए चिन्तनीय एवं मननीय है, तथापि सामान्यजनों को इसके दर्शन एवं पूजन मात्र से ही परम कल्याण का लाभ ले सकता है।

श्री आद्य शंकराचार्य को मध्य में रखकर, उन्हें ब्रह्म के अक्षर स्वरूप 'ॐ' कार से आवृत्त करते हुए, उसके चारों ओर ॐकार की महिमा को प्रकट करने वाले विविध श्लोकों को उद्धृत किया गया है, उसके ऊपर चारों ओर 'ॐ' को आवृत्त करते हुए सबसे ऊपरी वृत्त में परमात्मा के १०८ नामों का उल्लेख किया गया है।

इस यन्त्र को ताम्रपत्र पर खुदवाकर अथवा अष्टगंधादि से भोजपत्र पर लिखकर नित्य पूजन करने अथवा घर में स्थापित करने मात्र से ही आत्मकल्याण होता है।

अथ यन्त्र महार्णव (तृतीय खण्ड)

काम्य-प्रयोगों के लिए जो अनुष्ठान किये जाते हैं उनकी गणना षट् कर्मों के अन्तर्गत की जाती है। षट् कर्म यह हैं— (१) शान्तिकरण, (२) वशीकरण, (३) स्तम्भन, (४) विद्वेषण, (५) उच्चाटन तथा (६) मारण - इनके सम्बन्ध में ज्ञातव्य विषयों की जानकारी प्रथम खण्ड में दी जा चुकी है। इस खण्ड में एतद्‌विषयक प्रयोगों का वर्णन किया जा रहा है। स्मरणीय है कि यन्त्र-साधक के लिए जिन नियमों का उल्लेख किया जा चुका है, उनका पालन करना आवश्यक है। यन्त्र के सिद्ध, साध्य, सुसिद्ध, अरि आदि का निर्णय करने के उपरान्त ही यन्त्र-साधन में संलग्न होना चाहिए।

यन्त्र-साधन से पूर्व 'भूतलिपि' की उपासना करना आवश्यक है। इस उपासना से ही यन्त्र सिद्ध होते हैं; अन्यथा वे अपना चमत्कारी-फल प्रदर्शित नहीं कर पाते। भूतलिपि के सम्बन्ध में निम्नानुसार समझलें—

भूत लिपि— "अं इं उं ऋं लृं एं ऐं ओं औं हं यं रं वं लं ङं कं खं घं गं ञं चं छं झं जं णं टं ढं डं नं तं थं धं धं दं मं पं फं भं बं शं छं सं।"

विनियोग— "अस्याः भूतलिपेः दक्षिणामूर्तिऋषिः गायत्री छन्दः वर्णेश्वरी देवता ममाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।" — इसके बाद निम्नानुसार षडङ्गन्यास करना चाहिए—

षडङ्गन्यास— "हं यं रं वं लं — हृदयाय नमः। ङं कं खं घं गं — शिरसे स्वाहा। ञं चं छं झं जं — शिखायै वषट्। णं टं ठं ढं डं — कवचाय हुम्। मं पं फं भं बं — अस्त्राय फट्।" इसके बाद निम्नानुसार वर्णन्यास करें—

वर्णन्यास- "ॐ अं नमः – गुदे। ॐ इं नमः – लिङ्गे। ॐ उं नमः – नाभौ। ॐ ऋं नमः – हृदि। ॐ लृं नमः – कण्ठे।
ॐ एं नमः – भ्रूमध्ये। ॐ ऐं नमः – ललाटे। ॐ ओं नमः – शिरसि। ॐ औं नमः – ब्रह्मरन्ध्रे। ॐ हं नमः – ऊर्ध्व
मुखे। ॐ यं नमः – पूर्वमुखे। ॐ रं नमः – दक्षिण मुखे। ॐ वं नमः – उत्तर मुखे। ॐ लं नमः – पश्चिम मुखे।
ॐ ङं नमः – दक्ष हस्ताग्रे। ॐ कं नमः – दक्ष हस्त मूले। ॐ खं नमः – दक्ष कूर्परे। ॐ घं नमः – दक्ष हस्ता-
ङ्गुलि सन्धौ। ॐ गं नमः – दक्षिण मणिबन्धे। ॐ ङं नमः – वाम हस्ताग्रे। ॐ चं नमः – वाम हस्तमूले।
ॐ छं नमः – वाम कूर्परे। ॐ झं नमः वाम हस्तांगुलि सन्धौ। ॐ जं नमः वाम मणिबन्धे। ॐ णं नमः
दक्ष पादाग्रे। ॐ टं नमः – दक्ष पाद मूले। ॐ ठं नमः – दक्षिण जानौ। ॐ ढं नमः – दक्ष पादांगुलि सन्धौ।
ॐ डं नमः दक्षिण गुल्फे। ॐ नं नमः वाम पादाग्रे। ॐ तं नमः वामपाद मूले। ॐ थं नमः – वाम जानौ।
ॐ धं नमः – वाम पादांगुलि सन्धौ। ॐ दं नमः – वाम गुल्फे। ॐ मं नमः – उदरे। ॐ पं नमः – दक्षिणपार्श्वे
ॐ फं नमः – वाम पार्श्वे। ॐ भं नमः – नाभौ। ॐ बं नमः – पृष्ठे। ॐ शं नमः – गुह्ये। ॐ बं नमः –
हृदि। ॐ सं नमः – भ्रूमध्ये।

ध्यान- "अक्षस्रजं हरिणपोत मुदग्र टंकं विद्यां करैरविरतं दधती त्रिनेत्राम्।
अर्धेन्दु मौलिमरुणाधरविन्दरामां वर्णेश्वरीं प्रणमतस्तन भारनम्राम्॥"

उक्त 'श्रुत-लिपि' का १ लाख की संख्या में जप करने के बाद तिलों से १० हजार आहुतियाँ
देकर होम करें। इससे श्रुत लिपि सिद्ध हो जाती है। इसके सिद्ध हो जाने पर साधक द्वारा निर्मित यन्त्र अपना
चमत्कारी प्रभाव प्रदर्शित करते हैं। अन्यथा यन्त्र अपना पूर्ण फल नहीं देते। अतः सर्वप्रथम इस श्रुत-लिपि को

सिद्ध करना आवश्यक है। इसे सिद्ध कर लेने के बाद ही यन्त्र - साधना करनी चाहिए।

अनिवार्य प्रक्रिया एवं ज्ञातव्य- स्नानोपरान्त शुद्ध धारण करके ललाट पर चन्दन लगा, गोरोचनादि निर्दिष्ट द्रव्यों द्वारा भोजपत्रादि निर्देशित-वस्तु पर एकान्त-स्थान में यन्त्र को लिखना चाहिए।

यन्त्र में विसर्गयुक्त नाम को मध्य बीज पर लिखना चाहिए। यह नाम साधक का हो। फिर उसके नीचे द्वितीयान्त साध्य-व्यक्ति अथवा कार्य का नाम तथा उसके दोनों ओर दो बार 'कुरु' शब्द लिखना चाहिए, फिर "ह्सौः" इस बीज को (जिसे यन्त्र का 'जीव' माना जाता है) मध्य भाग से नीचे की ओर लिखना चाहिए। तत्पश्चात् हंसः सोऽहं (जिसे मन्त्र का 'प्राण' माना जाता है) को ईशान आदि चारों कोणों में लिखना चाहिए तथा दिशाओं में दिक्पालों के बीजों— लं रं मं क्षं वं यं सं हं आं ह्रीं— को लिखकर 'यन्त्र गायत्री' के तीन-तीन वर्णों को प्रत्येक दिशा में लिखना चाहिए।

यन्त्र गायत्री- "यन्त्रराजाय विद्महे वर प्रदाय धीमहि तन्नो यन्त्रः प्रचोदयात्"—यह यन्त्र-गायत्री है, जो स्मरणमात्र से ही अभीष्ट-फल देती है। यन्त्र के बाहर प्राण प्रतिष्ठा-मन्त्र से उसे वेष्टित कर दें। उक्त प्रकार से, सावधानी पूर्वक, निर्दिष्ट विधि से यन्त्र को लिखना चाहिए।

जिन यन्त्रों के साथ लेखनी, लेखनाधार तथा लेखन-वस्तु का उल्लेख हो, उन्हें तदनुरूप ही लिखना चाहिए। जिन यन्त्रों के साथ लेखन-वस्तु का उल्लेख न हो, उन्हें भोजपत्र, रेशमी वस्त्र अथवा ताड़पत्र पर लिखना चाहिए। जिन यन्त्रों के साथ लेखन-द्रव्य का विधान न हो, वहाँ उसे केसर, कस्तूरी, कपूर, गजमद, गोरोचन, चन्दन अथवा अगर— इनमें से किसी वस्तु के द्वारा लिखना चाहिए। जहाँ लेखनी सम्बन्धी

...हो, वहाँ सोने की सलाई द्वारा यन्त्र को लिखना चाहिए। जहाँ यन्त्र को किसी वस्तु में धारण करने का उल्लेख न हो, वहाँ स्वर्ण के (अभाव में ताँबे के) ताबीज में भर कर उसे धारण करना चाहिए। जहाँ यन्त्र को किसी अङ्ग विशेष में धारण करने का निर्देश न हो, वहाँ उसे दाँई भुजा (स्त्री बाँई भुजा) में धारण करना चाहिए। यन्त्र को ताबीज में भरने से पूर्व उसे चारों ओर धागे से लपेट कर बाँध देना उचित है।

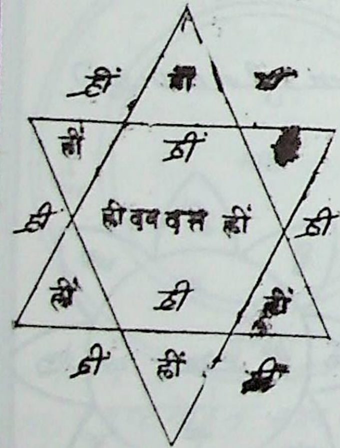
जिस देवता का यन्त्र हो, उसके बीज से अथवा मातृका से पूजन कर, उस देवता का मन्त्र जप कर तथा उसी से होम करके, होम करने से शेष बचे हुए घृत में यन्त्र को डुबो कर, उसे स्वर्ण, चाँदी अथवा ताँबे के ताबीज में भर कर शिर, भुजा अथवा कण्ठ में धारण करना चाहिए।

यन्त्र को धारण करने से पहले, सर्वतोभद्र मण्डल के आठ दलों में कलशों की स्थापना कर के, उनके मध्य में यन्त्र को रखना चाहिए तथा मण्डल के चारों कोनों में चार कलश स्थापित करके, प्रत्येक कलश पर हाथ रखते हुए — "ओं ह्रीं क्रौं" इन तीन अक्षरों वाली विद्या में कूर्च-बीजों को लगा कर, एक हजार बार जपना चाहिए। तत्पश्चात् उस यन्त्र को चारों कलशों के जल द्वारा, अभिषेक के मन्त्रों से अभिषिक्त कर, गन्ध-पुष्पादि से पूजन करके, प्राणप्रतिष्ठा के मन्त्रों से यन्त्र-देवता की प्राणप्रतिष्ठा करके पूर्वोक्त यन्त्र-गायत्री द्वारा यन्त्र का षोडशोपचार पूजन करके ब्राह्मण, सुवासिनी तथा कुमारियों को भोजन कराने के बाद, दक्षिणा देकर, उनका आशीर्वाद ग्रहण करना चाहिए। फिर जिस अङ्ग में यन्त्र-धारण का निर्देश किया गया हो, उसमें उसे धारण कर लेना चाहिए।

अगले पृष्ठों में विभिन्न मनोकामनाओं की पूर्ति करनेवाले यन्त्रों का वर्णन किया जा रहा है।

वशीकरण - यन्त्रम्

अब वशीकरण यन्त्रों का उल्लेख किया जाता है। इन यन्त्रों का उपयोग विभिन्न श्रेणी के व्यक्तियों के लिए किया जाता है।



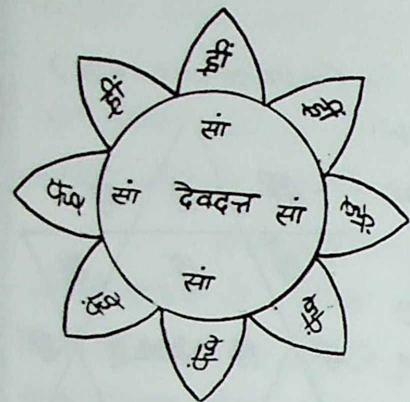
(दिव्य स्तम्भन यन्त्र)

सर्ववशीकरण दिव्यस्तम्भन यन्त्र- गोरोचन तथा कुंकुम - इन दोनों के द्वारा भोजपत्र के ऊपर एक षट्कोण यन्त्र लिखे। फिर उसके पूर्व तथा पश्चिम - इन दो कोणों में दो 'ह्रीं'कार लिख कर, इनके अन्तराल में ६ 'ह्रीं'कार और लिखे। इस प्रकार कुल आठ ह्रीं'कार हुए। फिर षट्कोण यन्त्र के भीतरी भाग में ह्रींकाराक्षर संपुटित साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखे तथा तथा अन्य चार कोणों को भी चार ह्रींकाराक्षर से वेष्टित कर, यन्त्रराज को पूर्ण करे।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप तय्यार होगा, उसे बाँई ओर प्रदर्शित चित्र में स्पष्ट किया गया है। इसमें जिस स्थान पर 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साध्य व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

इस यन्त्र को 'शराव-सम्पुट' (मिट्टी के दो शकोरों को आपस में मुँह मिलाकर बन्द कर देने को शराव-सम्पुट कहते हैं) में रख कर भक्ति भाव से पूजन करे अर्थात् मिट्टी के दो शकोरों के बीच खाली भाग में यन्त्र को रख दे। फिर उसका पूजन करे। दूसरे दिन उसे शराव-सम्पुट में से निकाल कर शुभ मुहूर्त में अपनी शिखा में बाँधे, तदुपरान्त मौन रह कर फल का चिन्तन करे। यह यन्त्र श्रेष्ठ वशीकरण तथा लोक में साध्य-भाव को प्राप्त कराने वाला है। यह लोक में साध्यभाव को प्राप्त कराने वाला है।

स्त्री सौभाग्यकर सौभाग्य वर्द्धक यन्त्र - सर्वप्रथम भोजपत्र के ऊपर गोरोचन द्वारा एक गोलाकार-चक्र खींच कर, उसे अष्टदल से वेष्टित करे। फिर यन्त्र के भीतर पूर्व आदि चारों दिशाओं में 'सां' बीजों को लिखकर मध्यभाग में अनुस्वार युक्त साध्य-व्यक्ति के नामाक्षरों को लिखें तदुपरान्त आठों दलों में 'ह्रीं' बीज को लिखें। इस प्रकार निर्मित होने वाले यन्त्र के स्वरूप को बाँई ओर प्रदर्शित किया गया है। यन्त्र के मध्यभाग में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।



(सौभाग्य वर्द्धक यन्त्र)

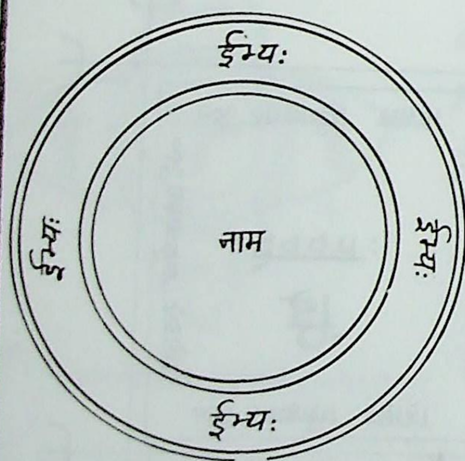
यन्त्र-लेखन के बाद तीन रात्रि तक, यन्त्र का गन्ध-पुष्पादि से पूजन करना चाहिए तथा चौथे दिन विधान पूर्वक तीन सौभाग्यवती स्त्रियों का पूजन कर, उन्हें भोजन करा, दक्षिणा दे, आशीर्वाद प्राप्त करें। सौभाग्यवती स्त्रियों के पूजन के समय निम्न लिखित मन्त्र का उच्चारण करना चाहिए—

'अनङ्गवल्लभे देवि त्वं च मे प्रीयतामिति। एवं प्रियं महावश्यं कुरु त्वं स्मरवल्लभे॥

उक्त विधि से यन्त्र का पूजन करने के बाद इसे किसी धातु के ताबीज में भरकर कण्ठ में धारण करना चाहिए।

जो स्त्री इस यन्त्र को धारण करती है, उसका पति उसके वशीभूत रहकर, दास-तुल्य हो जाता है। यदि उक्त क्रियाओं को करने पर भी यदि पति सौभाग्य-मद से दर्पित स्त्री को कुछ न समझे तो स्त्री को चाहिए कि वह शुक्लपक्ष की प्रत्येक चतुर्दशी में देवी रति की प्रीति के लिए एक सौभाग्यवती स्त्री को भोजन कराके पुनः यन्त्रराज का पूजन करना चाहिए।

(दुष्टमोहनकर कण्टकयन्त्र)



(दुष्टमोहन कालकण्टक)

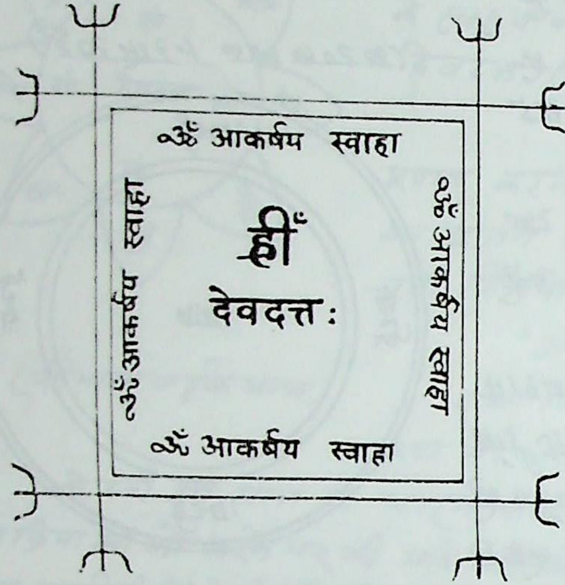
दुष्टमोहनकर कण्टकयन्त्रम्- श्मशान की भस्म लाकर, आक के दो पत्तों पर अलग-अलग एक गोलाकार चक्र खींच कर, उसके भीतर साध्य-व्यक्ति का नाम लिखें। फिर 'ईम्पः' विसर्गमिश्रित इन दो बीजों को पूर्व आदि चारों दिशाओं में लिखकर उसके ऊपर एक गोलाकार चक्र और खींचें, ताकि उक्त अक्षर चक्र के मध्यवर्ती हो जाँय। इस विधि से यन्त्र का जो स्वरूप तय्यार होगा, उसे इसी पृष्ठ पर बाँई ओर प्रदर्शित किया गया है। चित्र में जिस जगह 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

यन्त्र लिखे जाने के बाद दोनों पत्तों को संपुट में लेकर, काँटे से छेद कर, कृष्णपक्ष की रात्रि में पूजन करके, श्मशान भूमि में गड्ढा खोद कर गाड़ दें तथा भूतादि बलि-प्रदान करें।

उक्त क्रियाओं को सम्पन्न करने के बाद "हे कालरात्रि! प्रसन्न होओ!" इस वाक्य का उच्चारण करते हुए, ब्राह्मणों को दक्षिणा दें। इस यन्त्र-क्रिया से अत्यधिक बलवान् शत्रु भी, जो घात करने की इच्छा रखता हो, साधक के अनुकूल बन जाता है।

यह 'दुष्टमोहनकर कण्टक यन्त्र' अथवा 'दुष्टमोहन कालकण्टक' नामक यन्त्र शत्रु के स्वभाव में परिवर्तन लाकर, उसे साधक के वशीभूत बना देता है।

(उच्छिष्ट पिशाच यन्त्र)

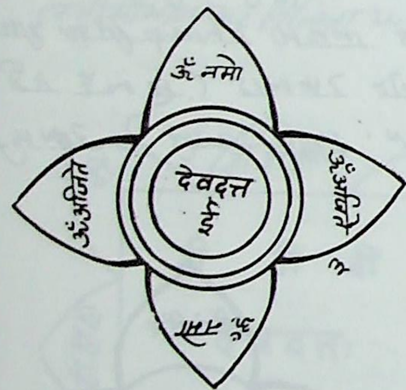


दुष्टवश्यकर 'उच्छिष्ट-पिशाच यन्त्रम्' — गोरोचन तथा अपने रक्त से भोजपत्र के ऊपर दो रेखा वाले एक चौकोर यन्त्र को लिखकर, उसके भीतरी भाग में 'ह्रीं' बीज-रेखा के मध्य में साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखें, फिर उसके भीतरी भाग में 'ह्रीं' बीज-रेखा के मध्य में साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए तथा पूर्वादि चारों दिशाओं में 'ॐ आकर्षय स्वाहा' इस वाक्य को यन्त्र के भीतरी भाग में लिखना चाहिए, ताकि साध्य-व्यक्ति के नामाक्षर मध्य में हो जाँय। यन्त्र के चारों कोनों में त्रिशूल भी बनाने चाहिए।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप तय्यार होगा, उसे बाँई ओर दिये गए चित्र में प्रदर्शित किया गया है। चित्र में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, उस जगह साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

यन्त्र को लिखने के बाद उसका गंध आदि से पूजन करके 'ॐ आकर्षय स्वाहा' — इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए यन्त्र के टुकड़े कर, उस मार्ग में डाल देने चाहिए, जिसमें होकर साध्य-व्यक्ति का आवागमन बना रहता हो। इस साधन से अत्यधिक क्रूर-प्रकृति वाला मनुष्य भी वशीभूत हो जाता है। यदि व्यवसायी व्यक्ति के मार्ग में कोई व्यक्ति बाधक बनकर दुष्टता कर रहा हो तो उसके लिए इस यन्त्र का प्रयोग करना चाहिए।

(जनवश्यकर यन्त्र)



(यावज्जीव वशीकरण यन्त्र)

यावज्जीवं जनवश्यकरं यन्त्रम्- (अब समस्त जीवों को वशीभूत करने का प्रभाव रखने वाले यन्त्र का वर्णन करते हैं।)

सर्वप्रथम कपूर, कुंकुम, कस्तूरी और गोरोचन — इन वस्तुओं द्वारा भोज पत्र के ऊपर तीन रेखाओं से युक्त एक गोलाकार चक्र का निर्माण करें। फिर उसकी पूर्व आदि चारों दिशाओं में चार कमल-दल वेष्टित करें तथा यन्त्र के मध्य में साध्य-व्यक्ति का नाम लिखकर, उसके अन्त में 'ईं' कार लगायें तथा पूर्व एवं पश्चिम के दलों में 'ॐ अजिते' तथा उत्तर-दक्षिण के दलों में 'ॐ नमो' लिखें। इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप तय्यार होगा, उसे बाँई ओर प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित यन्त्र में जिस जगह 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

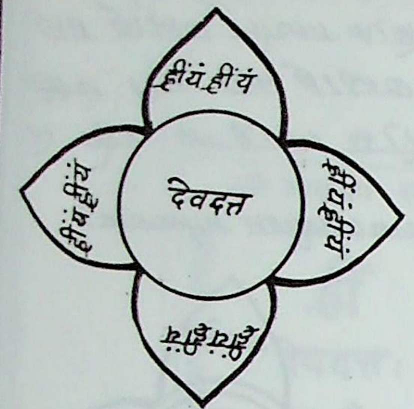
यन्त्र को लिखने के बाद तीन दिनों तक गंध, पुष्प, नैवेद्य आदि से यन्त्र का पूजन करते रहें तथा ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर फलाहार अथवा संयमित आहार करें। चौथे दिन एक ब्राह्मण को भोजन करायें तथा उसे दक्षिणा देकर सन्तुष्ट करते हुए आशीर्वाद प्राप्त करें। जब ब्राह्मण भोजन करके चला जाय, तब प्रातः काल के समय ही, यन्त्र को त्रिलोह (सोना, चाँदी और ताँबा) के ताबीज में भरकर अपनी दाँई भुजा अथवा कण्ठ में धारण करले। यह यन्त्र सभी जीवों को वश में करने वाला है तथा इसे धारण करने वाला स्वजनों में दर्शनीय एवं अन्य लोगों में सम्माननीय होता है।

(विवाद - विजय यन्त्र)

यन्त्र 033

विवाद-विजय यन्त्रम्

विवाद अर्थात् झगड़ा-झंझट, मुकद्दमा आदि में विजय-प्राप्ति के लिए 'विवाद-विजय यन्त्र' का प्रयोग किया जाता है। इसकी विधि निम्नानुसार है —

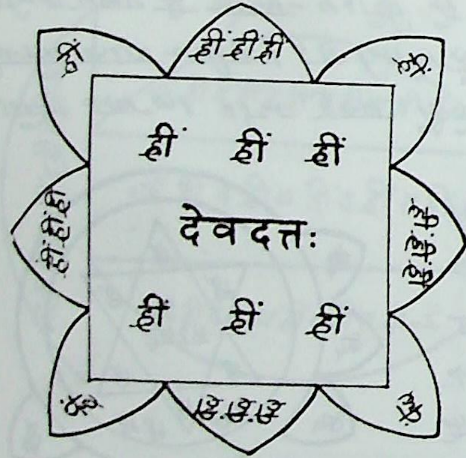


महा०

भोजपत्र के ऊपर कुंकुम द्वारा एक गोलाकार चक्र खींच कर, उसकी चारों दिशाओं में चार कमल-दलों का निर्माण करे। फिर प्रत्येक दल में 'ह्रीं' और 'यं' — इन दो बीजों को दो-दो बार लिखे अर्थात् 'ह्रींयं ह्रींयं' लिखे। तदुपरान्त यन्त्र के मध्य में साध्य-व्यक्ति का नाम लिखे। इस प्रकार जो यन्त्र तय्यार होगा, उसके स्वरूप को बाँई ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित यन्त्र में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

यन्त्र-निर्माण के बाद उसे धूप, दीप, नैवेद्य, पुष्प आदि से पूजे, फिर त्रिलोह (सोना, चाँदी, ताँबा मिश्रित धातु) से निर्मित ताबीज में भरकर दूध के भीतर (किसी बर्तन में भरे हुए दूध में) डालकर रख दे, तत्पश्चात् मुकद्दमा आदि के लिए न्यायालय में जाय तो विजय प्राप्त होती है। यदि किसी पंचायत अथवा शान्ति-वार्ता में सम्मिलित होने से पूर्व उक्त प्रयोग किया जाय तो उसमें मनोनुकूल सफलता मिलती है। यह 'विवाद-विजय' नामक यन्त्र सब झगड़ों तथा मुकद्दमों आदि में विजय दिलानेवाला तथा देवताओं द्वारा प्रजित है। यदि इसका समुचित रीति से साधन किया जाय तो सफलता अवश्य मिलती है।

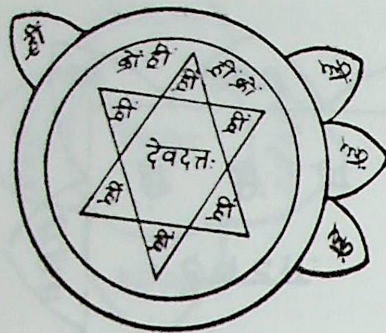
(स्त्रीसौभाग्यकर ललिता यन्त्रम्)



स्त्री-सौभाग्यकर ललिता यन्त्रम्- गोरोचन, कुंकुम, कस्तूरी एवं लालचंदन — इन चारों वस्तुओं के सम्मिश्रण से, भोजपत्र के ऊपर एक चतुष्कोण यन्त्र लिखें तथा उसके ईशान आदि चारों कोनों एवं पूर्व आदि चारों दिशाओं में एक-एक कमल-दल का निर्माण करें। इस प्रकार कुल ८ कमल-दल निर्मित होंगे। तदुपरान्त यन्त्र के मध्य भाग में तीन तिरछी रेखाओं की कल्पना कर, पहली तथा तीसरी रेखा में तीन-तीन 'ह्रीं' बीज स्थापित करें एवं मध्य की रेखा में अन्त में विसर्गयुक्त 'साध्य-पुरुष' का नाम लिखें। फिर बहिर्भाग के चारों कमल दलों में तीन-तीन 'ह्रीं' बीज तथा ईशानादि चारों कोणों के दलों में एक-एक 'ह्रीं' बीज लिखें। इस विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित चित्र में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ 'साध्य-पुरुष' के नाम को लिखना चाहिए।

यन्त्र लेखनोपरान्त कृष्णपक्ष की त्रयोदशी की रात्रि में उत्तर दिशा की ओर मुँह करके, सात रात्रि पर्यन्त नियम पूर्वक अनेक प्रकार के भोग तथा गंधादि से यन्त्रराज का पूजन करते रहें तथा अन्त में सात सौभाग्यवती स्त्रियों को भोजन करायें। फिर इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए यन्त्र को धातु-निर्मित ताबीज में भरकर अपने कण्ठ में धारण करलें— "शंकरस्य प्रिये देवि ललिते प्रियतामिति। रूपं देहि यशो देहि सौभाग्यं देहि मे प्रियम। भगवति वाञ्छितं देहि प्रियमायुष्यवर्द्धनम्।" इस यन्त्र के प्रभाव से स्त्रियाँ प्रियतम को वश में करलेती हैं।

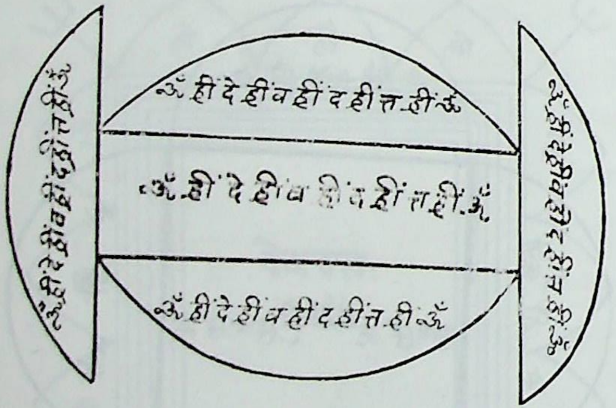
(कामाक्ष यन्त्रम्)



राज-स्त्री वश्यकारक कामाक्ष यन्त्रम्- गोरोचन, कुंकुम एवं कपूर - इन तीनों वस्तुओं के मिश्रण से, चमेली की कलम द्वारा भोजपत्र के ऊपर एक षट्कोण-यन्त्र का निर्माणकर, उसके बाह्य भाग में एक या दो गोलाकार चक्र खींचें तथा उसके दक्षिण भाग में तीन तथा ईशान भाग में एक कमल-दल बनाकर, उक्त षट्कोण के भीतर साध्य-स्त्री के नामाक्षर लिखकर, प्रत्येक कोण में एक-एक 'ह्रीं' बीज लिखें। फिर पूर्वकोण में एक 'क्लीं' बीज लिखकर दो 'ह्रीं' बीज तथा बाद में एक 'क्लीं' बीज लिखें। तदुपरान्त प्रत्येक दल में एक-एक ह्रीं बीज लिखें। इस विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई ओर प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित यन्त्र के मध्यभाग में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साध्य-स्त्री के नाम को लिखना चाहिये।

यन्त्र लेखनोपरान्त रात्रि के समय श्वेत वस्त्र धारण कर, यन्त्र को अपने सामने रखकर गन्ध, पुष्प, नैवेद्य आदि पदार्थों द्वारा भक्ति भाव पूर्वक यन्त्र का पूजन करके, साध्य-स्त्री का चिन्तन करना चाहिए। इस विधि से सात दिनों तक पूजनादि की क्रियाओं को करते रहने के बाद ब्राह्मण की स्त्रियों को विभिन्न प्रकार के भोज्य-पदार्थों से तृप्त करा, यथा शक्ति दक्षिणा दें। दक्षिणा देते समय 'कामाक्षी प्रीयताम्' इस वाक्य का उच्चारण करना चाहिए। फिर यन्त्र को त्रिलोह (सोना, चाँदी, ताँबा) के ताबीज में भर कर, दाँई भुजा में धारणकर, साध्य-स्त्री के सम्मुख पहुँचना चाहिए। इस यन्त्र धारणकर्ता को देखते ही साध्य-स्त्री, फिर चाहे वह राजरानी ही क्यों न हो काम-ज्वर से पीड़ित हो, साधक के वशीभूत होकर, उससे स्वयं प्रणय-याचना करने लगती है।

(स्त्रीवश्यकर मदन-मर्दन यन्त्र)

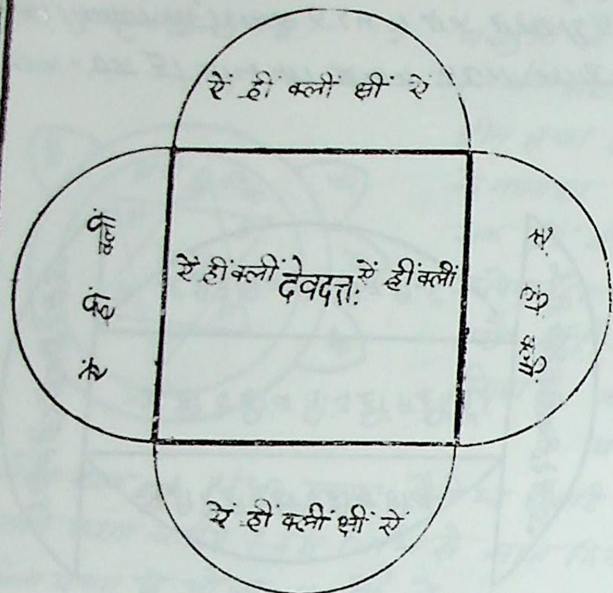


स्त्री-वशीकरण मदन-मर्दन यन्त्र – मदन काष्ठ अर्थात् चमेली की लकड़ी से भोजपत्र के ऊपर, घोड़े के रक्त द्वारा दो तिरछी रेखायें खींच कर, उनके आदि-अन्त में कमल-दल का आकार बनाकर, उनके ऊपर-नीचे के दोनों भागों में सामान्य गोलाई युक्त दो रेखायें खींच कर "ॐ दे ह्रीं व ह्रीं द ह्रीं त ह्रीं ॐ" – इन ग्यारह बीजों को प्रत्येक कोष्ठ में स्थापित कर, यन्त्र को पूर्ण करें। इस प्रकार जो यन्त्र बनेगा, उसके स्वरूप को बाँई ओर प्रदर्शित किया गया है।

प्रदर्शित यन्त्र में 'ॐ ह्रीं' इन दो आदि बीजाक्षरों के बाद प्रत्येक 'ह्रीं' बीज के आगे क्रमशः 'दे व द त' इन अक्षरों को लिखा गया है, इनके स्थान पर साध्य-स्त्री के नाम को लिखना चाहिए। उदाहरण के लिए यदि 'मधुरिमा' नामक स्त्री के निमित्त प्रयोग करना हो तो यन्त्र के भीतर लिखे जाने वाले अक्षर इस प्रकार होंगे – "ॐ ह्रीं म ह्रीं धु ह्रीं रि ह्रीं मा ह्रीं ॐ" इसी प्रकार अन्य नामाक्षरों के साथ एक-एक ह्रीं बीज का प्रयोग करना चाहिए। यन्त्र लेखनोपरान्त चमेली की लकड़ी द्वारा ही कामदेव की एक ऐसी प्रतिमा का निर्माण करें, जिसके हृदय में एक ऐसा छिद्र हो, जिसके भीतर यन्त्र को आसानी से रखा जा सके। फिर यन्त्र की चन्दन, पुष्प आदि से पूजा कर, उस प्रतिमा के हृदय में स्थापित कर दें तथा २१ दिनों तक नित्य पूजा करते रहें। इससे साध्य स्त्री वशीभूत हो जाती है।

यन्त्र २३८

(स्त्रीवश्यकर कामराजयन्त्रम्)



म.१०

स्त्रीवश्यकर कामराज यन्त्रम्- चमेली की कलम द्वारा एक बड़े भोजपत्र के ऊपर, गोरोचन, कुंकुम, लाल-चंदन तथा कस्तूरी -- इन चार वस्तुओं के मिश्रण से, एक अंगुल के अन्तर से कर्णिका युक्त दो रेखाओं के ऊपर नीचे दो आकार की कल्पना करके, कर्णिकाओं में "ऐं ह्रीं क्लीं– इन बीजों को पूर्ण कर, उक्त दोनों दलाकारों में "ऐं ह्रीं क्लीं क्षीं रें — इन बीजों को लिखकर, रेखाओं के भीतर — ऐं ह्रीं क्लीं– इन बीजों को आदि-अन्त में लगाकर अनुस्वार युक्त साध्य-स्त्री का नाम लिखें। इस विधि से यन्त्र का जो स्वरूप तैयार होगा, उसे बाँई ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित चित्र में जिस जगह 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साध्य-स्त्री के नाम को लिखना चाहिए।

यन्त्र को लिखने के बाद लकड़ी के एक पट्टे के ऊपर राई द्वारा निर्मित कामदेव की प्रतिमा को स्थापित कर, उसके उदर में यन्त्र को रखें तथा गंध, पुष्प, धूप, दीप, फल, नैवेद्य आदि से सायंकाल के समय इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए कामदेव की प्रतिमा में स्थित यन्त्र का पूजन करे — "कामोऽनङ्गः पुष्पशरः कन्दर्पो मीनकेतनः। श्रीविष्णुतनयो देवः प्रसन्नो भव मे प्रभो।" जब तक सिद्धि प्राप्त न हो, तब तक प्रत्येक रात्रि में मन्त्र-जप सहित प्रतिमा के उदर में स्थित यन्त्र का पूजन करते रहना चाहिए। इस प्रयोग से साध्य-स्त्री वशीभूत हो जाती है।

(महामृत्युञ्जय यन्त्र)

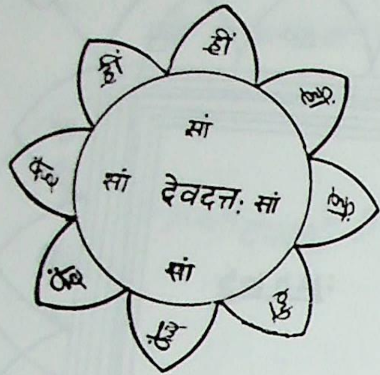


दुष्टवश्यकर महामृत्युञ्जययन्त्रम्- भोजपत्र के दो टुकड़ों के ऊपर अलग-अलग लोहे की कलम से सात रेखाओं वाला एक चौकोर यन्त्र बना कर, उसके चारों भाग में तीन-तीन कमल-दलों का निर्माण करें तथा चारों कोनों में त्रिशूल लगायें। तत्पश्चात् यन्त्र के मध्यभाग में साध्य-व्यक्ति का नाम लिख कर, ईशान दिशा तक-"ल, ला, लि, ली, लु लू, ले, लै, लो, लौ, लं, लः"- इन बारह अक्षरों को क्रमशः प्रत्येक कोष्ठक में लिखें। इस विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई ओर प्रदर्शित किया गया है। इस चित्र के मध्य भाग में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

उक्त विधि से दोनों यन्त्रों को लिखने के बाद, उत्तर की ओर मुँह करके बैठें तथा पृथ्वी पर रखी हुई एक भारी शिला के नीचे दोनों यन्त्रों को दबा कर, साध्य-व्यक्ति के पास पहुँचें तो उसका क्रोध दूर हो जाएगा तथा उसे आप से मिल कर प्रसन्नता होगी।

इस यन्त्र के प्रभाव से एक बार काल का क्रोध भी शान्त हो जाता है तथा साधक के प्राणों की रक्षा होती है। जब यह अनुभव हो कि शत्रु दुष्ट स्वभाव का है तथा हानि पहुँचाने पर उतारू है, उस समय इस यन्त्र के प्रयोग से आश्चर्यजनक लाभ होता है।

(स्त्री-सौभाग्यकर यन्त्र)



स्त्री-सौभाग्यकर यन्त्रम्- सर्वप्रथम भोजपत्र के ऊपर एक गोलाकार चक्र खींचें, फिर उसके ऊपर आठ कमल-दलों का निर्माण करें। फिर यन्त्र के भीतर पूर्व आदि चारों भागों में 'सां' बीज लिख कर, मध्यभाग में अनुस्वार युक्त साध्य व्यक्ति का नाम लिखें। फिर बाहर के आठ दलों में "ह्रीं" बीज लिखें। इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई ओर प्रदर्शित किया गया है। इस चित्र में जहाँ 'देवदत्त' शब्द लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

यन्त्र लिखने के बाद तीन रात्रि तक गन्ध आदि से पूजन करें तथा चौथे दिन तीन सौभाग्यवती स्त्रियों का पूजन कर, निम्न लिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए, यन्त्र को धातु के ताबीज में भर कर कण्ठ में धारण करें- " अनङ्गवल्लभे देवि त्वं च मे प्रीयता मिति। एनं प्रियं महावश्यं कुरु त्वं स्मरवल्लभे।" - इस यन्त्र को धारण करने वाली स्त्री का पति उसके वशीभूत हो जाता है। यदि उक्त क्रियाएें करने के बाद भी अहंकारी पति पत्नी की ओर आकर्षित न हो तो शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी तिथि को देवी रति की प्रीति हेतु एक सौभाग्यवती-स्त्री को भोजन कराने के बाद पुन: यन्त्रराज का पूजन कर, कण्ठ में धारण करने से सौभाग्य-दर्पित पति भी अपनी स्त्री के वश में हो जाता है।

इस यन्त्र का प्रयोग उन सौभाग्यवती स्त्रियों को ही करना चाहिए, जिनके पति अपने धन-सम्पत्ति आदि के अहंकार में भर कर अथवा किसी अन्य कारण से उपेक्षा भाव प्रदर्शित करते हों।

(विजय यन्त्र)

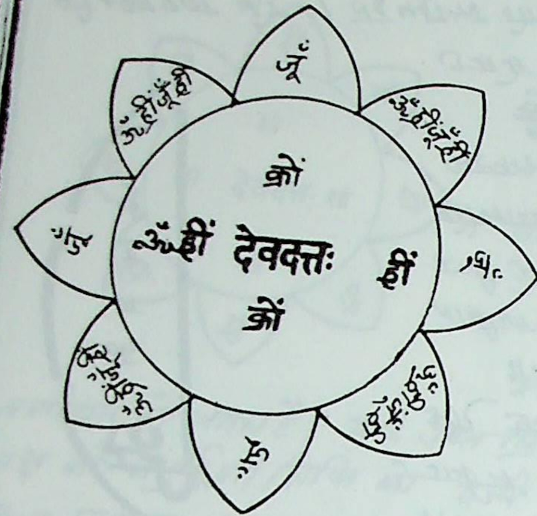
स्हीं
क
ल
ड
ई

सौभाग्य जनन 'विजय यन्त्रम्'— सर्वप्रथम जल-मिश्रित गोरोचन द्वारा भोजपत्र के ऊपर तीन रेखाओं से युक्त (अर्थात् तीन टुकड़ों में बँटा हुआ) एक अर्द्धचक्राकार लिख कर, उसके मध्य में "स ह क ल ड ई"— इन ६ अक्षरों को 'ईकार' के गर्भ में स्थापित करें। इस विधि से यन्त्र का जो स्वरूप निर्मित होगा, उसे बाँई ओर प्रदर्शित किया गया है।

यन्त्र को लिखने के बाद गन्ध-पुष्प आदि से पूजन करें तथा स्वर्ण के तावीज में भर कर अथवा स्वर्णपत्र में लपेट कर, पुरुष अपनी दाँई भुजा तथा स्त्री अपनी बाँई अथवा कण्ठ में धारण करे। यह यन्त्र दुर्भाग्य-नाशक एवं सौभाग्य-जनक है। इसे धारण करने वाला पुरुष स्त्रियों को तथा स्त्री पुरुषों को अत्यन्त प्रिय होते हैं।

सौभाग्य जनन कमलाख्य यन्त्रम्— सर्वप्रथम गोरोचन को पानी में घोलकर उससे भोजपत्र के ऊपर एक गोलाकार-चक्र खींच कर, उसके बहिर्भाग में अष्टदलों की स्थापना करें। तदुपरान्त गोलाकार के भीतर तीन रेखाएँ कल्पित करके, ऊपर तथा नीचे की रेखाओं में "ॐ ह्रीं" इन दोनों बीजों को आदि में लिखकर, बीच में साध्य-व्यक्ति का नाम तथा अन्त में केवल 'ह्रीं' बीज लिखें। फिर पूर्व आदि चारों दिशाओं में 'जूँ' बीज लिखकर, ईशानादि चारों कोणों के दलों में 'ॐ ह्रीं जूँ ह्रीं'— इन चार बीजों को स्थापित करें। इस विधि से जो यन्त्र तैयार होगा,

(कमलाख्य यन्त्र)



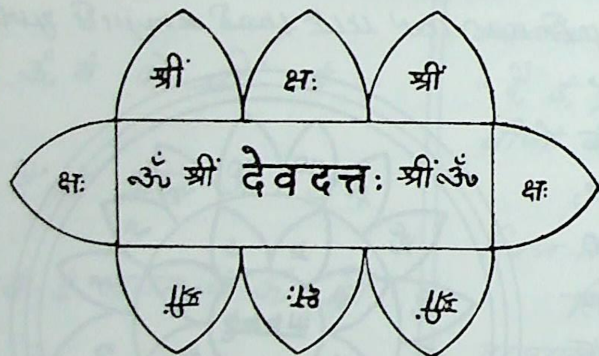
उसका स्वरूप बाँई ओर प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित यन्त्र में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ 'साध्य-पुरुष' के नामाक्षरों को लिखना चाहिए।

उक्त विधि से यन्त्र लिखने के बाद गन्ध, पुष्प, ताम्बूल, नैवेद्य आदि पदार्थों से तीन दिनों तक यन्त्र का पूजन करना चाहिए। तत्पश्चात् "हे लोकेश:! प्रीयताम्"— इस वाक्य का उच्चारण करते हुए एक ब्राह्मण पुरुष तथा एक ब्राह्मण-स्त्री को भोजन कराना चाहिए। फिर यन्त्र को कच्चे डोरे से लपेट कर तथा त्रिलोह के ताबीज में बन्द करके बाँई भुजा अथवा कण्ठ में धारण करना चाहिए।

यह यन्त्र केवल स्त्रियों के धारण करने योग्य है। इसे धारण करने वाली स्त्री के सौभाग्य में वृद्धि होती है, पति वश में रहता है तथा मनोभिलाषाओं की पूर्ति होती है। यदि वन्ध्या-स्त्री इसे धारण करे तो वह गर्भवती होकर उत्तम पुत्र को प्राप्त करती है। यदि मृतवत्सा-स्त्री (जिसकी सन्तानें हो-होकर मर जाती हों उसे 'मृतवत्सा' कहते हैं) इसे धारण करे तो उसे श्रेष्ठ तथा दीर्घजीवी पुत्र का लाभ होता है। इस यन्त्र को गले में पहने जाने वाले हार में मिला कर धारण करने से भी उक्त सभी फलों का लाभ होता है। स्त्रियों के लिए यह यन्त्र समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाला तथा सर्वश्रेष्ठ बताया गया है।

यावज्जीव स्वामिवश्यकर यन्त्रम्- एक अविच्छिन्न (बिना कटे-फटे) भोजपत्र के टुकड़े पर गोरोचन द्वारा दक्षिण तथा उत्तर की ओर अधिक फैली हुई दो तिरछी रेखायें खींचें, फिर उनके दक्षिण तथा उत्तरभाग में दो कर्णिका एवं बीच के दलों में विसर्ग सहित 'क्षकार' अक्षर लिखकर, शेष स्थानों 'श्रीं' अक्षर को लिखें। मध्यभाग में दोनों ओर 'ऊँ' 'श्रीं' तथा 'श्रीं' 'ऊँ' अक्षरों के बीच साध्य-व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

(यावज्जीवस्वामिवश्यकर यन्त्र)

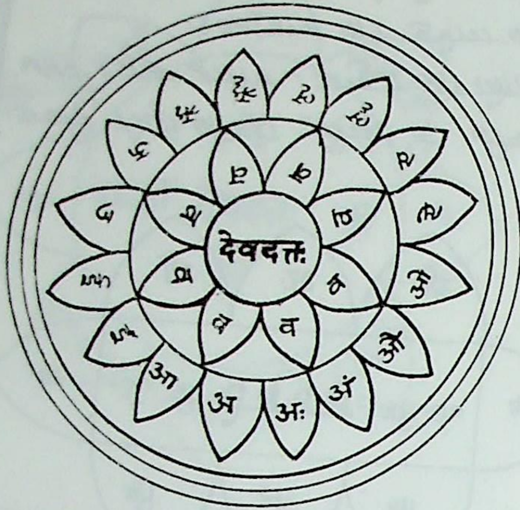


उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप निर्मित होगा, उसे बाँई ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित चित्र में जिस जगह देवदत्त लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

उक्त विधि से यन्त्र लिखने के बाद उसे 'शराव-सम्पुट', अर्थात् मिट्टी की दो सैंयों के बीच में बन्द करके अग्नि में पुटित करें अर्थात् तपावें, फिर जब वह ठण्डा हो जाय, तब शराव-सम्पुट को खोल कर, उसकी भस्म को पानी में घोल कर पी जाँय।

उक्त यन्त्र का प्रयोग करने से साध्य-व्यक्ति आजीवन साधक के वशीभूत बना रहता है। इस यन्त्र का प्रयोग अपने स्वामी को वश में करने के लिए करना चाहिए। यहाँ 'स्वामी' शब्द का तात्पर्य 'पति' न होकर 'मालिक' है, अतः इस यन्त्र को नौकर द्वारा अपने दुष्ट-स्वभाव के मालिक को वश में करने हेतु प्रयोग में लाना चाहिए।

(महामोहन यन्त्र)



महामोहन यन्त्रम् — सबसे पहले एक काँसे के बर्तन को राख तथा गोबर से माँज कर शुद्ध करें, फिर उसमे एक अविच्छिन्न भोजपत्र का टुकड़ा रख कर, उस टुकड़े पर बहेड़े की लकड़ी की कलम द्वारा गोरोचन तथा चंदन के मिश्रण से यन्त्र-लेखन कार्य आरम्भ करें।

सबसे पहले मध्य भाग में साध्य-व्यक्ति का नाम लिखें, फिर उसके ऊपर एक गोलाकार रेखा खींच कर, उसके ऊपर अष्टदल कमल बनायें तथा प्रत्येक दल के भीतर 'ब' अक्षर लिखें। फिर उसके ऊपर एक और गोलाकार रेखा खींच कर उसके ऊपर षोडश दल-कमल बनायें तथा उसके प्रत्येक दल को अकारादि वर्णों से पूर्ण करें। फिर उस कमल दल के ऊपर तीन गोल रेखाएं खींच कर यन्त्र को पूरा करें। इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई ओर प्रदर्शित किया गया है। चित्र में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए। यन्त्र लेखनोपरान्त मालती, चमेली, श्वेत कमल आदि सुगन्धित पुष्पों द्वारा तथा अन्य सुगन्धित द्रव्यों से यन्त्र का पूजन करना चाहिए। इस प्रकार सात दिनों तक यंत्र का पूजन करने के बाद उसे 'त्रिलोह' के ताबीज में भर कर अपने कण्ठ अथवा भुजा में धारण कर लेना चाहिए।

'महामोहन' नामक यह यन्त्र साध्य-व्यक्ति को वशीभूत करने की अद्भुत सामर्थ्य रखता है। विश्वासपूर्वक धारण करने से साध्य-स्त्री-पुरुष किंकर के समान वशीभूत हो जाते हैं। इसका निष्ठापूर्वक प्रयोग

जगद्वश्यकर यन्त्रम्- सर्वप्रथम भोजपत्र के ऊपर केशर, कस्तूरी, लाल-चन्दन तथा गोरोचन के मिश्रण द्वारा चमेली की लकड़ी की कलम से दो रेखा युक्त एक चौकोर यन्त्र खींचकर, उसके मध्य में तीन तिरछी रेखाओं की कल्पना करें। उनमें से पहली रेखा में "ॐ, वं, जे, ह्रीं, डं"; दूसरी रेखा में "द्वैं, डं, ह्रीं, ॐ, डं" तथा तीसरी रेखा में "वं, डं, जगत्, वं, ॐ ह्रीं"– इन बीजों को लिखें।

(जगद्वश्यकरयन्त्र)

ॐ वं जे ह्रीं डं
द्वैं डं ह्रीं ॐ डं
वं डं जगत् वं ॐ ह्रीं

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई ओर दिए गए चित्र में प्रदर्शित किया गया है।

लिखने के बाद यन्त्र का तीन दिनों तक गन्ध, पुष्प आदि से पूजन करें, तदुपरान्त उसे त्रिलोह के ताबीज में बन्द करके बाँई भुजा में धारण कर लें।

उक्त यन्त्र जब तक भुजा में बँधा रहेगा, तब तक सम्पर्क में आने वाले सभी इच्छित-व्यक्ति वशीभूत बने रहेंगे, परन्तु प्रतिदिन देवाराधन के समय इस यन्त्र का नियमपूर्वक पूजन करते रहना आवश्यक है।

बीज सम्पुट यन्त्रम्- सर्वप्रथम गोरोचन, केशर, लाल चन्दन तथा अनामिका अँगुली का रक्त - इन सबको एकत्र कर, इन सबके मिश्रण से भोजपत्र के ऊपर दो रेखाओं से युक्त एक चतुष्कोण यन्त्र को लिखें। फिर उसके मध्य में तीन रेखाओं की कल्पना करके, पहली रेखा में

(बीज सम्पुट मन्त्र)

ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	देवदत्तः		ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं

चार 'ह्रीं' वर्ण लिखे। द्वितीय रेखा में 'ह्रीं'कार से पुटित साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखे तथा तृतीय रेखा में पुनः चार 'ह्रीं' वर्ण लिखे। इस प्रकार कुल १० ह्रींकार वर्ण तथा एक साध्य-व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए। इस विधि से मन्त्र का जो स्वरूप तैयार होगा, उसे बाँई ओर प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित मन्त्र में जहाँ "देवदत्त" – यह शब्द लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

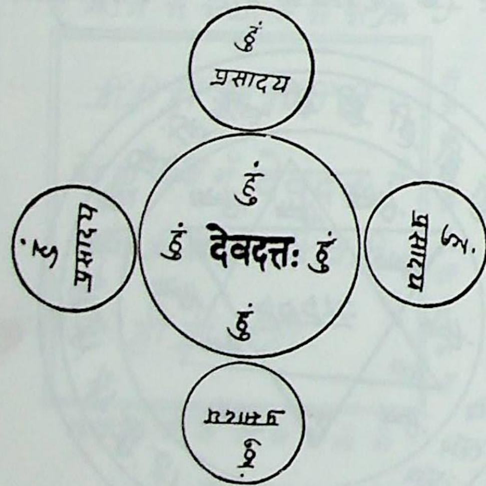
इस मन्त्र का प्रयोग उस समय करना चाहिए, जब राजा अथवा राज्याधिकारी अत्यन्त क्रुद्ध होकर अर्थदण्ड अथवा कारावास का दण्ड देने पर उतारू हो। ऐसे अवसर पर इस मन्त्र को लिख कर पुष्प, नैवेद्य आदि द्रव्यों से पूजा कर, कुमारी कन्या, योगिनी, सुवासिनी – स्त्रियों एवं ब्राह्मणों को श्रद्धानुसार भोजन करवा कर नमस्कार करें। फिर इस मन्त्र को अपनी दाँई मुट्ठी में बाँध कर, (दबा कर) राजा अथवा राज्याधिकारी के पास जाँए तो इसके प्रभाव से उसका क्रोध तुरन्त शान्त हो जाता है तथा वह साधक के अनुकूल हो जाता है।

राजा तथा राज्याधिकारियों को वश में करने के लिए यह 'बीज सम्पुट मन्त्र' अत्यन्त प्रभावकारी है, परन्तु इसका प्रयोग छोटे-मोटे कामों के लिए नहीं करना चाहिए। जब कभी कोई बड़ा मामला अटके और उसके कारण अर्थ-हानि अथवा प्रतिष्ठा-हानि का भय उपस्थित हो, तभी इसे प्रयोग में लाना चाहिए।

महा

क्रोधशमन जामदग्न्य यन्त्र-

(जामदग्न्य यन्त्र)



लोहे के काँटे (कलम) द्वारा, ताड़ पत्र के ऊपर सोमवार के दिन, गोरोचन से एक गोलाकार चक्र लिख कर, उसकी पूर्वादि दिशाओं में एक-एक कमल-दल स्थापित करें। फिर मध्य के गोलाकार चक्र के भीतर तीन रेखाओं की कल्पना कर के पहली तथा तीसरी रेखा में एक-एक 'हुं' बीज तथा दूसरी रेखा के आदि-अन्त में हुंकार मिश्रित तथा अन्त में अनुस्वारयुक्त 'साध्य-व्यक्ति' का नाम लिखकर, ऊपरी दलों में भी दो-दो रेखाओं की कल्पना करके, पहली रेखा में 'हुं' बीज तथा नीचे की दूसरी रेखा में 'प्रसादय' इन अक्षरों को लिखें। इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप तय्यार होगा, उसे बाँईं ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। इस चित्र में जहाँ 'देवदत्तः' लिखा है, वहाँ 'साध्य-व्यक्ति' का नाम (अन्त में विसर्ग युक्त) लिखना चाहिए।

यन्त्र लेखनोपरान्त कुम्हार के चाक की मिट्टी में यन्त्र को रख कर इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए गन्ध आदि से सात दिनों तक यन्त्र का पूजन करते रहें- मन्त्र-" अक्रोधनः सत्यवादी जामदग्निर्दृढव्रतः। रामस्य जनकः साक्षात् सत्वमूर्ते नमोऽस्तुते॥"- यन्त्र पूजनोपरान्त भोजनादि के द्वारा ब्राह्मणों को तृप्त करना चाहिए। यदि कोई मित्र, शत्रु अथवा अन्य व्यक्ति क्रुद्ध होकर हानि पहुँचाने को उद्यत हो तो इस यन्त्र का प्रयोग करने से उसका क्रोध शान्त हो जाता है और वह प्रसन्न होता है।



मायामय यन्त्रम्- सर्वप्रथम भोजपत्र के ऊपर गोरोचन तथा कुंकुम के मिश्रण से एक षट्कोण यन्त्र लिखकर, उसके ऊपर एक गोलाकार चक्र तथा उसके ऊपर एक अन्य गोलाकार चक्र खींचें। फिर उक्त षट्कोण के मध्य में 'साध्य-व्यक्ति' के नाम को लिखें तथा कोण्ठ एवं कोण्ठों के बाला भाग में 'क्लीं' बीजों को स्थापित कर, उक्त दोनों गोलाकार रेखाओं के भीतर २५ ह्रींकार बीजों को लिख कर, चक्र के सामने वेष्टित करें। इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई ओर प्रदर्शित किया गया है। इस चित्र में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

लिखने के उपरान्त उक्त यन्त्र का सात दिनों तक विधि पूर्वक पूजन करके, महामाया देवी का पूजन करना चाहिए तथा 'मार्कण्डेय पुराण' के अन्तर्गत वर्णित 'देवी-माहात्म्य' का सात दिनों तक जप करना चाहिए। फिर खीर, शहद तथा घृत—इन द्रव्यों द्वारा प्रत्येक श्लोक से आहुति देते हुए पूर्णाहुति कर, तीन कन्याओं को भोजन करायें। तत्पश्चात् यन्त्र को त्रिलोह के ताबीज में बन्द कर, पुरुष अपनी दाँई तथा स्त्री बाँई भुजा में बाँध ले। यदि व्यवसाय में धन-हानि हो गई हो तथा ऋण देने वाला बार-बार तकाज़ा करता हो और उसे देने के लिए धन पास में न हो तो इस यन्त्र के प्रयोग से वह व्यक्ति धन की माँग करना छोड़ कर और धन दे देता है।

(गाणपत्य यन्त्र)

गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ

ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं
क्रों ह्रीं क्लीं गँ **देवदत्तः** गँ
क्लीं ह्रीं क्रों ह्रीं क्लीं क्रों ह्रीं
ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं

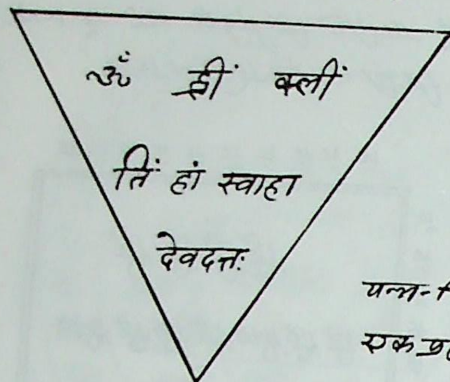
गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ

गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ गँ

यावज्जीव वश्यकर गाणपत्य यन्त्रम् - एक चौड़े तथा छिद्र-रहित भोजपत्र के टुकड़े के ऊपर अपनी अनामिका अँगुली के रक्त हाथी के मद, लाख का रस तथा गोरोचन—इन सब वस्तुओं के मिश्रण से जातीवृक्ष की लकड़ी की कलम द्वारा दो रेखावाले एक चतुष्कोण यन्त्र को खींच कर, उसके भीतरी भाग में चार तिरछी रेखाओं की कल्पना कर, पहली रेखा में सात 'ह्रीं' बीज, दूसरी रेखा में 'क्रों, ह्रीं, क्लीं, गँ— इन चार बीजों को आदि में लगाकर साध्य-व्यक्ति का नाम तथा अन्त में एक गँ बीज और लिखें। फिर, तीसरी पंक्ति में 'क्लीं, ह्रीं, क्रों, ह्रीं, क्लीं, क्रों, ह्रीं— इन सात बीजों का स्थापन कर, चौथी पंक्ति में ह्रीं, ह्रीं, ह्रीं, ह्रीं इन चार बीजों को लिखें। फिर पूर्व, पश्चिम तथा उत्तर दिशा में दस दस 'गँ' बीज लिखें। दक्षिण दिशा में कुछ न लिखें। इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। चित्र में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ 'साध्य-व्यक्ति' के नाम को लिखना चाहिए।

यन्त्र लेखनोपरान्त किसी पवित्र-स्थान से काली-मिट्टी लाकर, उससे गणेशजी की प्रतिमा का निर्माण करे, फिर यन्त्र को उस मूर्ति की प्रतिमा में स्थापित कर, इस मन्त्र का उच्चारण करें— "देवदेव गणाध्यक्ष सुरासुरनमस्कृत। 'देवदत्तं' महावश्यं यावज्जीवं कुरु प्रभो"— इस मन्त्र में जहाँ 'देवदत्त' शब्द आया है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम का उच्चारण करना चाहिए, इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए प्रतिमा को एक गड्ढे में गाड़ कर बन्द कर दें। इस प्रयोग से साध्य-व्यक्ति आजीवन वशीभूत रहता है।

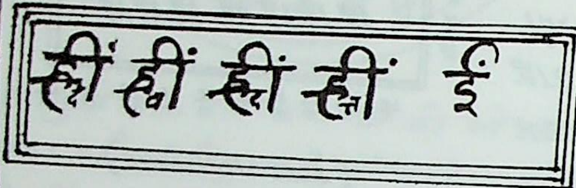
(श्रीकामराजाख्य यन्त्र)



ललनाकृति श्रीकामराजाख्य यन्त्रम् - अपने दाँये हाथ की अनामिका अंगुली के रक्त से बाँये हाथ की हथेली पर एक त्रिकोण यन्त्र लिखें। उस यन्त्र के भीतर तीन पंक्तियों की कल्पना कर, पहली पंक्ति में - "ऊँ ह्रीं क्लीं" इन बीजों को, दूसरी पंक्ति में - 'तिं ह्रां स्वाहा' - इन चार वर्णों को तथा तीसरी पंक्ति में साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखें।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई ओर के ऊपर वाले चित्र में प्रदर्शित किया गया है। चित्र में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखें। यन्त्र-निर्माणोपरान्त उसका गंध-पुष्पादि से पूजन कर साध्य-स्त्री का स्मरण करने से वह एक प्रहर के भीतर ही आकर्षित होकर साधक के पास चली आती है।

(कालानल यन्त्र)



दुष्टवश्यकर कालानल यन्त्रम् - गोरोचन द्वारा भोजपत्र के ऊपर तीन रेखाओं से मिश्रित एक चतुष्कोण यन्त्र लिखकर 'ह्रीं' बीज के भीतर साध्य-व्यक्ति के नामाक्षरों को लिखें। साध्यव्यक्ति के नाम के जितने अक्षर हों, उतने ही ह्रीं बीज लिखने चाहिए तथा अन्त में 'ईं' बीज को लिखना चाहिए। 'ह्रीं' बीज की कोई निश्चित गणना नहीं है। यन्त्र लेखनोपरान्त वृक्ष के नीचे से धूलि लाकर एक शत्रु-प्रतिमा का निर्माण कर, उस प्रतिमा के हृदय भाग में यन्त्र को स्थापित कर, गन्धादि से पूजन करें तथा गन्धादि से पूजा कर, कृष्णपक्ष की चतुर्दशी की रात्रि में चूल्हे के बगल

मैं गाड़ दें। गाड़ते समय 'महाकालाय स्वाहा' इस मन्त्र का उच्चारण करें, फिर बकरे के रक्त मिश्रित भात से दिक्पालों की प्रसन्नता के लिए बलि देकर, उक्त पदार्थ में घृत और लाल पुष्प मिलाकर 'ॐ महाकालायेति' - इस मन्त्र से १०८ आहुति देकर हवन करें। इस प्रयोग से साध्य दुष्ट-व्यक्ति वशीभूत हो जाता है।

(देवमातृक यन्त्र)



मानिन्याकर्षण देव मातृक यन्त्रम् - लाख का रस, हल्दी और मजीठ-इन तीन वस्तुओं द्वारा भोजपत्र के ऊपर एक त्रिकोण युक्त गोलाकार चक्र खींचें तथा उससे थोड़े ही अन्तर पर ऐसा ही एक अन्य चक्र खींचें। फिर उसके समीप ही एक अन्य गोलाकार चक्र दो रेखाओं से संयुक्त करके खींचे। फिर त्रिकोण के भीतर साध्य-व्यक्ति का नाम लिखकर, दोनों गोलाकारों के भीतर अकारादि सोलह स्वरों को लिखें। इस विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई ओर प्रदर्शित किया गया है। यन्त्र में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

यन्त्र-लेखन के पश्चात् साध्य-व्यक्ति के पाँवों के नीचे की धूलि लाकर उससे एक पुतली का निर्माण करें तथा उस पुतली के योनि-भाग में उक्त यन्त्र की विधिवत् पूजा करने के उपरान्त प्रतिष्ठा करें।

उक्त यन्त्र-प्रयोग से साध्य-व्यक्ति आकर्षित होकर साधक के पास अपने आप चला आता है। इस यन्त्र के प्रभाव से साधक पुरुष को साध्य-स्त्री की तथा साधिका-स्त्री को साध्य-पुरुष की प्राप्ति होती है। इस यन्त्र को अत्यन्त गुप्त रखने की शास्त्र ने आज्ञा दी है।

(माणिभद्र यन्त्र)

स: स: स: स: स: ई

स: स: क्रों ह्रीं क्रों

देवदत्त:

ह्रीं क्रों ह्रीं क्रों

ह्रीं क्रों ह्रीं दर

माणिभद्र यन्त्रम्- गोरोचन, कुंकुम तथा लाल चन्दन द्वारा भोजपत्र के ऊपर तीन रेखाओं से युक्त एक चतुष्कोण यन्त्र को लिखकर, उसके भीतर पाँच रेखाओं की कल्पना करे। फिर पहली कल्पित-रेखा में पाँच विसर्ग-युक्त "सकार (स:)" बीजों को लिखकर अन्त में 'ई' बीज को लिखे। दूसरी पंक्ति में "स: स: क्रों ह्रीं क्रों"— इन पाँच बीजों को लिखे। तीसरी पंक्ति में साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखे। चौथी पंक्ति में "ह्रीं क्रों ह्रीं क्रों"— इन चार बीजों को लिखे तथा पाँचवीं पंक्ति में "ह्रीं क्रों ह्रीं दर"-- इन पाँच बीजों को लिखकर यन्त्र को पूरा करना चाहिए। इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई ओर प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित यन्त्र में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

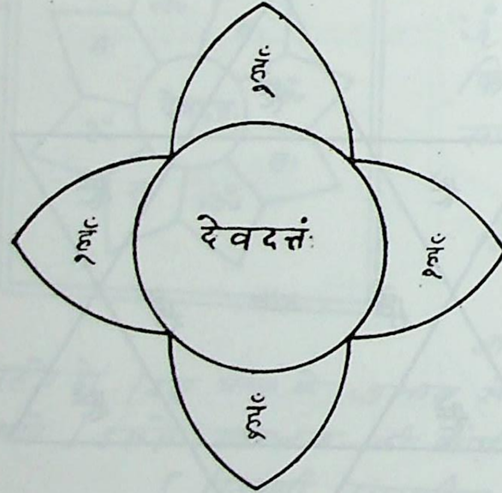
यन्त्र लेखनोपरान्त उसका गंधादि से विधिपूर्वक पूजन करके, लाल रंग के सूत से बाँधे। फिर अपने शरीर के उबटन से एक मनुष्याकार मूर्ति बनाकर, उस मूर्ति के हृदय में यन्त्र को रखें। फिर उसे उबटन से आच्छादित कर, तीनों सन्ध्याकाल में तीन दिनों तक खैर की अग्नि में तपाते हुए इस मन्त्र का जप करें-- "ॐ देवदत्तं वेगेन आकर्षय माणिभद्र स्वाहा।" 'देवदत्त' के स्थान पर साध्य-व्यक्ति का नाम ले। यह तापन मन्त्र है। इस प्रयोग से माणिभद्र देशान्तर में स्थित मनुष्य को आकर्षित करते हैं। श्री माणिभद्र ने स्वयं भी तापन, शोषणादि की क्रियाओं सहित इस मन्त्रेश्वर का पूजन किया है।

मित्र-दर्शन यन्त्रम्- लालचन्दन तथा अपने शरीर के रक्त को मिला कर, उसके द्वारा भोजपत्र के ऊपर एक गोलाकार चक्र का निर्माण करें। फिर उसके चारों ओर चार कमल-दल बनायें। तत्पश्चात् गोलाकार चक्र के मध्य में साध्य-व्यक्ति का नाम लिखें। नाम सानुस्वार लिखना चाहिए। फिर चारों कमल-दलों में 'हूं' बीज लिखें। इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई ओर प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित चित्र में जहाँ 'देवदत्तं' लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

यन्त्र-निर्माण के बाद उसका गंध-पुष्प आदि पदार्थों से पूजन करे, फिर उसे घृत में स्थापित करदे।

उक्त क्रिया से दो-तीन दिन के भीतर ही साध्य-व्यक्ति का आकर्षण होता है। 'मित्र-दर्शन' नामक यह यन्त्र मनोभिलाषा की पूर्ति करने वाला तथा परम गोपनीय है।

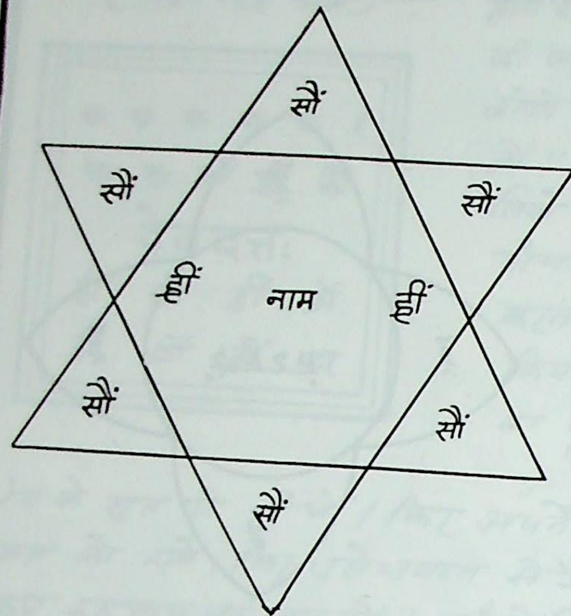
(मित्र-दर्शन यन्त्र)



आकर्षक त्रैपुराख्य यन्त्रम्-

सर्वप्रथम जल मिश्रित गोरोचन द्वारा भोजपत्र के ऊपर एक षट्कोण यन्त्र का निर्माण करे, फिर उसके प्रत्येक कोण में "सौं" बीज को लिखे तथा यन्त्र के मध्यभाग में "ह्रीं" तदुपरान्त साध्य-व्यक्ति का नाम और उसके बाद पुनः ह्रीं बीज

(त्रैपुराख्य यन्त्र)



लिखे। इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित यन्त्र में जहाँ 'नाम' शब्द लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

यन्त्र-निर्माण कर लेने के बाद उसका गन्ध-पुष्पादि से विधि पूर्वक पूजन करके उसे घृत के भीतर स्थापित करें तथा निम्न लिखि-त मन्त्र का जप करते हुए त्रिपुरा देवी से प्रार्थना करें—

"आकर्षय महादेवि देवदत्तं मम प्रियम्।
ऐं त्रिपुरे देवदेवेशि तुभ्यं दास्यामि याचितम्।"

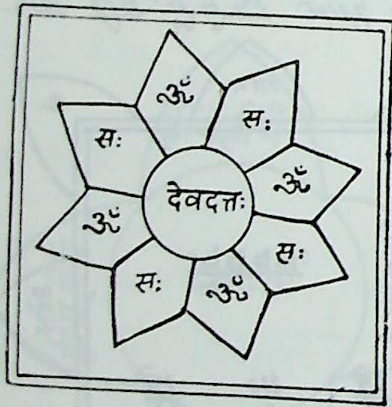
उक्त मन्त्र में जहाँ 'देवदत्त' शब्द आया है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

उक्त विधि से यन्त्र-प्रयोग करने से सातवें दिन साध्य व्यक्ति का आकर्षण होता है और वह साधक के पास स्वयमेव चला आता है।

[टिप्पणी — मोहन तथा आकर्षण — इन दोनों की गणना भी 'वशीकरण-'कर्म' के अन्तर्गत की जाती है। आकर्षण प्रयोग द्वारा दूरवर्ती व्यक्ति को आकर्षित करके वशीभूत किया जाता है। मोहन-प्रयोगों से उसे मोहित करके वश में करते हैं।]

दुष्ट मोहन यन्त्रम्- अपने रक्त द्वारा भोजपत्र के ऊपर एक गोलाकार चक्र खींच कर उसे अष्टदल से विभूषित करे, तत्पश्चात् उसे चतुष्कोण की दो रेखाओं से युक्त कर, चक्र के भीतर मध्य में साध्य-व्यक्ति का नाम लिखे। फिर प्रत्येक कोण में विसर्गयुक्त 'सः' बीज तथा पूर्वादि चारों दिशाओं के दलों में प्रणव अर्थात् 'ॐ' लिखे। इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई ओर प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित यन्त्र के मध्य में जहाँ 'देवदत्तः' लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

(दुष्ट मोहन यन्त्र)

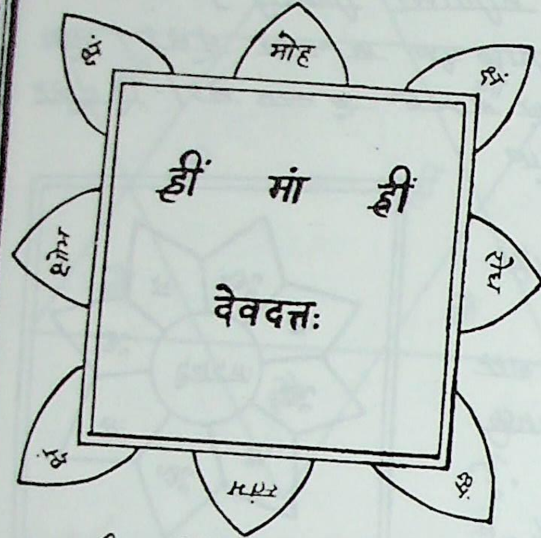


लेखनोपरान्त इस यन्त्र का विधिपूर्वक पूजन करे, फिर इसे 21 दिनों के लिए दूध में स्थापित कर दें।

इस यन्त्र का प्रयोग उस समय करना चाहिए, जब राजकुल में रहने वाले पिशुन अर्थात् चुगलखोर दुष्ट पुरुष प्रतिदिन घात करने को उद्यत रहते हों। इस यन्त्र के प्रभाव से उन पिशुनों का मुख स्तम्भित हो जाता है, और वे चुगली आदि नहीं कर पाते। इससे साधक की कार्य-हानि नहीं हो पाती।

[टिप्पणी- स्मरणीय है कि वर्तमान समय में राज्यदरबार अथवा राजकुल तो समाप्त हो गए, अतः इस यन्त्र का प्रयोग उच्च राज्याधिकारियों के निकट सम्पर्क में रह कर दूसरों की चुगली कर, उन्हें हानि पहुँचाने का प्रयत्न करने वालों के लिए करना चाहिए]।

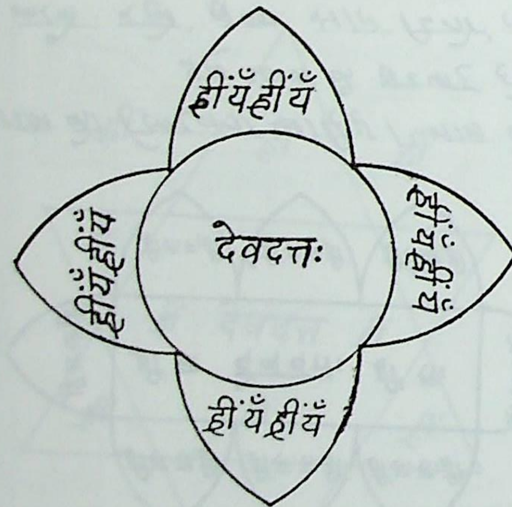
(व्यवहार-विवाद-जयदं यन्त्र)



व्यवहार-विवाद-जयदं यन्त्रम्- कुंकुम द्वारा अथवा अष्टगंध से भोजपत्र के ऊपर दो रेखाओं से मिश्रित एक चतुष्कोण यन्त्र खींचकर उसके चारों कोनों तथा पूर्वादि चारों दिशाओं में कमलदलों को स्थापित करें। इस प्रकार आठ कमल-दल बनेंगे। फिर यन्त्र के भीतर दो तिरछी रेखाओं की कल्पना करें एवं ऊपर की रेखा में "ह्रीं, मां, ह्रीं" इन बीजों को लिखकर, नीचे की पंक्ति में साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखें। आठों दलों को वक्ष्यमाण बीजों से पूर्ण करें। दक्षिण दल में 'मोह' बीज, नैर्ऋत्यकोण में "क्षं" बीज, पश्चिमदिशा में 'स्तंभ' बीज, वायव्य कोण में 'क्षं' बीज, उत्तर दिशा में 'क्षोभ' बीज, ईशान कोण में 'क्षं' बीज, पूर्व में 'मोह' बीज तथा आग्नेय कोण में 'क्षं' बीज को रखें। इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई ओर प्रदर्शित किया गया है। यन्त्र में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

यन्त्र-निर्माण के बाद उसे शराव-सम्पुट में रख कर, अष्टगंध, धूप, दीप, नैवेद्य आदि से पूजन कर, आठों दिशाओं में बलिदान आदि क्रियाओं को विधिपूर्वक करके, इन्द्र आदि लोकपालों की पूजा कर, कुमारी कन्याओं को भोजन करायें, तथा जब तक कार्य सिद्ध न हो, तब तक विधिपूर्वक यन्त्र का पूजन प्रतिदिन करते रहें। इस यन्त्र के प्रभाव से विवाद में विजय तथा सभा आदि में यश की प्राप्ति होती है।

(विवाद-विजय यन्त्र)

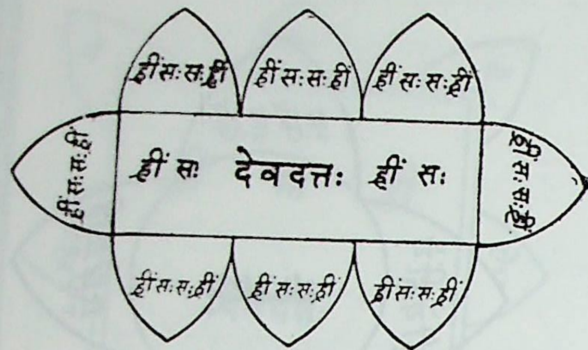


विवाद-विजय यन्त्रम्- कुंकुम द्वारा भोजपत्र के ऊपर एक गोलाकार चक्र खींचकर, उसे चार कमल-दलों से युक्त करें, फिर उसके मध्यभाग में साध्य-व्यक्ति का नाम लिखकर, चारों कमल-दलों में 'ह्रीं' तथा 'यँ'—इन दो बीजों को प्रत्येक दल में दो-दो बार स्थापित करें। इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँईं ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित यन्त्र में जहाँ 'देवदत्तः' लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

यन्त्र को लिखने के बाद धूप, दीप, नैवेद्य, पुष्प आदि से उसका पूजन करें, तदुपरान्त उसे त्रिलोह (सोना, चाँदी तथा ताँबा) के ताबीज में भर कर, दूध में डालदें अर्थात् किसी पात्र में दूध भर कर, उसमें यन्त्र युक्त ताबीज को डालदें, ताकि वह उसमें डूबा रहे।

'इस विवाद-विजय' नामक यन्त्र के प्रयोग से झगड़े, मुकद्दमे अथवा अन्य प्रकार के विवादों में विजय प्राप्त होती है। जो व्यक्ति इस प्रयोग को करता है, वह सदैव विजयी होता है। यह यन्त्र देवताओं द्वारा पूजित तथा प्रयोग में लाया गया है।

दुष्ट-मुख स्तम्भन यन्त्र



राजकोप-नाशक दुष्ट-मुख-स्तम्भन यन्त्रम्- गोरोचन तथा कुंकुम के द्वारा भोजपत्र के ऊपर एक चौकोर लम्बी रेखा खींचकर, उसे कर्णिका से युक्त करे, तदुपरान्त ऊपर तथा नीचे के भाग में तीन कमल-दल स्थापित कर, उनमें "ह्रीं सः सः ह्रीं" इन चार बीजों को प्रत्येक प्रत्येक में लिखे तथा चौकोर दल के मध्य भाग में 'ह्रीं सः' - इन दो बीजों से पुटित साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखे। जिस व्यक्ति का मुँह बन्द करना हो, वह 'साध्य' होगा।

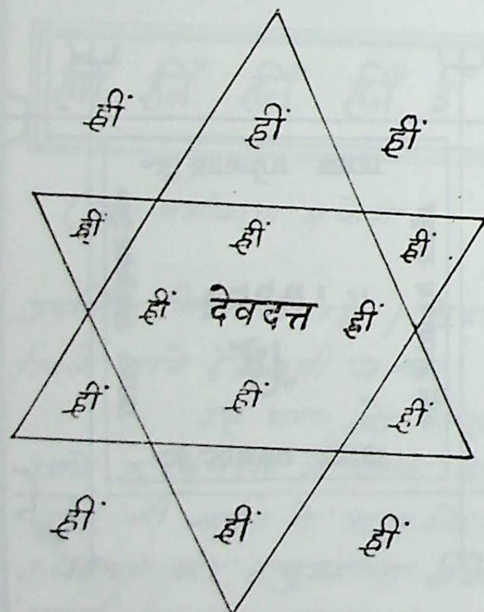
महा॰

उक्त प्रकार से यन्त्र का जो स्वरूप तैयार होगा, उसे बाँई ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित यन्त्र में जहाँ 'देवदत्तः' लिखा है, उस स्थान पर 'साध्य-व्यक्ति' के नाम को लिखना चाहिए। नाम के दोनों ओर 'ह्रीं सः', 'ह्रीं सः' लिखने का नियम है।

इस यन्त्र के तैयार हो जाने पर इसे शराव-सम्पुटित अर्थात् मिट्टी के दो शकोरों के भीतर बन्द करके रखें तथा सात दिनों तक गन्ध-पुष्प आदि से पूजन करते रहें।

इस यन्त्र के प्रयोग से राजा का कोप दूर होता है तथा उसके अनुयायी दुष्ट राजकर्मचारियों का मुँह बन्द होता है अर्थात् यदि राजदरबार में अथवा उच्चाधिकारियों के यहाँ उनके मुँहलगे कुछ दुष्ट-व्यक्ति अहित करने पर उतारू हों तो इस यन्त्र के प्रयोग से वे शान्त हो जाते हैं तथा राज-कोप दूर होता है।

(दिव्य स्तम्भन यन्त्र)

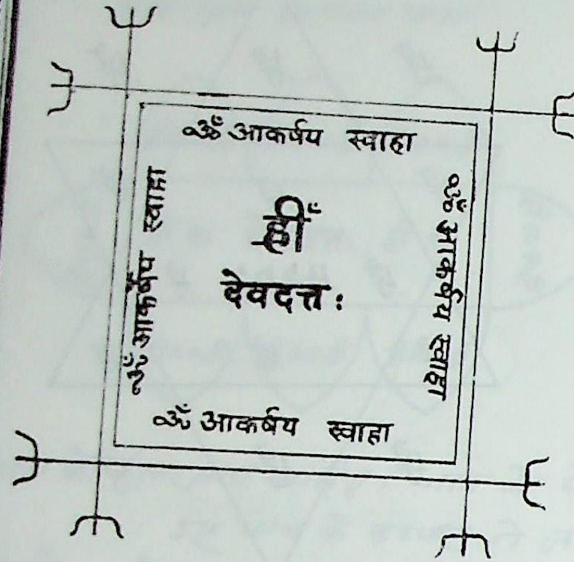


दिव्य स्तम्भन यन्त्र- गोरोचन तथा कुंकुम द्वारा भोजपत्र के ऊपर एक षट्कोण यन्त्र लिखें। फिर उसके पूर्व-पश्चिम -- इन दो कोणों में ह्रींकार अक्षर लिखें तथा इनके अन्तराल में ६ ह्रींकार और लिखें। इस प्रकार ८ ह्रींकार हुए। तदुपरान्त षट्कोण यन्त्र के भीतरी भाग में ह्रींकार सम्पुटित साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखकर, अन्य चार कोणों को भी चार ह्रींकार अक्षरों से वेष्टित कर, यन्त्रराज को पूर्ण करें। इस प्रकार कुल १६ ह्रींकार लिखे जाएँगे।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई ओर प्रदर्शित चित्र में दिखाया गया है। इस चित्र के मध्यभाग में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

यन्त्र निर्माणोपरान्त उसे शराव-सम्पुट अर्थात् मिट्टी के दो सकोरों के भीतर रखकर, भक्ति-भाव से पूजन करें तथा दूसरे दिन यन्त्र को शराव-सम्पुट में से निकाल कर, शुभ मुहूर्त में यत्न पूर्वक अपनी शिखा (चोटी) में बाँध लें। फिर मौन-धारण कर फल का चिन्तन करें। यह दिव्य स्तम्भन यन्त्र सब लोगों को वश में करने वाला तथा लोक में साध्य-भाव को प्राप्त कराने वाला है। इसका प्रयोग करने से साध्य-व्यक्ति वशीभूत हो जाता है।

(उच्छिष्ट पिशाच यन्त्र)



उच्छिष्ट पिशाच यन्त्रम्- अपनी अनामिका अँगुली के रक्त तथा गोरोचन द्वारा भोजपत्र के ऊपर दो रेखाओं वाले एक चतुष्कोण यन्त्र को लिख कर, उसके भीतरी भाग में 'ह्रीं' बीज के साथ साध्य-व्यक्ति के नामाक्षरों को लिखें। फिर पूर्व आदि चारों दिशाओं में "ॐ आकर्षय स्वाहा"- इस वाक्य को यन्त्र के भीतर ही इस प्रकार से लिखें कि साध्य-व्यक्ति का नाम उसके मध्यगत हो जाय। यन्त्र के चारों कोनों में दो-दो त्रिशूल भी लिखने चाहिए।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँईं ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित यन्त्र में जहाँ 'देवदत्तः' लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

उक्त यन्त्र को लिखने के बाद गन्धादि से पूजन कर, "ॐ आकर्षय स्वाहा"- इस मन्त्र को पढ़ कर, यन्त्र के टुकड़े-टुकड़े करके उस मार्ग में डाल दे, जिसमें होकर दुष्ट प्रकृति वाला मनुष्य आता-जाता हो। इस यन्त्र के प्रभाव से वह दुष्ट-व्यक्ति साधक के वशीभूत हो जाएगा। व्यवसायी व्यक्ति अपने ऋणदाता के लिए भी इस यन्त्र का प्रयोग कर सकते हैं। यह यन्त्र बहुत लाभकारी है।

पत्र

१२८

क्रूरवश्यकरंकालानल यन्त्रम् - गोरोचन द्वारा भोजपत्र के ऊपर तीन रेखाओं से मिश्रित एक चतुष्कोण यन्त्र को लिख कर 'ह्रीं' बीज की रेखा के भीतर साध्य-व्यक्ति के नाम के अक्षरों को लिखें। नाम में जितने अक्षर हों, 'ह्रीं' बीज उतने ही लिखने चाहिए। अन्त में 'ईं' बीज लिखना आवश्यक है। इस यन्त्र में 'ह्रीं' बीजों को लिखने की कोई संख्या निर्धारित नहीं है, जितने नामाक्षर हों, उतने 'ह्रीं' बीज लिखे जा सकते हैं।

(क्रूर-वश्यकर कालानल यन्त्र)

ह्रीं दें	ह्रीं वं	ह्रीं दं	ह्रीं तं	ईं

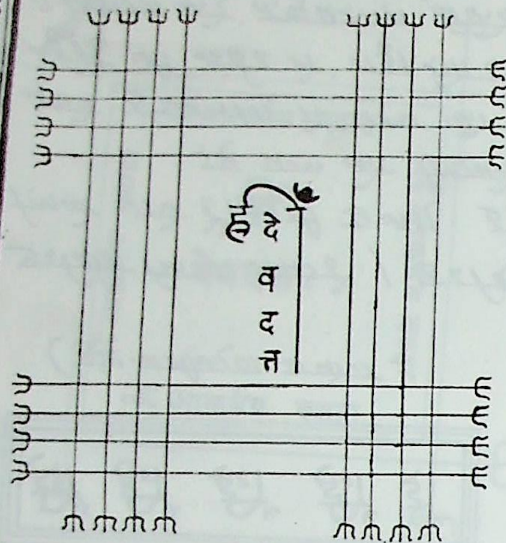
(दुष्ट-वशीकरण प्रयोग)

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई ओर प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित यन्त्र में जिस प्रकार 'ह्रीं' अक्षरों के बीच 'देवदत्त' नाम के अक्षर लिखे गये हैं, उसी प्रकार ह्रींकारों के बीच साध्य-व्यक्ति के नामाक्षरों को लिखा जाना चाहिए।

इस यन्त्र को लिखने के बाद वृक्ष के नीचे से धूलि लाकर एक राक्षिका-प्रतिमा का निर्माण कर, उसके हृदयभाग में यन्त्र को स्थापित कर, गंधादिक से पूजन करे तथा कृष्णपक्ष की चतुर्दशी की रात्रि में चूल्हे की कर्कट में गड्ढा खोद कर उसमें यन्त्र को दबादे। दबाते समय 'महाकालाय स्वाहा' - इस मन्त्र का उच्चारण करें, तदुपरान्त बकरे के रक्त मिश्रित भात से दिक्पालों की प्रसन्नता के लिए बलिदान कर, उक्त पदार्थ में घृत तथा लाल पुष्प मिला कर 'ॐ महाकालायेति' - इस मन्त्र से १०८ आहुतियाँ देकर होम करें। इस 'कालानल यन्त्र' के प्रयोग से साध्य-व्यक्ति कितना ही दुष्ट क्यों न हो, वशीभूत हो जाता है।

महा०

(शत्रु-मुखस्तम्भन यन्त्र, २)



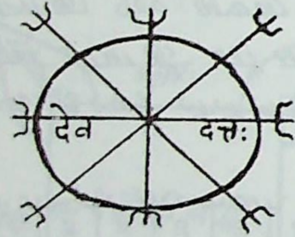
शत्रु-मुख-स्तम्भन यन्त्रम् (१)- खड़िया मिट्टी द्वारा शिला-सम्पुट (अर्थात्- पत्थर की दो पटियाओं) के भीतर चार रेखाओं वाले एक चतुष्कोण यन्त्र को लिख कर, प्रत्येक कोण की रेखा को त्रिशूल-चिह्न से युक्त करे। फिर यन्त्र के भीतर एक अर्द्धचन्द्राकार तथा एक बिन्दु को ऊपरी भाग में लगा कर एक 'ह्रीं' बीज को लिखे तथा उसकी मात्रा को लम्बाई में खींच कर, उसके मध्य में साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखे।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप तय्यार होगा, उसे बाँई ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। चित्र में जहाँ ईकार की मात्रा के मध्य में 'देवदत्त' नाम के अक्षर लिखे हैं, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नामाक्षरों को लिखा जाना चाहिए। नामाक्षरों के अनुपात में 'ी' मात्रा को छोटे-बड़े आकार का रखना चाहिए।

यन्त्र लेखनोपरान्त उसका गन्ध-पुष्पादि से पूजन कर, एक शराव-सम्पुट (मिट्टी के दो शकोरों के बीच) में उसे बन्द कर दे। फिर एक ब्राह्मण को भोजन कराये तथा 'श्रीविद्या प्रीयताम्' कह कर उससे आशीर्वाद प्राप्त करे। इस यन्त्र के प्रभाव से शत्रु का मुख स्तम्भित हो जाता है और वह कोई अनर्गल अथवा हानिकर शब्द नहीं कह पाता।

शत्रु-मुख-स्तम्भन यन्त्रम् (२) – अपने घर की दीवार पर खड़िया मिट्टी द्वारा एक गोलाकार-चक्र खींचकर, उसकी आठों दिशाओं में त्रिशूल लगाकर, मध्य में साध्य-व्यक्ति का नाम लिखें। इस विधि से यन्त्र का जो स्वरूप तैयार होगा, उसे बाँई ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित चित्र में जहाँ 'देवदत्तः' लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

(शत्रु-मुख स्तम्भन यन्त्र, १)

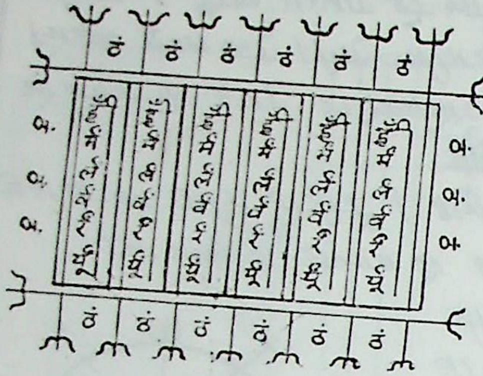


लेखनोपरान्त यन्त्र का श्वेत रंग के पुष्प, फल, सुगन्ध तथा मनोहर श्वेत वस्त्र आदि से पूजन कर, एक ब्राह्मण को भोजन करायें तथा "श्री शिवः प्रीयताम्" – इस मन्त्र का जप करते रहें।

इस यन्त्र के प्रभाव से शत्रु का मुख बन्द (स्तम्भित) हो जाता है तथा मुकद्दमे आदि में विजय एवं प्रताप की प्राप्ति होती है। शत्रु का मुख स्तम्भित करने वाला यह प्रयोग सरल तथा श्रेष्ठ कहा गया है।

शत्रु-गति-मति-मुख-स्तम्भक 'जिह्वा-वेधन' यन्त्रम् – गोरोचन द्वारा भोजपत्र के ऊपर दो रेखाओं वाले एक चतुष्कोण यन्त्र को लिखें तथा उसके चारों कोनों की रेखाओं को त्रिशूल युक्त करें। फिर भीतरी-चतुष्कोण में पाँच स्थानों पर दो-दो खड़ी रेखाएँ खींचें। इससे यन्त्र के भीतर ६ कोष्ठ तैयार हो जाऐंगे। इसके बाद ऊपरी भाग में तथा निचले भाग में पाँच-पाँच खड़ी रेखाएँ खींचकर उन्हें त्रिशूल-चिह्न से युक्त करें। फिर ऊपरी तथा निम्न भाग के त्रिशूलों के अंतराल में एक-एक 'ठं' बीज लिखें। इस प्रकार ६ ठं बीज ऊपर तथा ६ ठं बीज नीचे लिखे जाऐंगे। तदुपरान्त दाँये तथा

(शत्रु मुख गति मति जिह्वा बेधन यन्त्र)



बाँये पार्श्व मे तीन-तीन 'ठं' बीज लिखे। इस प्रकार दोनों पार्श्वों में ६ ठं बीज तथा चारों पार्श्वों में कुल १८ ठं बीज लिखे जाएँगे।

इसके बाद प्रत्येक कोष्ठ के भीतर 'ह, य, ल, व, र, य — इन सब वर्णों को ऊपर नीचे स्थापित कर, योजना पूर्वक अन्त में 'ऊ'कार स्वर को मिलाकर सब वर्णों के ऊपर रेफ तथा बिन्दु को स्थापित कर, हकार मे नीचे रेफ तथा बगल में चन्द्र बिन्दु युक्त बड़ी ई की मात्रा को इस प्रकार लिखे कि सभी वर्ण ईकार की मात्रा के अन्तर्गत आ जाँय।

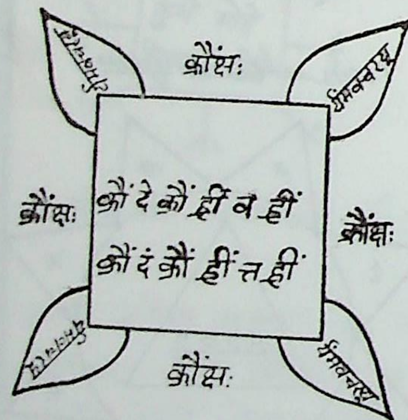
उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप तय्यार होगा, उसे बाँई ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है।

यन्त्र को लिखने के बाद उसका विधि-पूर्वक पूजन करे तथा त्रिशक्ति-मन्त्र से वक्ष्यमाण मन्त्र का जप करे। मन्त्र इस प्रकार है—

"ॐ ह्ल्र्यूँ लललल अमुकस्य मुखं स्तम्भ स्तम्भ ठः ठः ठः ठः ठः ठः स्वाहा।" इस मन्त्र में जहाँ 'अमुकस्य' शब्द आया है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम का उच्चारण करना चाहिए। तीन दिन तक, तीनों सन्ध्याकाल में इस मन्त्र का १०० अथवा १०८ बार जप करना चाहिए तथा तीनों सन्ध्याकाल में स्वर्ण की कान्ति जैसे पीले रंग के पुष्पों से पूजन करना चाहिए। इस प्रयोग द्वारा शत्रु के मुख, बुद्धि, गति आदि का स्तम्भन होता है और वह मूक भाव को प्राप्त होकर, साधक के लिए हानिकर सिद्ध नहीं हो पाता।

यन्त्र ८३३ महा०

(पिशुन-मुख स्तम्भन यन्त्र)

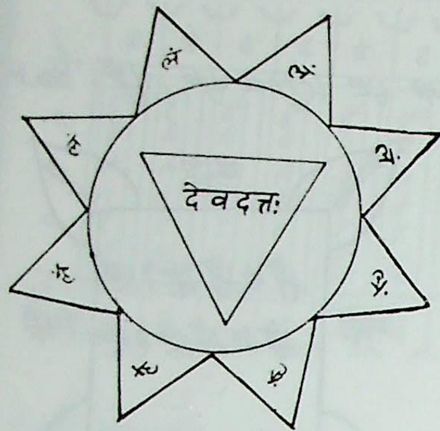


पिशुन-मुख-स्तम्भन यन्त्रम्- गोरोचन द्वारा भोजपत्र के ऊपर एक चतुष्कोण यन्त्र लिखकर, उसके प्रत्येक कोण में एक-एक कमल-दल लगायें। फिर यन्त्र के बहिर्भाग के पूर्व तथा पश्चिम में "क्रौं क्षः" इन बीजों को लिखें। मध्य भाग में 'क्रौं' 'ह्रीं' -- इन बीजों से सम्पुटित साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए। फिर प्रत्येक कोण में "य, म, व, च, र, य" -- इन छः वर्णों को मिलाकर पहले यकार के ऊपर अनुस्वार युक्त रकार लगाकर अन्त के यकार में ऊकार को मिलादें।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप निर्मित होगा, उसे बाँई ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित-यन्त्र के मध्य भाग में 'देवदत्त' के नामाक्षरों को जिस प्रकार लिखा गया है, उसी प्रकार साध्य-व्यक्ति के नामाक्षरों को लिखना चाहिए। साध्य-व्यक्ति के नामाक्षरों के अनुसार 'क्रौं' तथा 'ह्रीं' बीजाक्षरों की संख्या को घटाया-बढ़ाया भी जा सकता है।

यन्त्र को लिखने के बाद लाल चन्दन, लाल पुष्प, लाल वस्त्र तथा अपने रक्त से यन्त्र का पूजन कर, यथाशक्ति दक्षिणा देकर एक ब्राह्मण को भोजन कराना चाहिए तथा इस कार्य में धन की कृपणता नहीं करनी चाहिए। फिर भूमि में एक गड्ढा खोद कर, उसमें यन्त्र को गाड़ कर मिट्टी से दबादें। इस यन्त्र के प्रभाव से पिशुन (चुगलखोर) व्यक्ति की बुद्धि, वाणी तथा गति का स्तंभन हो जाता है। यह बड़ा प्रभावकारी यन्त्र है।

(प्रतिवादि-मुख स्तम्भक)



(वाणी-स्तम्भन यन्त्र)

प्रतिवादि-मुख स्तम्भन यन्त्रम्- सर्वप्रथम पीले रंग के पुष्प-कुंकुम, केसर आदि से शिला-सम्पुट (पत्थर की दो पटियों) के बीच मध्य में एक त्रिकोण यन्त्र लिखकर, उसे ऊपर एक गोलाकार-चक्र से वेष्टित करे। फिर उसे आठ कमल-दलों से सुसज्जित करे। यन्त्रस्थ त्रिकोण के भीतर साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखे तथा कमल-दलों में 'लं' बीज लिखे।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप निर्मित होगा, उसे बाँई ओर को प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित-चित्र में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

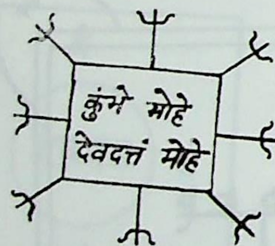
यन्त्र लिखने के बाद पीले रंग के सुगन्धित पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य आदि से यन्त्र का पूजन कर, खीर तथा गुड़ मिश्रित पदार्थों द्वारा एक ब्राह्मण को भोजन करा कर सन्तुष्ट करे। तत्पश्चात् यन्त्र-लिखित दोनों शिलाओं के सम्पुट को, पृथ्वी के भीतर गड्ढा खोदकर गाड़ दें तथा ऊपर से मिट्टी भर दें।

इस यन्त्र के प्रभाव से व्यवहार, विवाद, मुकद्दमा, शास्त्रार्थ आदि में प्रतिवादी-व्यक्ति का मुख स्तम्भित हो जाता है तथा साधक को सर्वत्र विजय प्राप्त होती है। यह 'वाणी-स्तम्भन यन्त्र' संसार में 'प्रतिवादि-मुख-स्तम्भन यन्त्र' के नाम से भी सुप्रसिद्ध तथा परम गुप्त एवं प्रभावशाली है।

महा०

यात्रा-स्तम्भन यन्त्रम् (२) - एक शिला-सम्पुट अर्थात् पत्थर की दो पटियों के भीतर, पीले रंग के द्रव्य, यथा- गोरोचन, हरताल, हल्दी, मैनसिल, कुंकुम आदि, से एक चतुष्कोण यन्त्र लिख कर, उसके चारों कोनों तथा चारों दिशाओं में एक-एक त्रिशूल अंकित करें; तदुपरान्त यन्त्र के मध्यभाग में दो रेखाओं की कल्पना कर, पहली रेखा में 'कुंभे मोहे' लिखें तथा दूसरी रेखा में साध्य-व्यक्ति का नाम अनुस्वारांत लिखकर, उसके अन्त में 'मोहे' लिखें।

यात्रा-स्तम्भन यन्त्र(२)

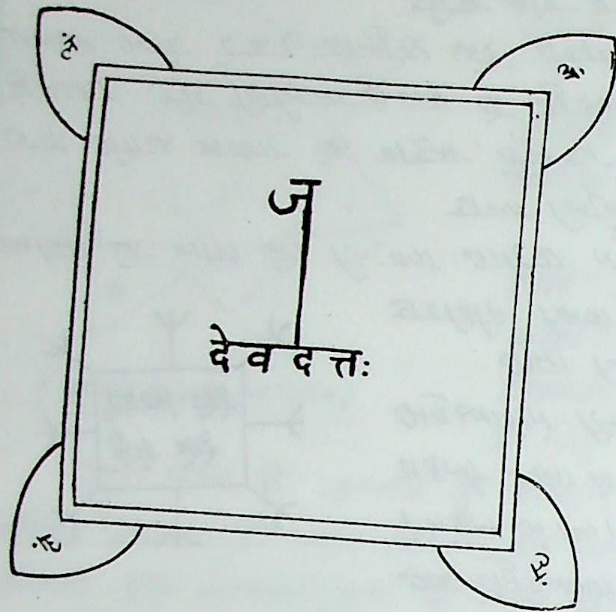


उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप तय्यार होगा, उसे बाँई ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित चित्र में 'जिस जगह 'देवदत्तं' लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए तथा नाम के अंतिम अक्षर के ऊपर अनुस्वार का बिन्दु लगाना चाहिए।

यन्त्र लिखने के बाद पीले रंग के पुष्प तथा गन्ध आदि से यन्त्र का पूजन करें तथा अनेक प्रकार के भक्ष्य, नैवेद्य आदि यन्त्र को समर्पित करें। यदि सम्भव हो तो एक ब्राह्मण को बुलाकर उसे विभिन्न प्रकार के सुस्वादु व्यंजनों का भोजन करायें तथा यथाशक्ति दक्षिणा एवं मान-सम्मान आदि देकर सन्तुष्ट करें तथा उससे आशीर्वाद प्राप्त करें।

इसके बाद पृथ्वी के भीतर गड्ढा खोद कर उसमें यन्त्र को स्थापित कर दें तथा ऊपर से मिट्टी भर दें। इस प्रयोग के द्वारा किसी भी व्यक्ति की यात्रा को स्तम्भित किया जा सकता है। जब किसी व्यक्ति की यात्रा को रोकना हो और वह न रुकना चाहे, उस समय इस यन्त्र का प्रयोग करना चाहिए।

(यात्रा - स्तम्भन यन्त्र ; २)



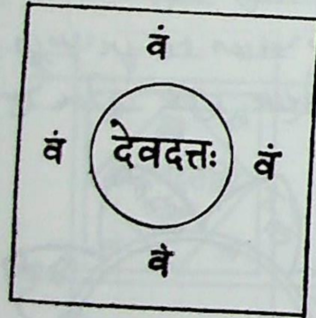
यात्रा - स्तम्भन यन्त्रम् (२) - पीले द्रव्य (हल्दी, केसर आदि) से लिप्त काष्ठ के टुकड़े (लकड़ी के पट्टे आदि) पर खड़िया मिट्टी द्वारा दो रेखाओं वाले एक चतुष्कोण यन्त्र को खींचे। फिर उसके चारों कोनों में एक - एक कमल - दल स्थापित करे। तत्पश्चात् प्रत्येक कमल - दल में एक - एक 'लं' बीज लिखकर, चक्र के भीतर 'ज' अक्षर की मात्रा के मध्य में साध्य - व्यक्ति का नाम लिखें। इस विधि से यन्त्र का जो स्वरूप तैयार होगा, उसे बाईं ओर प्रदर्शित चित्र में स्पष्ट किया गया है।

प्रदर्शित चित्र में जिस जगह 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए। साध्य व्यक्ति के नाम को 'ज' अक्षर के अन्तर्गत निम्नानुसार भी लिखा जा सकता है—

ज
दे
व
द
त्तः

यन्त्र को लिखने के बाद विधि पूर्वक पूजन करें, तदुपरान्त यन्त्र - लिखित लकड़ी के पट्टे को अधोमुख करके अर्थात् नीचे की ओर मुँह करके, अपने घर के भीतर ही किसी स्थान पर लटका दें। इस यन्त्र के प्रभाव से जो प्रियजन मना करने पर भी जा रहा हो, उसकी यात्रा स्तंभित होगी

(अग्नि-स्तम्भन यन्त्र)



(अग्नि निवारण यन्त्र)

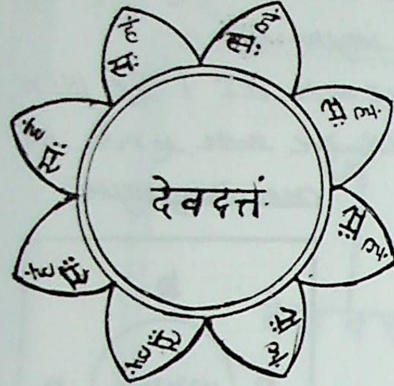
अग्नि स्तम्भन यन्त्रम् – लाल चन्दन, गोरोचन तथा हिम द्वारा एक बड़े तथा अविच्छिन्न साफ-सुथरे भोजपत्र के टुकड़े पर विधान पूर्वक एक गोलाकार चक्र खींचें तथा उसके बहिर्भाग की पूर्वादि चारों दिशाओं में 'वं' बीजों को लिखें, तदुपरान्त गोलाकार के मध्य भाग में साध्य-व्यक्ति का नाम लिखें।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप तैयार होगा, उसे बाईं ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। इस चित्र में जहाँ 'देवदत्त' शब्द लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

यन्त्र को लिखने के बाद गंध-पुष्प आदि से पूजन कर, उसे त्रिलोह (सोना, चाँदी और ताँबा) के ताबीज में बन्द कर, अपनी दाईं भुजा (स्त्री बाईं भुजा) अथवा कण्ठ में धारण करे अथवा किसी पात्र में दूध भर कर तथा उस दूध में यन्त्र भरे ताबीज को स्थापित कर, घर के मध्यभाग में रखदे तथा प्रतिदिन यन्त्र का पूजन करता रहे। इस यन्त्रराज की प्रसन्नता के लिए पहले दिन एक ब्राह्मण को भोजन कराना भी आवश्यक है।

जो व्यक्ति इस यन्त्र को धारण करता है, उसे अग्नि से जलने आदि का भय नहीं रह जाता जिस घर में यह यन्त्र स्थापित होता है, वहाँ भी अग्निकाण्ड होने का कोई भय नहीं रहता। इस यन्त्र को 'अग्नि निवारण' यन्त्र भी कहा जाता है, क्योंकि जिस स्थान पर यह यन्त्र विद्यमान होता होता है, अग्नि वहाँ से दूर ही बनी रहती है। अग्नि-भय से मुक्ति पाने के लिए इस यन्त्र का प्रयोग अवश्य करना चाहिए।

(सर्प-स्तम्भन यन्त्र)



सर्प-स्तम्भन यन्त्रम्- एक बड़े भोजपत्र के ऊपर धतूरे के रस से दो रेखाओं वाले एक गोलाकार चक्र का निर्माण करें, फिर उसके ऊपर आठ कमल-दलों का निर्माण करें। तदुपरान्त प्रत्येक कमल-दल में 'हं सः' इन बीजों को लिखें तथा यन्त्र के मध्य में अनुस्वार सहित साध्य-व्यक्ति का नाम लिखें।

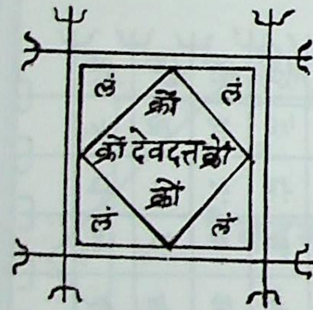
उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित यन्त्र में जहाँ 'देवदत्तं' लिखा है, वहाँ साध्य व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

इस प्रकार यन्त्र का निर्माण करने के बाद उसका गंध-पुष्प आदि से पूजन करें। फिर त्रिलोह के ताबीज में भर कर, दाँई भुजा (स्त्री अपनी बाँई भुजा) अथवा कण्ठ में धारण करले।

इस यन्त्र के प्रभाव से सर्प का स्तम्भन होता है। इस यन्त्र को धारण करने वाले व्यक्ति को देखते ही सर्पादि भाग जाते हैं और यदि कभी प्रमादवश उनके ऊपर पाँव भी पड़ जाय तो वे काटते नहीं हैं। यह यन्त्र सर्पादि से रक्षा करने में सर्वोत्तम है। इसे गरुड़जी ने प्रकाशित किया है। जिस स्थान पर सर्प अधिक हों, वहाँ रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति को यह यन्त्र धारण किए रहना चाहिए। इससे सर्पों के काटने का भय दूर होता है। यदि इस यन्त्र को ताम्रपत्र आदि पर खुदवा कर घर में रखा जाय तो उस घर के भीतर सर्पों का प्रवेश नहीं होता।

वह्नि-स्तम्भन यन्त्रम्-

(वह्नि-स्तम्भन यन्त्र)



भोजपत्र के एक अविच्छिन्न टुकड़े पर पीले रंग के – केसर, कुंकुम आदि द्रव्य से एक दो रेखाओं से युक्त चतुष्कोण यन्त्र लिखकर, उसके भीतर एक तिरछे आकार का चतुष्कोण और लिखे तथा यन्त्र के बहिर्भाग के चारों कोनों पर दो-दो त्रिशूल लगा कर, भीतरी चतुष्कोण के उदर में, पूर्वादि चारों दिशाओं में 'क्रौं' बीज लिखकर मध्य में सानुस्वार साध्य व्यक्ति के नाम को लिखे। फिर मध्य कोण के बहिर्भाग में 'लं' बीजों को लिखे।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित यन्त्र में जहाँ "देवदत्तः" लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

यन्त्र लेखनोपरान्त उसका गन्ध-पुष्प आदि से पूजन कर, पश्चात्-ब्राह्मणों को भोजन कराये तथा उन्हें दक्षिणा देकर सन्तुष्ट करे, तत्पश्चात् यन्त्र को पृथ्वी में गाड़ दे और उसके ऊपर नित्य पानी डालता रहे। जब तक यन्त्र के ऊपर पानी डाला जाता रहेगा, तब तक उस स्थान पर अग्नि का प्रकोप नहीं होगा। यह यन्त्र अग्नि को स्तम्भित करने वाला है।

टिप्पणी – यहाँ तक वशीकरण, मोहन, आकर्षण तथा स्तम्भन के शास्त्रीय यन्त्रों का उल्लेख किया गया। इससे आगे शान्ति-पौष्टिक, उच्चाटन तथा मारण प्रयोगों का वर्णन किया जाएगा। लोक-प्रचलित अन्य यन्त्रों का उल्लेख अगले खण्डों में किया जाएगा।

(शान्ति-पौष्टिक यन्त्र)

क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं
अं	आं	इं	ईं	उं	ऊं	ऋं
जं	झं	ञं	टं	ठं	डं	ॠं
छं	भं	मं	यं	रं	ढं	ऌं
चं	बं	सं	हं	लं	णं	ॡं
ङं	फं	षं	शं	वं	तं	एं
घं	पं	नं	धं	दं	थं	ऐं
गं	खं	कं	अः	अं	औं	ओं
क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं	क्रौं

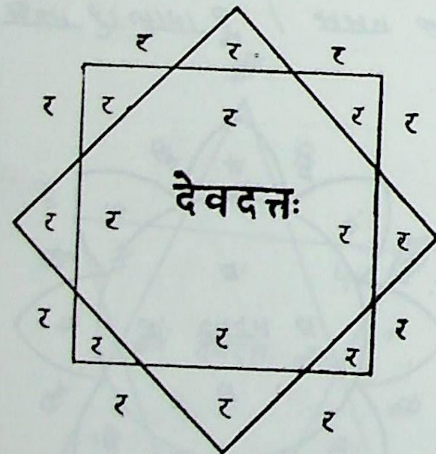
शान्ति-पौष्टिक यन्त्रम् – शुभदिन तथा शुभमुहूर्त में गोरोचन, कुंकुम, कपूर तथा कस्तूरी – इन सब वस्तुओं को एकत्र कर, चमेली की कलम से, काँसे के पात्र पर, आठ लम्बाई में तथा आठ चौड़ाई में रेखाएं खींचकर ४९ कोठों के यन्त्र का निर्माण करे। फिर प्रत्येक रेखा के मुख को त्रिशूल से युक्त कर, पूर्व तथा पश्चिम भाग में सात-सात 'क्रौं' बीजों को लिखे। फिर ईशान कोण से लेकर प्रत्येक रेखा में सानुस्वार अकारादि से युक्त व्यंजनवर्णों को क्रमशः भरे।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप तय्यार होगा, उसे बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र में दिखाया गया है।

लेखनोपरान्त श्वेत कमल, मालती, जुही, केतकी, चमेली तथा बकुल के फूल (कोई भी फूल लाल रंग का अथवा गंध-रहित न हो), मधुफल, कर्पूर युक्त ताम्बूल, धूप, दीप, नैवेद्य, श्वेत वस्त्र आदि से यन्त्र का पूजन कर, 'दुर्गासप्तशती' का जप कराके, यथेष्ट खीर तथा घृत द्वारा तीन दिनों तक ब्राह्मणों को भोजन कराके एवं दक्षिणा प्रदान करे। फिर यन्त्र में से गंध-रोचन को निकाल, गुटिका बना, त्रिलोह के ताबीज में भर कर कण्ठ अथवा भुजा में धारण करे, शेष भाग को पानी में मिलाकर पीजाय। इस यन्त्र के प्रभाव से दुःख-क्लेश दूर होते हैं तथा शत्रु को क्षोभ होता है।

यन्त्र ३३८

(बाल-ज्वर-नाशन यन्त्र)



बालज्वर-नाशन यन्त्रम्- 'धतूरे के रस द्वारा श्मशान-वस्त्र (मुर्दे के कफन) के ऊपर एक चतुष्कोण यन्त्र खींचकर, उसके ऊपर कोण निकालते हुए एक दूसरा चतुष्कोण चक्र खींचे तथा मध्यभाग में साध्य-व्यक्ति का नाम लिख कर, उसे चारों ओर एक-एक 'र' अक्षर से वेष्टित करे। फिर प्रत्येक कोष्ठक में एक-एक तथा उनके बाहर एक-एक 'र' वर्ण वेष्टित करे। इस प्रकार कुल 20 'र'कार लिखे जाएँगे।

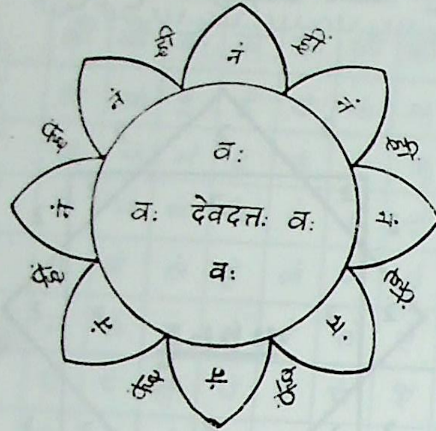
महा.

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप निर्मित होगा, उसे बाँई ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित यन्त्र में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

यन्त्र को लिखने के बाद उसका मनोहर बलि, पुष्प, गंध आदि से पूजन करें तथा उपवास रखकर, यन्त्र को पृथ्वी में गाढ़ दें। यह कार्य कृष्णपक्ष की अष्टमी अथवा चतुर्दशी तिथि को करना चाहिए।

इस यन्त्र को धारण करने से बालकों का ज्वर दूर हो जाता है। बालकों के अतिरिक्त अन्य लोगों के ज्वर का शमन करने में भी यह हितकर है। जिन दिनों में ज्वर चारों ओर फैला हो, उन दिनों इस यन्त्र को धारण करने से ज्वर से सुरक्षा बनी रहती है। यह यन्त्र अनेक प्रकार के ज्वरों में लाभकारी है। सामान्य शीत ज्वरादि के अतिरिक्त भूत-ज्वर आदि में भी इसका प्रयोग किया जा सकता है।

(ज्वर-शमन यन्त्र)



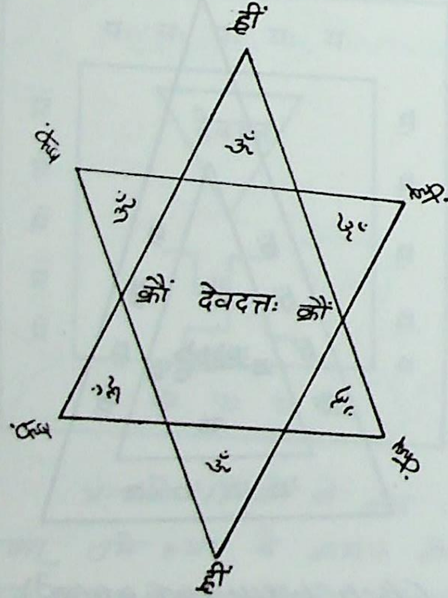
ज्वर-शमन यन्त्र- भोजपत्र के अविच्छिन्न टुकड़े के ऊपर धतूरे के रस द्वारा एक गोलाकार चक्र खींच कर, उसके ऊपर आठ कमल-दलों का निर्माण करें। फिर यन्त्र के मध्यभाग में साध्य-व्यक्ति का नाम लिख कर, नाम के दाँये-बाँये तथा ऊपर-नीचे विसर्गान्त 'व'कार लिखें। तत्पश्चात् प्रत्येक दल के भीतर अनुस्वार युक्त 'न'कार (नं) तथा प्रत्येक दो दलों के मध्यभाग में एक 'ह्रीं'कार लिखें। साध्य-व्यक्ति के नामाक्षर के अन्त में विसर्ग अवश्य लगायें।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप तैयार होगा, उसे बाँईं ओर प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित चित्र में जिस स्थान पर 'देवदत्तः' लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

इस यन्त्र को लिखने के बाद गन्ध-पुष्पादि से पूजन करें, फिर ठण्डे पानी में डाल दें। जब तक ज्वर न उतर जाय, इसे पानी में पड़ा रहने दें।

इस यन्त्र के प्रभाव से उष्ण-ज्वर का रोगी तीन दिन में ज्वर-मुक्त हो जाता है। समय बाँध कर आने वाले ज्वरों के शमन हेतु यह यन्त्र अत्यधिक प्रभावकारी है। यदि इस यन्त्र को हाथ में बाँध दिया जाय तो भूत के कारण उत्पन्न भूत-ज्वर तुरन्त दूर हो जाता है। ज्वर-शमन के अनेक यन्त्रों का वर्णन तन्त्र-शास्त्र में पाया जाता है। यह यन्त्र उन सब में श्रेष्ठ तथा सद्य प्रभावकारी माना गया है, अतः इससे अवश्य लाभ उठाना चाहिए।

(एकान्तर-ज्वर नाशक यन्त्र)



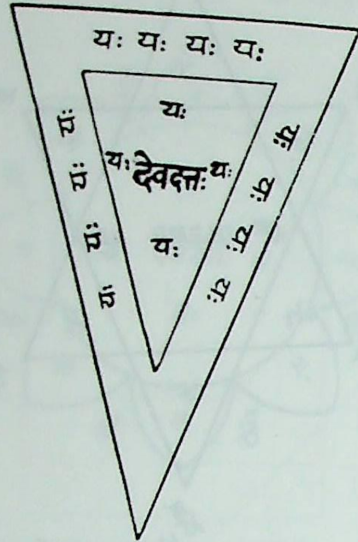
एकान्तर-ज्वर-नाशक यन्त्रम्- हल्दी के रस से, बबूल के काँटे द्वारा, पान के पत्ते के ऊपर एक षट्कोण यन्त्र बना कर, प्रत्येक कोण के भीतर 'ॐ' बार लिखें तथा ऊपर एवं नीचे के छहों कोनों में 'ह्रीं' बीज लिख कर, बीच में 'क्रौं' बीज से संपुटित अर्थात् दोनों ओर एक-एक 'क्रौं' बीज लिख कर, उनके मध्य में साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखें।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप तैयार होगा, उसे बाँई ओर प्रदर्शित चित्र में स्पष्ट किया गया है। इस यन्त्र में जहाँ 'देवदत्तः' लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

यन्त्र लेखनोपरान्त पान के पत्ते (यन्त्रलिखित) का विधिपूर्वक पूजन कर, उसे साध्य-व्यक्ति अर्थात् ज्वर के रोगी को खिला देना चाहिए।

इस यन्त्र के प्रभाव से एकान्तर, अर्थात् एक दिन छोड़कर आने वाला ज्वर, जिसे बोल-चाल की भाषा में 'एकतरा बुखार' कहा जाता है, अवश्यमेव दूर हो जाता है। यह 'एकान्तर ज्वर शमन' अथवा 'एकान्तर-ज्वर नाशक' यन्त्र अत्यन्त प्रभावकारी है। जिन दिनों यह बारी का बुखार फैला हो, उन दिनों घर के अन्य लोगों को भी इस यन्त्र का प्रयोग करने से लाभ होता है।

(तृतीयक-ज्वर-नाशन यन्त्र)



तृतीयक-ज्वर-नाशन यन्त्रम्- भोजपत्र के एक अविच्छिन्न टुकड़े पर धतूरे के रस द्वारा एक त्रिकोण यन्त्र खींचकर, उसके भीतर एक अन्य छोटा त्रिकोण यन्त्र खींचें। फिर उसके मध्य भाग में चारों ओर 'य' कार से पुटित साध्य-व्यक्ति का नाम लिखें। तत्पश्चात् दोनों त्रिकोण-रेखाओं के मध्यभाग में चार-चार 'य' कार बीज लिखें। इस प्रकार यन्त्र में कुल 16 'य' कार बीज लिखे जाएँगे।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँईं ओर प्रदर्शित चित्र में स्पष्ट किया गया है। प्रदर्शित चित्र में जिस जगह 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति अर्थात् रोगी का नाम लिखना चाहिए।

लेखनोपरान्त यन्त्र को दही-भात की बलि देकर रोगी-व्यक्ति की भुजा में बाँध दें। रोगी यदि पुरुष हो तो उसकी दाँईं भुजा में और स्त्री हो तो उसकी बाँईं भुजा में बाँधना चाहिए।

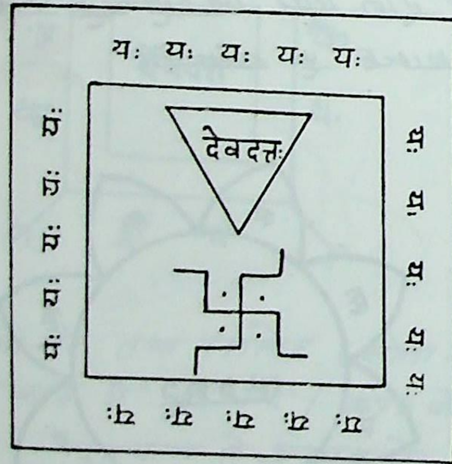
इस यन्त्र के प्रभाव से बालक, युवा, वृद्ध, स्त्री, पुरुष को आने वाला तृतीयक ज्वर दूर हो जाता है। तृतीयक-ज्वर को सामान्य बोलचाल की भाषा में 'तिजारी बुखार' कहते हैं। यह बुखार दो दिन छोड़कर आता है। अर्थात् दो दिनों तक बुखार नहीं आता और चौथे दिन पुनः आ जाता है। अन्य प्रकार के ज्वरों में भी यह लाभकारक है।

महा०

यन्त्र
२०३

भूत-तृतीयक-ज्वर-नाशन यन्त्रम्- भोजपत्र के एक बड़े तथा अविच्छिन्न टुकड़े के ऊपर, हल्दी के रस अथवा धतूरे के रस द्वारा एक चतुष्कोण यन्त्र खींचकर, उसके भीतर ऊपर की ओर एक छोटे त्रिकोण का निर्माण करे तथा नीचे की ओर एक 'स्वस्तिक' (साथिया) बनाये। फिर त्रिकोण के भीतर साध्य-व्यक्ति अर्थात् रोगी का नाम लिखे। इसके बाद चतुष्कोण यन्त्र के ऊपर एक अन्य चतुष्कोण यन्त्र बनाये तथा दोनों चतुष्कोणों के मध्यवर्ती रिक्त-स्थान में तीन अथवा पाँच की विषम-संख्या में 'य'कार को पूर्वादि चारों दिशाओं में लिखे।

(भूत-तृतीयक ज्वर नाशन यन्त्र)

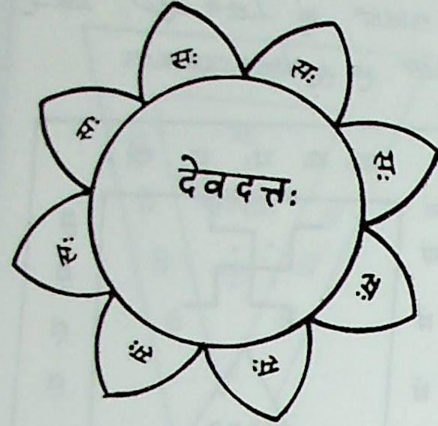


महा०

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित चित्र में त्रिकोण के भीतर जिस जगह 'देवदत्तः' लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए। इस यन्त्र का साध्य-व्यक्ति रोगी ही होगा।

यन्त्र को लिखने के बाद उसका विधिपूर्वक पूजन करके त्रिलोह के ताबीज में भरे तथा सामान्य धूप देकर उसे ज्वर के समय रोगी पुरुष के दाँये हाथ में तथा रोगी-स्त्री के बाँये हाथ में उसे बाँध दे। इस यन्त्र के प्रभाव से भूतादि के उपद्रवों के कारण आने वाला 'तिजारी बुखार' अवश्य दूर हो जाता है। किसी अन्य कारण से ज्वर आता हो तो इसका प्रयोग न करें, क्योंकि अन्य ज्वरों में इससे लाभ नहीं होता।

(बाल-रक्षाकर यन्त्र)



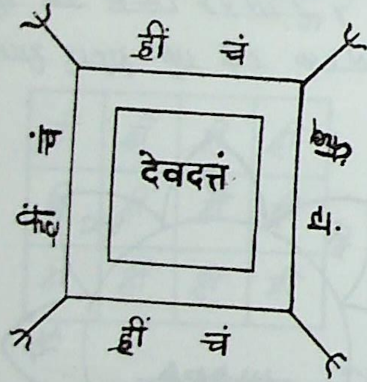
बाल-रक्षाकर यन्त्रम्- एक अविच्छिन्न तथा स्वच्छ भोजपत्र के टुकड़े पर धतूरे के रस से, एक गोलाकार चक्र खींच कर, उसमें आठ कमल-दलों को लगाये। फिर प्रत्येक दल में विसर्गान्त 'स'कार को लिखे तथा बीच में साध्य-व्यक्ति अर्थात् बालक के नाम को लिखे।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप तैयार होगा, उसे बाँई ओर प्रदर्शित चित्र में स्पष्ट किया गया है। प्रदर्शित यन्त्र में जहाँ 'देवदत्तः' लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम का उल्लेख करना चाहिए।

यन्त्र लिखने के बाद उसका विधि पूर्वक पूजन करें। फिर त्रिलोह (सोना, चाँदी और ताँबा) के ताबीज में भर कर, उसे बालक की भुजा अथवा कण्ठ में बाँध दें। लड़के की दाँई भुजा तथा लड़की की बाँई भुजा में यन्त्र को बाँधना चाहिए। कण्ठ में तो किसी के भी पहनाया जा सकता है।

इस यन्त्र के प्रभाव से डाकिनी-शाकिनी, बालग्रह आदि का प्रकोप नष्ट हो जाता है। वे बालक को छोड़कर भाग जाते हैं तथा हर प्रकार के उपद्रव से बालक की रक्षा होती है। स्मरणीय है कि सामान्य-ज्वर तथा अन्य प्रकार के उपद्रवों में इस यन्त्र को धारण करने से कोई लाभ नहीं होता डाकिनी आदि की ग्रस्तता में यह अत्यधिक लाभकारी सिद्ध होता है।

(बालानां ज्वरादि नाशन यन्त्र)



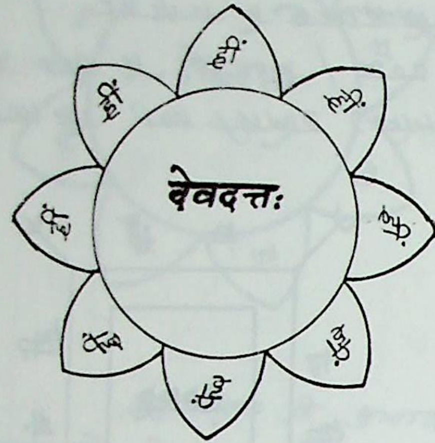
बालानां ज्वरादि नाशनं यन्त्रम्- एक अविच्छिन्न, साफ भोजपत्र के टुकड़े पर, दो रेखाओं वाले एक चतुष्कोण यन्त्र को धतूरे के रस से निर्माण करें तथा उस के प्रत्येक कोण में एक-एक छोटी रेखा के ऊपर त्रिशूलों का निर्माण करें। इस प्रकार चारों कोणों में चार त्रिशूल लिखे जाएँगे फिर चारों दिशाओं में 'ह्रीं चं' — इन बीजों को लिखें तथा यन्त्र के मध्य भाग में सानुस्वार 'साध्य-व्यक्ति' के नाम को लिखें अर्थात् साध्य-व्यक्ति के नाम के अन्तिम अक्षर पर अनुस्वार की बिन्दी लगानी चाहिए।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप तय्यार होगा, उसे बाँई ओर प्रदर्शित चित्र में दिखाया गया है। इस यन्त्र में जहाँ 'देवदत्तं' लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

यन्त्र-लेखनोपरान्त मनोहर बलि, पुष्प, धूप, दीप आदि से उसकी पूजा करें तथा त्रिलोह (सोना, चाँदी एवं ताँबा) के तावीज में भर कर उसे ज्वर-ग्रस्त रोगी-बालक के कण्ठ में बाँध दे। कण्ठ के स्थान पर इसे भुजा में भी बाँधा जा सकता है।

इस यन्त्र के प्रभाव से बालकों के उपसर्ग जनित रोग, शारीरिक-रोग, मानसिक-रोग, ईर्ष्या, क्रोध जनित रोग, दन्त-रोग, स्तन-रोग तथा ज्वर आदि रोग दूर हो जाते हैं। यह यन्त्र बालकों को रोगों से सुरक्षित रखता है, अतः इसे स्वस्थावस्था में भी धारण किया जा सकता है। इसे ज्वलन रक्षाकर यन्त्र भी कहते हैं।

(त्रिपुर भैरव यन्त्र)



बाल-दोष-नाशन त्रिपुर भैरव यन्त्रम्- भोजपत्र के एक अविच्छिन्न टुकड़े के ऊपर, धतूरे के रस से, एक गोलाकार चक्र खींचे। तदुपरान्त उसके बाहर आठ कमलदलों का निर्माण करे। फिर प्रत्येक दल में 'ह्रीं' बीज तथा यन्त्र के मध्यभाग में साध्य-व्यक्ति का नाम लिखे। इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है।

प्रदर्शित चित्र में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

लेखनोपरान्त यन्त्र का मनोहर बलि, पुष्प, गन्ध, धूप, दीप आदि से पूजन करें, फिर उसे त्रिलोह अथवा ताँबे के ताबीज में भर कर बालक के कण्ठ में बाँध दें।

यह 'त्रिपुर भैरव' नामक यन्त्र बालकों को भूत, प्रेत, वेताल, डाकिनी, शाकिनी आदि व्याधियों से बचाता है तथा मृगी, अपस्मार आदि रोगों को दूर करता है। यदि स्वस्थ बालक के गले में इस यन्त्र को बाँध दिया जाय तो इन सब से वह बचा रहता है। यह लड़का तथा लड़की- दोनों के लिए हितकर है।

बालकों की व्याधि तथा रोगों से रक्षा करने वाले अनेक प्रकार के यन्त्रों का वर्णन तन्त्र ग्रंथों में पाया जाता है। यह यन्त्र उन सब में सरल तथा अत्यधिक प्रभावकारी है।

भूत-त्रासन यन्त्रम्- नये खप्पर के ऊपर खड़िया मिट्टी द्वारा बारह कोष्ठकों वाले एक यन्त्र का निर्माण करें, तदुपरान्त उसके प्रत्येक कोष्ठक में एक-एक 'ह्रीं' बीज लिखें।

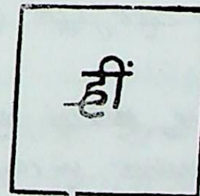
उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप तैयार होगा, उसे बाँई ओर के चित्र में प्रद-र्शित किया गया है।

(भूत-त्रासन यन्त्र)

ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं

यन्त्र को लिखने के बाद उसकी गंध, पुष्प, धूप आदि से पूजा करें, तदुपरान्त उसे खैर की अग्नि में जलायें तो इसके प्रभाव से भूत-प्रेतादि बालक को छोड़ कर भाग जाते हैं तथा उस देश में भी कभी नहीं ठहर पाते। यह यन्त्र वैसे सभी आयु के स्त्री-पुरुषों के लिए हितकर है। जिस समय कोई बालक, वृद्ध अथवा युवा स्त्री-पुरुष भूत, प्रेत, पिशाच, डाकिनी आदि से ग्रस्त हो, उस समय इसका प्रयोग करना चाहिए।

दुष्ट-सत्त्व प्रमोचन-यन्त्रम्- अपने थूक द्वारा बाँये हाथ की हथेली पर एक चतु-ष्कोण खींच कर, उसके मध्यभाग में 'ह्रीं' बीज को लिखें। इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे दाँई ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। यन्त्र लिखने के बाद अपनी अनामिका अँगुली के रक्त को चारों दिशाओं में छिड़के, तो प्रयोग कर्ता उसी क्षण हिंसक-जीवों के भय से मुक्त हो जाता है।



इस यन्त्र का उपयोग उस समय करना चाहिए, जब मनुष्य किसी समय वन, पर्वत आदि स्थानों की यात्रा कर रहा हो और उस समय सिंह, बाघ आदि किसी हिंसक जीव का भय सामने आ उपस्थित हो

सर्प-व्याघ्र-चौरादि-भय-नाशन यन्त्रम्- गोरोचन, कुंकुम, कपूर और कस्तूरी - इन चार वस्तुओं के मिश्रण से चमेली की कलम द्वारा भोजपत्र के ऊपर एक चतुष्कोण यंत्र लिखे। फिर उस यन्त्र के भीतर 'ह्रीं' बीज लिख कर, इस बीज की मात्रा के अन्तर्गत साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखे तथा नाम के बाँईं ओर, ह्रीं बीज के बाद में "म, ल, व, य तथा ऊ" इन अक्षरों को भी मिलादे।

(सर्प-व्याघ्र-चौरादि भय-नाशन यन्त्र)

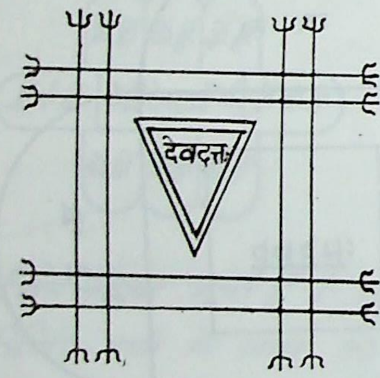
	ह्रीं
म	दे
ल	व
व	द
यू	त्त

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप तय्यार होगा, उसे बाँईं ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित चित्र में जिस प्रकार 'देवदत्त' इन नामाक्षरों को लिखा गया है, उसी प्रकार साध्य-व्यक्ति के नामाक्षरों को लिखना चाहिए। यन्त्र लिखने के बाद उसका गन्ध, पुष्प, धूप आदि से पूजन करे।

लेखनोपरान्त यन्त्र का विधिपूर्वक पूजन कर के, त्रिलोह (सोना, चाँदी और ताँबा) के ताबीज में भर कर भुजा अथवा गले में धारण करे तो साध्य व्यक्ति को सर्प, चोर एवं व्याघ्र आदि के भय से मुक्ति मिलती है। स्त्री अथवा पुरुष दोनों ही इस यन्त्र को धारण करने के अधिकारी हैं। यह यन्त्र बालकों को भी धारण कराया जा सकता है।

इस यन्त्र के प्रभाव से अनेक प्रकार के उपद्रव शान्त होते हैं। यात्रा के समय अथवा किसी भयानक या अपरिचित स्थान में निवास करते समय यन्त्र धारण करने वाला सुरक्षित बना रहता है। इस यन्त्र को बनाकर घर में रखने से विपत्तियों से सुरक्षा होती है।

(वन्ध्यागर्भ-धारण यन्त्र)

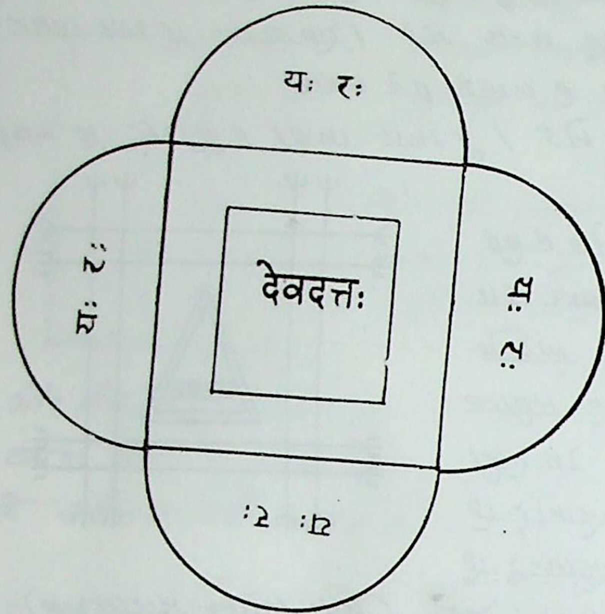


सौभाग्य जननं वन्ध्या गर्भ-धारण यन्त्रम् – भोजपत्र के एक अविच्छिन्न टुकड़े पर, गोरोचन, कुंकुम, कपूर तथा कस्तूरी द्वारा, चमेली की कलम से एक दो रेखाओं वाले त्रिकोणयन्त्र को बनायें, तदुपरान्त उसे बहिर्भाग में चारों ओर दो रेखाओं से युक्त एक चतुष्कोण यन्त्र खींचे तथा बाहर की प्रत्येक रेखा के सिरे पर एक-एक त्रिशूल चिह्न बनादे। फिर त्रिकोण के भीतर साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखकर, श्वेत तथा नील कमल, मालती, जुही, केतकी, बकुल आदि पुष्पों (कोई भी पुष्प लाल रंग का तथा बिना गंध का न हो, यह ध्यान रखें), ऋतु फल, कपूर युक्त ताम्बूल, धूप, दीप, गंध, नैवेद्य, श्वेत वस्त्र आदि से यन्त्र का पूजन करें।

पूर्वोक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप तय्यार होगा, उसे बाँई ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। इस चित्र में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति का नाम लिखें।

लेखन एवं पूजन के बाद यन्त्र को त्रिलोह अथवा ताँबे के तावीज में भर कर, भुजा अथवा कण्ठ में धारण करें। इस यन्त्र के प्रभाव से वन्ध्या-स्त्री गर्भवती होती है तथा अनेक प्रकार के सौभाग्य प्राप्त कर, देवताओं की भाँति सुखी रहती है। जिस पुरुष की पत्नी वन्ध्या हो, वह भी इस यंत्र को धारण कर सकता है। यदि पति-पत्नी दोनों ही इस यन्त्र को धारण करें तो वन्ध्यात्व-दोष शीघ्र दूर होता है। यह यन्त्र स्त्री-पुरुषों के दुर्भाग्य को दूर करने वाला तथा सौभाग्य की वृद्धि करने वाला है।

(गर्भ रक्षाकर यन्त्र)



गर्भ-रक्षाकर यन्त्रम् - भोजपत्र के एक अविच्छिन्न तथा बड़े टुकड़े पर, हाथी के मद द्वारा, दो रेखाओं से युक्त एक चतुष्कोण यन्त्र को खींच कर, उसकी चारों दिशाओं में कर्णिकाएँ लगायें। फिर प्रत्येक कर्णिका में "यः रः"—इन बीजों को लिख कर, यन्त्र के मध्य भाग में साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखें। साध्य-व्यक्ति से यहाँ तात्पर्य गर्भिणी-स्त्री से है।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित चित्र में जिस स्थान पर 'देवदत्तः' लिखा है, वहाँ 'साध्य-गर्भिणी' का नाम लिखना चाहिए।

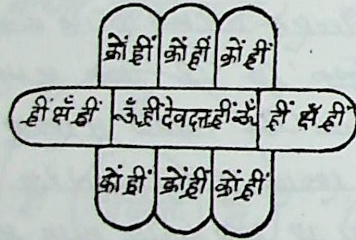
लिखनोपरान्त इस यन्त्र का पुष्प, गन्ध, धूप, दीप आदि से विधिवत् पूजन करके, चाँदी के ताबीज में भर कर, गर्भवती स्त्री के कण्ठ में बाँध देना चाहिए। इस यन्त्र के प्रभाव से सब प्रकार के कष्ट तथा छल-छिद्र दूर होकर सुख पूर्वक प्रसव होता है।

प्रसव से पूर्व ही गर्भिणी स्त्री के कण्ठ में इस यन्त्र को पहना दिया जाय तो गर्भ की रक्षा होती है अर्थात् गर्भस्राव, गर्भपात आदि की सम्भावना नहीं रहती तथा यथा समय सुख पूर्वक प्रसव होता है एवं प्रसूता स्वस्थ बनी रहती है।

मन्त्र

गर्भिणी-रक्षणं सुखप्रसूतिकरणं यन्त्रम् - भोजपत्र के ऊपर, हाथी के मद द्वारा, एक परवट (फैले हुए कपड़े जैसा) चतुष्कोण यन्त्र लिखकर, उसे चार ऊर्ध्व रेखाओं से संयुक्त कर, सभी रेखाओं को नीचे ऊपर से संयुक्त कर दें। तत्पश्चात् दोनों ओर दो कर्णिकाएं लिखें। फिर "ॐ ह्रीं" - इन दो बीजों से सम्पुटित साध्य-व्यक्ति के नाम को बीच में लिखें तथा यन्त्र के ऊपर नीचे वाले प्रत्येक कोष्ठ में "क्रों ह्रीं" इन बीजों को लिखें तथा दाँईं-बाँईं ओर की कर्णिकाओं में "ह्रीं क्षं ह्रीं" - इन बीजों को लिखें।

(सुख-प्रसूतिकरण यन्त्र)



उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप तैयार होगा, उसे बाँईं ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। इस चित्र में जिस जगह 'देवदत्तः' लिखा है, वहाँ 'साध्य-व्यक्ति' अर्थात् गर्भिणी-स्त्री के नाम को लिखना चाहिए। यन्त्र के स्वरूप को चित्र देखकर भलीभाँति समझ लेना चाहिए।

यन्त्र को लिखने के बाद उसका धूप-दीप, गन्ध, पुष्प, नैवेद्य आदि से विधिपूर्वक पूजन करें। तदुपरान्त उसे 'त्रिलोह' (सोना, चाँदी और ताँबा मिश्रित धातु को 'त्रिलोह' कहते हैं) के तावीज में भर कर, गर्भवती-स्त्री के गले में बाँध दें। इस यन्त्र के प्रभाव से गर्भशूल, शिरःशूल, भूत-दोष आदि सब प्रकार के उपद्रव शान्त होकर सुखपूर्वक प्रसव होता है।

यदि दो मास की गर्भवती-स्त्री के ही कण्ठ में यह तावीज बाँध दिया जाय, तो गर्भ-स्थिति भलीभाँति बनी रहती है। गर्भपात आदि की आशंका नहीं रहती तथा यथा समय सुखपूर्वक प्रसव होता है।

(वन्ध्या-गर्भधारण यन्त्र)



वन्ध्यागर्भ धारणं यन्त्रम् (२) - भोजपत्र अथवा तालपत्र के ऊपर गोरोचन, कुंकुम, कस्तूरी तथा कपूर द्वारा चमेली की लेखनी से एक चतुष्कोण यन्त्र लिखें तथा उसके ऊपरी भाग में बाँईं ओर 'हुं' तथा दाँईं ओर ऊपर 'स्वाहा' तथा नीचे बाँईं ओर 'वषट्' तथा दाँईं ओर 'फट्' इन शब्दों को लिखें तथा मध्य में दोनों ओर 'ॐ' तथा बीच में 'ह्रीं' लिखें।

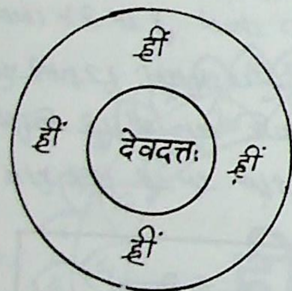
उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँईं ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। यन्त्र को लिखने के बाद विधिपूर्वक कद्रु तथा रुद्रकाली का पूजन करे एवं यंत्र को कंठ, कमर अथवा बाँईं भुजा में धारण करे। इस यन्त्र के प्रभाव से वन्ध्या-स्त्री गर्भ धारण कर, पुत्र को प्राप्त करती है।

मृतवत्सा-दोष शान्ति यन्त्र - गोरोचन तथा कुंकुम द्वारा भोजपत्र के ऊपर एक चतुष्कोण यन्त्र बनायें तथा उसमें पाँच सीधी और दो तिरछी रेखायें खींचें, ताकि १८ कोष्ठक बन जाँय। फिर पहली पंक्ति के कोष्ठों में क्रमशः 'ॐ ह्रीं क्लीं स्त्रीं हुँ फट्' तथा दूसरी पंक्ति के कोष्ठों में क्रमशः रक्ष, गर्भ, साध्य-स्त्री का नाम गर्भ, रक्ष रक्ष तथा तीसरी पंक्ति में स्वा, हा, श्रीं, क्लीं, फट्, हुँ - इन बीजों को लिखना चाहिए। इस विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे दाँईं ओर प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित चित्र में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ 'साध्य-स्त्री' का नाम लिखना चाहिए। इस यन्त्र का विधिपूर्वक पूजन करके बाँईं भुजा में धारण करने से 'मृतवत्सा दोष' (सन्तानों का होकर मर जाना) की शान्ति होती है।

(मृतवत्सा-दोषशांति यन्त्र)

ॐ	ह्रीं	क्लीं	स्त्रीं	हुँ	फट्
रक्ष	गर्भ	देवदत्त	गर्भ	रक्ष	रक्ष
स्वा	हा	श्रीं	क्लीं	फट्	हुँ

बन्धन-मोक्ष यन्त्रम् – गेहूँ के आटे में गुड़ मिलाकर तैयार किए गए 'पुए' के ऊपर कलम द्वारा एक गोलाकार चक्र लिखकर, उसके बहिर्भाग में एक और गोलाकार चक्र लिखे। फिर प्रथम चक्र के मध्यभाग में साध्य-व्यक्ति का नाम तथा दूसरे चक्र के भीतर पूर्वादि चारों भागों में 'ह्रीं' बीज लिखें।



(बन्धन-मोक्ष यन्त्र)

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई ओर प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित चित्र में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ 'साध्य-व्यक्ति' (बन्दी) का नाम लिखना चाहिए।

यन्त्र लिखने के बाद गंध-पुष्पादि से पूजन करके, यन्त्र-लिखित पुआ साध्य-व्यक्ति को खिला देना चाहिए। इस यन्त्र के प्रभाव से साध्य-व्यक्ति बन्धन अर्थात् कैद से तीन अथवा सात दिनों के भीतर छूट जाता है।

बन्दी को यन्त्र युक्त पुआ खिलाने के बाद सत्ताईस दिनों तक 108 बार निम्न लिखित मन्त्र का जप करते हुए, गुग्गुल की गोलियों द्वारा आहुति देता हुआ हवन करे तो बन्दी व्यक्ति का छुटकारा अवश्य हो जाता है। मन्त्र इस प्रकार है—

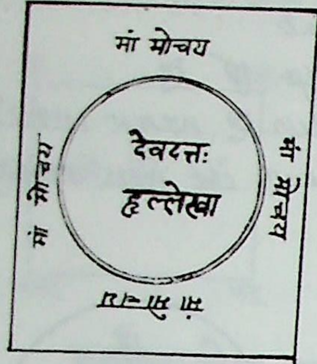
'ऐं ह्रीं श्रीं बन्दी देव्यै अमुकस्य बन्धमोक्षं कुरु कुरु मातर्नमः स्वाहा।'

उक्त मन्त्र में जहाँ 'अमुकस्य' शब्द आया है, वहाँ बन्दी व्यक्ति के नाम का उच्चारण करना चाहिए। इस प्रकार यन्त्र-साधन तथा मन्त्र-जप की संयुक्त प्रक्रिया के प्रयोग से बन्दी व्यक्ति का मोक्ष अवश्य हो जाता है। यह कल्प निश्चित सिद्ध यन्त्र अत्यन्त लाभदायक है।

महा.

बन्ध-मोक्षण मन्त्रम् - एक बड़े भोजपत्र के ऊपर कुंकुम तथा कपूर के मिश्रण से

(बन्ध-मोक्षण यन्त्र)

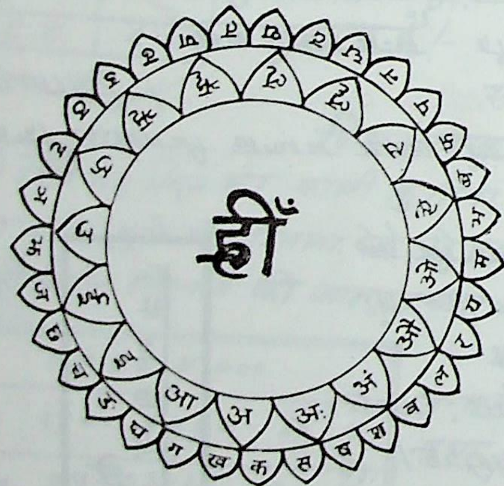


दो रेखाओं वाला एक गोलाकार चक्र लिखे, फिर उसके भीतर विसर्गान्त साध्य-व्यक्ति का नाम लिखकर, नीचे 'हृल्लेखा' लिखना चाहिए। इसके पश्चात् गोलाकार के बहिर्भाग में, पूर्व आदि चारों दिशाओं में 'मां मोचय' वाक्य को लिखे। फिर उसके ऊपर एक चतुष्कोण बनादें। चतुष्कोण न बनाना चाहें तो भी यन्त्र पूर्ण ही होगा।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई ओर प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित चित्र में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए। नाम के अन्तिम अक्षर के बाद विसर्ग लगाना भी आवश्यक है।

यन्त्र को लिखने के बाद उसका गंध, पुष्प आदि से पूजन करें, तदुपरान्त त्रिलोह (सोना, चाँदी और ताँबा) के ताबीज में भर कर बन्दी-व्यक्ति की दाँई भुजा (यदि स्त्री हो तो बाँई भुजा) में अथवा कण्ठ में धारण करायें। इस यन्त्र के प्रभाव से बन्धन में पड़ा हुआ व्यक्ति शीघ्र ही बन्धन-मुक्त हो जाता है। यदि बन्दी व्यक्ति तक इस यन्त्र को न पहुँचाया जा सके तो उसके उद्देश्य से साधक स्वयं ही अपने गले में धारण करले। जो व्यक्ति हर समय इस यन्त्र को धारण किये रहता है, उसका शरीर स्वस्थ बना रहता है तथा उसे कभी भी बन्धन में नहीं पड़ना पड़ता। इस यन्त्र का प्रयोग उस समय विशेष लाभकर रहता है, जब किसी व्यक्ति को किसी ने रोक रखा हो और उसके निकलने का कोई उपाय नहीं हो। यह यन्त्र तत्काल मुक्ति देने के लिए प्रसिद्ध है। यह स्त्री-पुरुष तथा बालक सभी के लिए हितकर है।

(निगड-मोचन यन्त्र)

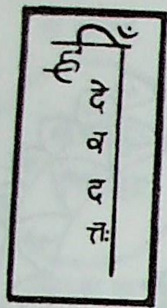


निगड-मोचन यन्त्रम् – लालचन्दन, गोरोचन, कपूर, कस्तूरी और कुंकुम - इन वस्तुओं के मिश्रण से कांसी के पात्र के ऊपर एक गोलाकार चक्र खींचकर, सर्व प्रथम उसके मध्य भाग में 'ह्रीं' बीज स्थापित करे। फिर उस गोलाकार के बाह्यभाग में षोडशदलों को लिखकर, उनमें अकारादि सोलह स्वरों को क्रमानुसार प्रत्येक दल में लिखे। तत्पश्चात उन षोडशदलों को एक अन्य बड़े गोलाकार से वेष्टित कर, उसके बाह्य भाग में बत्तीस दलों को स्थापित करें तथा उन दलों में क्रमानुसार 'क'कार से लेकर 'स'कार तक बत्तीस व्यंजनों को लिखें।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप तय्यार होगा, उसे बाँई ओर प्रदर्शित किया गया है।

यन्त्र लिखने के बाद धूप, दीप, नैवेद्य आदि से पूजन करें तथा "ॐ नमश्चण्डिकायै स्वाहा" - इस मन्त्र का १०८ बार जप करें। प्रतिदिन खीर, मधु, खाद्य तथा विशेषतः गुग्गुल की बलि देकर यन्त्र को ढँक दिया करें तथा प्रतिदिन उसे खोलने से पूर्व प्रणाम करें एवं गन्ध, धूप आदि देकर भोजन करें। इस यन्त्र के आधे भाग को पीने के लिए दें तथा आधे भाग की गुटिका बनावें। इस गुटिका को धारण करने से आजीवन कारावास का बन्दी भी बन्धन से छूट जाता है। इस यन्त्र में किसी का नाम लिखने की आवश्यकता नहीं होती। उद्देश्य मात्र ही काफी रहता है

बन्ध-मोक्षकर यन्त्रम् - भोजपत्र के ऊपर कुंकुम द्वारा एक चतुष्कोण यन्त्र लिख कर, उसके (बन्ध-मोक्षकर यन्त्र) भीतर 'ह्रीं' बीज के अन्तर्गत 'साध्य-व्यक्ति' अर्थात् बन्धन में पड़े हुए बन्दी-पुरुष या स्त्री का नाम लिखे।



उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई ओर के चित्र में दिखाया गया है। प्रदर्शित यन्त्र में 'ह्रींकार' के अन्तर्गत जिस प्रकार 'देवदत्त' के नामाक्षर लिखे हैं, उसी प्रकार 'साध्य-व्यक्ति' (बन्दी) के नामाक्षरों को लिखा जाना चाहिए।

यन्त्र लेखनोपरान्त उसका धूप-दीप गंध आदि से विधिवत् पूजन करे, फिर उसे नदी, नहर आदि के बहते हुए पानी में डाल दे तथा उसी पानी द्वारा पके हुए अन्न का भोजन साध्य-व्यक्ति को कराये।

उक्त क्रिया को करने से किसी गुफा, बिल अथवा अन्य गुप्त-स्थान में कैद बन्दी व्यक्ति भी बन्धन मुक्त हो जाता है। इतना ही नहीं, काल कोठरी आदि में बन्द व्यक्ति भी उससे छुटकारा पा जाता है।

(भवमोचन यन्त्रम्)



भव मोचन यन्त्र - दाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को गोरोचन तथा लाल चंदन द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखकर, मध्य में साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखे तथा विधिपूर्वक पूजन करने के बाद, त्रिलोह के ताबीज में भर कर मस्तक के ऊपर धारण करे तो वह मनुष्य सबसे विरक्त हो, सांसारिक-बन्धनों से छूट जाता है।

(वशीकरण यन्त्र)

ॐ	
नं टं	नं पं
तंतंतंतंतं भंभंभंभंभं पंपंपंपंपं	दंदंदंदंदं डंडंडंडंडं यंयंयंयंयं
टं टं	नं नं
ह्रीं	

वशीकरण यन्त्रम्- बाँईं ओर जिस यन्त्र के स्वरूप को प्रदर्शित किया गया है, उसे अष्टगंध द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखें, फिर विधिवत पूजन करके ताँबा आदि किसी धातु के ताबीज में भर कर अपनी दाँईं भुजा में बाँध लें तो देखने वाले तथा निकट सम्पर्क में आने वाले व्यक्ति यन्त्र धारणकर्ता के वशीभूत होते हैं। यह वशीकरण का सामान्य यन्त्र है जिसका प्रयोग मुख्यतः लोक-प्रतिष्ठा प्राप्त करने एवं सम्बन्ध सुधारने के लिए किया जाता है।

सास-श्वसुर वशीकरण यन्त्रम्- दाँईं ओर जिस यन्त्र का स्वरूप प्रदर्शित किया गया है, उसे गेहूँ की रोटी पर लिख कर काली कुतिया को खिला देने से सास वश में होती है तथा काले कुत्ते को खिला देने से श्वसुर वशीभूत होता है। इस यन्त्र के लिए किसी विधि विधान की आवश्यकता नहीं होती।

(सास-श्वसुर वशीकरण यन्त्र)

ॐ ह्रीं ह्रीं क्रीं स्वा	१	११
		११

७मं ४४ व ७००			
१०० ११७० ४७६०		३०	४
५११ ७४-८३-१ ::		÷	७

(साध्य की मां का नाम)

सर्व वशीकरण यन्त्र- बाँईं ओर नीचे प्रदर्शित यन्त्र को किसी पत्थर की पटिया अथवा टुकड़े पर लिखकर, चूल्हे में गड्ढा खोद कर गाड़ दें तथा उसे सात दिनों तक जहाँ का तहाँ गड़ा रहने दें। जिसे वश में करना हो, उसकी माता का नाम यन्त्र के नीचे लिख देना चाहिए। इस यन्त्र के प्रभाव से साध्य व्यक्ति वशीभूत हो जाता है। [टिप्पणी- उक्त तीनों यन्त्र लोक-प्रचलित यन्त्रों में से हैं।]

सर्वतोभद्र यन्त्रम्- एक अविच्छिन्न भोजपत्र के टुकड़े के ऊपर कस्तूरी, लालचंदन तथा हिम- इन सबके मिश्रण से 16 कोष्ठों वाला एक यन्त्र खींचे। फिर उसके प्रत्येक कोष्ठ में 'अ' आदि सोलह स्वरों को लिखे। इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप तय्यार होगा उसे बाँई ओर प्रदर्शित किया गया है।

(सर्वतोभद्र यन्त्र)

अ	आ	इ	ई
उ	ऊ	ऋ	ॠ
ऌ	ॡ	ए	ऐ
ओ	औ	अं	अः

लेखनोपरान्त गंध, धूप, दीप आदि से यन्त्र का पूजन करे तथा ब्राह्मणों को भोजन करा, उन्हें दान-दक्षिणा देकर सन्तुष्ट करे। फिर यत्नपूर्वक त्रिलोह (सोना, चाँदी तथा ताँबा मिश्रित) के ताबीज में यन्त्र को बन्द करके, पुरुष अपनी दाँई भुजा एवं स्त्री अपनी बाँई भुजा में धारण करें। यदि स्त्री कण्ठ में धारण करें तो अक्षपुत्रानां रहेगा। इस यन्त्र के प्रभाव से स्त्री-पुरुषों के सौभाग्य की वृद्धि होती है तथा सब प्रकार के भय एवं दुर्भाग्य का नाश होता है। यह समस्त मनोभिलाषाओं को पूर्ण करने वाला तथा सब प्रकार के अरिष्टों को शान्त करने वाला है।

(दुःस्वप्न-नाशक यन्त्र)

हं	सं	खं	फं
बं	दं	घं	जं
नं	पं	मं	दं
चं	यं	जं	दं

दुःस्वप्न-नाशक यन्त्र- दाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर लालचंदन आदि से लिख कर, सोते समय अपने सिरहाने रख लेने से दुःस्वप्न अर्थात् बुरे, डरावने आदि स्वप्न आना बन्द हो जाते हैं। जिन लोगों को अक्सर खराब स्वप्न आते रहते हों, उन्हें इस यन्त्र का प्रयोग अवश्य करना चाहिए।

[टिप्पणी- उक्त दोनों यन्त्र लोक-प्रचलित सामान्य यन्त्रों में से हैं, तथापि प्रभावकारी हैं।]

यन्त्र

३३८

(नर-नारी विद्वेषण)

ॐ अजिते स्वाहा

दे	व	द	त	दे	व	द	त
द	र्भ	गा	भ	व	दु	र्भ	गा
						भ	व

ॐ अपराजिते स्वाहा

नर-नारी-विद्वेषण यन्त्रम् – एक बड़े आकार वाले भोजपत्र के ऊपर एक चतुष्कोण यन्त्र का निर्माण करें। फिर उसके मध्य भाग में पूर्व तथा पश्चिम की ओर ९ खड़ी रेखाएं खींचें, जिनके द्वारा आठ कोष्ठक बन जाएं। इसके बाद प्रत्येक रेखा को ऊपर तथा नीचे की ओर से आपस में मिलादें। इनके ऊपरी तथा नीचे के भाग में "ॐ अपराजिते स्वाहा" – इन पदों को लिखें तथा कोष्ठकों के भीतर, ऊपरी भाग में दो बार साध्य-व्यक्ति के नामाक्षरों को लिखें तथा नाम के वर्णों के निचले भाग में बारम्बार "दुर्भगा भव" – इन वर्णों को लिखें।

यदि साध्य-व्यक्ति के नाम के अक्षर कोष्ठों की संख्या से अधिक हो तो उन्हें बहिर्भाग में लिख देना चाहिए। "दुर्भगा भव" – वाक्य को स्त्री के प्रसंग में लिखना चाहिए तथा पुरुष के प्रसंग में "दुर्भगो भव" – यह लिखना चाहिए।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँईं ओर प्रदर्शित किया गया है। इस प्रकार यन्त्र का निर्माण करके, किसी नदी के तट पर जा, आर-पार की मिट्टी लाकर, मौन धारण कर, उक्त मिट्टी से गणेशजी की प्रतिमा का निर्माण करे तथा यन्त्र को उस प्रतिमा के ऊपर रखकर गन्ध, पुष्प, मोदक आदि से पूजन कर, "गणेशः प्रीयताम्" – इस वाक्य का उच्चारण करके उत्तम भक्ष्य-पदार्थों का बालकों को भोजन कराये तथा उनकी पूजा करे। इस प्रकार गणेश-प्रतिमा सहित यन्त्र का पूजन करने के बाद, यन्त्र सहित प्रतिमा को शराव-सम्पुट (दो मिट्टी के सकोरों के बीच) में बन्द करके, भूमि में गड्ढा खोदकर, 'अघोरेति' – इस मन्त्र का उच्चार

महा०

-रण करते हुए प्रतिमा को उसमें स्थापित करके पूजन करे। इस प्रयोग से स्त्री दुर्भाग्य को प्राप्त कर, रात-दिन दुःखी रहती है। वह कितनी भी सुन्दरी क्यों न हो, फिर भी पुरुष उसे सहन (प्रेम) नहीं कर पाता। यदि इस यन्त्र का प्रयोग पुरुष के लिए किया जाय तो उसे कोई स्त्री सहन (प्रेम) नहीं कर पाती, फिर वह भले ही कितना सुन्दर तथा सज्जन क्यों न हो।

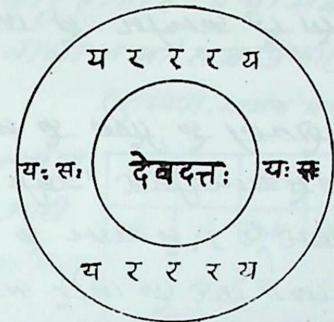
मता

यह यन्त्र स्त्री-पुरुषों में परस्पर विद्वेष करा देता है। इसका प्रयोग किसी अन्य कार्य के लिए नहीं करना चाहिए और न किसी अन्य व्यक्ति को देना ही चाहिए, क्योंकि यह यन्त्र यदि किसी को दिया जाय तो देने वाले के लिए हानिकर सिद्ध होता है।

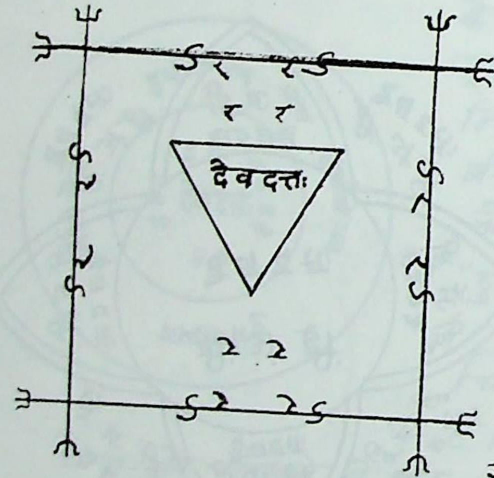
स्वामि-भृत्य विद्वेषण यन्त्र- रक्त मिश्रित विष द्वारा कौए के पंख की कलम से श्मशान वस्त्र (कफ़न) के ऊपर एक गोलाकार यन्त्र खींच कर, उसके एक अंगुल अन्तर से एक दूसरा गोलाकार यन्त्र खींचे। फिर पहले चक्र के भीतर सानुस्वार साध्य-व्यक्ति का नाम लिखे तथा दूसरे चक्र के मध्य में पूर्व तथा पश्चिम के भाग में 'य' कार पुटित तीन 'र' कार वर्णों को तथा उत्तर-दक्षिण भागों में विसर्गान्त 'यकार', 'सकारों' को लिखे।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे दाँई ओर प्रदर्शित किया गया है। यन्त्र में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, उस जगह साध्य-व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए। लोबानोपरान्त गन्ध-पुष्पादि से यन्त्र का पूजन कर, स्वामी-सेवक के आने-जाने के मार्ग में भूमि खोद कर दबा दें। इस भूमिस्थ यन्त्र के ऊपर पाँव पड़ते ही स्वामी तथा सेवक में परस्पर विद्वेष हो जाता है।

(स्वामि-भृत्य विद्वेषण यन्त्र)



(बन्धु-विद्वेषण यन्त्र)

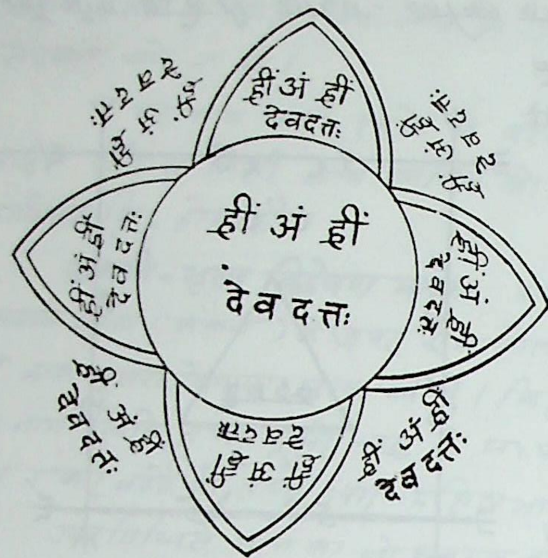


बन्धु-विद्वेषण यन्त्रम् - श्मशान-वस्त्र (कफन) के ऊपर, कौए के पंख की कलम से एक चतुष्कोण यन्त्र खींच कर, उसके भीतर एक त्रिकोण यन्त्र का निर्माण करे। फिर चतुष्कोण की रेखाओं में एक-एक त्रिशूल बनाये तथा पूर्व आदि चारों दिशाओं में दुहरे 'र' कार के रेख स्थापित करे। इसके बाद रत-शक्ति में, श्मशान के अंगार को मेदा के रक्त में घिस कर, उसके द्वारा त्रिकोण के भीतर साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखे तथा त्रिकोण के ऊपर नीचे दो-दो 'र' कार वर्ण लिखे।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई ओर प्रदर्शित किया गया है। यन्त्र में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

यन्त्र को लिखने के बाद बकरी के रक्त से मिश्रित भात-नैवेद्य द्वारा इसको बलि दें तथा गंध-पुष्प आदि से पूजन कर, सात अँगुल भूमि को खोद कर उसमें यन्त्र को दबावे। जिस स्थान पर यन्त्र गाड़ा जाएगा, वहाँ पाँव पड़ते ही साध्य-व्यक्ति का इच्छित व्यक्ति से विद्वेष हो जाएगा। जो दो व्यक्ति परस्पर तो मिले हों, परन्तु आपसे शत्रुता रखते हों तो उन दोनों में परस्पर द्वेष कराने के लिए इस यन्त्र का प्रयोग करना चाहिए तथा इसे उस मार्ग में ही गड्ढा खोद कर गाड़ना चाहिए, जहाँ से शत्रुओं के आने जाने का रास्ता हो।

(शत्रु-विद्वेषण यन्त्र)

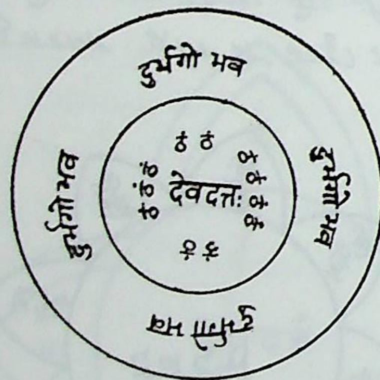


शत्रु-विद्वेषण यन्त्रम् – श्मशान-वस्त्र (कफन) पर, अपने रक्त द्वारा, कौए के पंख की कलम से सर्वप्रथम एक गोलाकार चक्र खींचे, फिर उसके ऊपर दुहरी रेखाओं वाले चार कमल-दलों को पूर्वादि चारों दिशाओं में स्थापित करें। तदुपरान्त उस गोलाकार चक्र के भीतर एवं पूर्वादि दिशाओं के चारों दलों तथा प्रत्येक दल के सन्धिभाग के समीप "ह्रीं अँ ह्रीं" इन तीन-तीन बीजों को ऊपरी भाग में लिखे तथा इनके नीचे प्रत्येक स्थान पर साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखें।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई ओर प्रदर्शित किया गया है। यन्त्र में जहाँ-जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ-वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

यन्त्र लिखने के बाद बकरी के रक्त से मिश्रित भात एवं नैवेद्य की बलि दे तथा गन्ध-पुष्पादि से पूजन करे। यन्त्र एवं गुरु का पूजन रात्रि के समय करना चाहिए। पूजनोपरान्त एक योगिनी को भोजन कराना चाहिए। इस यन्त्र को उदास शिव-मन्दिर अथवा श्मशान में स्थापित करना चाहिए तथा वहीं इसका पूजनादि भी करना चाहिए। इसे भूलकर भी घर में न लिखे, न पूजनादि ही करे। इसका प्रयोग भी नितान्त एकान्त में करे।

(विश्व-विद्वेषण यन्त्र)



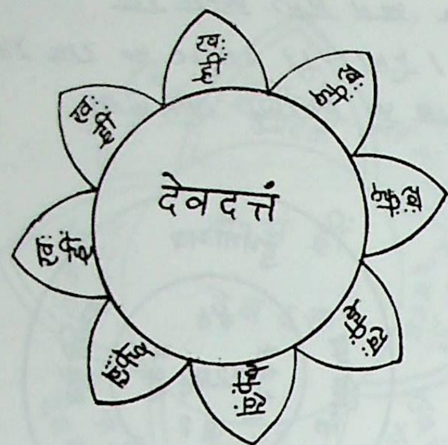
विश्व-विद्वेषण यन्त्रम् - कौआ, उल्लू तथा दुर्भगा स्त्री के रजोधर्म का रक्त - इन तीनों वस्तुओं को मिश्रित कर, कौए के पंख की कलम द्वारा ही भोजपत्र के ऊपर एक गोलाकार चक्र लिखे, फिर उससे अंगुलमात्र की दूरी पर एक दूसरा चक्र लिखे। तत्पश्चात चक्र के मध्यभाग में साध्य-व्यक्ति का नाम लिखकर उसके पूर्व तथा पश्चिम भाग में क्रमशः चार और तीन 'ठं' बीज तथा दक्षिण और उत्तर में दो-दो 'ठं' बीज लिखे। फिर बहिर्भाग के पूर्वादि चारों भागों में पुरुष के लिए "दुर्भगो भव" एवं स्त्री के लिए "दुर्भगा भव" इस वाक्य को लिखना चाहिए।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप तैयार होगा, उसे बाँई ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित चित्र में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, उस जगह 'साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

यन्त्र को लिखने के बाद उसका गन्ध-पुष्प आदि से पूजन करे। फिर उसे घास-फूस आदि में दबाकर घर के भीतर ही रखदे।

यह यन्त्र जब तक घर के भीतर रहेगा, तब तक उस घर में पारस्परिक विद्वेष शान्त न होगा अर्थात् उस घर में रहने वाले सब लोग एक-दूसरे से शत्रुता मानते हुए आपस में लड़ते-झगड़ते बने रहेंगे। 'विश्व विद्वेषण' नामक यह यन्त्र दौर्भाग्य की वृद्धि करने वाला है।

(स्त्रियाः उच्चाटन यन्त्र)

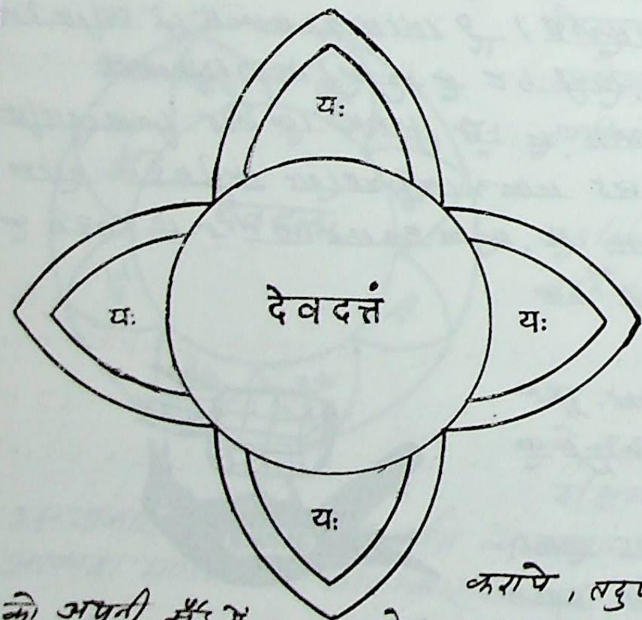


स्त्रियाः उच्चाटन यन्त्रम्- गधे के रक्त से, लकड़ी के टुकड़े (पट्टे) पर, कौए के पंख की कलम से एक गोलाकार चक्र खींच कर, उसे आठ कमलदलों से सुशोभित करे। फिर विसर्गांत 'ख'कार एवं 'ह्रीं' बीज को प्रत्येक दल में स्थापित कर, चक्र के मध्य में सानुस्वार साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखे। यथा- मनोरमां, कामिनीं, लता देवीं आदि।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप निर्मित होगा, उसे बाँई ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है, प्रदर्शित चित्र में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

यन्त्र को लिखने के बाद साधक को चाहिए कि वह कृष्णपक्ष की रात्रि में लालरंग के वस्त्र धारण कर, लाल रंग के फूलों की माला तथा रक्त-अनुलेपन से युक्त हो, लाल रंग के पुष्प, लाल रंग की गन्ध तथा स्वच्छ फलों द्वारा यन्त्र का पूजन कर, किसी कुमार को भोजन कराये। तदुपरान्त भूमि में गड्ढा खोद कर, उसमें यन्त्र को अधोमुख अर्थात् नीचे की ओर यन्त्र का मुख करके, दबादे। इस क्रिया से तीसरे ही दिन शत्रु का उच्चाटन होता है तथा वह वायु द्वारा उड़ाये गये पत्ते की भाँति इधर-से-उधर भागने लगता है। यह यन्त्र पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों का उच्चाटन करने में अधिक प्रभावशाली है। इसके प्रयोग से स्त्री का शीघ्र उच्चाटन होता है।

(सर्वजनोच्चाटन यन्त्र)



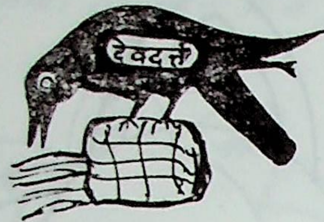
सर्वजनोच्चाटन यन्त्रम्- कौआ तथा उल्लू के रक्त से भोजपत्र के ऊपर एक गोलाकार यन्त्र खींच कर, उसके ऊपर दो रेखाओं से चार कमल दलों को चारों दिशाओं में खींचे, फिर प्रत्येक-दल में विसर्ग युक्त 'य' कार वर्ण को स्थापित कर, यन्त्र के मध्य भाग में सानुस्वार साध्य-व्यक्ति का नाम लिखे।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप तैयार होगा, उसे बाँई ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित चित्र में जिस स्थान पर 'देवदत्तं' लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

यन्त्र-निर्माणोपरान्त कृष्ण पक्ष की रात्रि के समय लाल वस्त्र धारण कर, लाल रंग की माला एवं वस्त्र के अनुलेपन से युक्त हो, लाल रंग के पुष्प, गंध तथा स्वच्छ फलों से यन्त्र का पूजन कर, यथाशक्ति दक्षिणा देकर किसी कुमार को भोजन करावे, तदुपरान्त-"अंजन पर्वत के समान नीलवर्ण वाले गजमुख गणेश जी शत्रु को अपनी सूँड में लपेट कर आकाशमण्डल में उछाल रहे हैं" इस विधि से गणेश जी का ध्यान करे। 21 दिनों तक यह प्रयोग करे। नित्य यन्त्र लिखे तथा अन्तिम दिन यन्त्र के टुकड़े-टुकड़े कर, गुड़ भात में मिला कर कौओं को खिला दे।

महा०

(उच्चाटनकर यन्त्र)



अथ उच्चाटनकर यन्त्रम्- विष, तालक, गोदन्तीहरताल और चीता- इन सब वस्तुओं को इकट्ठा कर, कौए के पंख की कलम से 'श्मशान-वस्त्र', अर्थात् मुर्दे पर डाले गए कफन के कपड़े पर कौए का एक चित्र बनाये. उसके उदर में साध्य-व्यक्ति के नाम को अनुस्वार सहित लिखे।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप निर्मित होगा, उसे बाँई ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। चित्र में जहाँ 'देवदत्तं' लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

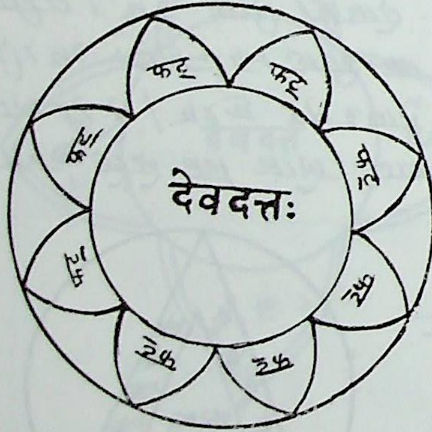
यन्त्र-लिखने के बाद कृष्णपक्ष की रात्रि में लाल वस्त्र धारण कर, लाल रंग की माला एवं रक्त के अनुलेपन से युक्त हो, लाल रंग के पुष्प, गंध तथा स्वच्छ फलों से यन्त्र का पूजन कर, यथाशक्ति दक्षिणा देकर किसी कुमार को भोजन कराये तदुपरान्त गणेशजी का ध्यान इस प्रकार करे- 'अंजन पर्वत के समान नील वर्ण वाले, गजमुखधारी श्रीगणेशजी शत्रु को अपनी सूँड़ में पकड़ कर, आकाशमण्डल में उछाल रहे हैं।

सामान्यतः उक्त विधि से 21 दिनों तक प्रयोग करना चाहिए। परन्तु इस यन्त्र की विशेषता यह है कि यह शीघ्र ही प्रभाव दिखाता है। पूजनोपरान्त यन्त्र को भिलावे के वृक्ष के पाँचे भाग में, रात्रि के समय टाँग दे यन्त्र को अधोमुख टाँगना चाहिए। इस क्रिया से तीसरे ही दिन साध्य-व्यक्ति का उस स्थान से उच्चाटन हो जाता है। जब तक चित्र टँगा रहता है, तब तक वह उद्विग्न बना रहता है और उसे कहीं भी सुख नहीं मिलता।

मन्त्र 226

परमोच्चाटन यन्त्रम्-

(परमोच्चाटन यन्त्र)



हल्दी के वृक्ष के रस से भोजपत्र के ऊपर एक छोटा गोलाकार चक्र खींच कर, उसके बहिर्भाग में अष्टदलकमल लगाकर एक और ऊपर गोलाकार चक्र खींचें, ताकि सभी दल उसके भीतर समाविष्ट हो जाँय। फिर प्रत्येक दल में 'फट्' बीज को लिख कर, छोटे गोलाकार चक्र के भीतर साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखें।

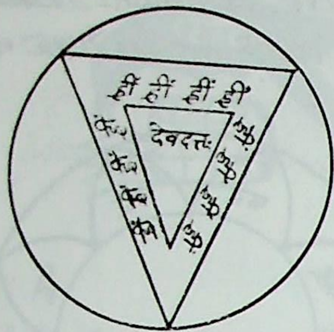
उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप तय्यार होगा, उसे बाँई ओर के चक्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित चित्र में जिस स्थान पर 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

यन्त्र लिखने के बाद, कृष्णपक्ष की रात्रि के समय लाल वस्त्र धारण कर. लाल रंग की माला तथा रक्त रक्त के अनुलेपन से युक्त हो, लाल रंग के पुष्प, गंध तथा स्वच्छ फलों से यन्त्र का पूजन कर, यथाशक्ति दक्षिणा देकर, किसी कुमार को भोजन कराये, तदुपरान्त गणेश जी का ध्यान इस प्रकार करे-" अंजन पर्वत के समान नीलवर्ण वाले गजमुख गणेश जी शत्रु को अपनी सूँड़ में लपेट कर आकाश मण्डल में बारम्बार उछाल रहे हैं।"

उक्त विधि से लेखन, पूजन, ध्यान आदि के उपरान्त यन्त्र का चूर्ण करके किसी खाने-पीने की वस्तु के माध्यम से साध्य-व्यक्ति के पेट में पहुँचा दे तो उसका परमोच्चाटन होता है।

महा०

(त्रैलोक्योच्चाटन यन्त्र)



त्रैलोक्योच्चाटन यन्त्रम्- काले मुर्गे के रक्त से भोजपत्र के ऊपर एक बड़ा त्रिकोण यन्त्र खींचकर, उसके भीतर एक छोटा त्रिकोण यन्त्र और खींचें, तत्पश्चात् -न दोनों के ऊपर एक गोलाचक्र खींचकर, त्रिकोणों को उसके अन्तर्गत कर दें।

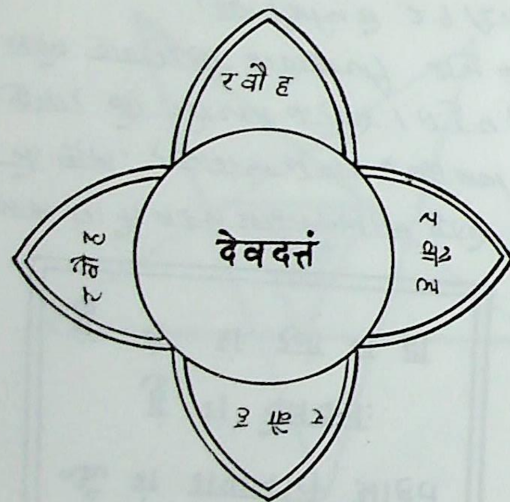
फिर छोटे त्रिकोण के भीतर मध्यभाग में 'साध्य-व्यक्ति' का नाम लिखें तथा बड़े त्रिकोण की प्रत्येक रेखा के नीचे चार-चार 'ह्रीं' बीजों को लिखें।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित चित्र में जहाँ 'देवदत्तः' लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

यन्त्रलेखनोपरान्त गणेशजी का इस प्रकार ध्यान करें- नील अंजन के पर्वत जैसे वर्ण वाले गजानन गणेशजी प्रभु को अपनी सूँड में लपेटकर ऊपर की ओर बारम्बार उछाल रहे हैं। परन्तु इस ध्यान से पहले लाल वस्त्र धारण कर, लाल रंग के फूलों की माला पहिन तथा शरीर पर लालचंदन आदि का अनुलेपन करके पुष्प, गंध तथा धूप फलों से यन्त्र का पूजन करना चाहिए। यह सारी क्रियाएँ रात्रि में ही करनी चाहिए।

पूजन करने के बाद यन्त्र को एक कुत्ते के गले में बाँध देना चाहिए। वह कुत्ता जहाँ-जहाँ भी जाएगा, साध्य-व्यक्ति भी उच्चाटन को प्राप्त होकर वहीं-वहीं भागेगा। यह यन्त्र त्रिलोकी का उच्चाटन करने वाला है।

(शत्रोरुच्चाटन यन्त्र)



शत्रोरुच्चाटन यन्त्र- नीम के पत्तों के रस से भोजपत्र के ऊपर कौए के पंख की कलम से एक गोलाकार चक्र खींच कर, उस पर दो रेखाओं से युक्त चारों दिशाओं में चार कमलदलों का निर्माण करें तथा प्रत्येक दल में "र, वौ, ह"- इन वर्णों को लिखकर, यन्त्र के मध्यभाग में सानुस्वार साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखे। इस विधि से यन्त्र का जो स्वरूप तय्यार होगा, उसे बाँई ओर प्रदर्शित चित्र में दिखाया गया है। प्रदर्शित चित्र में जहाँ "देवदत्तं" लिखा है, वहाँ अनुस्वार युक्त साध्य-व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

यन्त्र लेखनोपरान्त रात्रि के समय लाल रंग के वस्त्र पहिन कर तथा लाल रंग के पुष्पों की माला गले में धारण कर, शरीर पर लाल चंदन का अनुलेपन करके लाल रंग के पुष्प, लाल रंग की गंध (रक्तचंदन आदि) तथा लाल रंग के फलों से यन्त्र का पूजन कर, किसी कुमार को भोजन कराये तथा उसे दक्षिणा देकर सन्तुष्ट करें। इसके उपरान्त अंजन पर्वत के समान नीलवर्ण गजमुख गणेशजी द्वारा अपनी सूँड में शत्रु को लपेटकर ऊपर को उछालते हुए ध्यान करे। फिर भूमि में गड्ढा खोद कर उसमें यन्त्र को अधोमुख दबा दे। इस यन्त्र के प्रभाव से शत्रु का, फिर चाहे वह देश में हो अथवा विदेश में, सातवें दिन ही उच्चाटन हो जाता है।

(शत्रूच्चाटन यन्त्र)

ॐ गं गणपति प्रहितं
हुं गं देवदत्तः
हुं गं धं स्वां ग हा

शत्रूच्चाटन यन्त्रम् - अपनी अनामिका अँगुली के रक्त द्वारा भोजपत्र के ऊपर दो रेखाओं से युक्त एक चतुष्कोण यन्त्र का निर्माण करे। फिर उसके भीतर तीन रेखाओं की कल्पना करके, पहली रेखा में - "ॐ गणपति प्रहितं", दूसरी रेखा में - "हुं, गं" को आदि में लगाकर साध्य-व्यक्ति का नाम तथा तीसरी रेखा में - "हुं गं घं स्वां ग हा" - इन बीजों को लिखे।

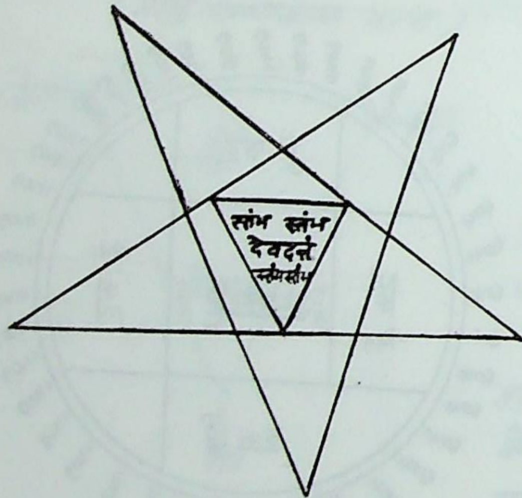
उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप तय्यार होगा, उसे बाँई ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है।

यन्त्र को लिखने के बाद साधक को चाहिए कि वह रात्रि के समय लाल रंग के वस्त्र पहिन, लाल पुष्पों की माला धारण कर, शरीर पर लाल-चंदन आदि का अनुलेपन कर, लाल रंग के फूल, रक्तगंध तथा रक्तवर्ण के फलों द्वारा यन्त्र का पूजन करे तथा यथाशक्ति दक्षिणा देकर किसी कुमार को भोजन कराये। तदुपरान्त गणेशजी का ध्यान इस प्रकार करे - " अंजन पर्वत के समान नीलवर्ण वाले गजमुख गणेशजी शत्रु को अपनी सूँड़ में लपेट कर, आकाशमण्डल में उछाल रहे हैं।

उक्त विधि से 21 दिन के भीतर ही शत्रु का उच्चाटन हो जाता है। पूजनादि की क्रिया समाप्त हो जाने के बाद यन्त्र के टुकड़े करके, जूठे भात में मिलाकर, उसे अन्तिम दिन कौओं को खिला देना चाहिए। यह यन्त्र शत्रु का निश्चित रूप से उच्चाटन करने वाला है।

महा०

(नर-नारी मारण यन्त्र)



नर-नारी-मारण यन्त्रम्- स्त्री के मासिकधर्म के रक्त में श्मशान की भस्म को मिलाकर भिलावे के पत्ते पर, कौए के पंख की कलम से एक त्रिकोण यन्त्र खींच कर, उसके बहिर्भाग में एक पंचकोण यंत्र खींचें, तत्पश्चात् त्रिकोण के भीतर "स्तंभ- स्तंभ" इन बीजों से पुटित साध्य-व्यक्ति के नाम को सानुस्वार लिख कर, यन्त्र को नर-नलिका अर्थात् मनुष्य की हड्डी के भीतर बन्द करदे।

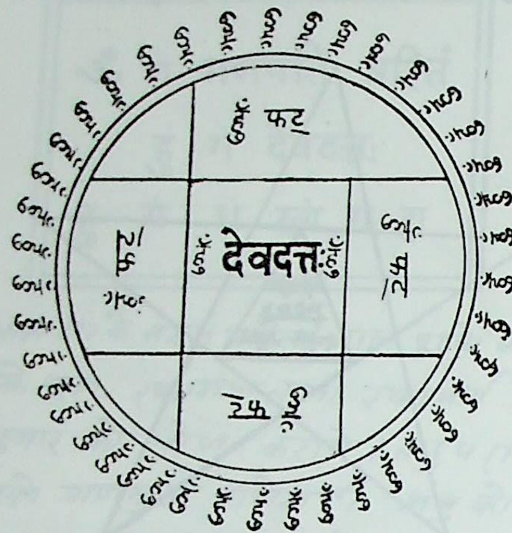
महा०

पूर्वोक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। इस चित्र में जहाँ 'देवदत्तं' लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को, उसके अन्तिम अक्षर के ऊपर अनुस्वार लगा कर लिखना चाहिए।

यन्त्र को नर-नलिका में बन्द करने के बाद, साध्य-व्यक्ति के मूत्र से सिंचित मिट्टी से पूर्ण करे, फिर रात्रि के समय यन्त्र का पूजन करने के बाद, उसे श्मशान की भूमि को खोद कर, उस गड्ढे के भीतर दबा कर बन्द करदे। इस यन्त्र के प्रयोग से शत्रु को मूत्र-रोग उत्पन्न होता है तथा सात दिन के भीतर ही उसकी मृत्यु हो जाती है। यह स्त्री तथा पुरुष- दोनों के लिए मारक है। यदि एक जीव की बलि दी जाय तो इस यन्त्र के प्रभाव से छुटकारा मिल सकता है, अन्यथा साध्य-व्यक्ति मर जाता है।

यन्त्र २३२

(देशान्तरस्थ शत्रु-मारण यन्त्र)

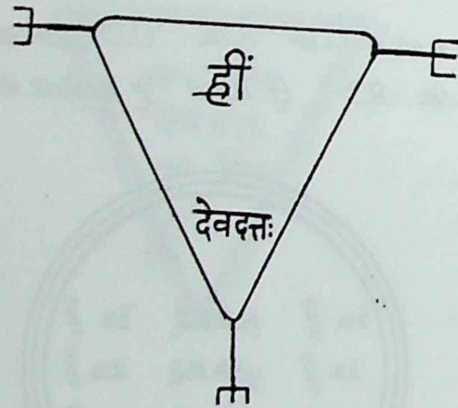


देशान्तरस्थ-शत्रु-मारण यन्त्रम् - श्मशान के अंगार तथा विष को बकरी के रक्त में मिला कर, मनुष्य के कपाल के मध्यभाग में अर्थात् मृत-मनुष्य के कपाल की हड्डी के बीच में, कौए की कलम से, दो रेखाओं युक्त एक गोलाकार चक्र खींचे। फिर उसके मध्यभाग में आठ दल इस प्रकार के खींचे, जैसे कि गृहकाण्डी में खींचे जाते हैं, फिर प्रत्येक दल में 'हुं फट्' बीज को लिखे तथा यन्त्र के मध्य भाग में दो 'हुं' कार के बीच साध्य-व्यक्ति का नाम लिखे। इस विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित चित्र में जहाँ '**देवदत्तः**' लिखा है, वहाँ साध्य व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए। यन्त्र के ऊपरी भाग में 'हुं' बीज लिखे।

महा०

यन्त्र के तैयार हो जाने पर उसे शराव-सम्पुट अर्थात् दो मिट्टी के शकोरों के बीच में रख कर, भस्म से पूरित करे, फिर उसे अग्नि के ऊपर स्थापित करे। इसे प्रतिदिन थोड़ा-थोड़ा अग्नि से जलाना चाहिए। २१वें दिन रात्रि के समय (जब यन्त्र जल जाए इसी अवधि में शत्रु को ज्वर आना आरंभ हो जाएगा तथा २१वें दिन उसकी मृत्यु भी हो जाएगी) इस यन्त्र की पूजन-क्रियादि पूर्वोक्त यन्त्र की भाँति ही है। यह परदेश में स्थित शत्रु के मारणार्थ प्रयुक्त करना चाहिए।

(शत्रु-प्रणाशक यन्त्र)



शत्रु-प्रणाशक यन्त्रम्- विष तथा हरताल को एकत्र कर, कौए के पंख की कलम से, भोजपत्र के ऊपर एक त्रिशूल युक्त त्रिकोण यन्त्र खींच कर, उसके मध्य भाग में 'ह्रीं' बीज को तथा उस बीज के नीचे साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखे।

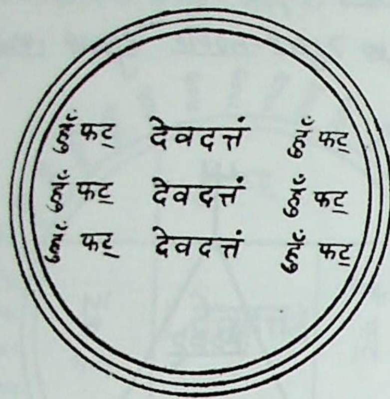
उक्त विधि से यन्त्र जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित चित्र में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

लेखनोपरान्त यन्त्र को शराव-सम्पुट अर्थात् मिट्टी के दो सकोरों के बीच में बन्द करके बलि, मांस, पूजन-सामग्री तथा स्वरक्त से पूजन कर, नर-नलिका में रखकर, श्मशान भूमि में गड्ढा खोद कर गाड़ दें।

पूजन करने के बाद यन्त्र को शराव-सम्पुट से निकाल कर, नर-नलिका अर्थात् मनुष्य-शरीर की हड्डी में भर कर, उस नलिका को भूमि के गड्ढे में गाड़ देना चाहिए।

इस क्रिया को करने से शत्रु की मृत्यु अचानक ही हो जाती है। मारण-प्रयोगों में इस प्रयोग को अत्यधिक प्रभावकारी बताया गया है। यदि इस यन्त्र के प्रभाव को नष्ट कर देने की आवश्यकता हो तो किसी एक जीव की बलि देनी चाहिए। इस से साध्य-व्यक्ति की जान बच जायगी।

(सर्वजन-मारण यन्त्र)



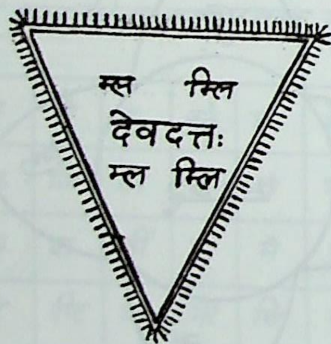
सर्वजन-मारण यन्त्रम्- मनुष्य के रक्त में श्मशान के अंगारे को घिस कर उसमें विष मिलाये, तत्पश्चात् श्मशान-वस्त्र (मुर्दे को उढ़ाया गया कफन) के ऊपर, कौए के पंख की कलम से तीन वर्तुल (गोलाकार) रेखायें एक दूसरी से थोड़ी-थोड़ी दूरी पर खींचे। फिर उसके भीतर तीन रेखाओं की कल्पना करके, प्रत्येक रेखा में 'हुं फट्' बीज-मन्त्रों से सम्पुटित साध्य-व्यक्ति के नाम को अनुस्वार सहित लिखे। महा०

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँयीं ओर प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित चित्र में जहाँ-जहाँ 'देवदत्त' शब्द लिखा है, वहाँ-वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

यन्त्र को लिखने के बाद शत्रु के पाँवों के नीचे की धूलि-मिट्टी में राजिका (राई) मिश्रित कर, एक प्रतिमा का निर्माण करें, फिर उस प्रतिमा के हृदय में इस यन्त्र को स्थापित कर, पूर्वोक्त विधि से बलि, माँस, पूजन-सामग्री तथा रक्त द्वारा यन्त्र का पूजन करें। फिर उसे पृथ्वी में गड्ढा खोदकर गाड़ दें।

इस क्रिया से शत्रु के शरीर में दाह तथा अग्नि उत्पन्न होती है तथा तीसरे दिन मस्तिष्क में जोर पीड़ा होती है, तदुपरान्त हाथ-पाँवों में दाह उत्पन्न होकर, सातवें दिन मृत्यु हो जाती है। यह 'सर्वजन मारण यन्त्र' अत्यन्त प्रभावकारी बताया गया है।

(शत्रु-मारण यन्त्र)



शत्रु-मारण यन्त्रम् :- कृष्णपक्ष की चतुर्दशी की रात्रि में श्मशान के अंगार (कोयले) द्वारा, धतूरे के रस से, मनुष्य के कपाल (मुर्दा मनुष्य की खोपड़ी) पर एक दुहरी रेखाओं वाला त्रिकोण यन्त्र खींच कर, उसके ऊपर भालानुमा 108 रेखाएँ खींचे। त्रिकोण के तीनों ओर 36-36 रेखाएँ खींची जायेंगी। फिर यन्त्र के मध्य भाग में तीन रेखाओं की कल्पना कर, पहली तथा तीसरी रेखा में 'म्ल' 'म्लि' - ये दो बीज तथा मध्य में साध्य-व्यक्ति का नाम लिखे। नाम के अन्तिम अक्षर के साथ विसर्ग लगाना चाहिए।

महा.

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप तैयार होगा, उसे बाईं ओर प्रद-र्शित किया गया है। प्रदर्शित चित्र में जहाँ 'देवदत्तः' लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए। नाम के अगल-बगल में कुछ न लिखे।

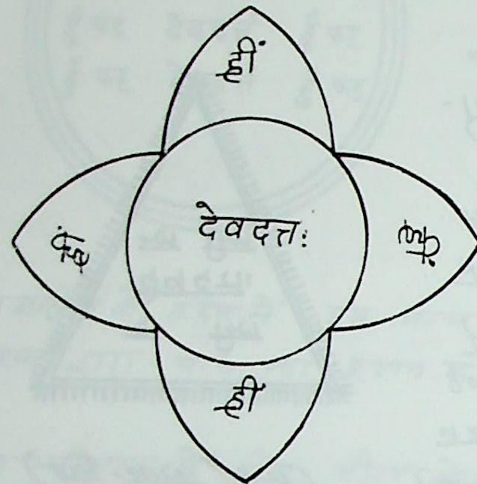
यन्त्र को लिखने के बाद उस यन्त्र लिखित कपाल को शराव सम्पुट अर्थात् मिट्टी के दो सकोरों के बीच में रख कर बलि, मांस, पूजन-सामग्री तथा स्व-रक्त से पूजा कर, उसी जगह गड्ढा खोद कर गाड़ दे तथा रात्रि के समय उस स्थान के ऊपर नित्य दीपक जलाता रहे। दीपक रातभर चलना चाहिए।

उक्त प्रक्रिया से शत्रु को तीसरे दिन ज्वर आजाता है तथा क्रमशः रोग प्रबल हो कर वह मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। यदि एक जीव की बलि दी जाय तो वह जीवित बच सकता है, अन्यथा नहीं।

अथ यन्त्र महार्णव (चतुर्थ खण्ड)

'यन्त्र महार्णव' के इस चतुर्थ खण्ड में विभिन्न कामनाओं की पूर्ति हेतु लोक-प्रचलित यन्त्रों को संकलित किया गया है। ये सभी यन्त्र साधन में सरल तथा सभी के करने योग्य हैं।

(भृत्य-वशीकरण पिशाचि यन्त्र)



भृत्य-वशीकरण पिशाचि यन्त्रम्- गोरोचन द्वारा भोजपत्र के ऊपर एक गोलाकार चक्र खींच कर, उसे पूर्व आदि चारों दिशाओं में कमलदलों से युक्त करें। तत्पश्चात चक्र के भीतर साध्य (सेवक) के नामाक्षरों को लिख कर, पूर्व आदि चारों दिशाओं के दलों में 'ह्रीं' बीज स्थापित करें।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित यन्त्र के मध्यभाग में जहाँ 'देवदत्तः' लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति अर्थात् जिस सेवक को वश में करना हो, उसका नाम लिखना चाहिए।

लेखनोपरान्त यन्त्र को पुष्प आदि से पूज कर, दही के भीतर रख देना चाहिए। इस यन्त्र के प्रयोग से दुष्ट सेवक वशीभूत होकर स्वामी को हानि पहुँचाने का विचार त्याग देता है। जब कोई सेवक स्वामी के धन आदि को हानि पहुँचाने पर तुला हो, और स्वामी उसे रोक पाने में स्वयं को असमर्थ पा रहा हो, तब इसका प्रयोग करना चाहिए।

(द्यूत-विजयकर प्रसन्न यन्त्र)

मे	खै	र	क्तं	द	ये	रु	पा
क	जि	ज	तं	द	नी	च	नः
छ	दा	वीं	य	मं	त्रं	ते	ष
हे	ष्टि	वा	मो	क्षि	ण	पा	त्रं
त्रं	पा	ण	क्षि	मो	वा	ष्टि	हे
ष	ते	त्रं	मं	य	वीं	दा	छ
नः	च	नी	द	तं	ज	जि	क
पा	रु	ये	द	क्तं	र	खै	मे

द्यूत-विजयकर प्रसन्न यन्त्रम्- रात्रि के समय एरण्ड के पत्ते पर, कौए के पंख की कलम से, काली स्याही द्वारा, चौंसठ कोष्ठकों वाला एक यन्त्र तैयार करे तथा उसके प्रत्येक कोष्ठक में विलोम से इन 32 बीजों को स्थापित करे — "मे, खै, र, क्तं, द, ये, रु, पा, क, जि, ज, तं, द, नी, च, नः, छ, दा, वीं, य, मं, त्रं, ते, ष, हे, ष्टि, वा, मो, क्षि, ण, पा, त्रं, त्रं, पा, ण, क्षि, मो, वा, ष्टि, हे, ष, ते, त्रं, मं, य, वीं, दा, छ, नः, च, नी, द, तं, ज, जि, क, पा, रु, ये, द, क्तं, र, खै, मे।"

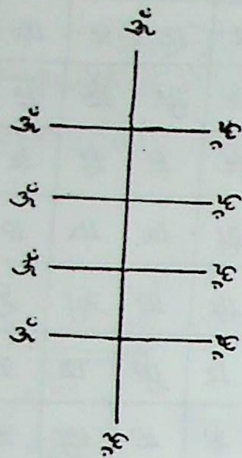
उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप तैयार होगा, उसे बाँई ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है।

जुआ खेलने वाला जो व्यक्ति इस यन्त्र को धारण करके जुआ खेलने जाता है, वह जुए में अवश्य विजयी होता है। इस यन्त्र को लिखने के बाद कलावे में लपेट ले, फिर उसको गंध, पुष्प, धूप, दीप आदि से पूजन कर, दाँई भुजा में बाँध ले।

यह 'प्रसन्न यन्त्र' नामक यन्त्र जुआ खेलने वालों को प्रसन्नता प्रदान कर, उन्हें द्यूत-क्रीड़ा में विजयी बनाता है। इस यन्त्र को अपनी दाँई भुजा में इस प्रकार से धारण करना चाहिए कि वह किसी अन्य को दिखाई न दे। अर्थात् इसे वस्त्र के भीतर धारण किए रहें।

महा०

(डाकिनी-त्रासन यन्त्र)



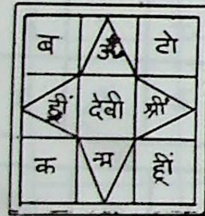
डाकिनी-त्रासन-यन्त्र - बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को काली स्याही द्वारा लिख कर लोबान की धूप दें। फिर यन्त्र को ओखली में रख कर कूटें तो इस प्रयोग से डाकिनी का मस्तक फूट जाता है और वह चिल्ला कर सब कुछ बताने लगती है अर्थात वह स्पष्ट करती है कि उसने बालक को क्यों पकड़ा था। इसके बाद वह स्व-ग्रस्त व्यक्ति को छोड़ कर भाग जाती है। डाकिनी प्रायः छोटे बच्चों को ही पकड़ती हैं, परन्तु कभी-कभी बड़ी आयुवालों को भी परेशान करती हैं।

(प्रेत-बाधा-नाशन यन्त्र)

ॐ	ह्रीं	२	७
६	३	क्रों	क्लीं
स्य	य	ट	१
तं	दं	सं	जं
कं	जि	स	त
४	५	टं	टं

प्रेत-बाधा-नाशन यन्त्र - दाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को गंध आदि से भोजपत्र के ऊपर लिखना चाहिए। इसकी विधि यह है कि सर्व प्रथम ५ लम्बी खड़ी रेखाएं तथा ७ आड़ी रेखाएं खींचें। ये सब परस्पर मिली रहें। इस प्रकार २४ कोष्ठक वाला यन्त्र तैयार होगा। फिर यन्त्र के कोष्ठकों में क्रमशः — "ॐ, ह्रीं, २, ७, ६, ३, क्रों, क्लीं, स्य, य, ट, १, तं, दं, सं, जं, कं, जि, स, त, ४, ५, टं, टं" — इन अक्षर-वर्णों तथा अङ्कों को लिखें। इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा वह बाँई ओर के चित्र में प्रदर्शित है। यन्त्र को लिखने के बाद पुष्प, गंध, धूप, दीप आदि से उसका पूजन करें, फिर ताँबे के ताबीज में भर कर, प्रेत-ग्रस्त व्यक्ति के कण्ठ में बाँध दें तो प्रेत उसे छोड़ कर भाग जाएगा।

(बालाजी का यन्त्र)

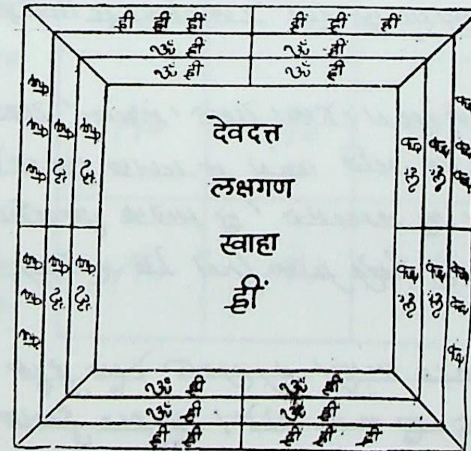


बालाजी का यन्त्र- बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को दीपावली की रात्रि में भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध अथवा लाल चंदन से लिखें। लेखनोपरान्त यन्त्र को पुष्प, गंध, धूप, दीप आदि देकर पूजें तथा हनुमान जी की विधिपूर्वक पूजा कर, यन्त्र को अपने सामने रखकर यह मन्त्र पढ़े-

"बैरी लक्ष्मी देवी लक्ष्मी दे सिद्धि करणी मम भंडार पुरी क्रिंयं स्वाहा।"

उक्त मन्त्र का 1008 बार जप करके यन्त्र को द्रव्य (धन) अथवा अन्न के भीतर रखकर 8 दिन बाद खर्च करना आरंभ करे तो किसी प्रकार की कमी नहीं पड़ेगी।

(शत्रु-सेना भगाने का यन्त्र)



सेना भगाने का यन्त्र- दाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को शंखाहूली, सूरजमुखी तथा गुलदौने के रस से नगाड़े के ऊपर लिख कर, उस पर चोब देने से अर्थात यन्त्र लिखित नगाड़े को बजाने से शत्रु की सेना भाग जाती है। प्रदर्शित यन्त्र में जिस स्थान पर 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ जिस शत्रु की सेना हो, उसका नाम लिखना चाहिए। इस यन्त्र के प्रयोग से शत्रु की सेना युद्धभूमि से भाग जाती है।

(पन्द्रह के यन्त्र के विविध रूप)

६	१	८
७	५	३
२	९	४

४	३	८
९	५	१
२	७	६

८	३	४
१	५	९
६	७	२

२	७	६
९	५	१
४	३	८

६	७	२
१	५	९
८	३	४

२	९	४
७	५	३
६	१	८

सर्वसिद्धि दाता पन्द्रह का यन्त्र - पन्द्रह के यन्त्र को 'यन्त्रराज' माना गया है तथा इसकी महिमा अपार बताई गई है। इस यन्त्र के अनेक रूप होते हैं, जिनमें से ६ रूपों को बाँईं ओर प्रदर्शित किया गया है। इसके प्रमुख प्रयोग निम्नानुसार हैं—

महा०

(१) इसे चमेली की कलम से लिखने पर सभी कार्य सिद्ध होते हैं।

(२) इसे आकर्षण के लिए जामुन की कलम से, स्तम्भन के लिए बरगद की कलम से, वशीकरण के लिए कुशा की कलम से तथा शुभ-कार्यों के लिए सोने अथवा चाँदी की कलम से केशर, चन्दन, अगर, कपूर तथा कस्तूरी द्वारा लिखना चाहिए।

(३) इस यन्त्र को सवा लाख की संख्या में लिखकर, आटे की गोलियों में 'अलग-अलग बन्द करें तथा उन गोलियों को ऐसे जलाशय में डालदें, जिसमें काफी संख्या में मछलियाँ हों और वे उन गोलियों को खालें। मछलियों को गोलियाँ डालते समय इस मन्त्र को पढ़ते जाना चाहिए - "ॐ ह्रीं क्लीं पार स्वपक्ष्या नवनागकुल सेवनाय स्वाहा"।

(४) आक के पत्तों के रस से आक के पत्ते पर ही इस यन्त्र को १०८ की संख्या में लिखकर कीकर के वृक्ष में बाँध देने से शत्रु को ज्वर तथा पेटशूल का शिकार बनना पड़ता है।

(शत्रु उच्चाटन यन्त्र)

लं०	लं०	लं०	लं०
लं०	लं०	लं०	लं०
लं०	लं०	लं०	लं०
लं०	लं०	लं०	लं०

शत्रु- उच्चाटन यन्त्र- बाँईं ओर प्रदर्शित यन्त्र को ताँबे के पत्र पर लोहे की कलम से लिखकर साध्य-व्यक्ति के घर के सामने गाड़ देने अथवा किसी बबूल के वृक्ष पर अधोमुख टाँग देने से शत्रु का उच्चाटन होता है। लिखने के बाद यन्त्र का पूजन भी करें।

देशाटन कारक यन्त्र-

दाँईं ओर प्रदर्शित यन्त्र को श्मशान के कोयले द्वारा शत्रु के किसी पहनने के वस्त्र पर लिख देने से उसका उच्चाटन होता है और वह अपना घर छोड़ कर, देश-विदेश में इधर-उधर भटकता घूमता रहता है। इस यन्त्र के लिए शत्रु के ऐसे वस्त्र को हस्तगत करना चाहिए, जो उसका पहना हुआ हो, भले ही वह फटा-पुराना जीर्ण-शीर्ण ही क्यों न हो।

तं०	तं०	तं०	तं०
तं०	तं०	तं०	तं०
तं०	तं०	तं०	तं०
तं०	तं०	तं०	तं०

(प्रसिद्धि दाता यन्त्र)

दं०	दं०	दं०	दं०
वं०	वं०	वं०	वं०
सं०	सं०	सं०	सं०
अं०	अं०	अं०	अं०

प्रसिद्धि दाता यन्त्र- बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजपत्र के ऊपर सवा लाख की संख्या में लिखें (यन्त्र को लिखने के लिए भोजपत्र के जो टुकड़े लिए जाँय, वे साफ-सुथरे तथा अविच्छिन्न होने चाहिए। यन्त्र लिखने का कार्य प्रतिदिन एक निश्चित संख्या में करना चाहिए। इस यन्त्र के लिखने वाले को प्रसिद्धि प्राप्त होती है।

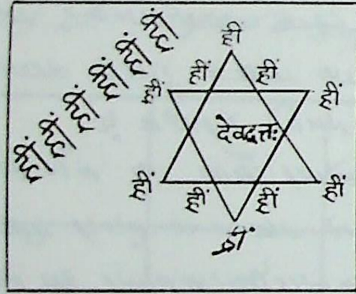
(दुःस्वप्न-नाशक यन्त्र)

हं०	सं०	खं०	फं०
षं०	दं०	घं०	जं०
नं०	पं०	मं०	दं०
चं०	यं०	जं०	दं०

दुःस्वप्ननाशक यन्त्र- दाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजपत्र पर लिखकर पुष्प, गंध, धूप, दीप आदि से पूजन करें तथा रात को सोते समय अपने सिरहाने रख लें तो

बुरे स्वप्नों का दीखना बन्द हो जाता है। यन्त्र प्रति...

(लक्ष्मी-प्राप्ति यन्त्र)



लक्ष्मी-प्राप्ति यन्त्र- बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजपत्र पर लिखें। इस हेतु पहले एक षट्कोण यन्त्र का निर्माण करें, फिर उसके प्रत्येक कोणपर प्रत्येक कोणों के मध्यभाग में एक-एक 'ह्रीं' कार लिखें तथा बाँई ओर को अलग तिरछे रूप में ६ ह्रींकार लगे। इसके बाद चाहें तो सम्पूर्ण यन्त्र को बाहर एक चतुष्कोण से घेर दें अथवा न घेरें।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप तय्यार होगा, उसे बाँई ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शित चित्र के मध्य-भाग में जहाँ "देवदत्तः" लिखा है, वहाँ साधक को अपना नाम लिखना चाहिए।

यन्त्र को लिखने के बाद उसका गंध, पुष्प, धूप, दीप आदि से पूजन करे तदुपरान्त — "ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः" इस मन्त्र का तीन लाख की संख्या में जप करे। जप के बाद दशांश होम आदि करके ब्राह्मणों को भोजन कराये तथा उन्हें दक्षिणा देकर सन्तुष्ट करे। इस विधि से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। इसके बाद नित्यप्रति यन्त्र को धूप देकर १०८ बार उक्त मन्त्र का जप करता रहे तथा यन्त्र को अपनी पगड़ी में रखे।

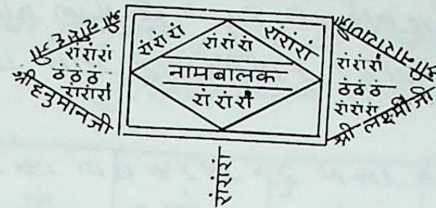
इस यन्त्र तथा मन्त्र जप के प्रभाव से साधक को धन का लाभ होता रहता है। धन-ऐश्वर्य की प्राप्ति हेतु तन्त्र-शास्त्र में अनेक प्रकार के यन्त्र-मन्त्रों के प्रयोग पाये जाते हैं, पर उन सब में सरल तथा प्रभावकारी है। स्त्री-पुरुष दोनों ही इस यन्त्र-मन्त्र का साधन कर सकते हैं।

(हौलदिली का यन्त्र)

ह्र	ल्व	म	ल	क
ल	म	ल	क	ह्र
म	ल	क	ह्र	ल
ल	क	ह्र	ल	म
क	ह्र	ल	म	ल

हौलदिली का यन्त्र - बाँई ओर ऊपर प्रदर्शित यन्त्र को लालचंदन द्वारा काँसे की थाली में लिखकर लोबान की धूप दें। फिर थाली को पानी से धोकर, उस पानी को स्वयं पी लें। ऐसा चालीस दिनों तक करते रहने से हौलदिली अर्थात दिल की कमजोरी और घबराहट से छुटकारा मिल जाता है।

(बाल-रक्षा यन्त्र)



बालरक्षा यन्त्र – मंगलवार के दिन हनुमान जी का पूजन कर, ऊपर दाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को पीपल के पत्ते पर लिखकर गूगल की धूनी दे, फिर उसमें डोरा लपेट कर तीन गाँठें बाँधे तथा प्रत्येक गाँठ को लगाते समय आगे लिखे मन्त्र का सात बार जप करें। प्रदर्शित यन्त्र के मध्यभाग में जहाँ 'नाम बालक' लिखा है, वहाँ बालक का नाम लिखना चाहिए। मन्त्र निम्नानुसार है-

"ॐ महावीर हनुमंतवीर तेरे तरकस में सौ सौ तीर। खिंचा बाएँ खिंचा दाहिने खिंच खिंच आगे होय। अचल गुसाईं सबका काया मंगल होय। इंद्रासन की बाँध के वारे धूमें मसाण। इस काया को छलछिद्र कावे तो हनुमंत तेरी आन।" — यह मन्त्र हनुमान जी की पूजा करके, मंगलवार के दिन 108 बार जपना चाहिए। सात मंगलवारों तक नियमित जप करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है। मन्त्र के सिद्ध हो जाने के बाद ही इसे प्रयोग में लाना चाहिए। फिर प्रदर्शित यन्त्र को बालक की दाँई भुजा में बाँध देने से नजर तथा भूत-प्रेतादि दोष दूर होते हैं।

ज्वर-नाशक यन्त्र- नीचे बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखकर, ताँबे के ताबीज में भरे तथा उसे गुग्गुल की धूप दे। फिर जिसे ज्वर आता हो, वह यदि स्त्री हो तो उसकी बाँई भुजा में और पुरुष हो तो दाँई भुजा या कंठ में यंत्र को बाँध दें तो सामान्य ज्वर दूर हो जाता है। (यन्त्र धारण करने के ४-५ दिन बाद तक यदि ज्वर न आवे तो यन्त्र को खोल कर किसी जलप्रवाह में प्रवाहित कर दें।)

१	८	२	७
६	३	५	४
७	२	८	१
४	५	३	६

(ज्वर-नाशक यन्त्र)

मनोभिलाषा पूरक यन्त्र- नीचे दाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को किसी पीपल के वृक्ष के नीचे बैठकर, सीसे की कलम द्वारा पृथ्वी के ऊपर सवा लाख की संख्या में लिखने से मनोभिलाषाओं की पूर्ति होती है। प्रतिदिन एक निश्चित संख्या में यंत्र-लेखन का नियम बना लेना चाहिए।

१	५	१	७
६	३	२	३
४	८	१	१
४	५	२	३

(मनोभिलाषा पूरक यन्त्र)

द्यूत-विजयकर यन्त्र- नीचे बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजपत्र पर लिख कर धूप दें। फिर इसे ताँबे के ताबीज में भर कर अपनी दाँई भुजा में बाँध लें इसके बाद जुआ खेलने बैठें तो उसमें कभी भी हार नहीं होती, हमेशा विजय ही मिलती है। इस यन्त्र को हर समय बाँधे रहना उचित नहीं है, जिस दिन जुआ खेलना हो उसी दिन नया यंत्र बनाकर बाँधें, फिर पानी में बहा दें।

१	२५।	२३।	२३।
३१।।।	२७।।	३५।।	३६।।
१।।	८	२४।।	१६।।
२६।	१।।।	५।।।	४।।।

पुत्र-प्रदाता यन्त्र- नीचे दाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को अष्टगंध से भोजपत्र पर लिख कर ताँबे के ताबीज में भर कर धूप दे फिर स्त्री इसे अपनी बाँई भुजा अथवा कमर में बाँध ले अथवा कण्ठ में धारण कर ले। 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' इस मन्त्र का नित्य १०८ बार जप करे तो वन्ध्या-स्त्री को पुत्र का लाभ होता है।

०८	०१	३४	२६
३०	३३	०४	०५
०२	०६	२८	३५
३२	३१	०६	०३

चौंतीसा यन्त्र- नीचे बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण अथवा दीपावली की रात्रि में सफेद कागज अथवा भोजपत्र के ऊपर अनार की कलम से, अष्टगंध द्वारा ३४ बार लिखें। इस विधि से यन्त्र सिद्ध हो जाता है।

६	१६	५	४
७	२	११	१४
१२	१३	८	१
६	३	१०	१५

यदि यन्त्र को शीघ्र सिद्ध करना हो और ग्रहण-पर्व तथा दीपावली तक ठहरना कठिन प्रतीत हो तो उपर्युक्त प्रकार से रविवार के दिन १०८ यन्त्र लिखे। यन्त्र-लेखन की क्रिया धोबीघाट पर बैठ कर करनी चाहिए तथा एक-एक यन्त्र को लिखकर धोबीघाट पर भरे हुए कुंड के पानी में डालते जाँय, फिर उन यन्त्रों को इकट्ठा करके (सभी १०८ यन्त्र इकट्ठे करलें) बहते हुए पानी में प्रवाहित करदे। फिर भोजपत्रों के ऊपर पुनः उक्त विधि से यन्त्र लिखकर उन्हें धूप दे तथा रोगी के गले में बाँधदें।

इस यन्त्र को तावीज में भर कर, गले में धारण किए रहना चाहिए तथा प्रतिदिन गूगल की धूप देते रहना चाहिए। इस यन्त्र को धारण करने से विषम-ज्वर दूर होता है तथा राक्षस, भूत, प्रेत, पिशाच, ग्रह एवं सर्प आदि के भय से मुक्ति मिलती है, विपत्ति नष्ट होती है तथा चोर का भय भी नहीं रहता।

मृतवत्सा-दोष निवारण यन्त्र- जिस स्त्री के सन्तानें होकर मर जाती हैं अथवा गर्भ से ही मरी हुई संतान जन्म लेती है, उसे 'मृतवत्सा' कहा जाता है। इस दोष के निवारणार्थ आगे लिखे मन्त्र का जप करने तथा २४ के यन्त्र को धारण करने से इच्छित लाभ होता है।

२४ यन्त्र का स्वरूप इसी पृष्ठ पर बाँई ओर प्रदर्शित है। इसे भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध द्वारा लिखकर, ताँबे के ताबीज में भर कर गूगल की धूप दें तथा गर्भ के पाँचवें महीने गर्भिणी-स्त्री की कमर में धारण करा दें। जब बालक का जन्म हो जाय, तब ताबीज को स्त्री की कमर से खोल कर नवजात शिशु के कण्ठ में धारण करा देना चाहिए। स्मरणीय है कि भोजपत्र के ऊपर केवल यन्त्र को ही नहीं लिखना चाहिए, अपितु उसके साथ मन्त्र को भी लिखना चाहिए, जो निम्नानुसार है

१५	२०	१९
२२	१८	१४
१७	१६	२१

(मृतवत्सा दोष निवारण यन्त्र)

"क्रूं क्रूं क्रूं ह्रूं ह्रूं ह्रूं दुर्गे दुर्गे महादुर्गे नाशय नाशय हन हन पच पच मथ मथ बध बध हिंस्रान् महाचण्डीरूपेण इमं बालकं रक्ष रक्ष चिरजीविनं कुरु-कुरु ह्रां ह्रीं क्रूं ह्रूं फट् स्वाहा।"

यदि गर्भिणी स्त्री इस मन्त्र का नित्य १ बार जप भी कर लिया करे तो अद्भुततम रहेगा। यदि जप न कर सके तो भी मन्त्र सहित यन्त्र को धारण करना ही पर्याप्त रहता है।

डब्बा रोग निवारक यन्त्र- बाँई ओर प्रदर्शित 'चौंतीसा यन्त्र' डब्बा-रोग को दूर करता है। इसकी निर्माण विधि निम्नानुसार है -

पीपल के पत्ते अथवा भोज पत्र के ऊपर, लाल-चन्दन द्वारा अनार की कलम से चार यन्त्र लिखे। तत्पश्चात् धूप देकर यन्त्र को पानी से धोकर, वह पानी बच्चे की माता को पिलादे। तदुपरान्त दूसरा यन्त्र बच्चे को पहले दिन, तीसरा दूसरे दिन तथा चौथा तीसरे दिन धोकर माता के दूध के साथ बच्चे को पिलादे। फिर सवा रुपये का चूरमा अथवा मीठे चावल बना कर, पहले थोड़े से किसी साधु को देकर बँटवा दे तथा स्वयं भी सेवन करे।

यन्त्र का जो स्वरूप प्रदर्शित है, उसी के अनुसार तय्यार करें। यन्त्र के नीचे 'राम-राम' शब्द को चार-चार की संख्या में, ४ पंक्तियों में यन्त्र के साथ ही लिखना चाहिए।

इसी यन्त्र को अलग से भोजपत्र के ऊपर लाल चंदन द्वारा अनार की कलम से लिख कर तथा धूप देकर, एक छोटे से कपड़े में बाँध कर, बच्चे के गले में लटका देना चाहिए तथा उसका लाभ लगवा कर पक्षियों को दाना डलवा देना चाहिए। इस यन्त्र के प्रभाव से बच्चों को होने वाला डब्बा रोग दूर हो जाता है।

९	१६	२	७
६	३	१३	१२
१५	१०	८	१
४	५	११	१४

राम राम राम राम
राम राम राम राम
राम राम राम राम
राम राम राम राम

(चौंतीसा यन्त्र)

(गर्भ-स्थिति कारक ५० का यन्त्र)

१७	२४	२	७
६	३	२१	२०
२३	१८	८	१
४	५	१९	२२

गर्भ-स्थिति कारक यन्त्र- जिन स्त्रियों के गर्भ नहीं ठहरता, उनके लिए यह यन्त्र हितकर है। इसकी प्रयोग-विधि निम्नानुसार है-

अष्ट गंध द्वारा, भोजपत्र के ऊपर, अनार की कलम से एक चतुष्कोण यन्त्र खींच कर उसके मध्य में तीन आड़ी तथा तीन खड़ी रेखाएँ खींचें, ताकि कोष्ठकों की कुल संख्या १६ हो जाय। इन कोष्ठकों में क्रमशः १७, २४, २, ७; ६, ३, २१, २०; २३, १८, ८, १ एवं ४, ५, १९, २२ - इन अंकों को स्थापित करे। इस प्रकार ५० का अंक तय्यार हो जाएगा।

यन्त्र तय्यार हो जाने पर उसे ताँबे के ताबीज में भरदे तथा गुग्गुल की धूनी देकर स्त्री अपनी बाँई भुजा अथवा कण्ठ में धारण करले।

इस यन्त्र को धारण करने से गर्भ ठहरता है। जब गर्भ ठहर जाय तथा सन्तान का जन्म हो जाय, तब इस यन्त्र को भुजा अथवा कण्ठ में से खोल कर किसी नदी अथवा तालाब आदि के जल में प्रवाहित कर देना चाहिए। इस यन्त्र के धारण करने से वन्ध्या-स्त्री भी गर्भ-धारण कर लेती है, अन्यों की तो बात ही क्या है?

(प्रेत-बाधा नाशक यन्त्र)

२४	३१	२	७
६	३	२८	२७
३०	२५	८	१
४	५	२६	२९

प्रेत-बाधा-नाशक यन्त्र- मंगलवार के दिन, भोजपत्र के ऊपर, अष्टगंध द्वारा, चमेली अथवा अनार की कलम से एक चतुष्कोण यन्त्र खींचे। फिर उसके भीतर तीन आड़ी तथा तीन खड़ी रेखाएँ खींचे। इस प्रकार १६ कोष्ठकों वाला यन्त्र तैयार हो जाएगा। यह यन्त्र प्रेत-बाधा को दूर करने वाला है।

उक्त १६ कोष्ठकों वाले यन्त्र में क्रमशः ऊपरी पंक्ति से -- २४, ३१, २, ७; ६, ३, २८, २७; ३०, २५, ८, १ तथा ४, ५, २६, २९ -- इन अंकों को स्थापित करें।

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे बाँई ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है।

जिस व्यक्ति को प्रेत-बाधा लगी हो, उसके लिए इस यंत्र को तैयार करे तथा यन्त्र लेखनोपरान्त उसको गंध-पुष्पादि से पूजन कर, गूगल की धूप देकर रोगी के गले में बाँध दे। यन्त्र को कण्ठ में बाँधते समय गायत्री मन्त्र "ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्" - का उच्चारण करे तथा इस मन्त्र से अभिमंत्रित जल रोगी को पिलाये तथा उसके सम्पूर्ण शरीर पर छिड़क दें। यन्त्र बंधा रहने दें। आवश्यकतानुसार प्रयोग दोहराएँ करें।

यं.४ २५८

पुत्र-प्रदाता यन्त्र- नीचे प्रदर्शित ७२ के यन्त्र को अष्टगंध द्वारा, अनार की कलम से, भोजपत्र के ऊपर लिख कर, ताँबे के तावीज में भरें, फिर उसे गुग्गुल की धूप देकर स्त्री अपनी बाँई भुजा अथवा कण्ठ में धारण करले।

२८	३५	२	७
६	३	३२	३१
३४	२९	८	१
४	५	३०	३३

जिन स्त्रियों के केवल लड़कियाँ ही होती हों, उन्हें यह यन्त्र अवश्य धारण करना चाहिए। इस के प्रभाव से लड़के का जन्म होता है। लड़का हो जाने पर यन्त्र को उतार कर तथा धूप देकर किसी जलाशय में प्रवाहित करें।

भय-विनाशन यन्त्र- किसी शुभ दिन तथा शुभ मुहूर्त में प्रातः ४ से ८ बजे के बीच अष्टगंध द्वारा भोजपत्र के ऊपर बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को लिख कर, उसका धूप, दीप, पुष्प आदि से पूजन करें। फिर अपने घर के सामने एक हाथ गहरा गड्ढा खोद कर उसमें यन्त्र को गाड़ दे। स्थान अपवित्र न होने पाये। इससे चोर, भूत-प्रेत तथा सर्प भय दूर होता है।

३१	३८	२८	१
७	३	३५	३४
३७	३७	४	१
४	६	३३	३६

महा०

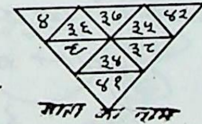
(वायु-शूल-नाशक यन्त्र)

३२	३९	२	७
६	३	३६	३५
३८	३३	८	१
४	५	३४	३७

वायु शूल नाशक यन्त्र- बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखकर, ताँबे के ताबीज में भर, गुग्गुल की धूप दे। तत्पश्चात् पुरुष-रोगी इसे अपनी दाँई भुजा में तथा स्त्री-रोगी बाँई-भुजा में धारण करे अथवा स्त्री-पुरुष में से कोई भी इसे अपने कण्ठ में भी धारण कर सकता है।

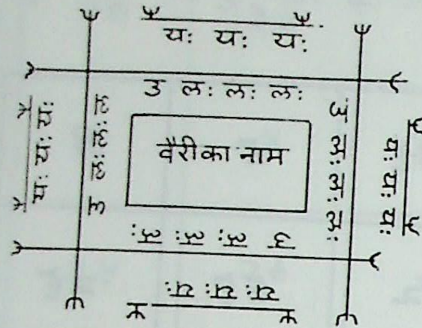
← इस यन्त्र को धारण करने से वायुशूल रोग नष्ट होता है, जब रोग पूरी तरह दूर हो जाय, तब ताबीज को खोलकर, यन्त्र को किसी नदी अथवा जलाशय में प्रवाहित कर देना चाहिए।

शत्रु को दुखी करने का यन्त्र- नीचे दाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को वृश्चिक के चन्द्रमा में गधे की खाल पर लिखे तथा अंक के नीचे शत्रु की माता का नाम लिखकर, गुग्गुल की धूनी दें, फिर १०८ बार निम्न लिखित मन्त्र पढ़ें -



"ॐ ह्रीं श्रीं त्रिपुर भैरवं वीरं मम शत्रुं अमुकस्य पीड़ां कुरु-कुरु स्वाहा।" इस मन्त्र में जहाँ 'अमुकस्य' शब्द आया है, वहाँ शत्रु के नाम का उच्चारण करना चाहिए। इसके बाद यन्त्र को शत्रु के घर की चौखट के नीचे अथवा घर के आँगन में या आने-जाने के मार्ग में गाड़ दें तो शत्रु को दुःख प्राप्त होता है।

(शत्रु-नाशक यन्त्र)



शत्रु-नाशक यन्त्र- रविवार के दिन श्मशान भूमि से युक्तिपूर्वक लाये गए कोयले तथा हरताल को पानी में घोल लें। फिर उसके द्वारा एक ठीकरे के ऊपर बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को लिखकर, लोबान तथा गुग्गुल को अग्नि पर रख कर, यन्त्र को धूनी दें तथा निम्नलिखित मन्त्र का १०८ बार उच्चारण करें -

"ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्मशान वीराय अमुकस्य नाशय नाशय विध्वंसय स्वाहा।"

उक्त मन्त्र में जहाँ 'अमुकस्य' शब्द आया है, वहाँ साध्य-शत्रु के नाम का उच्चारण करना चाहिए। प्रदर्शित यन्त्र-चित्र में जहाँ 'वैरी का नाम' लिखा है, वहाँ शत्रु के नाम को लिखना चाहिए।

मन्त्र-जप करने के बाद यन्त्र को श्मशान में अथवा मार्ग के चौराहे पर गाड़ दें तो शत्रु का विनाश तीन महीने के भीतर ही हो जाता है।

राजा-प्रजा वशीकरण यन्त्र- दाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को अष्टगन्ध द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखकर आसन के नीचे गाड़ देने से राजा-प्रजा वशीभूत होते हैं। प्रदर्शित यन्त्र में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए।

(राजा-प्रजा वशीकरण यन्त्र)

४४	क्रीं	४४
ह्रीं ह्रीं देवदत्तयोह्रिश्च ये		
४४	क्रीं	४४

यहाँ राजा तथा प्रजा शब्द का तात्पर्य यह है कि चाहे राजा या राज्यकर्मचारी हो अथवा कोई प्रजाजन हो, इनमें से जिसे भी वशीभूत करना हो, उसके नाम से यन्त्र को तैयार करके, उसके बैठने के स्थान के नीचे गाड़ देना चाहिए। इससे वह वशीभूत हो जाता है।

वशीकरण यन्त्र- नीचे प्रदर्शित यन्त्र को (बाँई ओर) केशर तथा कस्तूरी द्वारा एक सफेद रंग के सूती अथवा रेशमी कपड़े पर लिखे। प्रदर्शित यन्त्र में नीचे जहाँ 'अमुकी अमुका के वश्य हो'- लिखा है, वहाँ साध्य-स्त्री के साथ साधक पुरुष का नाम लिखना चाहिए।

उक्त यन्त्र को लिखने के बाद कपड़े को लपेट कर बत्ती बना ले तथा उस बत्ती को जलाये। उसकी राख जिस साध्य-स्त्री को खिलाई जाती है, वह साधक के वशीभूत हो जाती है।

३	६	२२
२१	३१	३
ज	२४	६

स्व स्वा आ स्व

	३	६	२१	
	२१	३१	[illegible]-१	
४४४ ४४४४६६ ३ स्व स्व अप्स्व	२१	६६	६	स्यानीस्वा
४४४४४४४६६ ३ ज द्री श्री ग्री	थी	डा	स्य	सहागार
३ स्व द्रा ब्र २०	द्री	स्व	द	सवर्गाग्नि
	३ व	३३१	ड श्रा	
	आ	३३	१८	

अमुकी अमुका के वश्य हो

(वशीकरण यन्त्र)

गर्भ-स्थिति कारक यन्त्र- दाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को मूल नक्षत्र वाले रविवार के दिन अष्टगंध द्वारा भोजपत्र पर लिखकर तावीज में भर कर, गुग्गुल की धूप दें कि उसे स्त्री की बाँई भुजा में बाँध दें। इस यन्त्र के प्रभाव से बाँझ स्त्री गर्भवती होकर, पुत्र को जन्म देती है। यदि पुष्य नक्षत्र के स्पर्श में इस यन्त्र को १०८ बार पान के ऊपर दूध से लिखकर बाँझ स्त्री को खिलाया जाय तो पुत्र उत्पन्न होता है। यन्त्र के मध्य जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ बन्ध्या-स्त्री के नाम को लिखना चाहिए।

देवदत्त

(गर्भ-स्थिति कारक यन्त्र)

यन्त्र ३५८

(स्वप्न निवारक यन्त्र)

नं	ह्रं	जं	चं
ह्रं	नं	जं	ठं
ठं	जं	ठं	ह्रं
नं	ह्रं	जं	ठं

स्वप्न-निवारक यन्त्र- बाँई ओर ऊपर प्रदर्शित यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजपत्र के टुकड़े पर लिखें, तदुपरान्त उसे गुग्गल की धूनी दें एवं रात को सोते समय अपने सिरहाने रखलें तो स्वप्न आना बन्द हो जाता है। जिन लोगों को स्वप्न अधिक आते हों और वे डरावने अथवा अशुभ लगते हों, उन्हें इस यन्त्र का प्रयोग अवश्य करना चाहिए। जब तक ऐसे स्वप्नों का आना बन्द न हो, तब तक प्रतिदिन नया यन्त्र लिखकर प्रयोग में लाना चाहिए।

(वशीकरण यन्त्र)

ह्री	ह्री	ह्री	ह्री	ह्री
ह्री	ह्री	ह्री	ह्री	ह्री
ह्री	ह्री	ह्री	ह्री	ह्री
ह्री	ह्री	ह्री	ह्री	ह्री
ह्री	ह्री	ह्री	ह्री	ह्री

वशीकरण यन्त्र- बाँई ओर नीचे प्रदर्शित यन्त्र को भोजपत्र पर लिखें। लिखने के लिए अष्टगंध का प्रयोग करें। फिर "ॐ नमो नृसिंहाय सर्व दुष्ट विनाशाय सर्वजन मोहनाय सर्व राज्यं वश्यं कुरु कुरु स्वाहा"— इस मन्त्र का प्रतिदिन १००० की संख्या में जप करें तथा इस क्रम को १०० दिनों तक चालू रखें। इससे मन्त्र सिद्ध हो जाएगा। फिर मंत्र से अभिषिक्त विभूति ७ बार मस्तक पर लगाने से वशीकरण होता है।

महत्व

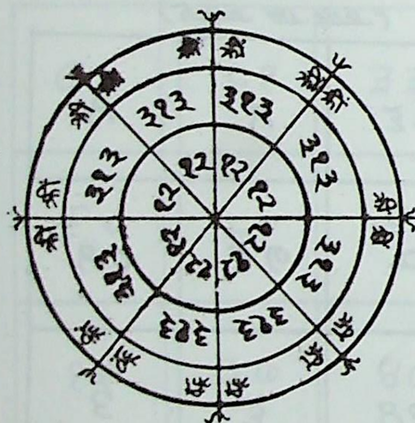
(मन वांछित फल दाता यन्त्र)

बं	बं	तं	तं
पं	पं	पं	पं
दं	दं	दं	दं
लं	लं	लं	लं

मन वांछित फल दाता यन्त्र- ऊपर प्रदर्शित यन्त्र को लालचन्दन द्वारा बेलपत्र के ऊपर १०८ बार लिखें। प्रत्येक यन्त्र को लिखने के लिए बेलपत्र अलग-अलग लेने चाहिए। यन्त्र लिखने के बाद उन बेलपत्रों को शिवजी के ऊपर चढ़ा दें। इस क्रिया को सावन के महीने में ३० दिनों तक करना चाहिए तथा प्रत्येक सोमवार को व्रत रखना चाहिए। प्रतिदिन "ॐ नमः शिवाय"- इस मन्त्र का ४४४४ बार जप करने से सभी मनोभिलाषाएं पूरी होती हैं।

गये हुए मनुष्य को लौटाने का यन्त्र-

यदि कोई घर से रूठ कर चला गया हो तो बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर कुंकुम तथा गोरोचन द्वारा लिखें।



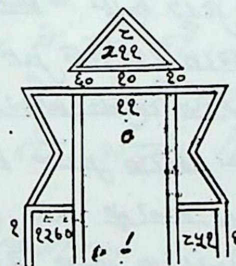
(लौटाने का यन्त्र)

लिखने के उपरान्त गन्ध, पुष्प, धूप, दीप आदि से यन्त्र का पूजन करें, फिर उसे चरखे से बाँध कर चरखे को उल्टा चलायें।

जब तक रूठा हुआ व्यक्ति घर लौटकर न आ जाय, तब तक प्रतिदिन यन्त्र को चरखे में बाँधकर २१ उल्टे चक्कर लगाते रहना चाहिए। यदि प्रतिदिन नया यन्त्र लिखा जाय तो सर्वोत्तम रहता है। इस यन्त्र के प्रभाव से रूठकर गया हुआ व्यक्ति शीघ्र ही वापिस घर लौट आता है।

प्रेत वशीकरण यन्त्र-

नीचे प्रदर्शित यंत्र को काली स्याही द्वारा सफेद कपड़े पर लिखें। फिर उस कपड़े की बत्ती बनाकर जलायें तो प्रेत वशीभूत हो जाता है।



बत्ती बनाने से पहले यन्त्र का गंध, पुष्प आदि से विधिवत् पूजन कर लेना चाहिए तथा गुग्गुल की धूप देनी चाहिए।

यन्त्र लेखन, पूजन तथा जलाने आदि की क्रियाएं आधी रात के समय करनी चाहिए।

(प्रयोग सिद्धि मन्त्र)

२६	४३	२	७
६	३	४०	३९
४२	३७	८	१
४	५	३८	४

(प्रयोग का नाम)

प्रयोगसिद्धि यन्त्र- बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजपत्र के ऊपर सवालाख की संख्या में लिखने से प्रयोग सिद्ध होता है। जिस प्रयोग को सिद्ध करने की कामना से यन्त्र को लिखा जाय, उसका नाम मन्त्र के साथ ही हरबार लिखना चाहिए।

यन्त्र लिखने की विधि यह है कि प्रातः स्नानादि से निवृत्त हो, किसी पवित्र तथा एकान्त-स्थान में बैठ कर सर्वप्रथम इष्टदेव का स्मरण एवं पूजन करने के उपरान्त इस यन्त्र को लिखना आरंभ करना चाहिए और प्रतिदिन यन्त्र-लेखन की एक संख्या निश्चित कर लेनी चाहिए उसी के अनुसार यन्त्र-लेखन कार्य करना चाहिए।

जबतक पूरे सवालाख यन्त्रों का लेखन-कार्य सम्पूर्ण न हो जाय तब तक पूर्ण ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना चाहिए।

महा.

सुँई की पीड़ा का यन्त्र- नीचे दाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को रविवार के दिन कागज के ऊपर काली स्याही से अथवा भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध से लिखकर कमर में बाँधने से सुँई की पीड़ा दूर होती है।



		१		
		६		
२	८	१०	१	९
		७		
		३		

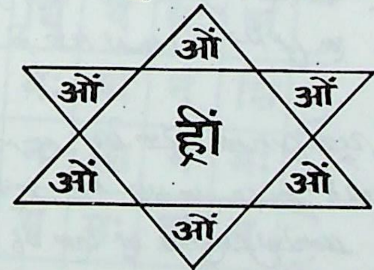
(नज़र न लगने का यन्त्र)

७२	८१	३३	४२
६८	८०	६	११
१५	३७	४०	१०
४५	७७	६	१

बालक को दीठ (नज़र) न लगने का यन्त्र- बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को ताम्रपत्र पर खुदवा कर यथाविधि पूजन करें। फिर उस यन्त्र महा० स्वर्णित ताम्रपत्र को बालक के गले में **बाँध दें।** यदि ताम्रपत्र पर खुदने का साधन न हो तो उस स्थिति में यन्त्र को अष्ट गंध अथवा केसर द्वारा भोजपत्र पर लिख कर तथा उस यन्त्रलिखित भोजपत्र को ताँबे के ताबीज में भर कर, पूजन तथा धूपादि देने की क्रिया सम्पन्न करके बालक के गले में वह ताबीज बाँध देना चाहिए। इससे बालक को दीठ अर्थात् किसी की नज़र नहीं लगती।

षट्कोण यन्त्र- किसी शुभ मुहूर्त में प्रातः काल ६ से ८ बजे के बीच भोजपत्र के ऊपर, अष्टगंध द्वारा दाँई ओर प्रदर्शित षट्कोण यन्त्र लिखकर उसका विधिवत् पूजन करें। फिर इसे ताँबे अथवा अष्टधातु के ताबीज में भर कर कण्ठ अथवा भुजा में धारण करें तो इच्छित अभिलाषाएं पूर्ण होती हैं।

षट्कोण यंत्र



(सर्वार्थ साधन यन्त्र)

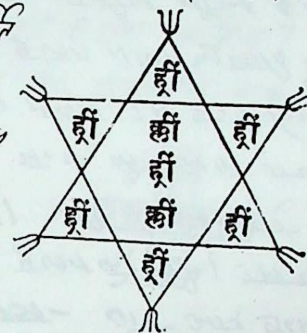
६७	७३	२	८
७	३	७१	६९
७२	६८	९	१
४	६	६८	७२

सर्वार्थ साधन यन्त्र- बाँईं ओर प्रदर्शित यन्त्र को सोमवार गुरुवार अथवा रविवार के दिन प्रातः काल १० बजे से पहले लिखना आरंभ करें तथा जब यन्त्र लिखा जाचुके तब उसका गंध, पुष्प, धूप दीप आदि से पूजन कर, किसी ताबीज में भर कर, अपनी दाँईं भुजा अथवा कण्ठ में धारण करलें।

यन्त्र को लिखने के लिए सिन्दूर, कुंकुम तथा कस्तूरी के मिश्रण का प्रयोग करना चाहिए तथा लिखने का कार्य भोजपत्र के ऊपर करना चाहिए। यन्त्र लिखित भोजपत्र को किसी ताँबे के पात्र में रखने के बाद विधिवत् पूजन करना चाहिए।

इस यन्त्र को धारण करने से समस्त कामनाओं की पूर्ति होती है।

शत्रु उच्चाटन यन्त्र- बाँईं ओर प्रदर्शित यन्त्र को धतूरे के रस से बहेड़े के पत्ते पर अथवा श्मशान के कोयले से श्मशानवस्त्र (कफन) के ऊपर लिखकर गंध, पुष्पादि से पूजन कर शत्रु के आवागमन वाले मार्ग में गाड़ देने से उसका उच्चाटन होता है और वह इधर-उधर भागता फिरता है।



(सुखदाता यन्त्र)

५९	६६	३	७
६	३	६३	६२
६५	६०	८	१
४	५	६१	६४

सुखदाता यन्त्र- बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजपत्र अथवा कागज के ऊपर लिख कर घर में रखने से हर प्रकार का सुख प्राप्त होता है।

यन्त्र को लिखने का कार्य किसी शुभ दिन में, स्नानादि से निवृत्त हो, प्रातः काल के समय करना चाहिए। यन्त्र के लिख जाने पर उसका गंध-पुष्पादि से पूजन करना चाहिए, फिर उसे घर में किसी स्थान पर स्थापित कर देना चाहिए तथा उसे प्रति दिन धूप देते रहना चाहिए।

कल्याणकर यन्त्र- दाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को एक भोज पत्र के टुकड़े पर अष्टगंध से लिखकर गंध, पुष्प, धूप आदि से पूजन करे तथा उसके बाद "ॐ नमः शिवाय" इस मन्त्र का नित्य १ माला जप करता रहे तो साधक का कल्याण होता है तथा मनोभिलाषाऐं पूरी होती हैं।

न	शि	य	मः	वा
य	मः	वा	न	शि
वा	न	शि	य	मः
शि	य	मः	वा	न
मः	वा	न	शि	य

(रक्त-पित्त नाशक यन्त्र)

४८	५५	२	७
६	३	५२	५१
५४	४९	८	१
४	५	५०	५३

रक्तपित्त रोग-नाशक यन्त्र- बाँईं ओर प्रदर्शित यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखकर, ताँबे के तावीज में भर कर गुग्गुल की धूप दें। फिर उसे स्त्री बाँईं भुजा में तथा पुरुष दाँईं भुजा में धारण करे अथवा दोनों में से कोई भी कंठ में धारण करे तो रक्तपित्त रोग दूर होता है। जब रोग पूरी तरह दूर हो जाय, तब यन्त्र को किसी नदी अथवा जलाशय में प्रवा-हित कर देना चाहिए।

आकर्षण यन्त्र- दाँईं ओर प्रदर्शित यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखे। इस यन्त्र के बाहरी वृत्त में जो मन्त्र लिखा है, उसमें जहाँ 'देवदत्त' शब्द आया है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए। यन्त्र को लिखने के बाद गन्ध-पुष्पादि से पूजन कर, धूप-दीप दे, ताँबे के ताबीज में भर कर अपनी भुजा अथवा कण्ठ में धारण करे तो साध्य-व्यक्ति आकर्षित होता है।



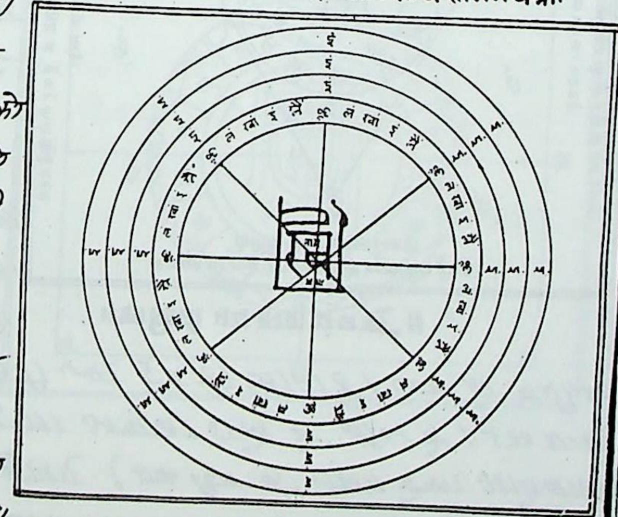
महा.

तिजारी ज्वर नाशक यन्त्र- नीचे बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखकर, पूजन करने के बाद, ताँबे के तावीज में भर कर, गुग्गुल की धूप दे। तदुपरान्त जिसे तिजारी (तीसरे दिन आने वाला बुखार) ज्वर आता हो, वह यदि स्त्री हो तो बाँई भुजा में और पुरुष हो तो दाँई भुजा में बाँध लें अथवा गले में बाँध दें। इस यन्त्र को धारण करने से तिजारी ज्वर दूर हो जाता है। जब दो पारी तक ज्वर का आना बन्द हो जाय, तब इस यन्त्र को रोगी की भुजा अथवा गले से खोलकर किसी नदी अथवा जलाशय में बहा देना चाहिए।

१४२	१४९	२	७
६	३	१४६	१४५
१४८	१४७	८	१
४	५	१४४	१४७

स्तंभन यंत्र- दाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को अष्टगंध से भोजपत्र लिखकर, धूप-दीप दे, दाँई भुजा में बाँधने से दिव्य गति, सेना जिह्वा तथा क्रोध स्तम्भन होता है। यन्त्र के मध्य में साध्य-व्यक्ति का नाम लिखे।

॥दिव्य गति सेना जिव्हा और क्रोध स्तंभन यंत्र॥



यन्त्र २६३

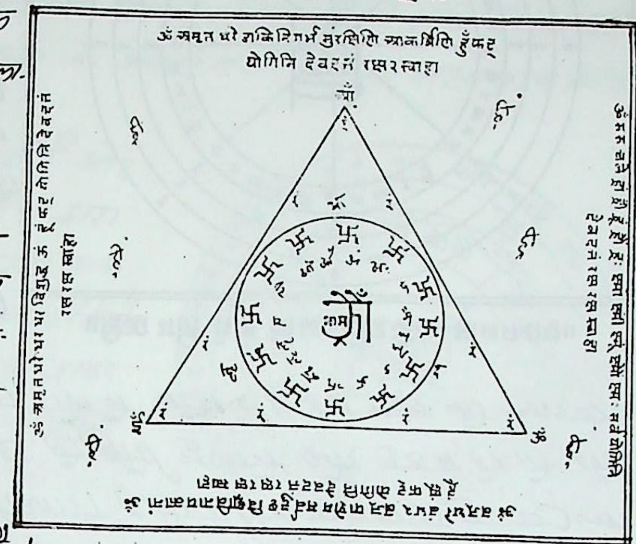
मह०

एकान्तर-ज्वर-नाशक यन्त्र- बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखकर, ताँबे के ताबीज में भर कर, गुग्गुल की धूप दें। तत्पश्चात् जिस व्यक्ति को एकतरा बुखार (एक दिन की नागा देकर आनेवाला ज्वर आता हो, उसकी भुजा अथवा गले में बाँध दें। इस यन्त्र को धारण करने से तिजारी ज्वर दूर हो जाता है। जब दो परीतक ज्वर न आये, तब यन्त्र को रोगी की भुजा में से खोल कर, किसी नदी अथवा जलाशय में प्रवाहित कर देना चाहिए।

महा०

९२	९९	२	७
६	३	९६	९५
९८	९३	८	१
४	५	९४	९७

॥शाकिनी भय हरण यंत्रम् ॥



शाकिनी भयहरण यन्त्र- दाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखे। प्रदर्शित यन्त्र में जहाँ-जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए। इस यन्त्र को गुग्गुल की धूप देकर गले में बाँध देने से शाकिनी का भय दूर होता है।

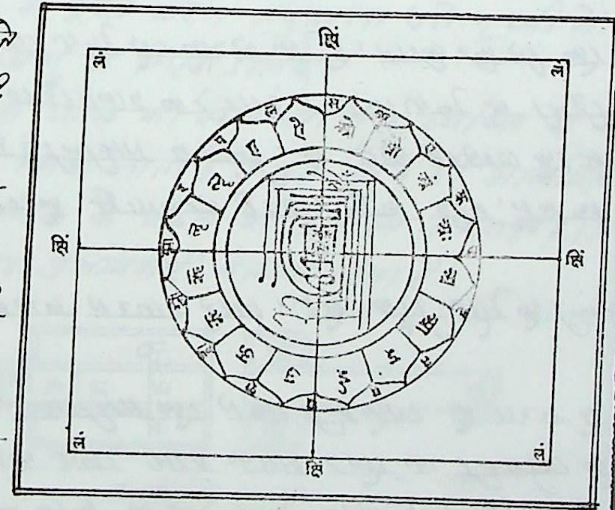
विद्या-बुद्धि प्रदाता यन्त्र- बाँईं ओर प्रदर्शित यन्त्र को किसी भी पक्ष की चतुर्थी तिथि से लिखना आरम्भ करें। यन्त्र को अष्ट गंध द्वारा भोजपत्र पर लिखा जाना चाहिए। प्रति दिन एक निश्चित संख्या में यन्त्र लिखने का नियम बना लेना चाहिए। यह संख्या कुछ भी हो सकती है। एक भोजपत्र पर लिखित यन्त्र को ताबीज में भर कर भुजा अथवा कण्ठ में धारण कर लेना चाहिए।

८	११	१२	१७
१३	२	७	६
११	१६	९	१४
१०	५	४	५

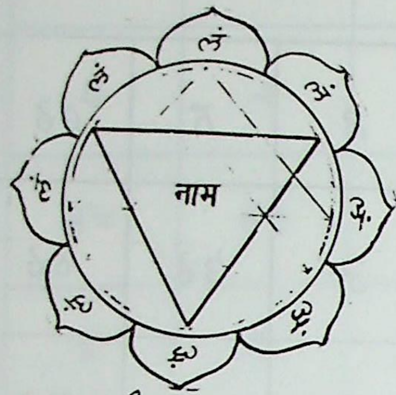
इस यन्त्र को प्रतिदिन लिखते रहने से विद्या एवं बुद्धि की वृद्धि होती है।

सर्वरक्षायन्त्र- दाँईं ओर प्रदर्शित यन्त्र को अष्ट गन्ध द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखकर गन्ध, पुष्प, धूप दीप आदि से पूजन करें। तदुपरान्त ताँबे के ताबीज में भर कर दाँईं भुजा अथवा कण्ठ में धारण कर लें। इस यन्त्र को धारण करने से हर प्रकार के भय, कष्ट तथा संकटों से रक्षा होती है।

॥सर्व रक्षा यंत्र॥



वाणी-स्तम्भन यन्त्र- शिला-सम्पुट (पत्थर की दो पटिया) के बीच केशर आदि पीले द्रव्य द्वारा एक त्रिकोण-यन्त्र लिखकर, उसे गोलाकार-चक्र से वेष्टित करें। फिर उसके ऊपर आठ कमल-दलों का निर्माण करें, उन कमल-दलों के भीतर 'लं' बीजों को स्थापित करें तथा त्रिकोण के मध्य में साध्य-व्यक्ति का नाम लिखें।



(वाणीस्तम्भन यन्त्र)

उक्त विधि से यन्त्र का जो स्वरूप तय्यार होगा, उसे बाँई ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है।

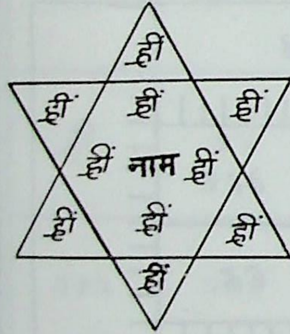
यन्त्र को लिखने के बाद पीले रंग के सुगन्धित पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य आदि से यन्त्र का पूजन कर, खीर तथा गुड़ मिश्रित पदार्थों से एक ब्राह्मण को भोजन कराके, उक्त यन्त्र को पृथ्वी के भीतर गड्ढा खोद कर गाड़ दे तथा ऊपर से मिट्टी भर दे। जब मिट्टी भर जाय तो उस स्थान को ऊपर से चौरस कर दे, ताकि किसी को कुछ पता न चले।

इस यन्त्र के प्रभाव से व्यवहार, विवाद, मुकद्दमा, शास्त्र-चर्चा आदि में प्रतिवादी का मुख स्तम्भित हो जाता है अर्थात् वह कुछ बोल नहीं पाता तथा साधक को विजय प्राप्त होती है।

इस यन्त्र का लेखन-कार्य किसी शुभ मुहूर्त में आरम्भ करना चाहिए तथा समय प्रातः ६ से १० बजे के मध्य का रहे। शौच-स्नानादि से निवृत्त हो, पवित्र आसन पर बैठकर, पूर्व दिशा की ओर मुँह करके यन्त्र लिखना आरम्भ करना चाहिए। यन्त्र-साधन की सभी क्रियाएँ एकान्त स्थान में करना आवश्यक है।

दिव्य-स्तम्भन यन्त्र- नीचे बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को कुंकुम तथा गोरोचन द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखकर, शराव-सम्पुट (मिट्टी के दो शकोरों के बीच) रखे तथा पुष्प, धूप, दीप आदि से भक्ति पूर्वक पूजन करें।

दूसरे दिन यन्त्र को शराव-सम्पुट से बाहर निकालकर अपनी शिखा अर्थात चोटी में बाँध लें तथा मौन रह कर फल का चिन्तन करें।



(दिव्य स्तंभन यन्त्र)

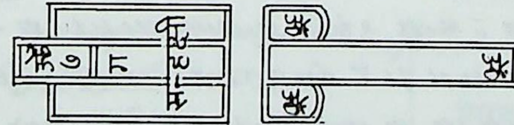
इस यन्त्र के मध्य में साध्य-व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

यह यन्त्र हर प्रकार के स्तम्भन-कार्य में विशेष फलदायक कहा गया है। इसका निर्माण किसी एकान्त स्थान में तथा शुभ मुहूर्त में आरंभ करना चाहिए।

किसी व्यक्ति की गति, मति, वाणी, बुद्धि आदि को स्तम्भित कर देने की क्रिया को 'स्तम्भन' कहा जाता है। इस यन्त्र के प्रयोग से साध्य-व्यक्ति की इच्छित क्रिया-कलापों को स्तम्भित किया जा सकता है।

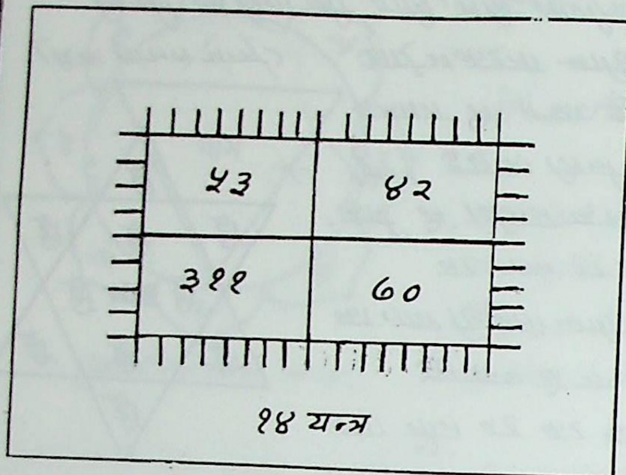
आकर्षण यन्त्र- नीचे प्रदर्शित यन्त्र को अनार की अथवा चमेली की कलम से बेहड़े के पत्ते पर आमने-सामने लिख कर, पुष्प, धूप, दीप, गंध आदि से पूजा करे, तदुपरान्त उसे पृथ्वी में गाड़कर, ऊपर से मिट्टी डाल दे।

इस यन्त्र का साधन जिस व्यक्ति के उद्देश्य से किया जाता है, वह स्वयं ही आकर्षित होकर साधक के पास शीघ्र चला आता है। इस यन्त्र को बड़ा प्रभावकारी बताया गया है।



(आकर्षण यन्त्र)

आधासीसी नाशक यन्त्र- सफेद कागज के एक चौकोर टुकड़े पर, एक चतुष्कोण यन्त्र को काली स्याही से लिखे तथा उसके चारों ओर ५३ छोटी-छोटी रेखाएँ खींचें। फिर यन्त्र के बीच में चार कोष्ठक बनाये और उनमें क्रमशः ५३, ४२, ३११ तथा ६० - इन अंकों को लिखे। यन्त्र के निम्न भाग में "१४ यन्त्र" यह लिखना चाहिए। इस विधि से यन्त्र का जो स्वरूप तैयार होगा, उसे बाँई ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है।



(आधासीसी नाशक यन्त्र)

यन्त्र को लिखने के बाद कागज को मोड़ दें तथा उसे सफेद एवं काले धागे (डोरे) से बाँध कर धूप दें। तदुपरान्त उसे रोगी के सिर के जिस भाग में दर्द हो, उसी ओर के कान में अथवा सिर के बालों में सूर्योदय से पहले ही 'महावीर बजरंगबली' का नाम लेकर बाँध दें।

इस यन्त्र को जिस दिन बाँधा जाएगा, उस दिन तो कुछ दर्द रहेगा परन्तु दूसरे ही दिन से दर्द एकदम बन्द हो जाएगा।

स्मरणीय है कि आधासीसी का दर्द आधे सिर में अर्थात सिर के दाँये अथवा बाँये भाग में होता है। यह दर्द सूर्योदय के समय से होना आरम्भ होता है तथा ज्यों-ज्यों सूर्य चढ़ता जाता है, दर्द में वृद्धि होती चली जाती है। सूर्यास्त के समय बंद हो जाता है।

(मसान-भय नाशक यन्त्र)

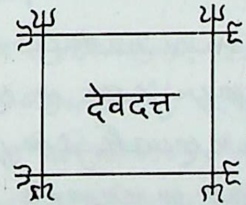
ऐं	२५	२५	ह्रीं
ह्रीं	२५	ह्रीं	२५
२५२	२५२	२५२	२५२
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
श्री श्री श्री श्री श्री नाम			

मसान-भय-नाशक यन्त्र- बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को किसी शुभ घड़ी में अष्टगंध द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिख कर विधिपूर्वक पूजन करें। फिर उसे ताँबे आदि के ताबीज में भर कर उस बालक के गले में बाँध दे, जिसे मसान लगा हो।

इस यन्त्र के निचले भाग में दाँई ओर जहाँ 'नाम' लिखा हुआ प्रदर्शित किया गया है, उस स्थान पर रोगी-बालक का नाम लिखना चाहिए।

इस यन्त्र को धारण करने से मसान हट जाता है। जब मसान हट जाये, तब उसके १५ दिन बाद इस यन्त्र को बालक के गले में से खोल कर तथा गुग्गुल की धूप देकर, किसी नदी आदि में प्रवाहित कर देना चाहिए।

विरोध कारक यन्त्र- भेड़ा के रक्त में श्मशान के कोयले को मिलाकर, श्मशान के कपड़े (कफन) के ऊपर कौए के पंख की कलम से दाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को लिखकर पूजन करे. फिर उसे उस मार्ग में ८ अंगुल गहरा गाढ़ दे जिससे दोनों मित्र आते-जाते हों तो इसके प्रभाव से उनमें परस्पर विरोध हो जाएगा।



मिर्गी (मृगी) रोग-नाशक यन्त्र- नीचे बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखकर, ताँबे के ताबीज में भर कर गुग्गुल की धूप दें। तत्पश्चात स्त्री-रोगी इसे अपनी बाँई भुजा में तथा पुरुष-रोगी दाँई भुजा में अथवा स्त्री-पुरुष में से कोई भी कंठ में धारण करलें। धारण करने से पूर्व यन्त्र की पुष्प, गंध, धूप, दीप आदि से पूजा भी कर लेनी चाहिए।

इस यन्त्र को धारण करने से मिर्गी (मृगी) रोग दूर होता है। जब रोग पूरी तरह दूर हो जाय, तब ताबीज को उतार कर किसी नदी अथवा जलाशय के पानी में प्रवाहित कर देना चाहिए।

४९९२	४९९९	२	७
६	३	४९९६	४९९५
४९९८	४९९३	८	१
४	५	४९९४	४९९७

(मिर्गी रोग नाशक यन्त्र)

वाचास्तम्भन यन्त्र- नीचे दाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर, लालचंदन से लिखे। फिर उसका केशर, धूप, मूँग तथा काले और पीले रंग के फूलों से पूजन करे, तत्पश्चात एक ब्राह्मण को खीर एवं गुड़ का भोजन कराये। इस यन्त्र के प्रभाव से वाणी का स्तम्भन होता है। यदि यन्त्र को पृथ्वी में गाड़ दिया जाय तो शत्रु कोई बुराई नहीं कर पाता। प्रदर्शित यन्त्र के मध्यभाग में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति के नाम को लिखना चाहिए



(वाचास्तंभन यन्त्र)

सूखारोग निवारण यन्त्र- बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को पीपल के पत्ते अथवा भोजपत्र पर, अनार की कलम से, लाल चन्दन द्वारा लिखें। इस प्रकार के चार यन्त्र लिखने चाहिए।

८	८	८
३३४	३३४	३३४
३३४	३३४	३३४
३३४	३३४	३३४
७	७	७

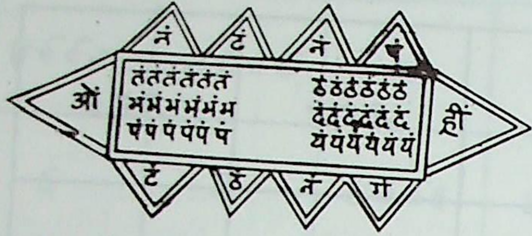
(सूखा रोग निवारण यन्त्र)

लेखनोपरान्त सब यन्त्रों को धूप देकर, पहले एक यन्त्र को जल से धोयें तथा वह जल बच्चे की माता को पिला दें। दूसरे यन्त्र को पहले दिन, तीसरे यन्त्र को दूसरे दिन तथा चौथे यन्त्र को तीसरे दिन धोकर माता के दूध के साथ बच्चे को पिलाते रहें तथा सवा रुपये का चूरमा अथवा मीठे चावल बना कर, उसमें से थोड़ा सा हिस्सा पहले किसी साधु को देकर बँटवा दें, तदुपरान्त शेष बचे को स्वयं खालें।

इस यन्त्र को बच्चों का सूखा रोग दूर करने में प्रभाव-कारी माना जाता है।

बच्चों के सूखा रोग में बच्चे का शरीर दिन-प्रति-दिन सूखता चला जाता है। हाथ-पाँव सब पतले पड़ जाते हैं, परन्तु पेट प्रायः बढ़ जाता है। उन्हें तिल्ली-जिगर की शिकायत भी हो सकती है। सूखा-रोग ग्रस्त बच्चों के लिए औषधोपचार भी आवश्यक है। उसी के साथ यन्त्र-प्रयोग भी करना चाहिए।

सम्मान दाता यन्त्र- नीचे बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर, अष्टगंध द्वारा, अनार की कलम से लिखें। यन्त्र को लिखने के बाद उसका गंध, पुष्प, धूप, दीप आदि से पूजन कर, ताँबे के ताबीज में भरे तथा ताबीज को गुग्गुल की धूप देने के बाद पुरुष अपनी दाँई भुजा में तथा स्त्री अपनी बाँई भुजा में धारण करले। स्त्री-पुरुष यदि चाहें तो वे इसे भुजा में धारण करने के स्थान पर, कण्ठ में भी धारण कर सकते हैं।



(सम्मानदाता यन्त्र)

इस यन्त्र को धारण करने वाला स्त्री-पुरुष जहाँ भी जाता है, वहीं उसको सम्मान प्राप्त होता है।

बच्चे का रोना बन्द करने का यन्त्र - जो बच्चा निरन्तर रोता ही रहता हो, कोई शारीरिक-कष्ट न रहने पर भी जिसका रोना बन्द न होता हो, उसके लिए निम्नलिखित विधि से दाँई ओर प्रदर्शित 'पन्द्रहिया यन्त्र' का प्रयोग करना चाहिए। इस यन्त्र के प्रयोग से बच्चे का रोना कम या एकदम बन्द हो जाता है।

२	९	४
७	५	३
६	१	८

एक स्वच्छ सफेद कागज लेकर, उसके ऊपर केसर द्वारा नौ कोष्ठकों वाले एक यन्त्र को लिखें तथा उसके कोष्ठकों में क्रमशः २, ९, ४ (पहली पंक्ति में); ७, ५, ३ (दूसरी पंक्ति में) तथा ६, १, ८ (तीसरी पंक्ति में) लिखें। इस प्रकार पन्द्रहिया यन्त्र तैयार हो जाएगा।

लेखनोपरान्त इस यन्त्र का गंध, पुष्प आदि से पूजन करें तथा ताबीज में भर कर गुग्गुल की धूप दें। फिर उस ताबीज को बालक के गले में बाँध दें। इससे उसका रोना बन्द हो जाएगा।

धन-लाभ का यन्त्र- सर्वप्रथम एक घड़े को पानी से भरकर रखे। घड़ा एकदम नया तथा कोरा होना चाहिए। तत्पश्चात् आम के पत्ते पर रोली बिछा कर, अनार की कलम द्वारा बाँई ओर प्रदर्शित ९ कोष्ठकों वाला यन्त्र लिखे, जिसके पहले कोष्ठक में ६, दूसरे में ४८, तीसरे में १८, चौथे में ३६, पाँचवें में २४, छठे में १२, सातवें में ३० तथा नवें में ४२ के अंक लिखे। आठवें कोष्ठक को खाली रहने दे।

६	४८	१८
३६	२४	१२
३०		४२

यन्त्र को लिखते समय "श्री पार्श्वनाथाय नमः" — इस मन्त्र का जप करते रहना चाहिए। इस प्रकार जब मन्त्र-लेखन का कार्य पूरा हो जाय, तब — "ॐ नमो कामदेवाय महाप्रभाय ह्रीं कामेश्वरी स्वाहा" — इस मन्त्र का ४२ बार जप करना चाहिए। मन्त्र को जपने के बाद यन्त्र को मिटा दें, तदुपरान्त पुनः यन्त्र लिखें और पूजन तथा मन्त्र-जप आदि पूर्ववत करें। इस प्रकार २४ बार इस यन्त्र को लिखना तथा पूजन, जप आदि की क्रियायें करनी चाहिए।

२४ वें यन्त्र को लिखने के बाद मन्त्र का २१ माला जप करें। इस नियम का प्रतिदिन नियमित रूप से पालन करते रहें। एक दिन के लिखे यन्त्र को दूसरे दिन गेहूँ के आटे में थोड़ा सा शहद, घी और बूरा मिला कर, गोली बाँधें तथा उन गोलियों को नदी के पानी में बहा दें। स्वयं जौ की रोटी तथा बिना नमक वाले बथुआ के साग का भोजन करें। पृथ्वी पर शयन करें तथा झूठ न बोलें। ४२ दिनों तक इस क्रिया को करते रहें। इस अवधि में सवा लाख मन्त्रों का जप पूरा कर लें। जब साधन पूरा हो जाय, तब एक दिन होमादि करके ब्राह्मण-भोजन करायें। तत्पश्चात् नित्य प्रति एक यन्त्र लिख कर, उसके पृष्ठ भाग पर यह लिखे "४२ टके चावल बाज़ार दे" — फिर उसे आसन के नीचे रख कर ४२ बार मन्त्र का जप करे। इस प्रयोग से

महा०

आसन के नीचे प्रतिदिन ७२ रुपये आजाया करे। उनके विषय मे किसी को बताये नहीं अन्यथा उनका आना बन्द होजाएगा। यदि आसन के नीचे रुपये नहीं आयेंगे तो अन्य किसी प्रकार से कुटुम्ब के खर्च लायक धन प्राप्त होता रहेगा।

रुपये मिल जाने के बाद यन्त्र को आसन के नीचे से उठाकर अपनी पगड़ी में रख लेना चाहिए तथा दूसरे दिन गोली बाँध कर नदी में बहा देना चाहिए। जो यन्त्र नदी के किनारे से आ लगे, उसे लाकर एक आले में रखदें तथा उसके ऊपर एक सफेद वस्त्र का कपड़ा डालदें तथा उस पर प्रतिदिन पुष्प चढ़ा कर धूप दे दिया करें।

इसी यन्त्र की मुसलमानी विधि निम्नानुसार है—

सूर्योदय से पहले ही, सफेद कागज के ऊपर काली स्याही से एक यन्त्र लिखे। यह कार्य महीने के पहले बृहस्पतिवार से आरंभ करना चाहिए। इसके बाद नाभि के बराबर किसी नदी अथवा जलाशय के पानी में खड़ा होकर, पश्चिम की ओर मुँह करके ४४४४ अथवा 3333 बार निम्नानुसार मन्त्र-जप करे—

सर्व प्रथम एक बार—"बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम"— कहे। फिर—" अजिवो या जिब्राईल बहक्क या बासितो"— पढ़े। इस मन्त्र के आदि तथा अन्त में ७१ बार दरूद पढ़े, जो इस प्रकार है—" अल्ला हुम्मा सल्ले मुहम्मदिन व अल आले मुहम्मदिन व बारिकवसल्लम"— इस प्रयोग को लगातार ७२ दिनों तक करते रहने से सिद्धि प्राप्त होती है।

यन्त्र को प्रतिदिन धागे में पिरोकर, अपने स्थान के दरवाजे पर टाँग दिया करें तथा दूसरे दिन

आटे में गोली बाँधकर तथा गोली को बूरे में लपेट कर यन्त्र को नदी में बहा आयें। ७२ दिन पीछे एक यन्त्र लिख कर ७२ मंत्रों का जाप कर लिया करें। इस क्रिया को आरंभ करने के १० दिन बाद ही कहीं-न-कहीं से भरण-पोषण के योग्य धन की प्राप्ति होने लगती है। ७२ दिन बाद दस-पाँच ब्राह्मणों अथवा फकीरों को भोजन करा देना चाहिए।

स्त्री हित साधक यन्त्र — यदि किसी छुहारे में दो गुठलियाँ एक साथ निकल आयें तो उन्हें लेकर सावधानी से सुरक्षित रखलें। फिर दीपावली की रात्रि में अनार की कलम द्वारा दाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को पहले १०८ बार पृथ्वी पर लिखें, तत्पश्चात भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध से लिखकर उसे धूप, दीप, नैवेद्य आदि से पूजें। फिर पूर्वोक्त छुहारे की दोनों गुठलियों को उस भोजपत्र पर निर्मित यन्त्र में लपेट कर, चाँदी के ताबीज में मढ़वा लें।

उक्त यन्त्र-पूरित ताबीज को धोकर पिलाने से कष्टा-स्त्री का कष्ट दूर होता है। बाँझ-स्त्री की कमर में बाँध देने से उसे गर्भ ठहरता है। अपने पास रखने से राजदरबार में सम्मान प्राप्त होता है। इस यन्त्र के प्रभाव से ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त होकर साधक की सभी मनोकामनाऐं पूर्ण होती हैं।

८	१	६
३	५	७
४	९	२

(स्त्री-हित साधक यंत्र)

स्मरणीय है कि यह यन्त्र 'पन्द्रहिया यन्त्र' का ही एक स्वरूप है। पन्द्रहिया-यन्त्र के अनेक स्वरूप पाये जाते हैं, जिनमें से कुछ का उल्लेख पहले किया जा चुका है। यह यन्त्र विभिन्न प्रयोग-विधियों के माध्यम से विभिन्न कामनाओं की पूर्ति करता है, उनमें से एक विधि का उल्लेख यहाँ किया गया है।

भूतादि-दोषनिवारण यन्त्र- नीचे बाँई ओर प्रदर्शित भूतादिक-दोष-निवारण यन्त्र इस्लामी पद्धति का यन्त्र है। इसको लिखना आरंभ करने से पूर्व शाह अब्दुल कादर जीलानी को सलाम कहना चाहिए। फिर एक सफेद कागज पर काली स्याही से यन्त्र को लिखे। यन्त्र में जहाँ 'अमुका' लिखा है, उस जगह दोष-ग्रस्त रोगी का नाम लिखना चाहिए। यन्त्र को लिखने के बाद उसे एक नये वस्त्र के टुकड़े में लपेट कर बत्ती बनाले। फिर दीपक में चमेली का तैल भर कर, उसमें यन्त्रवाली बत्ती को डाल कर, दीपक को किसी पवित्र-स्थान पर रखकर जलायें। जिस जगह दीपक को रक्खें, उस स्थान को पहले पीली मिट्टी से पोतलें। तत्पश्चात् उस पर दीपक रख कर, दीपक के समीप ही पुष्प और मिठाई रखें। यन्त्र की बत्ती बनाने से पूर्व उसके ऊपर फूल चढ़ाकर तथा धूप-दीप देकर पूजन करलेना चाहिए।

या वासत या वासत या वासत या वासत या वासत या वासत या वासत

११	१४	१	८
४	५	१०	१५
६	३	१६	९
१३	१२	७	२

या बुद्दूह — या वासत या वासत या वासत या वासत या वासत या वासत या वासत — या बुद्दूह — या बुद्दूह

बहक़्क़ या जिब्राईल
या मीकाईल या इस्राफ़ील
या इज़्राईल जो कोई अमुका की देही को
दुखदे रहा है उसे इस फ़लीते से जला दीजिये-पान फूल यंत्र पर चढ़ावे।

जब दीपक को जलाया जा चुके, तब रोगी-व्यक्ति से कहें कि वह अपनी दृष्टि को दीपक की लौ पर जमादे। जैसे ही भूतादि-दोषग्रस्त रोगी की दृष्टि दीपक की लौ पर ठहरेगी, वैसे ही भूतादिक का दोष दूर हो जाएगा अर्थात् जो भूत, प्रेत, खबीस आदि रोगी व्यक्ति को पकड़े होगा, वह उसे छोड़ कर तुरन्त भाग जाएगा और फिर कभी भी उसे परेशान नहीं करेगा। छुटकारा मिल जाने पर शाह अब्दुल कादर जीलानी के नाम पर बताशे बँटवा देने चाहिए।

यन्त्र २०७

बत्तीसा यन्त्र- नीचे बाँई ओर प्रदर्शित बत्तीसा यन्त्र को कागज के ऊपर हल्दी से लिखे तथा नीचे अपना मनोरथ भी लिखदे। फिर इसका पलीता बनाकर रविवार के दिन दीपक में जलाये इस प्रकार ७ रविवारों तक साधन करने से अभिलाषा पूरी होती है।

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	९	८	१
४	५	१०	१३

(बत्तीसा यन्त्र)

इस यन्त्र को लिखने के साथ ही हल्दी की गाँठों की माला पर 'ॐ ह्रीं हं सः' — इस मन्त्र का ११ माला जप भी करना चाहिए।

इसकी दूसरी विधि यह है कि रविवार को प्रातः स्नान कर कांसे की थाली में हल्दी से इस यंत्र को लिखे. फिर उस पर खड़ी बत्ती का चौमुखा घृत का दीपक रख कर, थाली को हाथ में लेकर सूर्य के सामने रखे तथा पूर्वोक्त मंत्र का जप करता रहे। सूर्य के घूमने के साथ-साथ ही स्वयं भी थाली लेकर घूमता जाय तथा सूर्यास्त होने पर अर्घ्य देकर व्रत खोलदे। इस विधि से ७ रविवार तक करे। स्त्री की दृष्टि न पड़े।

स्त्री-मोहन यन्त्र- नीचे दाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र स्त्रियों को मोहित करने वाला है। इसकी विधि निम्नानुसार है-

एक अविच्छिन्न भोजपत्र के टुकड़े पर ५ सीधी (खड़ी) तथा पाँच आड़ी (तिरछी) रेखायें खींच कर १६ कोष्ठकों वाले यन्त्र का निर्माण करे। फिर उसके कोष्ठकों में क्रमशः ५९, ६६, २, ८, ७, ३, ६३, ६२, ६५, ६०, ९, १, ४, ६, ६१ तथा ६४ - इन अंकों को भरे। यन्त्र-लेखन का कार्य स्त्री के स्तनों के दूध से तथा पुष्य नक्षत्र में किया जाना चाहिए। लेखनोपरान्त यन्त्र का गन्ध, पुष्प, धूप आदि से पूजन करे। इसके प्रभाव से साध्य-स्त्री मोहित होकर साधक के पाँवों पर आ गिरती है।

५९	६६	२	८
७	३	६३	६२
६५	६०	९	१
४	६	६१	६४

म०१०

अश्व-वशीकरण यन्त्र- नीचे बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को किसी शुभ मास के पहले रविवार को भोजपत्र के ऊपर कपूर, कस्तूरी तथा केसर के मिश्रण से लिखकर, सामान्य गंध, पुष्पादि से पूजा कर, ताबीज मे भरले तथा ताबीज को गुगलकी धूनी देकर घोड़े के गले में बाँधदे तो वह सदैव स्वामी के वश मे बना रहता है। कभी धोखा नहीं देता।

२६	३३	२	७
६	३	३०	२९
३२	२७	८	१
४	५	२८	३१

गो दुग्ध-वर्द्धक यन्त्र- नीचे बाँई ओर प्रदर्शित यंत्र को केसर, कस्तूरी कुंकुम, गोरोचन द्वारा भोजपत्र पर लिखकर, तय्यार करे।

लेखनो परान्त यन्त्र को एक ताँबे के ताबीजमें भरदे तथा ताबीज की गंध, पुष्पादि से पूजाकी और गुग्गुल की धूप दे। फिर उसे गाय के गलेमें बाँधदे तो वह अधिक दूध देने लगती है।

२८	३५	२	७
६	३	३२	३१
३४	२९	८	१
४	५	३०	३३

बिक्री वर्द्धक यन्त्र- नीचे प्रदर्शित दो यन्त्रों को शुभ तिथि तथा शुभ घड़ी-मुहूर्त में अलग-अलग भोजपत्र अथवा सफेद कागज के दो टुकड़ों पर अष्टगंध अथवा काली स्याही से लिखे। फिर एक को तो शहद में रखदे और दूसरे को शक्कर-बूरे में डालकर किसी मीठे अनार के पेड़ से बाँधदे तथा दूसरे को दुकान के दरवाजे पर बाँधदे।

यंत्र चाल दिखवाने का

८	११	१४	१
१३	१२	७	११
३	१६	९	६
१०	५	४	१५

जिस यन्त्र को दाँई ओर ऊपर प्रदर्शित किया गया है, उसे लिखने के बाद शहद में डाल देना चाहिए तथा दूसरे को दुकान के दरवाजे पर बाँधना चाहिए। इन यन्त्रों के प्रयोग से दुकान में माल की बिक्री खूब होने लगती है।

व	अ	ह	ब
व	ह	अ	व
अ	व	ब	ह
ह	ब	व	अ

दूरगामी यात्रा यन्त्र

३	६	६१	१
३६	४३	३४	८४
६३	११	१२	९१
३४	५२	५६	५७

किसी दूरगामी अथवा विदेश यात्रा पर जाते समय उक्त यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर केसर-कस्तूरी से लिखकर, ताबीज में भर कर अपनी दाँई भुजामें बाँध लें तो यात्रा निर्विघ्न एवं सफल सम्पन्न होती है।

तीर्थाटन यन्त्र

४	५५	१	२४
८	७	८१	७५
८६	८	२	३
५	९	३२	७५

उक्त यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर लाल चन्दन से लिख कर ताँबे के ताबीज में भर लें, फिर ताबीज को गुग्गुल की धूप देकर, दाँई भुजा में बाँध कर तीर्थाटन को जाँय तो तीर्थ-यात्रा सफलता पूर्वक सम्पन्न होती है।

सामान्य यात्रा यन्त्र

१	६५	१	९२
७८	९	२	५२
९७	२८	८७	९१
६	४	३९	४५

छोटी-मोटी यात्राओं पर जाने की जिन्हें 'प्रायः' आवश्यकता बनी रहती है, उन्हें उक्त यन्त्र को कागज पर काली स्याही से लिख कर, ताबीज में भर कर, भुजा में बाँधे रहने से कभी कोई कष्ट नहीं होता।

नौका स्तम्भन यन्त्र

९	४४	९	५१
४७	४	४	५२
३	२८	७८	९१
९	५	३९	४५

उक्त यन्त्र को तांबे अथवा लोहे की चादर पर खोद कर, पुष्प गंध आदि से पूजे, तदुपरान्त इसे नौका में रख दे तो उसका स्तम्भन हो जाता है अर्थात वह सालतापूर्वक पानी पर नहीं तैर पाती।

सर्प-स्तम्भन यन्त्र

८	६४	८	१६
६४	१४	६४	५४
४६	५१	१२	१२
४४	१५	६५	६५

उक्त यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर लाल चन्दन से लिखकर, गंध-पुष्पादि से पूजन करे। फिर तांबे के ताबीज में भर कर अपने कंठ में धारण किए रहे तो सर्प का भय नहीं रहता।

हिंसक-पशु स्तम्भन यन्त्र

९	४४	९	५१
७४	४	४	५२
३	२८	७८	९१
९	५	३९	४५

उक्त यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध से लिखकर तांबे के ताबीज में भर कर गुग्गुल की धूप दे, तदुपरान्त अपनी भुजा में पहने रहे तो मार्ग में कहीं हिंसक पशु का भय उपस्थित नहीं होता।

अग्नि स्तम्भन यन्त्र

७	७४	६	५६
६	६	१७	३७
४७	८६	८	६
८	५	३६	५७

उक्त यन्त्र को पत्थर की पटिया पर हल्दी अथवा गेरू से लिखकर पूजन करे फिर उस पटिया को घर के भीतर गड्ढा खोद कर गाड़ दे तो उस स्थान पर कभी अग्नि का भय उत्पन्न नहीं होता।

चौरादि स्तम्भन यन्त्र

७	४७	४	७
६	६	१७	३७
६७	६८	२६	४
५	८	२	५७

उक्त यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर केसर से लिखकर अथवा ताँबे के पत्र में खुदवाकर घर के भीतर रखने से वहाँ चोरों का प्रवेश नहीं होता। यन्त्र को प्रति दिन धूप अवश्य देते रहना चाहिए।

वाणी स्तम्भन यन्त्र

७	४६	६	६६
६	४	१७	७६
६७	६२	८	६
८	६	६३	७५

उक्त यन्त्र को गोरोचन द्वारा भोजपत्र पर लिखे। तत्पश्चात् गंध, पुष्प आदि से पूजन कर, गुग्गुल की धूप दे, तावीज में भर कर भुजा में पहने तो प्रतिवादी की वाणी स्तंभित हो जाती है।

पारिवारिक-सुखदाता यन्त्र

९०	७२	८	८
८	९	७	६०
७७	२७	८	१
७	५	७९	७४

उक्त यन्त्र को पूर्णिमा तिथि के दिन ताम्रपत्र पर खुदवाकर उसे घर में रखने तथा प्रतिदिन धूप देते रहने से पारिवारिक-सुख की वृद्धि होती है। सबमें प्रेम बना रहता है।

ऋण-मोचक यन्त्र

८५	५६	१	१२
६	६०	६२	१३
४६	४	१८	९१
४१	६९	२८	५८

उक्त यन्त्र को मंगलवार के दिन ताम्रपत्र पर खुदवाये। फिर नित्य पूजन करता रहे तथा मंगलवार का व्रत रख कर "ॐ भौमाय नमः" इस मंत्र का एक माला जप करे तो कर्ज से छुटकारा मिलता है।

आजीविका-दाता यन्त्र

८५	६५	९	२१
६	३०	६२	१३
६४	५	८८	११
५	८३	७४	८५

उक्त यन्त्र को गुरुवार के दिन प्रातः काल केसर द्वारा भोजपत्र पर लिख कर, पूजनोपरान्त ताँबे के ताबीज में भर कर बाँई भुजा में धारण करले तो सुख पूर्वक आजीविका का लाभ होता रहता है।

आरोग्य-वर्द्धक यन्त्र

५	४५	१७	२४
८	७	७१	७५
६४	५८	२६	४
५	६	३२	७५

उक्त यन्त्र को गोपीचन्दन द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखें। यन्त्र शुभमुहूर्त में तथा प्रातःकाल लिखना चाहिए। लिखने के बाद धूप-दीप देकर यन्त्र को कंठ में धारण कर ले तो शरीर स्वास्थ्य बना रहता है।

आयु-वर्द्धक यन्त्र

६	४४	६	५१
४	४	२	५२
८७	२८	८७	६१
६	५	३६	४५

उक्त यन्त्र को गोरोचन द्वारा द्वितीया तिथि को प्रातःकाल भोजपत्र के ऊपर लिखकर पूजन करें। फिर दिनभर व्रत रखकर दूसरे दिन ताबीज में भरकर भुजा में धारण करें तो आयु की वृद्धि होती है।

सुखवर्द्धक यन्त्र

७	५५	१	५१
८	४	८	५७
८	७८	२	१
५	६	२३	७५

उक्त यन्त्र को चाँदी के पत्र पर पुष्य नक्षत्र में खुदवायें। फिर पूजन करके घर के किसी आले आदि में रख दें और नित्य सायं दीपदान करते रहें तो सुख की वृद्धि होती है।

विद्या-वर्द्धक यन्त्र

७	४	७५	३२
५२	९	६२	५२
४५	५४	१	११
३५	८९	२३	८५

उक्त यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजपत्र पर बसंत पंचमी के दिन लिखे, तत्पश्चात् सरस्वती देवी के साथ ही यंत्र का पूजन कर, इसे तावीज में भर कर कंठ में धारण करले तो विद्यालाभ होता है।

बुद्धि-वर्द्धक यन्त्र

७	४५	९	८२
३	५	७७	१६
८७	६८	८	२
९	५	३९	७५

भाद्रपदमास की गणेश चतुर्थी को प्रातः काल स्नानादि से पवित्र हो, इस यंत्र को भोजपत्र पर लालचंदन से लिखे फिर गंध पुष्पादि से पूजन कर तावीज में भर कर भुजा में धारण करे तो बुद्धि बढ़ती है।

सम्मान-वर्द्धक यन्त्र

५	४५	९	२४
८	७	५८	७५
६४	५८	२६	४
५	९	३२	७५

उक्त यन्त्र को एकादशी के दिन पान के पत्ते पर केसर से लिखे, फिर उस पान को स्वयं ही खाकर, जहाँ भी जाय, वहीं सम्मान की प्राप्ति होगी। एकादशी को पहला प्रयोग करे। अन्य प्रयोग चाहे जब कर सकते हैं।

विवाद-विजय यन्त्र

७७	५३	४	९
६	९	२५	३५
६७	६२	९	८
७	५	७४	८

उक्त यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध से लिखकर धूप, दीप दे, पीले डोरे में लपेट कर अपनी पगड़ी, टोपी अथवा जेबमें रखकर न्यायालय में जाय तो मुकद्दमे में विजय प्राप्त हो।

शास्त्रार्थ-विजय यन्त्र

६९	४७	४	७
६	६	१७	७३
६७	६८	८	९
५	८	६	५७

उक्त यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर केसर, कस्तूरी एवं कपूर के मिश्रण से लिखकर, गंध-पुष्पादि से पूजन करे, फिर इसे भुजा में बाँधकर शास्त्रार्थ करने जाय तो विजय प्राप्त होती है।

प्रतियोगिता-विजय यन्त्र

७६	५८	९	५४
६	४२	६२	१५
५७	७२	८५	११
८	३८	८४	२५

उक्त यन्त्र को हल्दी द्वारा सफेद कागज पर लिखकर, गुग्गुल की धूनी दे, तदुपरान्त यन्त्र को अपने कण्ठ में धारण कर किसी प्रतियोगितामें भाग लेने को पहुँचे तो उसमें विजयी हो।

क्रोध-शमन यन्त्र

६६	७२	३	३
७	९	७	६२
७५	१७	८	१
७	५	५७	७५

जिन लोगों को क्रोध अधिक आता हो, उन्हें उपर्युक्त यन्त्र भोजपत्र के ऊपर केसर एवं कस्तूरी से लिखकर तथा ताँबे के ताबीज में भर कर अपनी भुजा में धारण कर लेना चाहिए। इससे क्रोध शान्त होता है।

रोग-शमन यन्त्र

६७	७४	२	७
४१	६३	५३	७३
७६	२१	३२	५
५	५	२२	७५

उक्त यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध से सोमवार, बृहस्पतिवार अथवा शुक्रवार के दिन लिखकर, धूप-दीप दे, ताबीज में भर कर रोगी-व्यक्ति की दाँईं भुजा में बाँध दें तो रोग से शीघ्र छुटकारा मिलता है।

चिन्ता-हरण यन्त्र

६८	३७	८	८
८	९	२७	२६
८७	२७	१	८
७	५	७७	९४

उक्त यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर केसर द्वारा द्वितीया, एकादशी अथवा पूर्णिमा तिथि को लिखें तथा ताबीज में भर कर कण्ठ में धारण कर लें तो विभिन्न प्रकार की चिन्ताओं से छुटकारा मिल जाता है।

मन्दिर-निर्माण का यन्त्र

९७	७५	१	२६
१	४६	६२	३६
५४	५	८७	९१
८	८९	६८	५८

उक्त यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर केसर द्वारा मोरपंख की कलम से लिख कर घर के भीतर स्थापित कर नित्य दीप दान करते रहने से मन्दिर-निर्माण का संकल्प पूरा होता है।

जलाशय-निर्माण का यन्त्र

९६	४७	३	७
६	३	७	२७
५७	१७	८	१
७	५	७१	४७

उक्त यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर केसर से लिखें तथा गंध-पुष्पादि से पूजन कर किसी जलाशय में प्रवाहित कर दें। २१ दिनों तक ऐसा ही करते रहने से जलाशय-निर्माण का संकल्प पूरा होता है।

गृह-निर्माण का यन्त्र

९७	५८	१	५४
५	२	६२	५१
६५	८	८५	११
८	८३	४८	८५

उक्त यन्त्र को ताम्र पत्र पर खुदवा कर, विधिवत् पूजन करें। फिर गृह-निर्माण हेतु जिस भूमि का चयन किया हो, उसमें गड्ढा खोद कर गाड़ दें तो कुछ ही दिनों में वहाँ गृह-निर्माण कार्य पूरा हो जाता है।

भक्ति-लाभ का यन्त्र

९३	२६	१६	१८
३६	४३	३४	४६
४६	११	१२	९१
४४	५२	६५	७५

उक्त यन्त्र को ताम्रपत्र पर अंकित करवाकर गन्ध, पुष्प, धूप द्वारा नित्य पूजन करते रहने तथा अपने इष्टदेव का ध्यान धर कर, उनका मन्त्र-जप करते रहने से भक्ति-लाभ होता है।

पुण्य-लाभ का यन्त्र

९	४४	९	५१
७४	४	४	५२
३	२८	२७	९१
७	५	३९	४५

उक्त यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध द्वारा १०८ की संख्या में लिखे, फिर उनका गंध-पुष्पादि से पूजन करे और नदी की धारा में बहा दे। २१ दिनों तक यह करने से पुण्य का लाभ होता है।

आत्मोन्नति कारक यन्त्र

९३	६०	१८	१६
३६	४३	३४	४६
६४	११	२१	९१
४४	५२	५६	५७

उक्त यन्त्र को केसर, कस्तूरी, कपूर तथा कुंकुम के मिश्रण से भोजपत्र पर लिखकर, धूप-दीप आदि से पूजन कर, ताबीज में भर कर दाँई भुजा में धारण कर लेने से आत्मोन्नति का लाभ मिलता है।

पदोन्नति दाता यन्त्र

९३	३३	१५	४६
४३	४	४	५२
४४	२८	२७	९१
४५	५	९३	५४

उक्त यन्त्र को ताम्रपत्र पर अंकित करवा कर, नित्य पुष्प, गंध, धूप-दीप आदि से पूजा करते हुए इष्ट देव का ध्यान करें तथा उन्हीं का मन्त्र जपें तो शीघ्र ही पदोन्नति का लाभ मिलता है।

स्थानान्तरण कर्त्ता यन्त्र

९०	७४	०	९
६	६	७१	७३
६७	८६	८	९
५	८	९३	७

उक्त यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर लालचन्दन द्वारा १०८ की संख्या में लिखें, तदुपरान्त उन्हें पूजन करके किसी नदी में प्रवाहित करें। २१ दिनों तक ऐसा करते रहने से स्थानान्तरण हो जाता है।

वाहन-प्राप्ति का यन्त्र

९३	२३	६१	१७
३९	४३	३७	४५
६३	११	१२	९१
२४	२५	५६	७५

उक्त यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर गोरोचन द्वारा पंचमी तिथि को लिखें, फिर पूजनोपरान्त उसे ताबीज में भरकर अपनी दाँई भुजा में धारण किए रहें तो कुछ ही दिनों में वाहन का लाभ होता है।

कला-क्षेत्र में सफलता का यन्त्र

३६	२७	८	८
८	६	७	२६
२७	७२	८	१
७	५	६७	७४

जो लोग अभिनय, संगीत, चित्रकारी आदि कला के किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के इच्छुक हों, उन्हें उक्त यन्त्र केसर द्वारा भोजपत्र पर लिखकर, ताबीज में बन्द करके अपनी दाँई भुजा में धारण करना चाहिये।

धरोहर की सुरक्षा का यन्त्र

३६	३३	५२	४६
१४	३६	५३	६१
४	११	३२	७५
५४	४५	२२	४

यदि आप किसी के पास अपनी कोई वस्तु धरोहर के रूप में रख रहे हों, तो उसके साथ ही उक्त यन्त्र को काली स्याही द्वारा सफेद कागज पर लिखकर और रख दें। इससे आपकी धरोहर सुरक्षित बनी रहेगी।

धन की सुरक्षा का यन्त्र

३६	३३	२५	४६
४१	६३	५३	६१
४१	११	३२	७५
६४	४५	२२	४६

उक्त यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजपत्र पर लिखकर, पीले धागे में लपेटकर अथवा ताबीज में भरकर रुपयों-पैसों आभूषणों आदि के साथ रख देने से वे सुरक्षित बने रहते हैं।

स्नेह-वृद्धि यन्त्र

६३	५८	१	३८
१	९	६२	६१
८७	४५	१	८
८	५	८३	८५

उक्त यन्त्र को चाँदी की अँगूठी पर खुदवाकर, उसे गंध, पुष्प, धूप आदि से पूजने के बाद अपने जिस प्रियजन को उसे पहना दिया जाएगा, उसके साथ स्नेह की अभिवृद्धि होती रहेगी।

प्रेमी-मिलन यन्त्र

५८	३७	६	८
७८	९	२	५२
५४	५	८७	९१
७	८९	६८	५८

उक्त यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध द्वारा पूर्णिमा तिथि को प्रातःकाल लिखें तथा उस दिन व्रत रखकर अपने प्रेमी का चिन्तन करें। सायंकाल यन्त्र को ताबीज में भरकर कंठ में धारण कर लें तो मिलस्को।

प्रेम में सफलता का यन्त्र

६५	६५	१	४५
७	२३	३२	५१
६५	८	८५	११
८	८३	७४	८५

उक्त यन्त्र को ताम्रपत्र पर अंकित करवाकर, शुक्रवार के दिन प्रातःकाल से पूजना आरंभ करें। फिर नित्य प्रातःकाल यन्त्र की पूजा करें एवं अपनी कामना का ध्यान करते रहें तो प्रेम सफलता मिलती है।

साझेदारी में सफलता का यन्त्र

३८	५७	१	८
१	९	६२	२१
८०	२७	१	८
८	५	८३	६५

उक्त यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजपत्र के दो टुकड़ों में लिखें। फिर उनका पूजन कर, अलग-अलग ताबीजों में भरें तथा दोनों साझीदार एक-एक यंत्र भुजा में धारण किए रहें तो साझेदारी सफल हो।

दृढ़ मैत्री-निर्वाह का यन्त्र

३८	६५	१	२१
०	३६	६२	१६
४५	५	८१	९१
८	६९	२८	५८

उक्त यन्त्र को कुंकुम तथा केसर द्वारा भोजपत्र के दो टुकड़ों पर अलग अलग लिखें। फिर उन्हें दो ताबीजों में अलग-अलग भर कर चुप दें। तत्पश्चात दोनों मित्र एक एक ताबीज पहने रहें तो मैत्री दृढ़ रहेगी।

ऋण से छुटकारे का यन्त्र

३८	६६	१	१७
०	१३	६२	५३
४५	४१	८१	१७
८	२५	५६	७५

उक्त यन्त्र को ताम्र पत्र पर खुदवाकर मंगलवार के दिन से प्रातः काल पूजना आरंभ करें। नित्य नियमित रूप से पूजन करते रहने पर थोड़े ही दिनों में ऋण से छुटकारा मिल जाता है। मंगलवार का व्रत भी रखें तो अत्युत्तम

परीक्षा में सफलता का यन्त्र

३८	८५	१	३२
५	९	६२	५२
४५	५४	१	११
८	८३	८	५

उक्त यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर गोरोचन, अगर, केसर के मिश्रण से लिखकर गंध-पुष्पादि से पूजन करें। तदुपरान्त ताँबे के ताबीज में भर, दाँई भुजा में बाँधकर परीक्षा देने जाँए तो सफलता प्राप्त होती है।

निर्वाचन में सफलता का यन्त्र

१६	१५	३६	१८
२६	४३	३४	६३
७४	११	२१	६४
४४	५२	५६	४५

उक्त यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजपत्र पर सोमवार को प्रातःकाल लिखकर पूजन करें तथा पाँच ब्राह्मणों को भोजन करवाकर, यन्त्र को दाँई भुजा में धारण करें तो निर्वाचन में सफलता प्राप्त होगी।

वृद्धावस्था में सुख-लाभ का यन्त्र

३७	७४	८	९
६	६	७१	७६
७६	२२	८	९
५	८	३९	७५

उक्त यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर केसर से लिखकर, पूजन करने के बाद ताबीज में भरकर अपनी दाँई भुजा में धारण करलें तो इसके प्रभाव से वृद्धावस्था सुख से बीतेगी, कोई कष्ट नहीं होगा।

सन्तति-सुख दाता यन्त्र

८३	५६	१	३५
२६	४३	३४	६३
७४	११	२१	९४
४४	५२	५६	४५

उक्त यन्त्र को द्वितीया के दिन भोजपत्र के ऊपर, अष्टगंध से लिखकर पूजन करें, फिर ताबीज में भर कर अपनी दाँई भुजा अथवा कण्ठ में धारण किए रहे तो सन्तान द्वारा सुख प्राप्त होता है।

विवाह कारक यन्त्र

८७	६७	३	८
८	९	४२	२५
७८	७२	९	८
७	५	३९	३५

जिन लोगों का विवाह नहीं हो रहा हो, उन्हें उक्त यन्त्र भोजपत्र के ऊपर केसर-कस्तूरी से लिखकर, पूजनोपरान्त चाँदी के ताबीज में भरकर कंठ में धारण करना चाहिए। इससे विवाह शीघ्र होगा।

पुत्र-प्रदाता यन्त्र

८५	६५	९	४५
६	२३	२६	१५
६५	८	८५	११
८	८३	७४	८५

उक्त यन्त्र को भोजपत्र के दो टुकड़ों पर केसर, कस्तूरी तथा कपूर द्वारा अलग-अलग लिखें। तदुपरान्त पूजन करके दो ताबीजों में भर कर पति-पत्नी एक ताबीज कंठ में धारण किए रहें तो पुत्र का लाभ होता है।

खोई वस्तु मिलने का यन्त्र

८०	६४	२१	१७
३६	१३	६४	५३
६६	६१	१२	११
६४	२५	५६	६५

यदि कोई वस्तु खोगई हो तो उक्त यन्त्र को काली स्याही द्वारा सफेद कागज पर लिखकर, रात के समय अपने सिरहाने रख कर सोने से, स्वप्न में उसके मिलने के विषय में ज्ञात होजाता है।

गये व्यक्ति को लौटाने का यन्त्र

७७	५५	०	९
६	६	४५	५३
७६	३६	९	८
७	५	७४	५४

उक्त यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध से लिखें। नीचे साध्य-व्यक्ति का नाम भी लिखें। फिर यन्त्र को चाकी पर रखकर, चाकी को उल्टा चलायें। ७ दिन तक ऐसा करो तो गया व्यक्ति शीघ्र लौट आता है।

राजदण्ड भय नाशक यन्त्र

८०	१२	८	९
४३	६४	७१	७४
६४	१२	८	६५
४४	५५	५५	७५

उक्त यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजपत्र पर लिखकर नित्य प्रातः काल पूजने से राजदण्ड आदि का भय दूर होता है। इस यन्त्र को नित्य नया लिखकर पूजना चाहिए, जब तक कि काम पूरा न होजाय।

कुटुम्ब-वृद्धि यन्त्र

५६	८	१	४५
५	२३	६२	१५
६५	८	५८	११
८	८३	७४	८५

उक्त यन्त्र को ताम्रपत्र पर अंकित करवा कर, घर में किसी पवित्र स्थान पर रखें तथा यन्त्र को नित्य गंध, पुष्प, धूप, दीप देकर पूजते रहें तो कुटुम्ब की अभिवृद्धि होती है।

भ्रातृ-सुख वृद्धि यन्त्र

५६	५७	६	९
६	९	४५	४३
७६	३	९	८
७	२	७५	५४

उक्त यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर सफेद और लाल चंदन तथा केसर-कस्तूरी के मिश्रण से लिखकर, ताबीज में भर लें, फिर उसे गुग्गुल की धूप देकर दाँई भुजा में बाँधे रहे तो भ्रातृ-सुख की वृद्धि हो।

कन्या-विवाह यन्त्र

५६	५७	६	९
६	४	९५	५३
७६	२३	९	८
७	५	७६	५४

उक्त यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजपत्र पर लिखकर, धूप-दीप आदि से पूजन करें, फिर ताबीज में भर कर विवाह योग्य कन्या के कण्ठ में पहिना दें तो उसका विवाह शीघ्र हो जाता है।

गढ़े धन की प्राप्ति का यन्त्र

४८	७५	१	२३
६	८३	६२	५३
५४	५	८७	९१
८	६६	५६	८५

उक्त यन्त्र को ताम्रपत्र में खुदवा कर गंध-पुष्पादि से पूजन कर, उस स्थान में गाड़ दें, जहाँ गढ़ा धन होने की संभावना हो। यन्त्र के प्रभाव से स्वप्न में उसके संबंध में सही जानकारी मिल जाती है।

आकस्मिक धन-लाभ का यन्त्र

४३	२६	१	८५
८	९	४२	२५
७८	७२	९	५५
७	५	३९	८

उक्त यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर केसर-कपूर तथा कुंकुम द्वारा लिखकर पूजें, फिर ताबीज में भरकर अपनी भुजा अथवा कण्ठ में धारण किए रहें तो आकस्मिक रूप से धन-लाभ होता रहता है।

ऋण-प्राप्ति का यन्त्र

४६	१	८५	८५
८	९	२२	२५
८७	२७	९	५५
७	९	३९	८

उक्त यन्त्र को सफेद कागज के ऊपर काली स्याही से लिखकर पूजा करें, फिर उसे किसी नदी में प्रवाहित कर दिया करें। २१ दिनों तक ऐसा करते रहने से ऋण सुविधा पूर्वक मिल जाता है।

शत्रु को जूती लगने का यन्त्र- किसी खराब महीने के आखिरी (अंतिम) मंगलवार को फौलाद की छुरी से कच्ची ईंट पर बाँई ओर उपलिखित यन्त्र को एक ओर लिखे तथा ईंट की दूसरी ओर शत्रु का नाम लिख कर, आधी रात के समय उस पर घी का दिया रखकर, फूल, मिठाई और इत्र चढ़ावे। यन्त्र को लिखने के बाद एक बार पूरी बिस्मिल्लाह नीचे लिखे अनुसार पढ़े –

द	स	म	म	म	ल	ब	ह	अ
ह	द	य	ज	य	फ	व	च	ह
ल	अ	त	ल	अ	म	ह	ह	त
अ	र	म	अ	द	व	ह	ल	त
अ	द	अ	र	अ	म	य	ल	ख
य	स	व	स	क	अ	म	व	ह
ल	अ	म	ह	नाम बैरी न	अ	य	न	ग़
अ	अ	म	ब	त	ब	व	ह	ल
य	ब	अ	अ	द	य	त	ब	त

"बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम।"

इसके बाद ४१ बार दरूद निम्नानुसार पढ़े-

"अल्ला हुम्मा सल्ले अला मुहम्मदिन व अल्ला आलेही मुहम्मदिन व बारक व सल्लम।।"

इसके बाद निम्न लिखित मन्त्र को १००० बार पढ़े, परन्तु हर बार १०० मन्त्र पढ़ने के बाद बैरी के नाम पर ५ जूती मारनी चाहिए–

"या कहहारो या इतराइलो या दौराइलो या अमवाकिलो 'अमुके' की पूरी देह और मुँह को मेरी जूती की चोट से घायल करो बहक्क या कहहारो।" – इस मन्त्र में जहाँ 'अमुके' शब्द आया है, वहाँ दुश्मन के नाम का उच्चारण करना चाहिए। मन्त्र-जप के अन्त में ४१ बार दरूद पुनः पढ़नी चाहिए।

पहले मन्त्र को सिद्ध करने के लिए केवल १० दिन तक नित्य १०,००० की संख्या में मन्त्र को जपना चाहिए तथा अन्त में जप का दशांश होम करना चाहिए। इस प्रयोग से शत्रु के ऊपर जूते पड़ते हैं तथा उसे घर कष्ट मिलता है।

बैरी को जेर करने का प्रयोग- बैरी को जेर करने के प्रयोग में पहले मन्त्र को सिद्ध करना पड़ता है। मन्त्र इस प्रकार है-

"ॐ नमो हनुमंत बलवंत माता अंजनी पुत्र हल हलंत आओ चढ़ंत आओ गढ़ किल्ला तोरंत आओ लंका जाल बाल भस्म करि आओ ले लागूं लंगूर ते लपटाय सुमिरते पटका ओ चन्दी चन्द्रावली भवानी मिल गावे मंगलचार जीते राम लक्ष्मण हनुमानजी आओजी तुम आओ सात पान का बीड़ा चाबत मस्तक सिन्दूर चढ़ाओ आओ मंदोदरी के सिंहासन डुलंता आओ यहाँ आओ हनुमान माया जागते नृसिंह माया आगे भैरूं किलिकिलाय ऊपर हनुमंत गाजे दुर्जन को डार दुष्ट को मार संहार राजा हमारे सत्त गुरु के बालक मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।"

विधि (१) - सर्वप्रथम मन्त्र को सिद्ध करने के लिए उसका १०,००० की संख्या में जप करें। जप को २१ अथवा ४१ दिन में पूरा कर लेना चाहिए। मंगलवार के दिन ८ पान के बीड़ा तथा ८ लड्डुओं का भोग लगाना चाहिए। अन्य दिनों में एक पान का बीड़ा तथा ८ बताशों का भोग नित्य लगाना चाहिए जप के अन्त में नित्य धूप, दीप नैवेद्य आदि से विधिपूर्वक हनुमानजी का पूजन करना चाहिए तथा हनुमान जी पर सिन्दूर का चोला चढ़ाना चाहिए। इस प्रकार मन्त्र सिद्ध हो जाता है, तब जिस दुश्मन को जेर अर्थात बर्बाद करने के लिए मन्त्र-साधन किया जाता है, उसमें सफलता प्राप्त होती है।

विधि (2)- पृथ्वी के ऊपर शत्रु की एक मूरत लिखे तथा उसमें यथा स्थान बीज-मन्त्र लिख कर उसकी छाती में शत्रु का नाम लिखे (जैसा कि बाँई ओर के चित्र में दिखाया गया है) इसके बाद मंत्र को पढ़ते हुए मूरत के सिर में दो जूते मारे तो इस प्रयोग से बैरी का सिर फूटता है तथा उसकी बुद्धि नष्ट हो जाती है अर्थात वह बावला हो जाता है। पृथ्वी पर पुतला बनाते समय मोम की चार कीलें बनाकर, उन्हें मन्त्र से अभिमंत्रि-त करके चारों कोनों में गाड़ देना चाहिए तथा हनुमान जी को खीर का भोग लगाना चाहिए।



विधि (3)- पूर्वोक्त मूरत की भाँति मोम का एक पुतला बनाकर, जहाँ-जहाँ बीज-मन्त्र लिखे हैं, उन सबको उस पुतले में यथास्थान लिखें। बीज मन्त्र लिखते समय अपना मुँह पूर्व दिशा की ओर रखना चाहिए। पुतले की छाती में शत्रु का नाम लिखें। फिर मुर्दे की हड्डी की कील को पुतले की छाती में ठोंक कर, पूर्वोक्त मन्त्र से अभिमंत्रित करके उसे श्मशान भूमि में गाड़ दें तथा मुर्दे की हड्डी की भस्म से ढँक दें।

उक्त प्रयोग के प्रभाव से शत्रु बावला, पागल तथा बीमार हो जाता है। जब तक पुतले को उखाड़ा नहीं जाता, उस पर विपत्तियाँ मँडराती रहती हैं और अन्त में उसकी मृत्यु हो जाती है। स्मरणीय है कि इन साधक की प्रत्येक क्रिया को करते समय मन्त्र का पाठ अवश्य करना चाहिए। इस मन्त्र द्वारा अभिमंत्रित 4 कीलों को शत्रु के घर की चारों दिशाओं में गाड़ देने से उसका स्तम्भन होता है।

क़ैदी को छुड़ाने का यन्त्र- यदि कोई मनुष्य क़ैद (जेल या ऐसे ही अन्य बन्धन) में पड़ा हो और उसे छुड़ाना अभीष्ट हो तो बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र का निम्नानुसार प्रयोग करना चाहिए -

या हाफिज	३३२	३३८	२२१०
या हाफिज	३३२	३३४	२३६
६६	३३७	३३०	३३५
क़ैदी का नाम क़ैदी के पिता का नाम	या हाफिज	या हाफिज	या हाफिज

(क़ैदी को छुड़ाने का यन्त्र)

रविवार के दिन एक जंगली काला कबूतर लाकर उसके गले में इस यन्त्र को केशर द्वारा भोजपत्र पर लिख कर बाँध देना चाहिए तथा कबूतर को उड़ा देना चाहिए।

प्रदर्शित यन्त्र में जिस जगह क़ैदी तथा उसके पिता का नाम लिखने का उल्लेख है, वहाँ साध्य-व्यक्ति अर्थात् क़ैदी और उसके पिता का नाम लिखना चाहिए तथा यन्त्र लिखने के बाद उसका विधिवत् पूजन भी अवश्य करना चाहिए. उसके बाद ही यन्त्र को कबूतर के गले में बाँधना चाहिए। इस प्रयोग से क़ैदी बन्धन-मुक्त हो जाता है।

बालभय नाशक यन्त्र- दाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखकर, गंध, पुष्प, धूप, दीप आदि से यथा विधि पूजन करें, तदुपरान्त उसे 'त्रिलोह' के ताबीज (सोना, चाँदी तथा ताँबा मिश्रित) में भर कर बालक के गले में बाँध दें। इस यन्त्र के प्रभाव से उसका डरना तथा बुरे ख्वाब देखना बन्द हो जाएगा। ताबीज को काले डोरे में पिरोना चाहिए।

या फता	या फता	या फता	या फता
या फता	या फता	या फता	या फता
या फता	या फता	या फता	या फता
या फता	या फता	या फता	या फता

बवासीर का यन्त्र- बाँये प्रदर्शित यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजपत्र पर लिखकर गंध पुष्पादि से पूजन कर, ताँबे अथवा त्रिलोह (सोना, चाँदी, ताँबा) के ताबीजमें भरकर बाँई भुजामें बाँधने से खूनी तथा बादी-दोनों प्रकार की बवासीर में लाभ होताहै।

१	४	४४	८
४५	७	२	४६
६	४२	४६	३
४८	४	५	४३

चेचक का यन्त्र- बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को केसर, कस्तूरी तथा गोरोचन द्वारा भोजपत्र पर लिखकर, गन्ध-पुष्पादि से पूजन करे, फिर किसी डोरे में लपेटकर रोगी की भुजामें बाँध दे तो चेचक रोग का प्रकोप शान्त हो जाता है।

१	२१६९	११	८
११	७	२	११६८
६	९	३१७९	३
३१७	४	५	१०

पित्ती का यन्त्र- दाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र में भोजपत्र के ऊपर अष्टगंधसे लिखकर, गंध-पुष्पादि से पूजन करे। फिर गूगल की धूनी देकर ताबीजमें भरकर बाँधे तो पित्ती निकलना बन्द होताहै

७०	७७	२	७
६	३	७४	२३
७६	७१	८	१
४	५	७२	७५

आधासीसी का यन्त्र- दाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को केसर, कस्तूरी, अष्टगंध आदि किसी भी शुभ गंध से भोजपत्र पर लिखकर, यन्त्र का पूजन करे, फिर उसे आधासीसी के रोगी के मस्तक पर बाँधदे तो उसका रोग दूर हो जाता है।

१०	१७	२	७
६	३	१४	१३
१६	११	८	१
४	५	१२	१५

महा०

छाया भस्म करने का यन्त्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजपत्र पर लिखकर उसका गंध, पुष्प आदि से यथाविधि पूजन करें तथा गुगल की धूप दें। तत्पश्चात् यन्त्र का पलीता (बत्ती) बनाकर जलादें।

२४	१९	२०	१	२८	३९	३०
२९	२७	१८	९	७	४७	३८
३७	३५	२९	१७	८	९	४९
४५	३९	३४	२५	४९	१४	५
४	५५	४२	३३	२४	१५	१३
१२	३	४३	४१	32	23	21
२०	१२	२	४९	४०	31	22

इस यन्त्र का पलीता जलाने से छाया भस्म हो जाती है।

प्रेत दूर करने का पलीता यन्त्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को कागज के ऊपर काली स्याही से लिखकर, गुगल की धूप दे। यदि यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर केसर, कस्तूरी, गोरोचन आदि किसी गंध से लिखा जाय तो अधिक अच्छा रहता है।

यन्त्र को लिखने तथा उसका पूजन करने के बाद उस व्यक्ति को सुँघावे, जिसे प्रेत ने जकड़ रक्खा हो।

इस यन्त्र के प्रभाव से प्रेत बोलने लगता है तथा जो कुछ पूछा जाय, उसका जवाब देता है। अन्त में स्व-ग्रस्त व्यक्ति को छोड़कर भाग भी जाता है

अ	मू	सि	ज	ज	त्र	०	०	०
द	च	जा	पै	नि	खै	०	०	०

व्यवसाय-वर्द्धक यन्त्र- नीचे प्रदर्शित यन्त्र को एक बड़े भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध से लिखकर, गंध, पुष्प, धूप-दीप आदि से पूजन करें, तदुपरान्त उस भोजपत्र को शीशे में मढ़ाकर यन्त्र को दूकान अथवा गद्दी या कार्यालय के किसी स्थान में टाँग दें तथा नित्य धूप देते रहें तो व्यवसाय में बहुत वृद्धि होती है।

६६	८२	८१	८६
८१	७५	७६	८१
७४	७८	७५	७१
८४	७२	७२	७६

इस यन्त्र को घृत में सिन्दूर मिलाकर, दूकान गोदाम, कार्यालय आदि की दीवार पर भी लिखा जा सकता है। दीपावली के अवसर पर जहाँ 'श्रीगणेशाय नमः', 'श्री महालक्ष्म्यै नमः' आदि मन्त्र तथा पन्द्रहिया अथवा बीसा यन्त्र लिखने की प्रथा हो, वहाँ इस यन्त्र को भी अवश्य लिखना चाहिए यह भी व्यवसाय-वृद्धि में सहायक सिद्ध होता है।

द्यूतविजय यन्त्र- नीचे प्रदर्शित यन्त्र को एक भोजपत्र के टुकड़े पर केसर, कस्तूरी, कपूर तथा गोरोचन द्वारा लिखकर धूप दे, तदुपरान्त ताँबे या चाँदी के ताबीज में भर कर अपनी दाँई भुजा में बाँध कर जुआ खेलने जाय तो उसे जुए में विजय प्राप्त होती है कभी हारता नहीं है।

१	२५।	२३।	२३
३१॥।	२७॥	३५॥	३६॥
१॥	८	२४॥	१९॥
२६।	१॥।	५॥।	४॥।

पानी बन्द करने का यन्त्र- नीचे प्रदर्शित यन्त्र को कागज के ऊपर काली स्याही से लिखकर, बबूल के पेड़ में बाँध देने से पानी बरसना बन्द हो जाता है। जब आवश्यकता से अधिक पानी बरस रहा हो, तभी इस यंत्र का प्रयोग करना चाहिए।

११	१८	२	८
७	३	३४६	३०५
३४८	३६३	६	१
४	६	३४४	३४७

(पानी बंद करने का यंत्र)

अथ यन्त्र महार्णव (पञ्चम खण्ड)

'यन्त्रमहार्णव' के पिछले खण्डों मे विविध कामनाओं की पूर्ति करने वाले जिन यन्त्रों का उल्लेख किया गया, वे हिन्दू-पद्धति के थे। इस खण्ड में इस्लामी पद्धति के यन्त्रों का उल्लेख किया जा रहा है, साथमें कुछ अन्य लोक-प्रचलित यन्त्र भी इसमे संकलित किए गए हैं, जिनका फलदायकत्व आस्था और विश्वास पर ही निर्भर करता है, परन्तु उनके बहुप्रचारित होने में कोई सन्देह नहीं है।

बिस्मिल्लाह का मन्त्र - प्रत्येक फारसी मन्त्र-यन्त्र प्रयोग के प्रारंभ मे "बिस्मिल्लाह' पढ़ने का नियम है। बिस्मिल्लाह के बाद दरूद पढ़ी जाती है, अतः इनके विषय में जान लेना आवश्यक है। बिस्मिल्लाह का मन्त्र इस प्रकार है – "बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम।"

दरूद का मन्त्र - दरूद का मन्त्र इस प्रकार है – "अल्ला हुम्मा सल्ले अला मुहम्मदिन व अल्ला आलेही मुहम्मदिन व बारक व सल्लम।"

प्रत्येक मुसल्मानी मन्त्र के आदि में 'बिस्मिल्लाह' पढ़ने के बाद 'दरूद' के मन्त्र को सात, ग्यारह अथवा इक्कीस बार पढ़ना चाहिए। मन्त्र के अन्त में भी इसे इतनी ही बार पढ़ना आवश्यक है।

अज़मत का मन्त्र - दरूद के बाद कहीं-कहीं 'अजमत' पढ़ने की भी आवश्यकता होती है। अजमत का मन्त्र इस प्रकार है – "बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम अल्ला हुम्मा इन्नी अस अलो का बिहक्के इस्काइकल व सिफातिकल. उलया या रज्जाको या समीओ अनत कदो हाजतो अकसमेता

अलैकुम । या अईयोहलुम लायक तिल मवक्किलातो अल हाजिल तुरू फित्तामाति ताहिरात या दरदा-
-ईलो या किलकाईलो बिहक्के सईयदि कुलूवा अमीनिकुम अल अजीमत नहायू सो मगायूसो इन्नमा
अमरूहू इजा आरादा शैयन अनयकूलो लहू कुन यफ कुनफ सुबहानल्लजी ये यदूहिन कूतोकुल्लशा
अइन अलै टेतुर्जऊन ।"

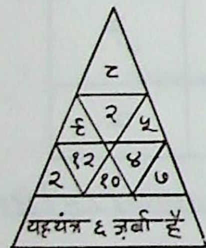
सबसे पहले 'बिसमिल्लाह', फिर ७, ११ अथवा २१ बार 'दरूद' तदुपरान्त एक बार 'अजमत' पढ़े
इसके बाद ही फारसी के किसी अक्षर-मन्त्र अथवा अन्य मन्त्र को पढ़ना चाहिए।

बीसा यन्त्र- बीसा यन्त्र कई प्रकार के होते हैं। आगे कुछ बीसा यन्त्रों के स्वरूप प्रदर्शित
किए जाएंगे, जिन्हें हिन्दू-पद्धति के अनुसार लिखा जाता है। यहाँ मुसलमानी पद्धति के अनुसार 'बीसा यन्त्र-
साधन की विधि का उल्लेख किया जा रहा है।

मुसलमानी-मत में यन्त्र किसी भी प्रकार का क्यों न हो, उसे पृथ्वी पर पीली मिट्टी बिछाकर
उसके ऊपर अँगुली से पहले लिखना चाहिए। इस प्रकार यन्त्र को लिख-लिखकर मिटाते जाँय। २१, ११
या ७ यन्त्र लिखें। अन्तिम यन्त्र की फूल, मिठाई, धूप, दीप से पूजा करें। यदि कोई सम्बन्धित
मन्त्र हो तो उसका भी जप करना चाहिए। फिर उस यन्त्र को मिटाकर पृथ्वी पर पानी डाल दें तथा
वहाँ की मिट्टी को उठाकर नदी में डाल दें।

यन्त्र के साथ किसी मन्त्र के जप का विधान भी हो तो पहले मन्त्र को निश्चित संख्या में
जपकर सिद्ध कर लेना चाहिए, तत्पश्चात् यन्त्र-लेखन आदि के कार्य करने चाहिए।

नीचे प्रदर्शित 'बीसा यन्त्र' को लिखते समय शाह फ़रीद जालंधर की आत्मा अपने हृदय में ले लेनी चाहिए। इस यन्त्र को चालीस दिनों तक नित्य २० की संख्या में लिखना चाहिए तथा दीपक जलाकर, लोबान की धूनी देनी चाहिए। बीसवें यन्त्र को कागज पर लिखकर उसका पूजन करना चाहिए। सर्वप्रथम एक बार पूरी 'बिस्मिल्लाह' पढ़ कर, चालीस बार बड़ा मन्त्र पढ़ना चाहिए। बड़ा मन्त्र इस प्रकार है—



" या जिब्राईल या दरदाईल या रफ्ताईल या तन्काफील बहक़्क या बुदूह।"

इस बड़े मन्त्र को पढ़ने के बाद छोटा मन्त्र —" या बुदूह"— पढ़ना चाहिए। फिर ४० बार पहला मन्त्र पढ़ना चाहिए तथा चार घड़ी दिन रहे, तब ४०० बार बड़ामंत्र पढ़ लेना चाहिए। मन्त्रों का पाठ यन्त्र को सामने रखकर ही करना चाहिए। सन्ध्या के समय यन्त्र की गोली बाँधकर नदी में बहा देना चाहिए। इस प्रकार यन्त्र सिद्ध हो जाता है।

यन्त्र के सिद्ध हो जाने पर प्रतिदिन एक यन्त्र लिखकर १०१ बार बड़ा मन्त्र पढ़ना चाहिए। बाद में आवश्यकतानुसार जब किसी मनोरथ की सिद्धि के लिए यन्त्र को लिखे, तो पूर्वोक्त प्रकार से पूजन करके २० हजार बार " या बुदूह" पढ़ना चाहिए। मनोरथ-साधन के समय यन्त्र को जब लिखा जाय उस समय यन्त्र के नीचे अपने मनोरथ को भी लिख देना चाहिए। बाद में यन्त्र को चूल्हे में गाड़ देना अथवा सिल के नीचे दबा देना चाहिए।

बीसा यन्त्र के अन्य स्वरूपों के विषय में आगे लिखा जा रहा है। साधनविधि यही है।

यन्त्र ३०७

महा०

१० ज़र्बा बीसा यन्त्र- नीचे बाँई ओर प्रदर्शित बीसा यन्त्र १० जर्बा है। इस यन्त्र को लिख-लिखकर दरीया में बहाना चाहिए। इस यन्त्र की साधन-विधि पिछले यन्त्र की भाँति ही है।

१	८	३	८
५	६	३	६
७	२	६	२
७	४	५	४

८ ज़र्बा बीसा यन्त्र- नीचे प्रदर्शित बीसायंत्र ८ जर्बा है। इसे रात के समय पीपल के पत्ते के ऊपर अगणित संख्या में लिखते रहने से किसी दित पत्र की अशुद्धता निकल जाती है, उस समय चार मुवक्किल हाजिर होते हैं। यन्त्र को लिखते समय दुर्जैका बड़े मन्त्र का जप करते जाना चाहिए तथा अन्तिम यन्त्र को लोबान की धूनी

८	२	१०
९	७	४
३	११	६

देकर, एक बार पूरी 'बिस्मिल्लाह' पढ़कर, दो हजार बार 'या बुदूह' मन्त्र को पढ़ना चाहिए। मन्त्र के आदि और अन्त में चालीस-चालीस बार बड़ा मन्त्र पढ़ना चाहिए। अन्य सब विधियाँ पहले यन्त्र की भाँति ही समझनी चाहिए।

४ ज़र्बा बीसा यन्त्र- नीचे दाँई ओर प्रदर्शित बीसा यन्त्र ४ जर्बा है।

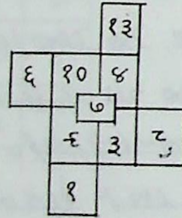
इस यन्त्र को लिखने तथा साधन करने की विधि भी पहले यन्त्र के समान ही समझनी चाहिए। यन्त्र के चारों कोनों में 'बदवक या बुदूह' यह पूरा मंत्र लिखना चाहिए। प्रदर्शित यंत्र में इसे संक्षेप में लिखा गया है, अतः पूरा करके लिखना चाहिए।

चौथा यंत्र ४ जर्बा

बदवक्क या बु:
२
बदवक्क या बु:
६ ३
१ १० ९
७ ८
बदवक्क या बु:
२
बदवक्क या बु:

६ ज़र्बी बीसा यन्त्र - नीचे बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र ६ ज़र्बी बीसा यन्त्र है। इस यन्त्र की प्रयोग एवं साधन विधि भी पूर्व वर्णित यन्त्रों की भाँति ही है। इन सभी यन्त्रों को लिखते समय आदि तथा अन्त में ७, ११ अथवा २१ बार 'दरूद' अवश्य पढ़नी चाहिए।

पांचवांयत्र ६ज़र्वा

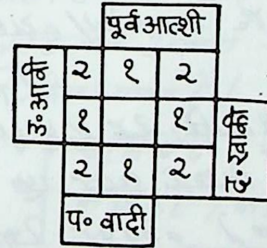


'दरूद' पढ़ने से पैगम्बर साहब की मदद पहुँचती है। 'दरूद' एवं बिस्मिल्लाह के मन्त्रों का उल्लेख पहले ही किया जा चुका है।

यन्त्र की दिशाएं - प्रत्येक यन्त्र की चार दिशाएँ तथा चार विदिशाएं (कोण) होती हैं। दिशा का बाँया कोना दिशा में सम्मिलित किया जाता है, जैसे कि पूर्व का बाँया अग्निकोण पूर्व दिशा में शामिल किया जाता है। इस प्रकार प्रत्येक दिशा के दो भाग होते हैं

नीचे के चित्रों में यन्त्र की दिशाओं तथा प्रकारों को प्रदर्शित किया गया है--

ईशान	पूर्व	आग्नेय
उत्तर	—	दक्षिण
वायव्य	पश्चिम	नैर्ऋत



सोलह कोठे के यन्त्र - सोलह कोष्ठक वाले यंत्रों को मारण-वशीकरण आदि षट् कर्मों के लिए बनाया जाता है। इसमें यह नियम है कि जिस नाम का यन्त्र बनाया जाय, उसके नामाक्षरों के अंकों को जोड़कर, उसमें से ३० घटा कर जो अंक शेष रहे, उसकी चौथाई में पूरा अंक आना चाहिए अर्थात् आधा-चौथाई अंक न आये। उस अंक को पहले कोठे में रखकर शेष १५ कोठों में एक-एक अंक बढ़ाकर रखना चाहिए।

८	११	१४	पहला
१३	२	७	१२
३	१६	९	६
१०	५	४	१५

याकुद्दूह यन्त्र- बाँई ओर प्रदर्शित 'या कुद्दूह' यन्त्र को किसी शुभ महीने के पहले बृहस्पतिवार को अथवा ग्रहण या दीपावली की रात में लिखना चाहिए। विधि निम्नानुसार है-

या कुद्दूह	या कुद्दूह	या कुद्दूह	या कुद्दूह
या कुद्दूह	६२ल	६४ल	या कुद्दूह
या कुद्दूह	६४ल	६२ल	या कुद्दूह
या कुद्दूह	या कुद्दूह	या कुद्दूह	या कुद्दूह

चमेली का तेल एक दीपक में भरें। फिर उस दीपक में बत्ती डाल कर जलायें, सवा पाव मिठाई तथा सुगन्धित इत्र रखें तथा लोबान की धूनी दें। इसके बाद बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को १९ बार, अँगुली द्वारा पृथ्वी पर लिखें। एक-एक यन्त्र लिख कर उस पर एक-एक बताशा तथा फूल चढ़ायें तथा साथ-की-साथ ही यन्त्र को मिटाते भी जाँय। यन्त्र लिखते समय 'या कुद्दूह' मन्त्र को पढ़ते रहें।

जब बीसवाँ यन्त्र कागज पर लिखें, तब बची हुई मिठाई, फूल, इत्र आदि को उस पर चढ़ायें तथा दीपक की लौ पर यन्त्र को रख कर, दीपक के आगे लोबान की धूनी दें। फिर एक बार पूरी 'बिस्मिल्लाह' पढ़कर 21 बार 'दरूद' तथा 40 बार बड़ा मन्त्र पढ़ें। फिर 20,000 (बीसहजार) बार छोटा मंत्र पढ़ कर, 40 बार बड़ा मन्त्र तथा 21 बार 'दरूद' पढ़ कर, यन्त्र को सोने अथवा चाँदी के ताबीज में भर कर दाँये हाथ में बाँधें तथा प्रतिदिन ताबीज को लोबान की धूनी देते रहें, साथ ही दो हजार बार 'या कुद्दूह' मन्त्र पढ़ लिया करें तो बिना किसी सन्देह के रोज़ी प्राप्त होती है।

उदर-पूर्ति के लिए इस यन्त्र को प्रतिदिन एक बार लिख कर धूप, दीप, नैवेद्य, फूल आदि से पूजन करके, उस पर अपनी दृष्टि जमाये रहें तथा पानी भरे घड़े के सामने 1001 बार प्रदर्शित मन्त्र का जप करें तो रोज़ी खुल जाती है और उदर-पूर्ति होती है।

पन्द्रहिया यन्त्र- पन्द्रह के यन्त्र की मुसलमानी रीति निम्नानुसार है-

इस पन्द्रह के यन्त्र के लिए ९ कोठों वाला चक्र तैयार कर, उसमें बाँई ओर प्रदर्शित चित्र के अनुसार अंक भरें तथा मन्त्र लिखें। प्रत्येक कोठे का अलग-अलग मंत्र निम्नानुसार है। यन्त्र का स्वरूप बाँई ओर के चित्र में प्रदर्शित किया गया है।

याबुदूह ६	यारज़ाके ७	याबुदूह २
याअल्लाह १	याहादियो ५	यात्ताहिरो ९
याहलीमो ८	याजामिन ओ ३	यादाइमो ४

अजवो या इस्राफील बहक्क या अल्लाहो ॥१॥
अजवो या जिब्राईल बहक्क या बुदूह ॥२॥
अजवो या किलकाईल बहक्क या जामिओ ॥३॥
अजवो या दरदाईल बहक्क या दाइमो ॥४॥
अजवो या दौराईल बहक्क या हादियो ॥५॥
अजवो या रफताईल बहक्क या रज्जाको ॥६॥
अजवो या सरकाईल बहक्क या बुदूह ॥७॥
अजवो या तन्काफील बहक्क या हलीमो ॥८॥
अजवो या इस्माईल बहक्क या ताहिरो ॥९॥

साधन विधि- उत्तम महीने के पहले बृहस्पतिवार को कूर्मचक्र के अनुसार आसन बिछा कर वार, दिशा, चन्द्रमा आदि का विचार करके बैठें। योगिनी पीठ पीछे रहे। कलश और दीपक सामने रहे। लोबान की धूनी दें, फिर यन्त्र को लिखें। चालीस दिन तक पन्द्रह-पन्द्रह यन्त्र लिखें। प्रत्येक कोठे को लिखते समय उसके मन्त्र का उच्चारण करते जाँय।

आखिरी यन्त्र पर फूल, मिठाई, इत्र आदि को सभी कोनों पर रखें तथा एकबार श्री 'बिस्मिल्लाह' पढ़ कर, एक-एक मन्त्र को १०१ बार पढ़ें। मन्त्र के आदि तथा अन्त में 'ग्यारह-ग्यारह 'दरूद' पढ़ें तो ४० दिन के भीतर कैसा भी मनोरथ क्यों न हो, पूरा हो जाता है। साधन-समाप्त होने के १५ दिन के भीतर ही काम पूरा हो जाता है

अलिफ का मन्त्र और यन्त्र - धन की आकांक्षा रखने वाला मनुष्य प्रातः काल सूर्योदय से पहले ही उठकर एक बार पूरी बिस्मिल्लाह पढ़े, तदुपरान्त ११ बार 'दरूद' पढ़े। फिर १४१ बार बिसाक आदि को इस प्रकार पढ़ना चाहिए - "या इस्राफील बहक्क या अलिफ या अल्लाहो" - इसके बाद एक हजार बार - "या अलिफ" - पढ़े, परन्तु हर सैकड़े के बाद पूर्वोक्त मन्त्र को १० बार पुनः पढ़ना चाहिए। तथा - "आजिबो या इस्राफील बहक्क या अलिफ या अल्लाहो" - इसे १८ बार पढ़े। फिर -

"अस्सलाम अलैकुम या इस्राफील बहक्क या अलिफ या अल्लाहो बिस्मिल्लाह अलाखैर खिलकही मुहम्मदिन व आलही अजमईन" - इस मन्त्र को प्रतिदिन एक हजार बार पढ़े।

याजिब्राईल (तिरछा)

याअल्लाह याअल्लाह याअल्लाह

याबुद्दूह (तिरछा)

याजिब्राईल	६ २७	१ ५	८ ३४	याइस्राफ़ील
याजिब्राईल	७ २६	[illegible] २२	३ १४	याइस्राफ़ील
याजिब्राईल	२ १०	६ ३६	७ २७	याइस्राफील

याबुद्दूह (तिरछा)

याअलीफ़ याअलीफ़ याअलीफ़

याबुद्दूह (तिरछा)

(या इस्राफील बहक्क या अलिफ या अल्लाहो मुझे धन और दौलत दे या बुद्दूह)

जप करते समय यन्त्र का पूजन करना चाहिए। यन्त्र के स्वरूप को बाँई ओर प्रदर्शित किया गया है। इसे सफेद कागज के चौकोर टुकड़े पर, काली स्याही से लिखना चाहिए तथा मन्त्र जप करते समय यन्त्र को सामने रख कर, उसी पर अपनी दृष्टि केन्द्रित रखनी चाहिए।

इसके साथ ही फ़ारसी-लिपि में १००० बार 'अलिफ़' को कागज के अलग-अलग टुकड़ों पर लिखकर, उन्हें आटे में बन्द कर, गोली बाँधकर, दरिया (नदी) में बहा देना चाहिए। इससे कार्य सिद्ध होता है तथा धन मिलता है।

७८६ का यन्त्र - नीचे बाँईं ओर प्रदर्शित यन्त्र को 'बिस्मिल्लाह' मन्त्र के सिर पर लिखा जाता है। इस यन्त्र की पूजन आदि की विधि पूर्व यन्त्रों की भाँति ही है।

१९८	२०२	२०५	१९१
२०४	१९२	१९७	२०३
१९३	२०७	२००	१९६
२०१	१९५	२९४	२०६

यन्त्र लिखने से पहले एक बार पूरी 'बिस्मिल्लाह' पढ़े। फिर 1001 बार निम्नलिखित मन्त्र को पढ़ना चाहिए -

"या अल्लाहो या रहमानो या रहीमो या हैयो या कैयूमो।"

इस मन्त्र के आदि तथा अन्त में ग्यारह-ग्यारह बार 'दरूद' भी पढ़नी चाहिए।

उक्त यन्त्र को किसी बृहस्पतिवार के दिन सुबह कागज के ऊपर काली स्याही से लिखनां चाहिए।

इस यन्त्र के साधक को रोजी-रोटी की चिन्ता नहीं करनी पड़ती। वह उसे प्राप्त होती रहती है।

यश प्राप्ति का यन्त्र - नीचे दाँईं ओर प्रदर्शित यन्त्र को सफेद चौकोर कागज के ऊपर काली स्याही से लिखें तथा पुष्प, धूप, दीप आदि से यथाविधि पूजन कर, यन्त्र को सामने रखते हुए निम्न लिखित मन्त्र का नित्य एक हजार की संख्या में जप करें -

८	११	३८९	१
३८८	२	७	१२
३	३९१	९	६
१०	५	४	३९०

"या इज्राईल बहक्क या ते या तव्वाबो।"

इस मन्त्र के आदि तथा अन्त में ग्यारह-ग्यारह 'दरूद' भी पढ़नी चाहिए।

उक्त यन्त्र को किसी शुभ महीने के पहले बृहस्पतिवार को प्रातः काल लिखना चाहिए। यन्त्र लिखने से स्नान करके स्वच्छ वस्त्र धारण करने चाहिए तथा पश्चिम दिशा की ओर मुँह करके यन्त्र का लेखन तथा मन्त्र का जप करना चाहिए।

इस यन्त्र के प्रयोग से यश तथा सम्मान मिलता है।

राज्य-सम्मान पाने का यन्त्र

४२	५०	२	७
०	२०	४७	४६
४९	४४	८	१
४	५	४५	४८

बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को कपूर तथा कस्तूरी से भोजपत्र पर लिख कर, गंध, पुष्पादि से पूजन कर अपने पास रखने से राजा द्वारा सम्मान प्राप्त होता रहता है।

नजर न लगने का यन्त्र

३	२	७	८
२	४	८	६
६	८	४	२
८	६	२	४

बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर लाल-चन्दन से लिखकर, गंध-पुष्पादि से पूजन करे तथा धूप दे. ताबीज में भर कर बालक के गले में बाँध देने से उसे नजर नहीं लगती और लगी हो तो दूर हो जाती है।

बलाय दूर करने का यन्त्र

दाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध अथवा लालचंदन द्वारा चार टुकड़ों पर अलग-अलग लिखे तथा उन्हें चारों कोनों में गाड़ दे तो हर प्रकार की बलाय दूर होती है।

८	१०	१३	१
६४	२	६२	६१
३	६५	६८	६
३९	५	४	१५

आधासीसी नाशक यन्त्र

दाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को रविवार के दिन सफेद अथवा लालचंदन या केसर से लिखकर रोगी के मस्तक पर बाँध देने से आधासीसी का दर्द दूर हो जाती है। प्रायः एक दिन में ही लाभ हो जाता है।

३८	४६	२	७
६	३	४३	४६
४	४०	८	१
४	५	४१	४८

काली देवी की प्रसन्नता कायन्त्र

बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को कनेर के वृक्ष के नीचे बैठ कर भोजपत्र के टुकड़ों पर, लाल चन्दन द्वारा लिखने से भगवती कालिका देवी प्रसन्न हो कर अभिलाषा-पूर्ति करती है।

हं	सं	पं	फं
धं	पं	पं	जं
नं	पं	मं	०
चं	०	मं	दं

हनुमानजी की प्रसन्नता का यन्त्र

बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्रको भोजपत्र अथवा सफेद के टुकड़ों पर सिन्दूर (घृत में मिला हुआ) द्वारा सवालाख की संख्या में लिखने से हनुमान जी प्रसन्न होकर मनोकामना पूरी करते हैं।

नं०	ढं०	जं०	चं०
दं०	दं०	चं०	चं०
जं०	ढं०	जं०	छं०
ढं०	नं	जं०	हं०

भूत, यक्ष, देवी प्रसन्नता कारक यन्त्र

दाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को सिरस के वृक्ष के नीचे बैठ कर भोजपत्र या कागज पर केसर आदि से अथवा पृथ्वी पर लोहे की कलम से सवालाख लिखने पर भूत, यक्ष तथा देवी की प्रसन्नता प्राप्त होती है।

तं०	तं०	तं०	तं०
पं०	पं०	पं०	पं०
दं०	दं०	दं०	दं०
लं०	लं०	लं०	लं०

अलिगन्धा यक्षिणी का यन्त्र

दाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को कागज अथवा भोजपत्र के ऊपर आँवले के रस से सवालाख की संख्या में लिखने पर अलिगन्धा यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक को अभीष्ट फल प्रदान करती है।

लं०	पं०	दं०	लं०
लं०	तं०	पं०	दं०
सं०	पं०	दं०	लं०
पं०	दं०	मं०	नं०

दं.	दं.	दं.	दं.
वं.	वं.	वं.	वं.
सं.	सं.	सं.	सं.
अं.	अं.	अं.	अं.

प्रसिद्धि प्राप्त करने का यन्त्र

बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर केसर, कस्तूरी, लाल चंदन अथवा अष्ट गंध द्वारा सवालाख की संख्या में लिखने से साधक को लोक में प्रसिद्धि प्राप्त होती है।

उ	मं		प
द	त	को	म
त	र	लं	प
	ग्रु		ग

विघ्न-विनाशक यन्त्र

बाँई ओर प्रदर्शित यंत्र को मालकाँगुनी के रस से कागज के ऊपर लिखकर, गंध पुष्प, धूप दे, ताबीज में भर कर कण्ठ में बाँधने से विघ्न नष्ट होते हैं तथा हर प्रकार का भय दूर हो जाता है।

गई वस्तु आने का यन्त्र

दाँई ओर प्रदर्शित यंत्र को हड्डी की कलम से, कनेर वृक्ष की छाया में बैठकर, हथेली के ऊपर सवालाख की संख्या में लिखने से गई हुई वस्तु वापिस आ जाती है।

हूं.	हूं.	हूं.	हूं.
इं.	इं.	इं.	इं.
जें.	जें.	जें.	जें.
ह्रीं.	ह्रीं.	ह्रीं.	ह्रीं.

सर्व रक्षाकर यन्त्र

दाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को कस्तूरी, चंदन तथा कपूर से भोजपत्र के ऊपर लिखकर, धूप-दीप दे, दाँई भुजा में बाँधने से सभी प्रकार के संकटों से रक्षा होती है। यंत्र को ताबीज में भर कर बाँधें।

अ	आ	इ	ई
उ	ऊ	ऋ	ॠ
ऌ	ॡ	ए	ऐ
ओ	औ	अं	अः

विद्या-बुद्धि दायक यन्त्र

८	११	१२	१७
१३	२	७	६
११	१६	९	१४
१०	५	४	५

किसी भी मासकी चतुर्थी से शुरू कर बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को प्रतिदिन चन्दन अथवा केसर द्वारा एक निश्चित संख्या में लिखते रहने से विद्या एवं बुद्धि की वृद्धि होती है।

स्त्री-वशीकरण यन्त्र

३७	४४	२	७
६	३	४१	४०
४३	३८	८	१
४	५	३९	४१

बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को पुष्य नक्षत्र में, सींक द्वारा पान के पत्ते पर लिखें। फिर वह पान जिस स्त्री को खिला दिया जाएगा, वह पान खिलाने वाले पुरुष के वशीभूत हो जाती है। इससे किसी भी स्त्री को वश में करें।

शीत-ज्वर-नाशक यन्त्र

बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को किसी शुभ मुहूर्त में भोजपत्र के ऊपर लाल चंदन से लिखकर, धूप दें। फिर इसे रोगी के गले में बाँध दें तो शीत-ज्वर होजाता है।

३	४	७	१६
१	६	१०	६
१४	४	३	७
७	३	१४	४

पुरुष वशीकरण यन्त्र

बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को प्याज के रस से रोटी पर लिखकर पुरुष को खिलाने से वह यन्त्र को लिखने वाली स्त्री के वशीभूत होजाता है। इस प्रयोग से किसी भी पुरुष को वश में करें।

७	२१	२	७
६	३	१९	५१
२५	५७	८	१
४	५	६०	२४

शत्रु बल-नाशक यन्त्र

७९	६	२	८
७	३	८३	८२
१५	८०	९	१
४	६	८१	८४

बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को धतूरे के रस से भोजपत्र के ऊपर लिखकर लोबान की धूप दें तदुपरान्त यन्त्र को गले में बाँधें तो शत्रु का बल नष्ट हो जाता है।

शत्रु-मारण यन्त्र

४२	४९	२	७
६	३	४६	४५
४८	४३	८	१
४	५	४४	४७

बाँई ओर प्रदर्शित यंत्र को हाथी के नख द्वारा धतूरे के रस से, कागज पर लिखकर श्मशान में गाढ़ देने से शत्रु की मृत्यु हो जाती है। यंत्र के नीचे शत्रु का नाम भी अवश्य लिखना चाहिए

शत्रु-मारण यन्त्र

दाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को धमासे की कलम द्वारा, कागज के ऊपर, धतूरे के रस से लिखें। यंत्र के नीचे शत्रु का नाम भी लिखें। फिर यंत्र को श्मशान में गाढ़ दें तो शत्रु मरे।

७९	८६	२	८
७	३	८२	८२
८५	८०	९	१
४	६	८३	८४

शत्रु के शरीर को गलाने का यन्त्र

दाँई ओर प्रदर्शित यंत्र को किसी पशु के चमड़े पर लोहे की कलम से, शत्रु के नाम सहित लिखें। फिर उसे गूगल की धूप देकर नमक में गाढ़ दे तो शत्रु का शरीर गल जाता है।

८३	९०	९	८
७	३	८७	८६
८९	८९	९	१
४	६	८५	८

कान दुखने का यन्त्र

२२	२९	२	८
७	६	१६	२५
२८	२६	९	१
४	६	२४	२१

बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर अनार के रस से लिखकर, धूप-दीप दें तदुपरान्त लाल पीले धागे में लपेटकर कान में बाँध दें तो कान का दर्द बन्द हो जाता है।

धनंजय वायु का यन्त्र

४८	५५	२	७
६	३	५२	५१
५४	४८	८	१
४	५	५०	४३

बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को ताम्रपत्र पर अंकित करवा कर गंध, पुष्प, धूप, दीप आदि से पूजन कर रोगी के गले में बाँध देने से धनंजय वायु का रोग दूर होकर, रोगी-व्यक्ति जल्दी ही स्वस्थ हो जाता है।

आधा सीसी का यन्त्र

दाँई ओर प्रदर्शित यंत्र को रविवार के दिन कागज पर स्याही से अथवा भोजपत्र पर केसर से लिखकर धूप दे, रोगी के सिर पर बाँध देने से आधा सीसी का दर्द दूर हो जाता है।

३८	४६	२६	७१
३	८	४	७
१	८	२	३
११	७	२०	९

शत्रु का शरीर फटने का यन्त्र

दाँई ओर प्रदर्शित यंत्र को शत्रु के नाम सहित धोबी के कपड़े धोने की शिला पर लोहे की कलम द्वारा लिखने और उस पर धोबी द्वारा कपड़े धोने से शत्रु का शरीर फट जाता है।

६०	७१	२	१
६	३	५८	६५
७०	६५	८	१
४	५	५६	६९

धावरा-रोग नाशक यन्त्र

१९	२१	८	२८
७	३	१५	१४
२०	१५	१६	१९
४	६	९	९

बाँई ओर प्रदर्शित यंत्र को अष्टगंध द्वारा भोजपत्र के ऊपर किसी शुभ मुहूर्त में लिखें। फिर यन्त्र का पूजन कर, धूप दे, ताबीज में भर कर रोगी के कंठ में बाँध दें तो धावरा रोग दूर होगा।

बकड़ बाय का यन्त्र

८५	९२	२	८
७	३	९९	८८
९१	९६	९	१
४	६	८७	९०

बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर अडूसे के रस से लिख कर, यन्त्र को धूप-दीप दे, गंध-पुष्पादि से पूजकर रोगी के सिरहाने रख देने से बकड़बाय से छुटकारा मिल जाता है।

धावरा रोग नाशक यन्त्र

इस यन्त्र को कागज के ऊपर काली स्याही से लिखकर धूप-दीप दे, ताँबे के ताबीज में भर कर रोगी के कण्ठ में बाँध देने से धावरा रोग दूर होता है। यन्त्र सोमवार को लिखें।

१०	१७	२	८
७	३	१४	१३
१६	१	९	१
४	६	११	५

काँच निकलने का यन्त्र

दाँई ओर प्रदर्शित यंत्र को केसर अथवा लाल चंदन द्वारा भोजपत्र पर लिखकर उसका गंध-पुष्पादि से पूजन करे, फिर उसे रोगी-बालक के गले में बाँध दे तो काँच निकलना बन्द हो जाता है।

७६	८२	२	८
७	१	७०	७९
८२	७७	९	१
४	६	८२	८१

१	१६	२	८
७	३	१३	१२
१५	१७	९	१
४	६	११	१४

स्तन न पकने का यन्त्र

बाँईं ओर प्रदर्शित यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर इमली के रस से लिखे, तदुपरान्त उसे धूप देकर स्त्री के गले में बाँध दे तो स्त्री के स्तन नहीं पकते। यंत्र को ताबीज में भर देना चाहिए।

३०	३७	२	८
७	३	३४	३३
३६	३१	९	१
४	५	३२	३४

सर्प न आने का यन्त्र

बाँईं ओर प्रदर्शित यन्त्र को मालकाँगुनी के रस से भोजपत्र पर लिखकर गूगल की धूप दे। फिर यन्त्र को घर के भीतर किसी सुरक्षित स्थान पर रखदे तो वहाँ सर्प नहीं आते। यह यन्त्र जहाँ रहेगा, वहाँ सर्प नहीं आयेंगे।

भूत न लगने का यन्त्र

दाँईं ओर प्रदर्शित यंत्र को भोजपत्र अथवा कागज के ऊपर दूधी (दुद्धी बूटी) के रस से लिखकर, धूप-दीप दे, ताबीज में भरकर बालक के गले में बाँध देने से भूत नहीं लगता।

८६	९६	२	८
७	३	९५	१२
४२	३७	९	१
४	६	९१	९४

भूत-प्रेत-भय-नाशक यन्त्र

दाँईं ओर प्रदर्शित यंत्र को सफेद कागज के ऊपर काली स्याही से लिख कर, धूप दीप दे, ताबीज में भर कर गले में बाँध दें तो भूत-प्रेत का भय नहीं रहता। यह स्त्रियों के लिए विशेष हितकर है।

५५	६२	२	८
७	३	५९	५८
६२	५६	९	१
४	६	५७	६०

कलह होने का यन्त्र

७९	७६	२	७
६	३	८३	८४
८५	८०	८१	१
४	५	८१	८४

बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को कुम्हार के आवे की ठीकरी पर गेरू अथवा खड़िया से लिख कर जिस के घर में डाल दिया जाता है, उसके घर में कलह होना आरंभ हो जाता है।

विरोध होने का यन्त्र

दाँई ओर प्रदर्शित यंत्र को तंबोली की कूंडी के पानी द्वारा कागज पर लिखें, फिर उसे गूगल की धूप देकर शत्रु के घर में गाड़ दें तो उस घर में विरोध होना आरंभ हो जाता है।

५८	६५	२	७
६	३	६२	६१
६४	६९	८	१
४	५	६०	६३

नपुंसकता कारक यन्त्र

२३	८०	२	८
७	७	७७	७३
७९	७४	९	१
४	६	७५	७४

बाँई ओर प्रदर्शित यंत्र को रेशम के वस्त्र पर केसर या अष्टगंध द्वारा साध्य-पुरुष के नाम सहित लिख कर कुसुम के वृक्ष के नीचे गाड़ देने से साध्य-पुरुष नपुंसक हो जाता है।

कामना-नाशक यन्त्र

दाँई ओर प्रदर्शित यंत्र को पुष्य नक्षत्र में अष्टगंध द्वारा भोजपत्र पर लिखे, फिर उसे धूप-दीप देकर, ताबीज में भर कर अपनी बाँई भुजा में धारण करले तो कामनाऐं नष्ट हो जाती हैं।

७५	८२	२	८
७	३	७९	७८
६१	७६	९	१
४	६	७७	८०

४३	५०	२	७
६	३	४७	४८
४९	४४	८	१
४	५	४५	४७

राज-सम्मान प्राप्ति यन्त्र

बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्रको कपूर तथा कस्तूरी से भोजपत्र पर लिखकर पुष्प, गंध, धूप दीप आदि से पूजन कर, ताबीज में भरकर दाँई भुजा में धारण करने से राजसभा मे सम्मान मिलता है।

सभा-सम्मान प्राप्ति यन्त्र

दाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजपत्र पर लिखकर सोना, चाँदी अथवा ताँबे के ताबीज में भर कर, कण्ठ में धारण करने से सभा में सम्मान प्राप्त होता है।

५६	६२	२	८
७	३	६०	५९
६२	५७	९	१
४	५	५८	६१

४१	१८	११
१०	२०	३०
१९	२३	३२

प्रीति-नाशक यन्त्र

बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध से लिखे। यदि अष्ट गंध न हो तो धतूरे के रस से लिखें। फिर यन्त्र की बत्ती बनाकर उसे सरसों के तेल में जलाये तो प्रीति नष्ट होती है।

प्रीति-नाशक यन्त्र

दाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को केले के पत्ते पर धतूरे के रस से लिखकर गूगल की धूप दें तथा जिस व्यक्ति की प्रीति नष्ट करनी हो उसके सोने के स्थान पर। यन्त्र को सुखाकर, सोते हुए पर डालदे तो प्रीति नष्ट होगी।

४१	१८	११
२०	३०	१०
२३	३२	१९

तिजारी-नाशक यन्त्र

९	२	७
४	६	८
५	१०	३

बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को अष्टगंध से लिखकर, यन्त्र लिखित भोजपत्र को गंध, पुष्प धूप आदि से पूजे. फिर उसे रोगी की भुजा में बाँध दे तो तृतीयक ज्वर (तिजारी) दूर होता है।

प्रीति-उत्पादक यन्त्र

२१	२६	२
२८	२४	२७
२३	२२	१०

बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध से लिखकर, धूप-दीप देकर पूजन करे, तदुपरान्त उसकी बत्ती बनाकर फुलेल में डालकर जलाये तो साध्य-व्यक्ति के मन में प्रीति उत्पन्न होती है।

बोध-प्राप्ति यन्त्र

९३	९१	२	८
७	३	९८	९६
९०	७४	९	१
४	६	९५	९९

दाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को शुक्ल-पक्ष में जिस दिन श्रवण नक्षत्र हो, उस दिन केसर द्वारा कांसे की थाली में लिखे फिर उस थाली में खीर भर कर खाये तो बोध की प्राप्ति हो।

व्यवहार प्रतिष्ठता यन्त्र

७४	८१	२	७
६	३	७९	७६
८०	७५	८	१
४	५	७०	७१

दाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को दीपावली की रात्रि में, सिन्दूर में घृत मिलाकर अपनी दुकान कार्यालय अथवा कारखाने की दीवाल पर लिखने से व्यवहार में प्रतिष्ठता आती है तथा व्यवसाय में लाभ होता है।

सर्व कार्य सिद्धि यन्त्र

८	१५	२	८
७	३	१२	११
१४	९	९	१
४	६	१०	१३

बाँई ओर प्रदर्शित यंत्र को बाँस की कलम द्वारा पृथ्वी के ऊपर सवा लाख की संख्या में लिखने से सब कार्य सिद्ध होते हैं। यन्त्र को किसी शुभ मुहूर्त्त में लिखना आरम्भ करना चाहिए।

सर्व कार्य सिद्धि यन्त्र

९६	१०	२	८
७	३	९७	९०
५०	४५	९	१
४	६	९५	९८

बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजपत्र के टुकड़ों पर सवा लाख की संख्या में लिखने तथा अन्तिम लिखे यंत्र का विधिवत् पूजन करने से सभी मनोभिलाषाएं पूर्ण होकर सब कार्य सिद्ध होते हैं।

सर्व कार्य सिद्धि यन्त्र

दाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को सिन्दूर, कुंकुम तथा कस्तूरी द्वारा ताँबे के पात्र पर लिखकर पूजन करते तथा इष्टदेव का ध्यान धर कर उसी का जप करने से सब कार्य सिद्ध होते हैं।

६७	७३	२	८
७	३	७१	६९
७२	६८	९	१
४	६	६८	७२

सर्व कार्य सिद्धि यन्त्र

दाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को किसी शुभ मुहूर्त्त में पीपल के वृक्ष के नीचे बैठकर बाँस की कलम से पृथ्वी पर लिखना आरंभ करें। सवालाख की संख्या में लिखने से सब कार्यों की सिद्धि होती है।

१३	२०	२	८
७	३	१७	१६
१९	१४	९	१
४	६	१५	१८

मनोभिलाषा पूरक यन्त्र

व	प	२	७
६	३	२	३
४	८	१	१
४	५	२	३

बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को पीपल के वृक्ष के नीचे बैठ कर, सीसे की कलम से पृथ्वी पर सवालाख की संख्या में लिखने से मनोभिलाषा की पूर्ति होती है। शुभ मुहूर्त में लिखना आरंभ करें।

प्रयोग-सिद्ध यन्त्र

९१	१००	२	८
७	३	९७	९६
९९	९४	९	१
४	६	९५	९८

बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखकर उसका गंध-पुष्प आदि से पूजन करे तथा ताबीज में भर कर दाँई भुजा में धारण किए रहे तो प्रयोग सिद्ध होता है।

प्रयोग-सिद्ध यन्त्र

दाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को अष्टगंध आदि के द्वारा भोजपत्र अथवा कागज पर सवा लाख की संख्या में लिखने से प्रयोग सिद्ध होता है। यन्त्र के साथ ही प्रयोग का नाम भी लिखना चाहिए।

३६	४३	२	७
६	३	४०	३९
४२	३७	८	१
४	५	३८	४

वचन-सिद्ध यन्त्र

दाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को कुलिंजन के रस से भोजपत्र पर लिखकर, गंध-पुष्प, धूप दीपादि से पूजन कर, ताबीज में भर कर अपनी भुजा में धारण करने से वचन-सिद्धि होती है।

६६	९३	२	८
७	३	९०	८९
९१	८६	९	१
४	६	८७	९८

अनार पर फल आने का यन्त्र

८४	९४	२	८
७	३	९१	९१
९३	८८	९०	१
४	६	८६	९२

बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को जंभीरी के रस से सफेद कागज अथवा भोजपत्र के ऊपर लिखकर, धूप-दीप दे अनार के पौधे पर बाँध देने से उस पर फल अधिक आते हैं।

आम पर फल आने का यन्त्र

८८	९५	२	८
७	३	९२	९१
९४	८६	९	१
४	६	९०	९१

बाँई ओर प्रदर्शित यंत्र को भोजपत्र के ऊपर आम के रस से लिखकर, गंध-पुष्पादि से पूजन कर, पीले रंग के डोरे में लपेट कर आम के वृक्ष पर बाँध देने से उसमें आम के फल अधिक आते हैं।

स्वप्न में ऊँट दीखने का यन्त्र

११	१८	२	८
७	३	१५	१४
१०	१२	९	१
४	६	१३	१६

दाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को आर्द्रा नक्षत्र में ऊँट की हड्डी पर लिखकर शत्रु के घर में गाढ़ देने से स्वप्न में ऊँट-ही-ऊँट दिखाई देते हैं। यह बड़ा मनोरंजक यंत्र है।

स्वप्न में वानर दीखने का यंत्र

१२	१९	२	८
६	३	१३	१४
१८	१३	९	१
४	६	१४	१६

दाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को वानर की हड्डी पर लिखकर शत्रु के घर में गाढ़ देने से उसे स्वप्न में बन्दर-ही-बन्दर दिखाई देते हैं। यह बड़ा ही मनोरंजक यन्त्र है, जो अपना प्रभाव शीघ्र दिखाता है।

६	१३	२	८
७	३	१०	११
२	७	९	१
४	६	९	९

स्वप्न मे भूत दीखने का यन्त्र

बाँई ओर प्रदर्शित यंत्र को कागज के ऊपर केवड़े के रस से लिखकर, जो व्यक्ति अपने सिरहाने रख कर सोता है। उसे रात्रि में स्वप्न के समय भूत-ही-भूत दिखाई देते हैं।

६२	६९	२	६
६	३	६८	६५
६८	६३	८	१
४	५	६४	६७

गए मनुष्य को लौटाने का यन्त्र

बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को किसी जलाशय अथवा थाली परात आदि मे भरे हुए पानी में अपनी बीच की अँगुली से लिख कर, पानी में कोड़ा मारने से गया हुआ मनुष्य अपने घर लौट आता है।

स्वप्न में भूत दीखने का यन्त्र

दाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर गिलोय के रस से लिखकर, जो व्यक्ति अपने सिरहाने रख कर सोता है, उसे रात्रि में स्वप्न में भूत-ही-भूत दिखाई देते हैं।

७	१४	२	८
७	३	११	१०
१३	९	९	१
४	६	९	१२

गए पशु को लौटाने का यन्त्र

दाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को सेही के काँटे द्वारा उस खूँटे पर लिखे, जिस पर पशु को बाँधा जाता रहा हो। यन्त्र लिखने के बाद खूँटे को यथास्थान गाढ़ देतो गया हुआ पशु वापिस लौटकर आजाता है।

१९	२६	२	८
७	३	२३	२२
२५	२०	९	१
१	६	२१	२३

शुक्र-स्तम्भन यन्त्र

७९	७८	२	८
७	३	७४	७४
७७	७२	९	१
५	६	७३	७६

बाँईं ओर प्रदर्शित यन्त्र को स्वातितक्षत्र में भोजपत्र के ऊपर थूहर के दूध से लिखकर अपनी कमर में धारण करके मैथुन-कर्म में प्रवृत्त होतो बहुत देर तक वीर्य स्खलित नहीं होता।

मसान जगाने का यन्त्र

८०	८६	२	८
७	३	८४	८३
८५	८४	९	१
४	६	८२	८२

बाँईं ओर प्रदर्शित यन्त्र को श्मशान की ठीकरी पर मदिरा द्वारा लिखकर, उसके ऊपर मदिरा की धार चढ़ाने से मसान जगता है अर्थात् श्मशान भूमि में हाहाकार का शब्द होने लगता है। इस क्रिया को मसान में ही करते हैं।

नाड़ा टूटने का यन्त्र

५	१२	२	८
७	३	९	७
११	६	९	१
४	६	७	११

दाँईं ओर प्रदर्शित यन्त्र को गिलहरी की पूँछ के बालों की कलम द्वारा भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध से लिखकर मार्ग में डाल दें तो जो व्यक्ति उस रास्ते को नाँघेगा, उसका नाड़ा टूट जाएगा।

बहुत भोजन करने का यन्त्र

७८	७५	२	८
७	३	८२	१८
८४	८९	९	१
४	६	८	१०

दाँईं ओर प्रदर्शित यन्त्र को कौड़े के रक्त तथा सेही के काँटे से भोजपत्र या कागज के ऊपर लिखकर चूल्हे के पीछे गाड़ दे तो उस चूल्हे पर बनने वाली रोटियों को, खाना खाने वाला अत्यधिक संख्या में खाता है।

अन्न सड़ने का यन्त्र

८४	९०	२	७
६	३	८८	८७
८९	८४	८	१
४	५	८५	८८

बाँईं ओर प्रदर्शित यन्त्र को केसर अथवा हल्दी द्वारा तोते के पंख पर लिखकर अन्न की राशि (ढेर) में गाढ़ देने से वह सड़ जाता है तथा उससे दुर्गन्ध आने लगती है।

चाक से बर्तन न उतरने का यन्त्र

७०	७७	२	७
६	३	७४	७३
७६	७१	८	१
४	५	७२	७५

बाँईं ओर प्रदर्शित यंत्र को कुम्हार के चाक के ऊपर खैर (कत्था) के कोयले द्वारा लिखने से कुम्हार के चाक से बर्तनों का उतरना बन्द हो जाता है। यदि उतारे भी जाँय तो वे व्यवहार में आने योग्य नहीं होते।

कमान न चढ़ने देने का यन्त्र

दाँईं ओर प्रदर्शित यन्त्र को कागली के पंख पर, शिकरे के बाल की कलम से हल्दी या केसर द्वारा लिखने से साधक व्यक्ति की कमान (धनुष) नहीं चढ़ पाती।

१६	२६	२	८
७	३	२०	२०
३२	१७	९	१
४	६	१८	२१

कुत्ताके भौंकने का यन्त्र

दाँईं ओर प्रदर्शित यंत्र को हल्दी अथवा केसर द्वारा कुत्ते के कान के ऊपर लिख देने से वह चारों ओर भौंकता हुआ घूमता-फिरता है। जब तक यन्त्र मिट नहीं जाता, उसका भौंकना चालू रहता है।

६	७५	२	८
७	३	७२	७१
७४	७०	९	१
४	७०	११	७३

व्यवहार प्रतिष्ठता यन्त्र

५०	५७	२	७
६	३	५४	५३
५४	५३	८	१
४	५	५१	५५

बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजपत्र पर लिखकर अथवा केसर द्वारा शिला-सम्पुट पर लिखकर घर के दरवाजे पर गाड़ देने से व्यवहार में प्रतिष्ठता की वृद्धि होती है।

स्त्री कष्ट-मुक्ति यन्त्र

दाँई ओर प्रदर्शित यंत्र को केसर द्वारा काँसे की थाली में लिखकर धूप-दीप दें। फिर उस थाली में चौराहे का पानी डालकर, यन्त्र का घोल कष्टित स्त्री को पिलादे तो कष्ट दूर होगा।

२८	३५	२	७
६	३	३२	३१
३४	२९	९	१
४	६	३०	३२

शत्रु-भ्रामक यन्त्र

१५	२६	२	८
७	३	१९	१८
२१	१६	९	१
४	६	१७	२०

बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को शिकरे के पंख पर केसर अथवा पीली हल्दी से लिखकर शत्रु के घर में गाड़ देने से शत्रु निरन्तर इधर-से-उधर भटकता रहता है। किसी एक जगह टिक कर नहीं रह पाता।

शत्रु-नाशक यन्त्र

दाँई ओर प्रदर्शित यंत्र को नदी के तट पर बैठकर लोहे की कलम से पृथ्वी पर एक हजार आठ बार लिखने से शत्रु का नाश हो जाता है। यन्त्र के नीचे शत्रु का नाम भी लिखना चाहिए।

६७	७४	२	८
७	३	७१	७०
७३	६८	९	१
४	६	६९	७२

स्त्री-वशीकरण यन्त्र

५८	५५	२	८
७	३	६२	५१
५४	५९	९	१
४	६	५०	६३

बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को केसर, कस्तूरी, चंदन, अष्टगंध अथवा किसी भी लेखन-द्रव्य द्वारा स्त्री के बाँये पाँव के तलवे में लिख देने से वह लिखनेवाले पुरुष के वशीभूत होजाती है।

सर्व वशीकरण यन्त्र

६१	६२	२	८
७	३	६५	६४
६७	६२	९	१
४	६	६३	६१

बाँई ओर प्रदर्शित यंत्र को कुंकुम व सिन्दूर द्वारा लोटे के तले में (नीचे) लिखकर, उस लोटे में पानी भर कर जिस व्यक्ति को पिलाया जाता है, वह पानी पिलाने वाले के वशीभूत हो जाता है।

सर्व वशीकरण यन्त्र

६३	६९	२	८
७	२	६६	६५
६८	६३	९	१
४	६	६४	६७

दाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को श्रवण नक्षत्रों में केले के रस से भोजपत्र पर लिखे, फिर उसे पानी में डाल दे। उस यन्त्र पड़े पानी को जो भी व्यक्ति पियेगा, वही वशीभूत होगा।

शत्रु वशीकरण यन्त्र

२७	३४	२	८
७	३	३१	३०
३३	२८	९	१
४	६	२४	२३

दाँई ओर प्रदर्शित यंत्र को लाल चंदन द्वारा नगाड़े के ऊपरी भाग (खाल) पर लिखे, फिर जिस शत्रु के नाम से वह नगाड़ा बजाया जाएगा वह बजाने वाले के वशीभूत हो जाएगा।

भट्टी फूटने का यन्त्र

५७	६४	२	७
६	२	६१	६०
६३	५८	८	१
४	५	५९	६२

बाँई ओर प्रदर्शित यंत्र को उट्टे के छिलके पर धतूरे के रस से मंगलवार के दिन लिखकर गूगल की धूनी देकर कलाल की भट्टी में डाल देने से भट्टी फूट जाती है।

ढोल फूटने का यन्त्र

बाँई ओर प्रदर्शित यंत्र को तालाब की मिट्टी द्वारा प्रातिवा को प्रातःकाल ढोल बजाने वाले को ढोल पर लिखे और गूगल की धूप दे तो ढोल फूट जाता है

६९	७६	३	७
६	३	७	७२
७५	७०	८	१
४	५	६९	७

गर्भ-रक्षा का यन्त्र

२४२	२४१	२४०	२३९
२३८	२३७	२३६	२३५
२३४	२३३	२३२	२३१
श्रीं	ह्रीं	लं	ह्रीं

बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को केसर, कस्तूरी, चंदन अथवा अष्टगंध द्वारा भोजपत्र पर लिख कर, धूप-दीप आदि देकर गर्भवती स्त्री की कमर में बाँध देने से गर्भ की रक्षा होती है और कोई कष्ट नहीं होता

कष्टा-स्त्री का यन्त्र

दाँई ओर प्रदर्शित यंत्र को केसर के द्वारा काँसे की थाली में लिखे, फिर उसे धूप दे। तदुपरान्त थाली को पानी से धोकर स्त्री को पिला दे तो वह रजस्वला हो जाती है तथा कष्ट दूर होता है

७	१२	१	१४
२	१३	८	११
१६	३	१०	५
९	६	१५	४

बैरी के जूता मारने का यन्त्र

५२	६०	२	७
६	३	५७	५६
५९	५४	८	१
४	५	५५	५९

बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को तय्यार करने की विधि इस प्रकार है

शनिवार के दिन ठाकुर अथवा तेली जाति के मुर्दे की कमर के नीचे से, अर्थात् जब मुर्दा चिता के ऊपर जल रहा हो, तब उसकी कमर के नीचे से एक अंगार लेकर, उस पर मद्य (शराब) अथवा तैल-पानी का कुल्ला कर दे। फिर अंगार को उठा कर चल दे। पीछे की ओर मुड़कर न देखे। तत्पश्चात उस कोयले को गूगल की धूनी देकर, एक बताशा अग्नि के ऊपर रखे तथा फूल चढ़ावे। इससे भूत प्रसन्न होगा। फिर उस कोयले तथा हरताल को मिला कर एक उजले कपड़े अथवा कफन के टुकड़े पर उक्त यन्त्र को लिख कर नीचे बैरी का नाम लिखकर जूते मारे तो वे जूते बैरी के माथे पर लगेंगे।

गाय का यन्त्र

दाँई ओर प्रदर्शित यंत्र को केसर, गोरोचन तथा कुंकुम द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिख कर, गंध-पुष्पादि से पूजन कर, गूगल की धूनी दे, गाय के गले में बाँध दे तो वह अधिक दूध देने लगती है।

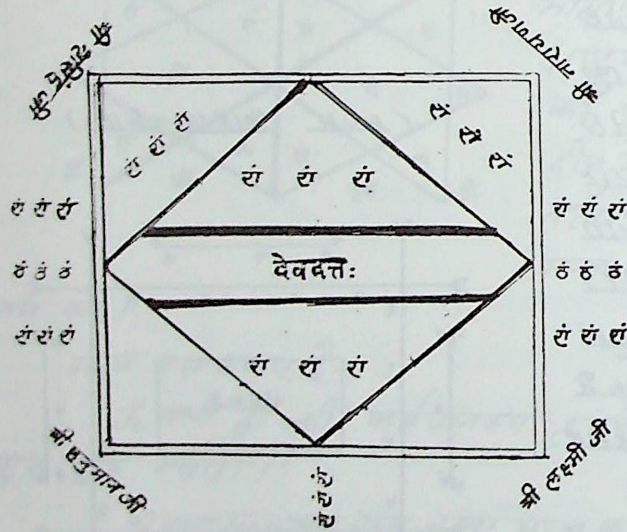
२८	३५	१	७
६	३	३२	३१
३४	२९	८	१
४	५	३०	३३

मनोरथ दाता यन्त्र

दाँई ओर प्रदर्शित यंत्र को अनार की कलम द्वारा, भोजपत्र के ऊपर, अष्टगंध से, बरगद के वृक्ष के नीचे बैठ कर ४००० की संख्या में लिखे तो मनोरथ पूरा होता है। यंत्र लिखते समय मनोरथ का ध्यान करें।

१	५	९
८	३	४
२	७	६

बाल रक्षा यन्त्र



बाँई ओर प्रदर्शित यंत्र को पीपल के पत्ते पर अष्टगंध से लिखकर गंध, पुष्प आदि से पूजनकर गुग्गुल की धूनी देकर लाल अथवा पीले रंग के डोरा में बाँध कर तीन गाँठ लगाये। प्रत्येक गाँठ लगाते समय सात बार मन्त्र का जप करना चाहिए।

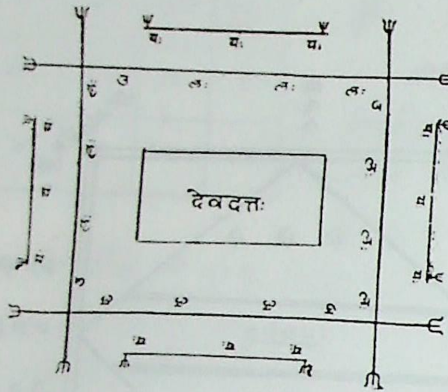
प्रदर्शित यन्त्र के बीच में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साधक- बालक का नाम लिखना चाहिए।

उक्त विधि से निर्मित यन्त्र को बालक की दाँई (यदि लड़की हो तो बाँई) भुजा में अथवा कंठ में बाँध देने से नजर, भूत-प्रेत आदि के दोष दूर हो जाते हैं। परन्तु यन्त्र लिखने से पूर्व निम्नलिखित मन्त्र को सिद्ध कर लेना आवश्यक है -

"ॐ महावीर हनुमंत वीर तेरे तरकस में सौ सौ तीर
खिंच बाएं खिंच दाहिने खिंच खिंच आगे होय
अचल गुसाईं सेवता काया भंग न होय
इन्द्रासन दी बाँध के बारे घूमें मसाण
इस काया को दलधिड़ कापे तो हनुमंत तेरी आण ॥"

उक्त मंत्र को मंगलवार के दिन हनुमान जी की पूजा करके १०८ बार जपना चाहिए। सात मंगलवारों तक लगातार जप करते रहने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है।

शत्रु-नाशक यन्त्र



(शत्रु-नाशक यन्त्र)

बाँई ओर प्रदर्शित यंत्र को लिखने की विधि निम्नानुसार है- रविवार के दिन श्मशान भूमि से युक्ति पूर्वक कोयला लावे। फिर उसे हरताल के साथ पानी में घोल कर रोटी के ऊपर उसके द्वारा प्रदर्शित को लिखे। तदुपरान्त बसाखा और गुग्गुल को अग्नि पर रख कर यन्त्र को धूनी दे धूनी देते समय आगे लिखे मन्त्र का १०८ बार जप करे -

मन्त्र -

"ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्मशान वीराय अमुकस्य नाशय नाशय विध्वंसय विध्वंसय स्वाहा।"

उक्त मन्त्र में जहाँ 'अमुकस्य' शब्द आया है, वहाँ शत्रु के नाम का उच्चारण करना चाहिए तथा प्रदर्शित यन्त्र के चित्र में जहाँ 'देवदत्तः' लिखा है, वहाँ शत्रु के नाम को लिखना चाहिए।

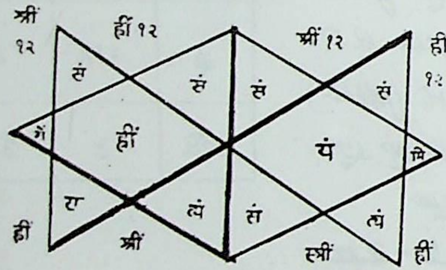
मन्त्र का जप करने के बाद यन्त्र को श्मशान में अथवा मार्ग के चौराहे पर गाड़ दे तो इस यंत्र के प्रभाव से तीन महीने की अवधि में ही शत्रु का विनाश हो जाता है।

यह शत्रु-नाशक यन्त्र अत्यन्त प्रभावकारी कहा गया है, अतः इसका प्रयोग दुष्ट शत्रु के लिए ही करना चाहिए। सामान्य शत्रुता के मामलों में ऐसे यन्त्र-मन्त्र के प्रयोगों को करना वर्जित है, अन्यथा स्वयं को ही हानि पहुँच सकती है।

महा०

सर्वजन वशीकरण यन्त्र

नीचे बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को दीपावली की रात्रि में भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध से लिख कर गंध, पुष्प, धूप, दीप आदि से पूजा करें तत्पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का १०८ बार जप करें।



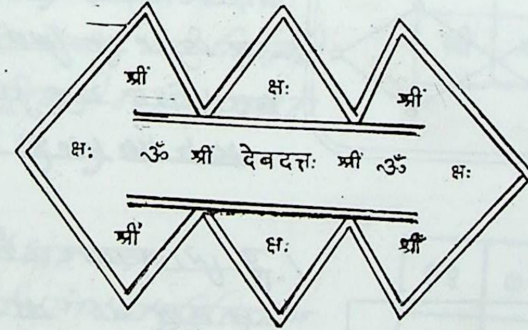
मन्त्र इस प्रकार है—

'ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं सर्वजनस्य हृदयं मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।'

उक्त मन्त्र का जप तथा यन्त्र का लेखन-पूजन करने के बाद यन्त्र को अपनी पगड़ी में रखने से सब लोगों का वशीकरण होता है।

स्वामी वशीकरण यन्त्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर गोरोचन से लिख कर शराब-सम्पुट (मिट्टी के दो शकोरों के बीच) में रख कर अग्नि में इस प्रकार से तपावे कि यन्त्र



जल कर भस्म हो जाय। फिर शराब-सम्पुट के ठंडा हो जाने पर यन्त्र की राख को निकाल कर पानी में घोल कर पी जाने से 'स्वामी' (मालिक) का वशीकरण होता है। प्रदर्शित यन्त्र में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति अर्थात् स्वामी का नाम लिखना चाहिए।

चूहे भगाने का यन्त्र

५१	२	४२	७
४८	८	५०	२
५	४७	३	५३
६	५२	२	४६

बाँई ओर प्रदर्शित यंत्र को भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध अथवा केसर से लिखकर पुष्प धूप-दीप आदि से पूजन कर, घर में रखदें तो घर से और खेतमें रखें तो खेत से चूहे भाग जाते हैं।

टिड्डी भगाने का यन्त्र

नीचे दाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को शनिवार के दिन भोजपत्र अथवा कागज के ऊपर नील से लिखकर खेत में गाढ़ देने पर, उस खेत से टिड्डियाँ दूर भाग जाती हैं।

६		५
	५	
२१		१६
	४	
४		३

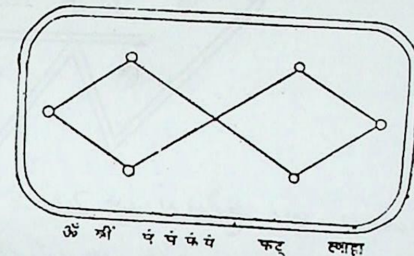
पेट-दर्द दूर करने का यन्त्र

१६	२	जुवार
२	५।१	है
अज	कुंन	मलमा

बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को केसर द्वारा कांसी के पात्र (थाली आदि) में लिखकर, फिर उसे पानी से धोदें तथा उस पानी को पी जाँय तो पेट का दर्द दूर हो जाता है। यह यंत्र शीघ्र प्रभाव प्रदर्शित करता है।

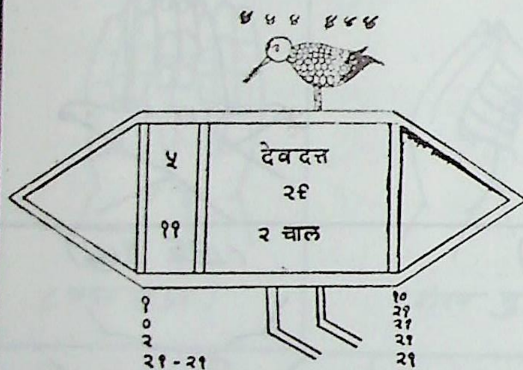
धर्म न डिगने का यन्त्र

दाँई ओर प्रदर्शित यंत्र को दीपावली की रात्रि में भोजपत्र के ऊपर, अष्टगंध द्वारा एक साँस में लिखकर कमर में बाँध लेने से बाँधने वाले का धर्म नहीं डिगता।



काले कौवे का यन्त्र -

यदि किसी को काला कौआ, जिसे बोलचाल की भाषा में 'काला-कलवा' भी कहा जाता है, लगा हो तो बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजपत्र के ऊपर अनार की कलम से लिखें तथा लिखने परान्त



धूप, दीप, गंध, पुष्प आदि से यन्त्र का पूजन करें। प्रदर्शित चित्र में जहाँ 'देवदत्त' लिखा है, वहाँ साध्य व्यक्ति अर्थात् रोगी का नाम लिखना चाहिए। तदुपरान्त यह यन्त्र रोगी पुरुष हो तो उसकी दाँई और स्त्री हो तो बाँई भुजा में बाँध देना चाहिए। इस यंत्र को बाँधने से काला कौआ उतर जाता है।

शीतला का यन्त्र

दाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर चन्दन अथवा अष्टगंध से लिखें, तदुपरान्त यन्त्र का पूजन करके गले में बाँध दें तो चेचक नहीं निकलती और यदि निकली हो तो शान्त हो जाती है।

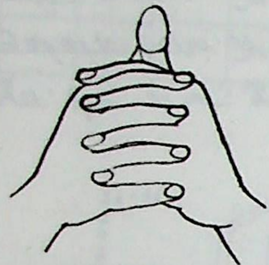
श्रीं	श्रीं	श्रीं
श्रीं	श्रीं	श्रीं
श्रीं	श्रीं	श्रीं

तिजारी का यन्त्र

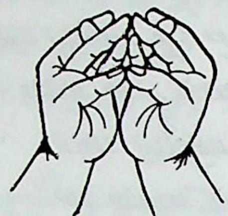
दाँई ओर प्रदर्शित यंत्र को अष्टगंध अथवा लालचंदन द्वारा भोजपत्र पर लिखकर धूप दें, फिर तिजारी (तीसरे दिन आने वाला ज्वर) के रोगी के गले में बाँध दें तो ज्वर दूर हो जाता है।

७१	७१	७१
७१	७१	७१
७१	७१	७१

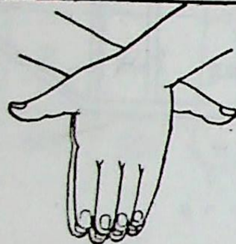
मुद्राऐं- देवी-देवताओं के यन्त्र मन्त्र प्रयोग में विभिन्न प्रकार की मुद्राऐं प्रदर्शित करने का नियम है। साधकों की जानकारी के लिए यहाँ कुछ मुद्राओं के चित्र प्रदर्शित किए जा रहे हैं



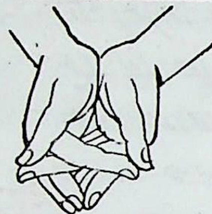
(लिङ्ग मुद्रा)



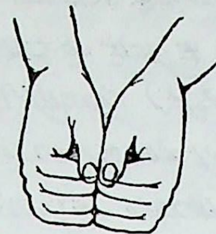
(योनि मुद्रा)



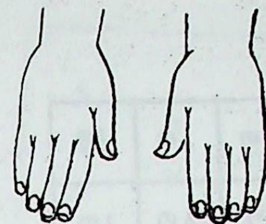
(मत्स्य मुद्रा)



धेनु (सुरभि) मुद्रा



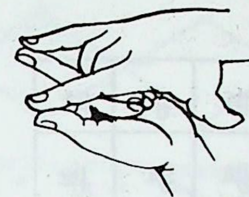
(मुष्टिक मुद्रा)



(प्रलम्ब मुद्रा)



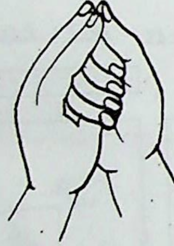
(वराही मुद्रा)

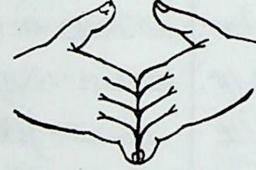


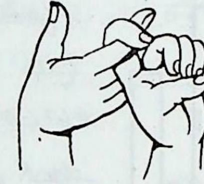
(कूर्म मुद्रा)

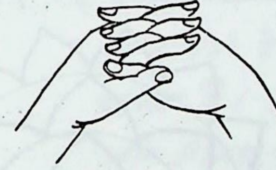
विभिन्न प्रकार की मुद्रायें

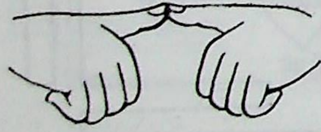

(पद्म मुद्रा)

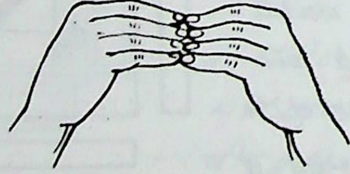

(शंख मुद्रा)


(अधोमुख मुद्रा)

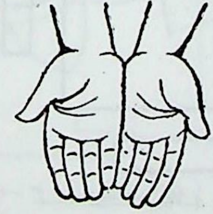

(यमपाश मुद्रा)


(ग्रथित मुद्रा)


(शकट मुद्रा)

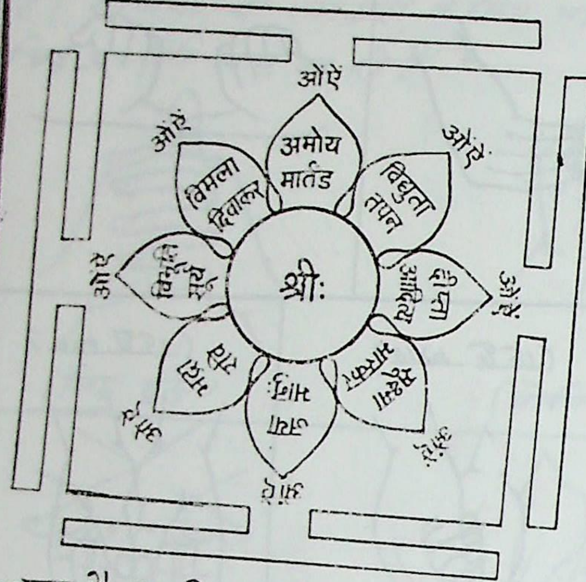

(सुमुख मुद्रा)


(मुद्गर मुद्रा)

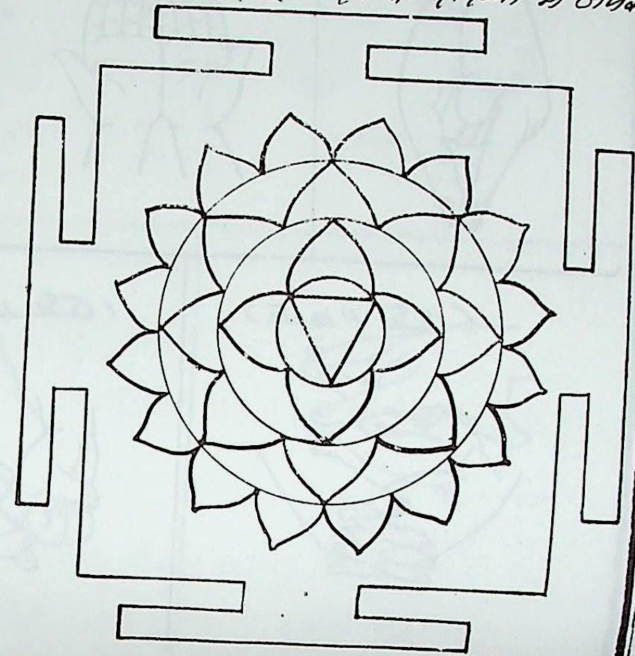

(व्यापकाञ्जलि)


(निर्वाण मुद्रा)

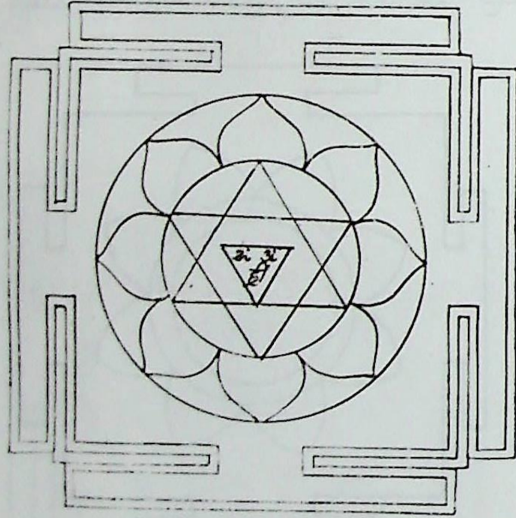
सूर्य यन्त्र- नीचे प्रदर्शित यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजपत्र पर लिखकर, गंध-पुष्पादि से पूजन कर ॐ "रं खखये नमः"- इस मन्त्र का यथाशक्ति संख्या में नित्य जप करते रहने से सूर्य देवता प्रसन्न हो कर साधक की मनोभिलाषाओं की पूर्ति करते हैं। द्वितीयखण्ड में 'सूर्य-पूजन' के जिस यन्त्रका उल्लेख किया जा चुका है, उसके स्थान पर इस यन्त्र का भी प्रयोग किया जा सकता है।



लक्ष्मी यन्त्र- नीचे प्रदर्शित यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखें अथवा ताम्रपत्र पर अंकित करवा कर पुष्प, गंध, धूप, दीप आदि से पूजन करें तदुपरान्त "श्रीं"- इस मन्त्र का ३ लाख की संख्या में जप करें तो भगवती लक्ष्मी साधक की मनोभिलाषाओं की पूर्ति करती हैं। जो व्यक्ति इस यन्त्र का नित्य पूजन करता है तथा श्रीं मन्त्र का जप करता है, उसके घर में लक्ष्मी का निवास रहता है।

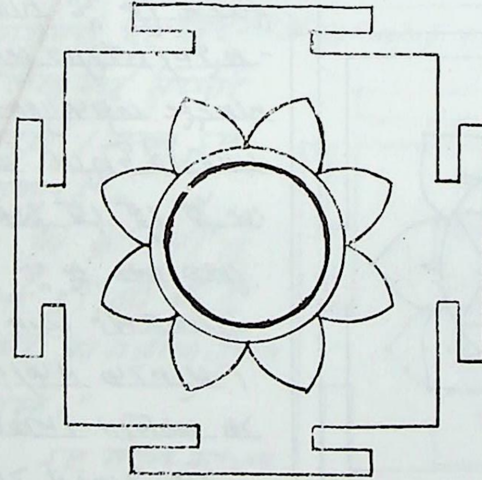


वह्नि-पूजन यन्त्र



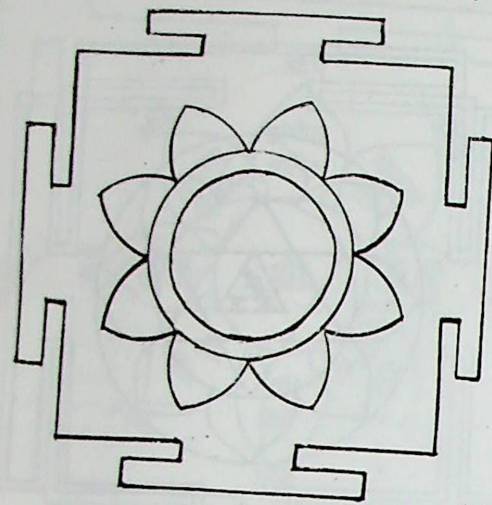
त्रिकोण, षट्कोण, अष्टदल अथवा चतुष्कोण यन्त्र बना कर उसके मध्य में "ॐ ह्रीं ॐ" लिख कर, पीठ-पूजन किया जाता है। मण्डूक से लेकर परतत्व तक पीठ देवता एवं जया आदि पीठशक्तियों का पूजन करके, बाद में आसन देकर विभिन्न उपचारों से पूजन करते हैं। वह्नि-स्थापन के लिए यन्त्र निर्माण का स्वरूप यहाँ प्रदर्शित है।

मधुमती-पूजन यन्त्र



मन्त्र- "आं ह्रीं क्रों ब्लों हूँ ॐ स्वाहा"— यह मधुमती देवी का मन्त्र है। इसकी जप संख्या ८ लाख है। जप के बाद बेलपत्रों से दशांश होम करना चाहिए। मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर काम्य-प्रयोग करने चाहिए, लाल कमलों का होम करने से साधक राजा तथा मन्त्रियों को वश में कर सकता है। पायस के होम से अनेक भोग मिलते हैं तथा ताम्बूल के होमसे स्त्री वश में होजाती है। देवी के पूजन का यंत्र ऊपर दिया गया है।

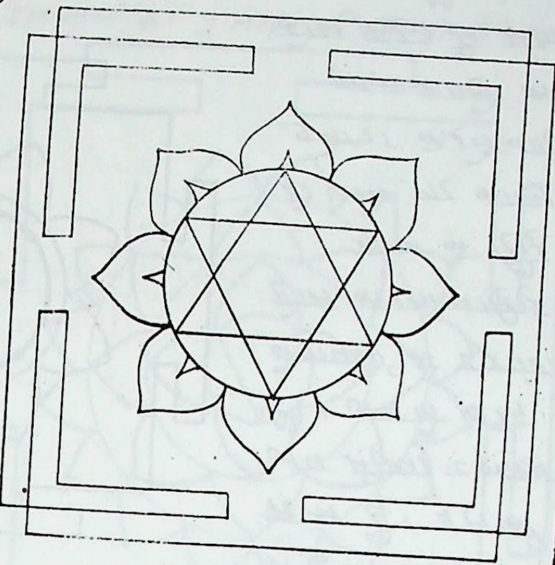
वटयक्षिणी देवी यन्त्र - वटयक्षिणी देवी का पूजन यन्त्र नीचे प्रदर्शित है। इसे या तो ताम्रपत्र पर खुदवालें अथवा अष्टगंध द्वारा भोजपत्र पर लिखकर तय्यार करलें। देवी का मन्त्र इस प्रकार है—



"एह्येहि यक्षि यक्षि महायक्षि वट वृक्ष निवासिनि शीघ्रं मे सर्व सौख्यं कुरु कुरु स्वाहा।"

इस मन्त्र का दो लाख की संख्या में जप करना चाहिए तथा बन्धूक पुष्पों से दशांश होम करना चाहिए। इस मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर वटयक्षिणी देवी साधक की समस्त मनोभिलाषाओं को पूर्ण करती है।

स्वर्णाकर्षण भैरव यन्त्र - स्वर्णाकर्षण भैरव के पूजन का यन्त्र नीचे प्रदर्शित है। इसे या तो अष्टगंध से लिखकर भोजपत्र पर तय्यार करें अथवा ताम्रपत्र पर अंकित करवालें। मन्त्र इस प्रकार है—

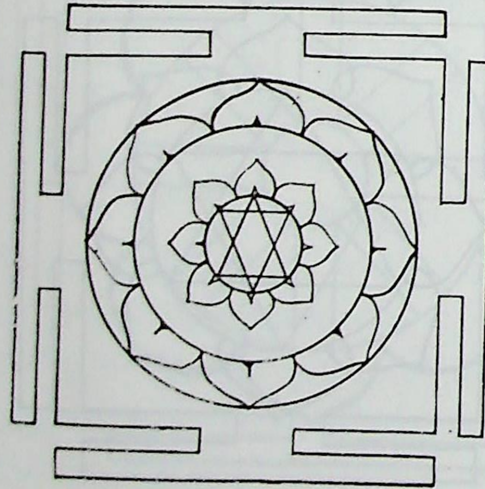


"ॐ ऐं क्लां क्लीं क्लूं ह्रां ह्रीं ह्रूं सः वं आपदुद्धारणाय स्वर्णाकर्षण भैरवाय मम दारिद्र्य विद्वेषणाय ॐ श्रीं महाभैरवाय नमः।" — इस मन्त्र का एक लाख की संख्या में जप तथा जप का दशांश होम करे। मन्त्र सिद्ध हो जाने पर भैरव की कृपा से दरिद्रता दूर हो जाती है।

चण्डी पूजन यन्त्र-

चण्डी पूजन का यन्त्र नीचे प्रदर्शित है। इसे या तो ताम्रपत्र पर अंकित करवालें अथवा अष्टगंध या लालचन्दन द्वारा भोजपत्र पर अंकित करलें। देवी का मन्त्र इस प्रकार है-

"ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।"

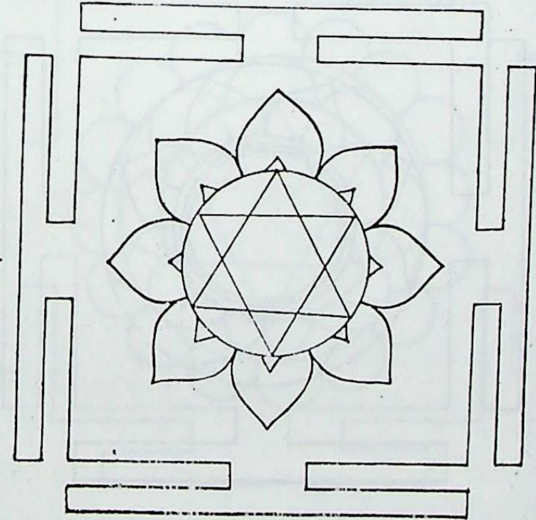


इस मन्त्र का चार लाख की संख्या में जप करना चाहिए। जप का दशांश होम तथा उसका दशांश तर्पण, उसका दशांश मार्जन तथा उसका दशांश ब्राह्मण भोजन करना चाहिए। मन्त्र सिद्ध हो जाने पर देवी साधक की समस्त मनोकामनाओं को पूरा करती हैं।

कार्त्तवीर्यार्जुन पूजन यन्त्र-

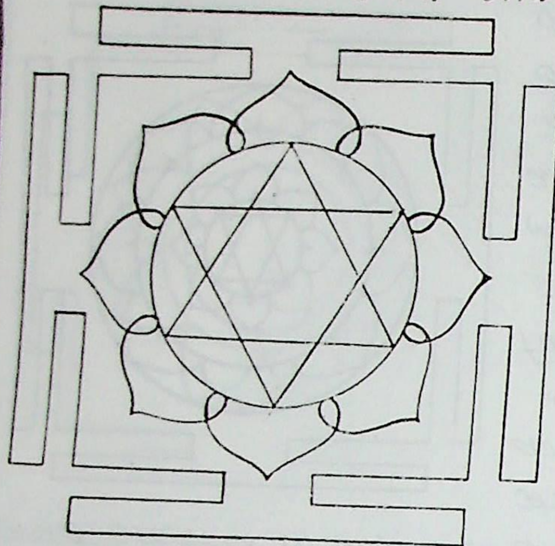
कार्त्तवीर्य के पूजन-यन्त्र का स्वरूप नीचे प्रदर्शित किया गया है। इसे या तो ताम्रपत्र पर खुदवालें अथवा अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखकर तैयार करलें। मन्त्र इस प्रकार है-

"फ्रों ब्रीं क्लीं भ्रूं आं ह्रीं क्रीं श्रीं हुं फट् कार्त्तवीर्यार्जुनाय नमः।"



इस मन्त्र का जप एक लाख करना चाहिए। जप का दशांश होम करें। मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर साधक की समस्त मनोभिलाषाएं पूर्ण होती हैं। यह वशीकरण भी करता है।

गोपाल पूजन यन्त्र - गोपाल-पूजन यन्त्र का स्वरूप नीचे प्रदर्शित है। प्रदर्शित यन्त्र के मध्यभाग में यदि षट्कोण न बनाया जाय तो भी कोई हानि नहीं है। यन्त्र उस स्थिति में भी पूर्ण रहेगा। मन्त्र निम्नानुसार है—

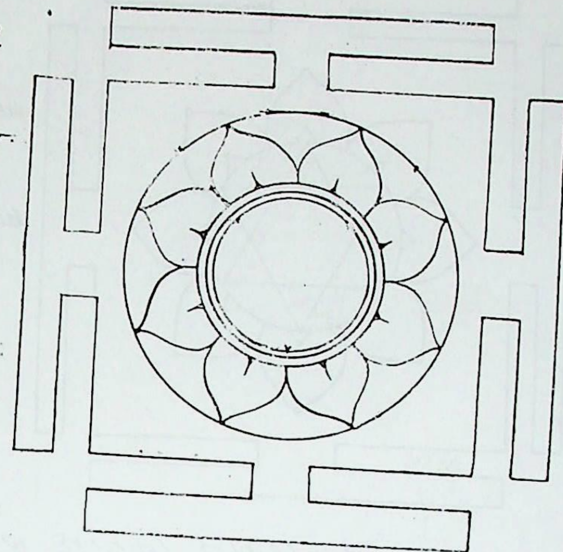


"गोपीजन वल्लभाय स्वाहा।"

इस मन्त्र का एक लाख की संख्या में जप करना चाहिए जप का दशांश होमादि करें।

मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर जातक को स्त्री, पुत्र, धन आदि का लाभ होता है। यह वशीकरण कारक भी है।

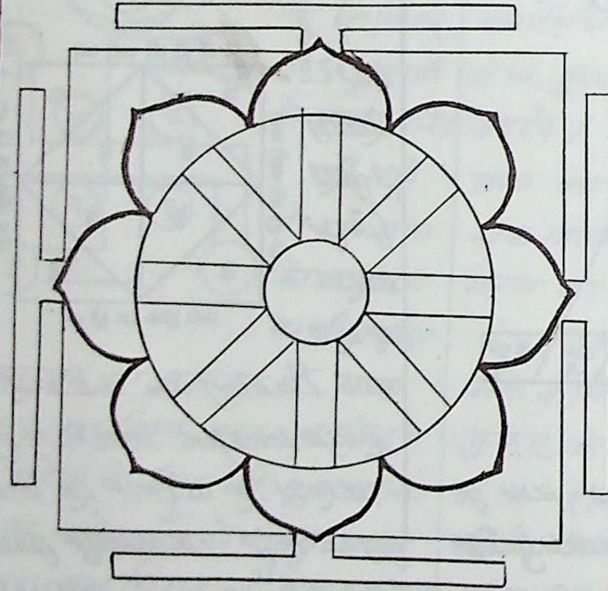
चरणायुध-पूजन यन्त्र - चरणायुध अर्थात् कुक्कुट के पूजन यन्त्र का स्वरूप नीचे प्रदर्शित है। इसे या तो या तो अष्टगंध द्वारा भोजपत्र पर लिख कर तय्यार करें अथवा ताम्र पत्र पर अंकित करवाले। मंत्र इस प्रकार है—



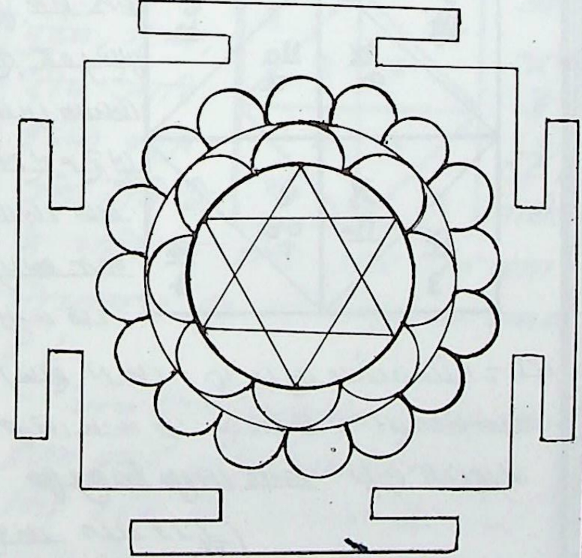
"यूं क्रो लि यूं क्रो लि वां ह्रीं यूं क्रो लि यूं क्रो लि यु वा आं क्रों।"

इस मन्त्र का 1 लाख जप करें। जप का दशांश होम करें। मन्त्र के सिद्ध हो जाने पर धन-ऐश्वर्य का लाभ होता है तथा भय एवं संकट दूर हो जाते हैं।

देव-पूजन यन्त्र- किसी भी देवता का पूजन करने के लिए जब उसके यन्त्र का स्वरूप ज्ञात न हो, तब बाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र के द्वारा उसका पूजन किया जा सकता है। इस यन्त्र को ताम्रपत्र पर अंकित करवा कर रख लेना चाहिए तथा आवश्यकतानुसार प्रयोग में लाना चाहिए। इसे अष्टगंधसे भोजपत्र पर भी लिख सकते हैं।

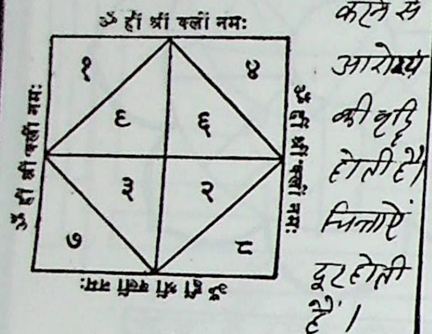


देवी-पूजन यन्त्र- किसी भी देवी का पूजन करने के लिए जब उसके यन्त्र का स्वरूप ज्ञात न हो, तब दाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र के द्वारा उसका पूजन किया जा सकता है। इस यन्त्र को ताम्रपत्र पर अंकित करवा कर रख लेना चाहिए तथा आवश्यकता-नुसार प्रयोग में लाना चाहिए। इसे अष्टगंध द्वारा भोजपत्र पर लिखकर भी प्रयुक्त किया जा सकता है, परन्तु भोजपत्र पर अंकित यंत्र स्थायी नहीं बन पाता।



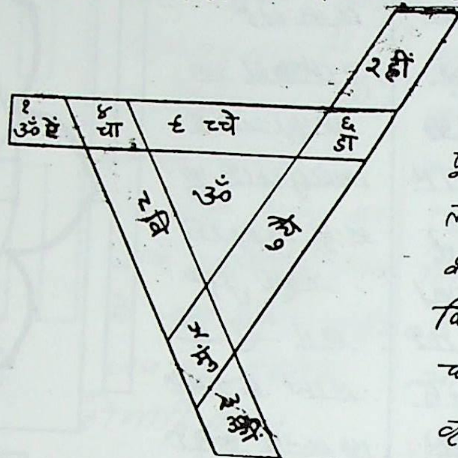
बीसा यन्त्र – 'बीसा यन्त्र' केवल हिन्दुओं के प्रत्येक वर्ग-सम्प्रदाय में ही नहीं, अपितु सिख, जैन, बौद्ध, पारसी तथा मुसलमान आदि अन्य धर्मावलम्बियों के यहाँ भी सम्मानीय, आराध्य तथा श्रद्धेय है। इस यन्त्र के अनेक स्वरूप पाये जाते हैं तथा अनेक कामनाओं की पूर्ति के लिए इनका प्रयोग किया जाता है। यहाँ बीसा यन्त्र के कुछ स्वरूपों तथा उनकी प्रयोग-विधियों का उल्लेख किया जा रहा है।

चण्डी बीसा यन्त्र – नीचे प्रदर्शित यन्त्र को नवदुर्गा के दिनों में-चैत्र अथवा आश्विन मास में भोजपत्र पर लिखकर पूजन करने से आरोग्य की वृद्धि होती है। चिन्ताएँ दूर होती हैं।



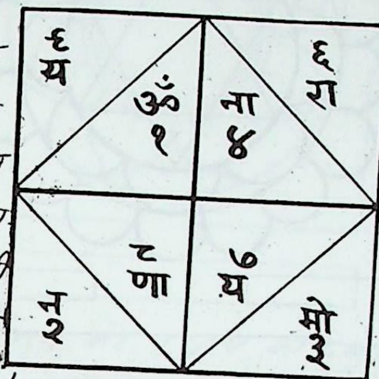
(श्री चण्डी बीसा यन्त्र)

श्री दुर्गा नवार्ण बीसा यन्त्र – इस यन्त्र को किसी भी मास की द्वितीया तिथि को अष्टगन्ध से भोजपत्र पर लिखकर नित्य पूजन करते रहें तथा 'दुर्गा सप्तशती' का पाठ किया करें तो धन-धान्य की वृद्धि होकर, सुख प्राप्त होता है।



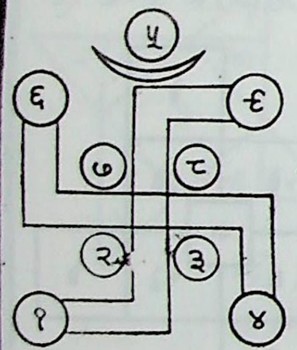
(श्री दुर्गा नवार्ण बीसा यन्त्र)

श्री विष्णु बीसा यन्त्र – नीचे प्रदर्शित बीसा यन्त्र को केसर द्वारा भोजपत्र पर लिखें तथा 'ॐ नमो नारायणाय' – इस मन्त्र का नित्य एक माला जप करते रहें तो सभी कामनाएँ पूर्ण होती हैं एवं धन लाभ होता है।

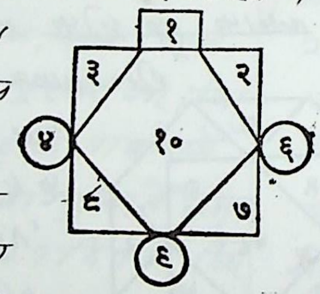


(श्री विष्णु बीसा यन्त्र)

स्वस्तिक बीसा यन्त्र- नीचे प्रदर्शित बीसा-यन्त्र को केसर-कस्तूरी द्वारा भोजपत्र पर लिखकर गन्ध-पुष्पादि से पूजन करें। यदि चाहें तो इस यन्त्र को ताम्रपत्र पर भी अंकित कराया जा सकता है। इस यन्त्र का नित्य पूजन करते हुए इष्टदेव के मंत्र की १ माला का जप करते रहने से सब प्रकार का लाभ मिलता है तथा धन की वृद्धि होती है।



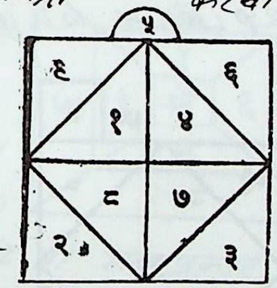
सिद्धि दाता बीसा यन्त्र- नीचे प्रदर्शित बीसा यन्त्र को केसर, कपूर तथा कुंकुम के मिश्रण से भोज पत्र पर लिखें। फिर यन्त्र का यथाविधि पूजन करते हुए गन्ध, पुष्प धूप, दीप आदि चढ़ायें। इसके बाद शिव मन्त्र का जप करें नित्य "ॐ नमः शिवाय" एक माला मन्त्र का जप अवश्य करना चाहिए।



उक्त प्रयोग से साधक की समस्त मनोकामनाऐं सिद्ध होती हैं तथा सब प्रकार के संकटों से छुटकारा मिलता है।

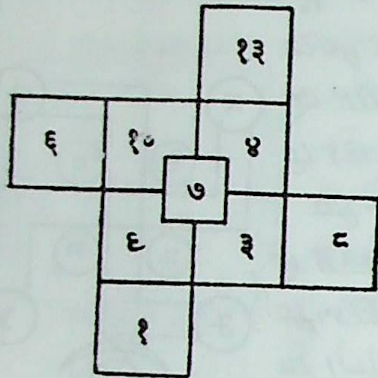
इस यन्त्र को त्रिलोह अथवा ताँबे के ताबीज में भर कर कण्ठ अथवा भुजा में भी धारण किया जा सकता है। यह सब प्रकार की सिद्धियाँ देने वाला यन्त्र है।

मनोरथ दाता बीसा यन्त्र - नीचे प्रदर्शित बीसा यन्त्र को ताँबे के पत्र पर अंकित करवाले और उसका नित्य पुष्प, गंध, दीप आदि पूजन करते रहें। ताँबे के ताबीज में भरने के लिए अष्ट गंध द्वारा भोजपत्र पर भी लिखा जा सकता है।



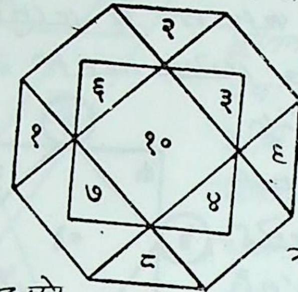
यन्त्र निर्माण के पश्चात उसका नित्य पूजन करते रहने अथवा धारण किए रहने से साधक के सभी मनोरथों की पूर्ति होती है। यह बड़ा प्रभावकारी यन्त्र है।

धनदाता बीसा यन्त्र - नीचे प्रदर्शित बीसा यन्त्र को दीपावली की रात्रि में अष्टगंध द्वारा भोजपत्र पर लिखकर गंध, पुष्प, धूप, दीप आदि से यथा विधि पूजन करे तथा भगवती लक्ष्मी के किसी मंत्र का 108 बार जप करे तो साधक को धन का लाभ होता है। इसे सिंदूर द्वारा घर अथवा दुकान की दीवाल पर भी लिखा जा सकता है।

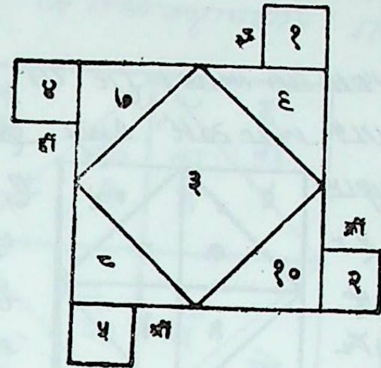


विद्या-प्रदायक बीसा यन्त्र - नीचे प्रदर्शित बीसा यन्त्र को हल्दी अथवा केसर द्वारा सफेद कागज अथवा भोजपत्र के ऊपर लिखकर, गंध-पुष्पादि से पूजन करें। यन्त्र का पूजन करते समय सरस्वती के चित्र अथवा मूर्ति को भी यन्त्र के समीप रखना चाहिए, पूजन करने के बाद मन्त्र- ह्रीं मन्त्र का जाप करते हुए भगवती सरस्वती से विद्या प्रदान करने की कामना करनी चाहिए।

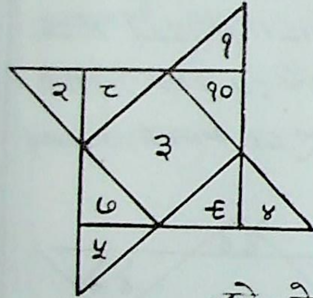
41 दिनों तक नित्य नियमित रूप से इस प्रयोग को करते रहने पर विद्या का उत्तम लाभ मिलता है।



सम्मानदाता बीसा यन्त्र - नीचे प्रदर्शित यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजपत्र के ऊपर चमेली की लकड़ी की कलम से लिखे तथा धूप दीप पुष्प आदि देने के बाद इसे ताबीज में भर कर अपनी भुजा अथवा कंठ में धारण करे तथा नित्य धूप देता रहे तो साधक जहाँ भी जाता है, वहीं उसे सम्मान प्राप्त होता है।

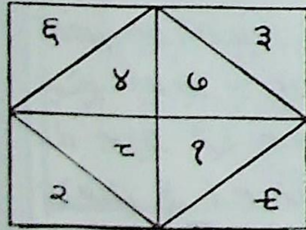


वशीकरण बीसा यन्त्र -



बाँई ओर प्रदर्शित बीसा यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर, अष्टगंध द्वारा चमेली की कलम से लिखकर पुष्प, गंध, धूप, दीप आदि से पूजन करे। फिर यन्त्र को त्रिलोह के ताबीजमें भर कर कण्ठ या भुजामें धारण करे तो साध्य-व्यक्ति २१ दिन के भीतर वशीभूत होकर समीप चला आता है।

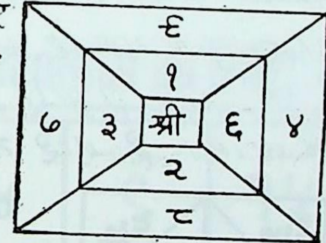
शत्रु-नाशक बीसा यन्त्र -



नीचे बाँई ओर प्रदर्शित बीसा यन्त्र को कौए की पंख की कलम से, धतूरे के रस द्वारा बहेड़े के पत्ते पर लिख कर गूगल की धूप दे, पृथ्वी के भीतर गड्ढा खोद कर गाड़ दे तो शत्रु का नाश होता है।

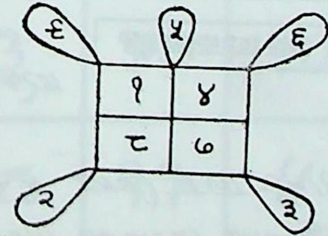
चिन्ताहरण बीसा यन्त्र -

नीचे प्रदर्शित बीसा यंत्र को भोजपत्र के ऊपर केसर, कस्तूरी, गोरोचन तथा कपूर के मिश्रण द्वारा लिखकर २१ दिनों तक नित्य प्रात: काल गंध, पुष्प, धूप, दीप आदि से पूजन कर गणेश जी का ध्यान धरता रहे तथा २२ वें दिन यंत्र को किसी नदी में प्रवाहित कर दे तो सब प्रकार की चिन्ताओं से छुटकारा मिलता है।



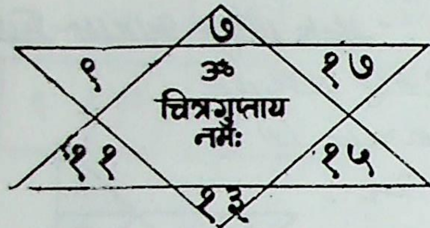
विजय प्रदाता बीसा यन्त्र -

नीचे प्रदर्शित बीसा यंत्र को केसर-कस्तूरी द्वारा भोजपत्र के टुकड़े पर लिखकर उसे ताबीज में भर कर धूप दे। फिर ताबीज को अपनी भुजा अथवा कंठ में धारण कर न्यायालय आदि में जाए तो विजय प्राप्त हो।



चित्रगुप्त यन्त्र -

चित्रगुप्तजी यमराज के मुख्य दरबारी हैं। वे विश्व-ब्रह्माण्ड के सभी जीवों द्वारा किए गए अच्छे-बुरे कर्मों का लेखा-जोखा रखते हैं। उनके लेखे-जोखे के आधार पर ही यमराज मृत्यु के बाद प्राणी को, उसके लिए उचित दण्ड अथवा शुभफल का निर्धारण करते हैं। अतः चित्रगुप्तजी का विशेष महत्व है।

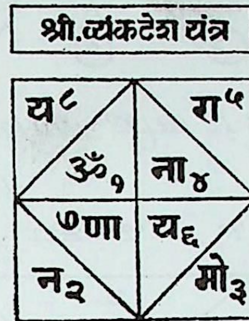


बाँई ओर प्रदर्शित यंत्र को भोजपत्र के ऊपर केसर से लिखकर यथा-विधि पूजन करके, धूप देकर अपनी दाँई भुजा अथवा कण्ठ में धारण करलें तो चित्रगुप्तजी की कृपा प्राप्त होती है तथा यन्त्र धारणकर्ता के अनेक प्रकार के संकट दूर होते हैं। इस यन्त्र का पूजन करने से धन-धान्य एवं सुख-समृद्धि का लाभ भी होता है।

व्यंकटेश यन्त्र -

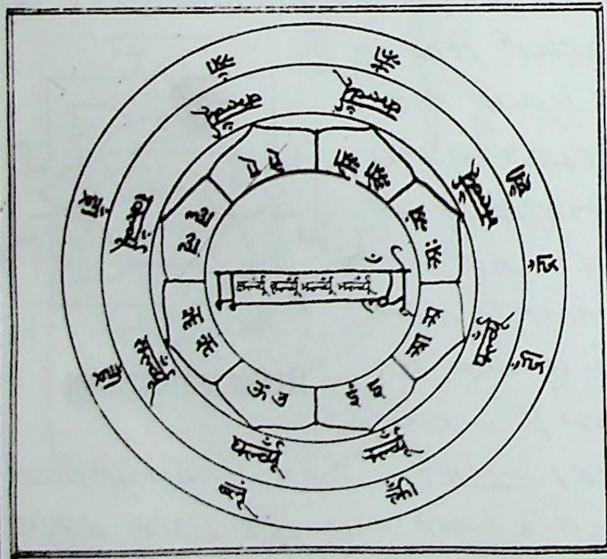
भगवान वेंकटेश श्रीविष्णु के ही प्रतिरूप हैं। दक्षिण भारत में इनकी पूजा-उपासना विशेष रूप से प्रचलित है।

दाँई ओर प्रदर्शित श्री व्यंकटेश यन्त्र को किसी शुभ मुहूर्त में भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध से लिख कर २१ दिनों तक नित्य प्रातःकाल गंध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप आदि से पूजन कर "ॐ नमो नारायणाय" इस मन्त्र का ५ माला जप करता रहे तो समस्त पाप नष्ट होते हैं तथा साधक की समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।



२१ दिन तक पूजन करने के बाद बाईसवें दिन इस यन्त्र को त्रिधातु के तावीज में भर कर अपनी दाँई भुजा अथवा कण्ठ में धारण कर लेना चाहिए। इससे सब संकटों से सदैव सुरक्षा बनी रहती है।

ज्वालामालिनी यन्त्र - नीचे प्रदर्शित यन्त्र भगवती ज्वालामालिनी का है। इसे या तो ताम्रपत्र पर अंकित करालें अथवा अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखलें।



फिर देवी के मंत्र का १० हजार की संख्या में जप करें। मन्त्र इस प्रकार है -

"ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनि देवि सर्वभूत संहारकारिके जातवेदसि ज्वलन्ति प्रज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल हुं रं रं हुं फट्।"

मन्त्र सिद्ध होने पर देवी सभी कामनाएं पूर्ण करती है।

शतचण्डी यन्त्र - नीचे प्रदर्शित शतचण्डी यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर लाल चंदन से लिखें अथवा ताम्रपत्र पर खुदवालें।

इस यन्त्र का विधिपूर्वक पूजन करके 'दुर्गा सप्तशती' का नित्य एक बार, या नौदुर्गा के दिनों में ९ बार पाठ करने से सब संकटों से छुटकारा मिलता है तथा सभी कामनाएं पूर्ण होती हैं।

शतचंडी का ब्यालीस का सिद्धि यंत्र

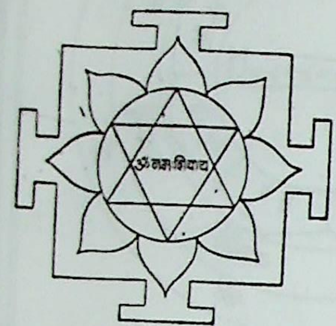
४	१४	९	१५
७	१७	६	१२
१३	३	१६	१०
१८	८	११	५

यन्त्र ३५४

शिव पंचाक्षरी यन्त्र-

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजपत्र पर लिखें अथवा ताम्रपत्र पर अंकित करवा कर गंध, पुष्प, धूप, दीप आदि से यथाविधि पूजन करें। तदुपरान्त शिव के पंचाक्षरी मन्त्र- "ॐ नमः शिवाय" का एक लाख से पाँच लाख तक की संख्या में, सामर्थ्यानुसार जप करें। जप के अन्त में दशांश होम बेल की समिधाओं से करें तथा होम का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन एवं मार्जन का दशांश ब्राह्मण भोजन करायें। फिर २१ सोमवारों तक शिवजी का व्रत रखें एवं बेलपत्र चढ़ाते हुए लिङ्ग-पूजन करते रहें। इस प्रयोग से शिवजी प्रसन्न होकर साधक की समस्त मनोकामनाओं को पूरा करते हैं तथा सभी संकटों से रक्षा करते हैं।

शिवपंचाक्षरी यंत्रम्।



महा०

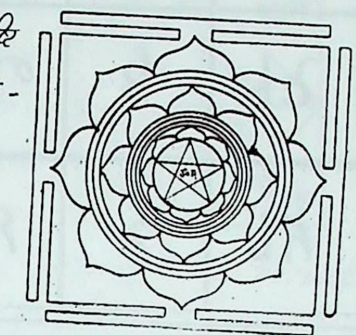
महामृत्युंजय यन्त्र-

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखें अथवा ताम्रपत्र पर अंकित करा लें। फिर यन्त्र का गंध-पुष्पादि से पूजन कर महामृत्युंजय मन्त्र का १ लाख की संख्या में जप करें। जप का मन्त्र निम्नानुसार है

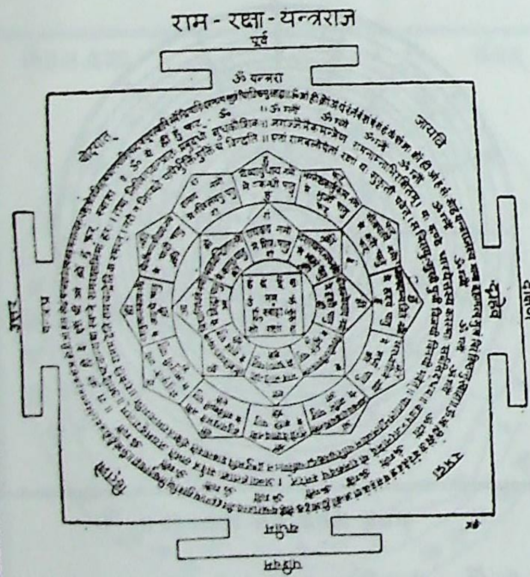
"ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् उर्वारुकमिव बन्धनान्-मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् भूर्भुवः स्वः रौं जूं सः हौं ॐ।"

जप का दशांश होम बेलफल, तिल, खीर, घी, दूध, दही, दूर्वा, बट की समिधा, पलाश की समिधा तथा खैर की समिधा को घी, शहद तथा शक्कर में डुबाकर करें। इस प्रयोग से अकाल मृत्यु का संकट दूर हो जाता है तथा साधक दीर्घायुष्य प्राप्त करता है।

महामृत्युंजय यंत्रम्।

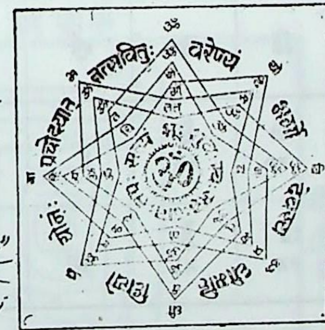


रामरक्षा यन्त्र - नीचे प्रदर्शित यन्त्र को अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखें अथवा ताम्रपत्र पर अंकित करालें



यन्त्र के तय्यार हो जाने पर - "ॐ रामाय नमः" — इस षडाक्षर मन्त्र का तीन लाख की संख्या में जप करें। जप के पूरा हो जाने पर दशांश होम तथा उसका दशांश कुमशः तर्पण, मार्जन एवं ब्राह्मण-भोजन करायें। इस प्रकार मन्त्र सिद्ध होगा, मन्त्र सिद्ध हो जाने पर साधक की समस्त मनोकामनाऐं पूरी होती हैं। यन्त्र के मध्य भाग में साधक का नाम लिखें।

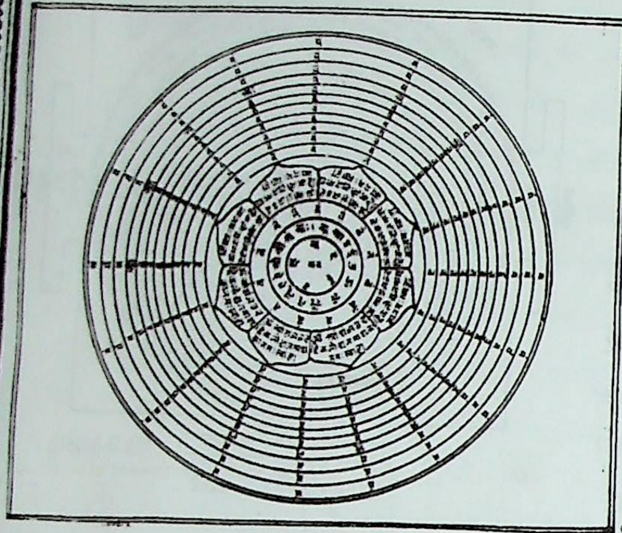
गायत्री यन्त्र - गायत्री को 'महामन्त्र' कहा गया है। यह मोक्षदायक, आत्मोन्नति कर्ता एवं सब प्रकार की सम्पत्तियों को देने वाला है। नीचे प्रदर्शित गायत्री यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजपत्र पर लिख कर, ताबीज में भरें तथा उसे कंठ अथवा भुजा में धारण कर लें।



धारण करने से पूर्व यन्त्र का विधिपूर्वक पूजन कर लेना चाहिए। फिर नित्य अपनी साम-र्थ्य के अनुसार - "ॐ भू र्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्"- इस गायत्री मंत्र का एक निश्चित संख्या में जप करते रहना चाहिए। इस मन्त्र का दस लाख की संख्या में जप पूरा हो जाने पर दशांश होम करना चाहिए। जितना अधिक जप किया जाय, उतना ही अधिक उत्तम होगा। समस्त कामनाऐं पूर्ण होंगी।

ग्रह-रक्षाकर, पुत्रदायक यन्त्र- नीचे प्रदर्शित यंत्र को अष्टगंध अथवा केसर-कस्तूरी द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखकर, गंध, पुष्प, धूप, दीप आदि से पूजन करे तदुपरान्त त्रिलोह के तावीज में भर कर अपने कंठ अथवा भुजा में धारण करले। स्त्रियों को बाँई भुजा में धारण करना चाहिए। यन्त्र को प्रतिदिन प्रातः काल धूप देते रहें। इसके प्रभाव से दुष्ट ग्रहों से रक्षा होती है तथा वन्ध्या-स्त्री को पुत्र लाभ होता है। निस्सन्तान पति-पत्नी दोनों ही इसे धारण करें।

॥ ग्रह रक्षक पुत्र दायक यंत्र॥



१८० का यन्त्र- नीचे प्रदर्शित १८० का यंत्र अत्यन्त प्रभावकारी बताया गया है। इसकी प्रयोग विधि यह है-

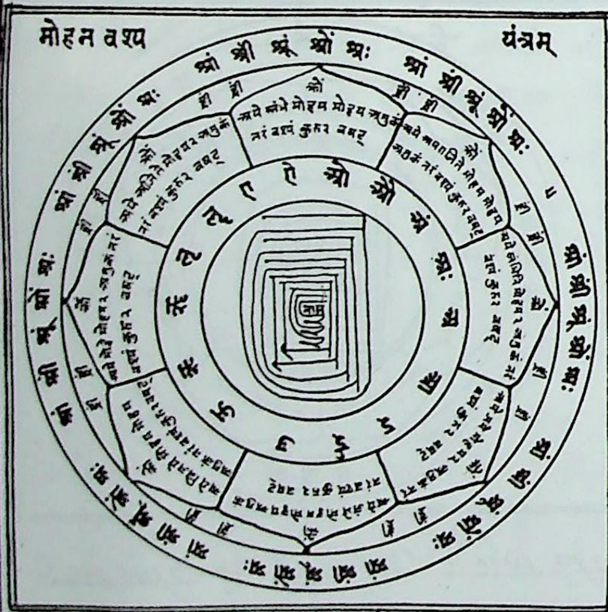
भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध अथवा लालचंदन द्वारा दाँई ओर प्रदर्शित यन्त्र लिखकर, उसका विधिपूर्वक पूजन करे तथा धूप देकर, ताँबे के तावीज में भर कर कंठ अथवा भुजा में धारण करले तो साधक अपने मन में जो भी इच्छा करता है, उसकी पूर्ति होती रहती है।

महा प्रभाविक शत्तरिशय यंत्र

२५ ह	८० र	क्षि	१५ हुं	५० हः
२० स	४५ र	प	३० सुं	७५ सः
क्षि	प	ॐ	स्वा	हा
७० ह	३५ र	स्वा	६० हुं	५ हः
५५ स	१० र	हा	६५ सुं	४० सः

मोहन- वशीकरण यन्त्र- नीचे प्रदर्शित यन्त्र को अष्टगंध द्वारा चमेली की कलम से भोजपत्र के ऊपर किसी शुभमुहूर्त में लिखे। यन्त्र के मध्यभाग में साध्य-व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

लेखनोपरान्त यन्त्र का पूजनकर, धूप दे, ताबीज में भरकर अपनी भुजा अथवा कण्ठ में धारण करे। यन्त्र में जहाँ-जहाँ 'अमुक' शब्द है, वहाँ साध्य-व्यक्ति का नाम लिखे तो 21 दिन में उसका वशीकरण होता है।



गति, जिह्वा एवं क्रोध स्तम्भन यन्त्र- नीचे प्रदर्शित यन्त्र को मंगल अथवा रविवार के दिन प्रातःकाल लालचंदन द्वारा अनार की कलम से भोजपत्र पर लिखकर गंध-पुष्प आदि से पूजन कर गूगल की धूप दे।

यन्त्र के मध्यभाग में जहाँ 'नाम' लिखा है, वहाँ साध्य-व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए।

लेखनोपरान्त यन्त्र को चूल्हे के बगल में गड्ढा खोद कर गाड़ दे तो साध्य-व्यक्ति की गति, जिह्वा (वाणी) एवं क्रोध का स्तम्भन होता है और वह साधक के अनुकूल बन जाता है।

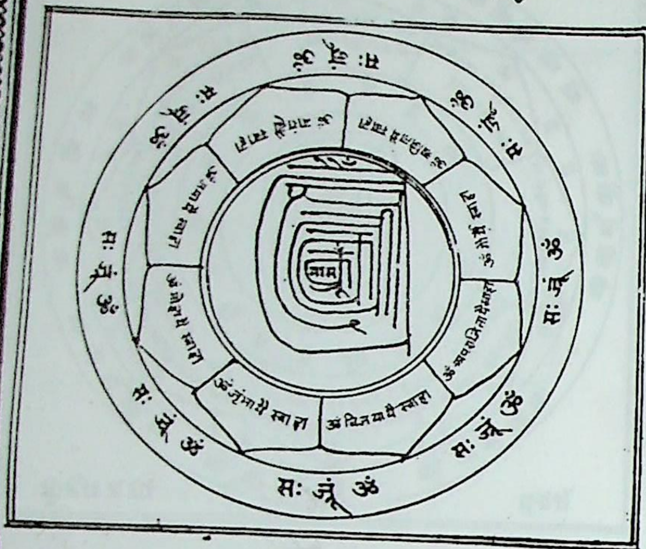
॥ गति जिह्वा और क्रोध स्तंभन यंत्र॥



यन्त्र ३५८

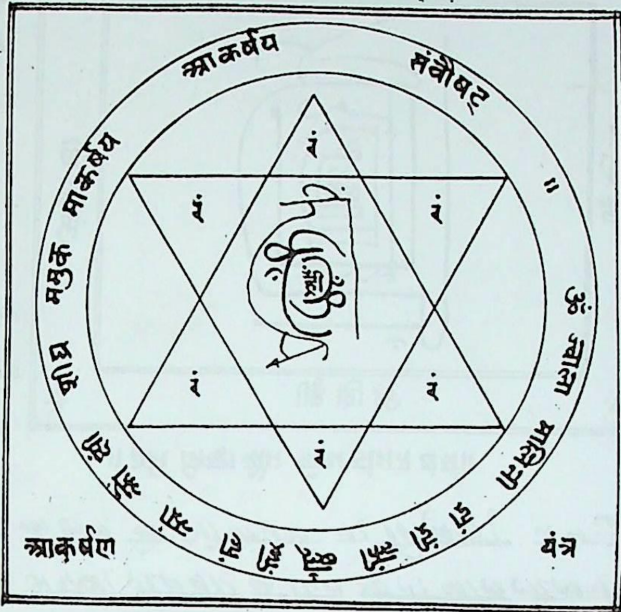
पुरुष-वशीकरण यन्त्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को गोरोचन, कुंकुम, केसर, कस्तूरी तथा कपूर द्वारा चमेली की कलम से भोजपत्र के ऊपर लिखकर, गंध पुष्प आदि से पूजन कर, गूगल की धूप दे। फिर इसे त्रिलोह के तावीज में भर कर अपने कंठ अथवा भुजा में धारण करले तो साध्य-पुरुष का वशीकरण होता है। इस यन्त्र के मध्यभाग में जहाँ 'नाम' लिखा है, वहाँ साध्य-पुरुष का नाम लिखना चाहिए। यह प्रयोग स्त्रियों को करने योग्य है।



आकर्षण यन्त्र

नीचे प्रदर्शित यन्त्र को ताम्रपत्र पर अंकित करा ले अथवा अष्टगंध द्वारा भोजपत्र पर लिखे। यन्त्र के गोल भाग के भीतर जो मन्त्र लिखा है, उसमें 'अमुक' के स्थान पर साध्य-व्यक्ति का नाम लिखे तथा यन्त्र का पूजन करने के बाद इसी मन्त्र का 10 हजार की संख्या में जप करे तथा जप का दशांश होम करे तो ज्वालामालिनी देवी की कृपा से साध्य-व्यक्ति का आकर्षण होता है और वह साधक के पास चला आता है।



महा०

योगिनी-स्थापन यन्त्र- विभिन्न मांगलिक कार्यों के समय योगिनियों की स्थापना की जाती है। योगिनियाँ कुल ६४ हैं। इनके नामों को तन्त्र ग्रंथों के अध्ययन से जाना जा सकता है।

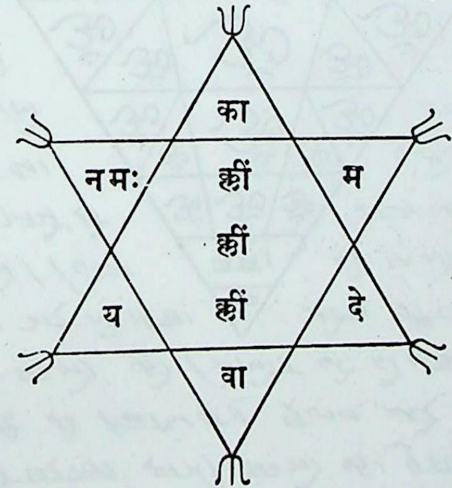
६४ योंगिनीयों की स्थापना का यन्त्र

१	२	६२	६१	६०	५९	७	८
९	१०	५४	५३	५२	५१	१५	१६
४८	४७	१९	२०	२१	२२	४२	४१
४०	३९	२७	२८	२९	३०	३४	३३
३२	३१	३५	३६	३७	३८	२६	२५
२४	२३	४३	४४	४५	४६	१८	१७
४९	५०	१४	१३	१२	११	५५	५६
५७	५८	६	५	४	३	६३	६४

बाँई ओर प्रदर्शित चक्र में यह बताया गया है कि किस स्थान पर किस क्रम-संख्या वाली योगिनी को स्थापित करना चाहिए।

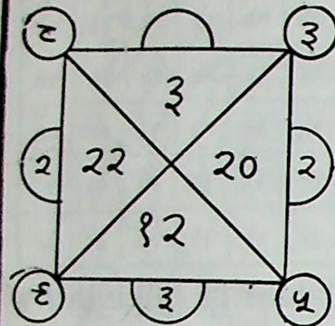
योगिनियों की क्रम-संख्या का ज्ञान भी उनके नामों के क्रम के आधार पर प्राप्त किया जा सकता है। यह विषय विस्तृत तथा दुरूह है, अतः यहाँ इसका संक्षेप में उल्लेख मात्र किया जा रहा है।

कामदेव यन्त्र - नीचे प्रदर्शित यन्त्र को चमेली की कलम द्वारा, अष्टगंध से भोजपत्र के ऊपर लिखे। यन्त्र-लेखन का कार्य यदि पूर्णिमा की रात्रि में किया जाय तो अत्युत्तम रहेगा, अन्यथा आवश्यकतानुसार किसी भी शुभ तिथि में किया जा सकता है।



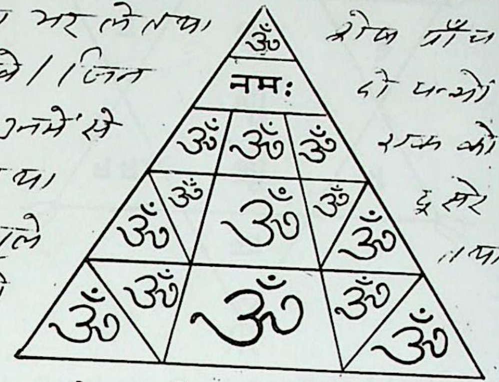
यन्त्र को लिखने के बाद गंध, पुष्पादि से पूजन कर धूप देकर तथा उसे त्रिलोह के ताबीज में भर कर अपने कंठ अथवा दाँई भुजा में धारण कर "नमः कामदेवाय" इस मन्त्र का १० हजार की संख्या में जप कर, दशांश होम करे तो कामदेव की प्रसन्नता प्राप्त होती है तथा प्रियजन से मिलन होता है।

परमानन्द-प्रदाता यन्त्र- नीचे प्रदर्शित यन्त्र को केसर-कस्तूरी द्वारा भोजपत्र के १० हजार टुकड़ों पर अलग-अलग लिखे तथा प्रत्येक यन्त्र का लेखनोपरान्त पूजन कर धूप दे। प्रतिदिन एक निश्चित संख्या में यन्त्र लिखने का नियम बना ले तथा प्रतिदिन जितने यन्त्र लिखे, उन सबको पूजन करने के बाद किसी नदी अथवा जलाशय में प्रवाहित कर दिया करे।



अन्तिम दिन के आखिरी लिखे यन्त्र को पूजन करने के बाद ताबीज में भरकर अपनी भुजा या कंठ में धारण करले तो आजीवन परमानन्द की प्राप्ति होती है।

भव-भय-मोचक यन्त्र- नीचे प्रदर्शित यन्त्र को भोजपत्र के सात टुकड़ों पर अलग-अलग अष्टगंध से लिखे तथा लेखनोपरान्त सभी यन्त्रों का पुष्प, धूप, दीप, गंध आदि से विधिवत् पूजन करे तदुपरान्त उनमें से दो यन्त्रों को त्रिलोह के दो ताबीजों में अलग-अलग भर ले तथा शेष पाँच यन्त्रों को अलग रखे। जिन दो यन्त्रों को ताबीज में भरा हो, उनमें से एक को अपनी दाँई भुजा में तथा दूसरे को कण्ठ में धारण करले तथा शेष पाँचों यन्त्रों को नदी के जल में प्रवाहित कर दे तो सांसारिक-भय से मुक्ति मिल जाती है।



॥ इति श्री विद्यावारिधि, दैवज्ञ-बृहस्पति आदि अनेकानेक उपाधिविभूषित सहस्राधिक ग्रंथप्रणेता आचार्य पं. राजेश दीक्षित सम्पादिते मन्त्रमहार्णवे पंचम खण्डः ॥ समाप्तोऽयं ग्रन्थः ॥

